बृहत्त्रयीनी वनस्पतिओ



प्रकाशक :

श्री गुजरात कच्छ काठीयावाड वैद्यमंडळ

अहमदाबाद

बृहत्त्रयीनी वनस्पतिओ

लेखक :

वैद्यराज बापालाल ग. शाह, हांसोट.

(निघंटु आदर्श, वैद्यकीय कायदाशास्त्र,
अभिनव कामशास्त्र इत्यादि पुस्तकोना कर्ता)

प्रकाशक :

वैद्यराज अंबाशंकर जी. त्रीवेदी

वैद्यराज अमृतलाल त्रीभोवन याज्ञिक

मंत्रीओ

श्री गुजरात कच्छ काठियावाड
वैद्य संमेलन स्थायी समिति

अमदावाद

आवृत्ति १ ली — संवत् १९८७

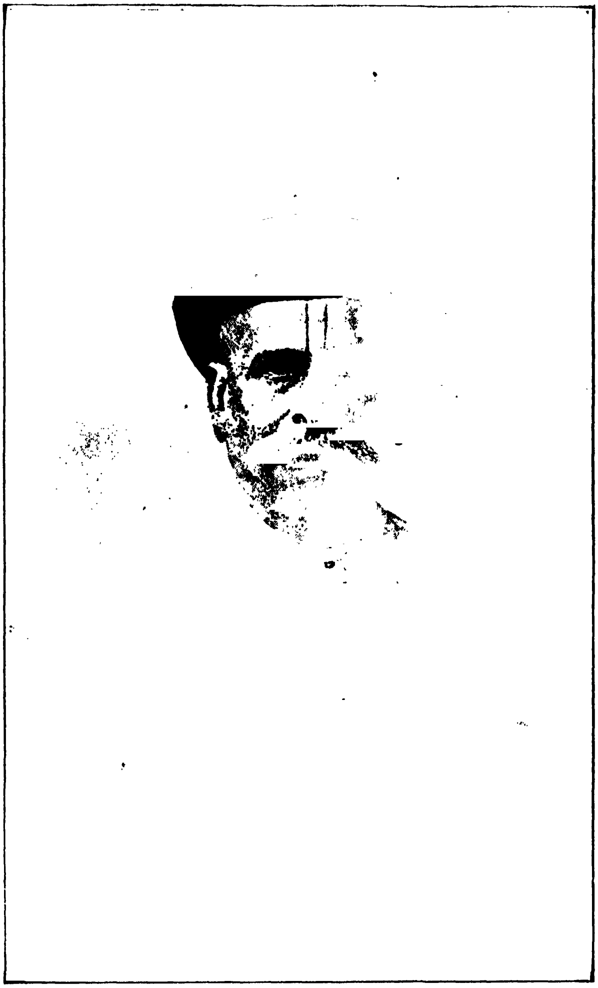
प्रत ५०० — इ. स. १९३१

मूल्य रु. २—०—०

आ पुस्तकना सर्व हक्क श्री गुजरात कच्छ काठिआवाड वैद्यमंडळने स्वाधीन छे.

मुद्रणस्थान :
आदित्य मुद्रणालय : रायखडरोड, अहमदाबाद
मुद्रक :
गजानन विश्वनाथ पाठक

श्रीमान् शेठ साहेब श्री बालाभाई दामोदरदास



स्वागताध्यक्ष

श्री गु. क. का. वैद्यसंमेलन प्रथमाधिवेशन

अहमदाबाद

अर्पण पत्रिका

भगवद्धर्म परायण परम वैष्णव

श्रीमान् शेठ साहेब श्री बालाभाई दामोदरदास,

अहमदाबाद.

आपश्री बाल्यावस्थाथी ज आयुर्वेदशास्त्र अने वैद्यो प्रत्ये अनुराग धरावो छो. आपश्रीना बहोळा कुटुंबमां ज्यारे ज्यारे वैद्यकीय सारवारनी जरुर जणाय छे त्यारे त्यारे सारा प्रतिष्ठित वैद्योनी सलाह लइ चिकित्सा करावो छो. छेल्लां त्रीश वर्ष थयां जनसमाजने देशी दवाओनो अने उत्तम चिकित्सानो लाभ मळे तेवा हेतुथी एक एक निष्णात वैद्यने सारा सन्मानथी राखी औषधालय चलावी जनसमाजनी सेवा करो छो. श्री गुजरात–कच्छ काठीयावाड वैद्यसंमेलनना प्रथम अधिवेशन वखते स्वागताध्यक्षनुं पद स्वीकारी आप श्रीमाने अत्रेनी वैद्य सभाने तन–मन अने धनथी घणी सहायता आपी हती. आपश्रीनी मददवडेज संमेलननुं प्रथम कार्य पण घणुं ज सुचारु रुपे फळीभूत थयुं अने गुजरात प्रांतमां आयुर्वेद शास्त्र अने वैद्यसमाजनी उन्नतिनुं बीज रोपायुं. तेना फळरुपे **श्रीवृद्धत्रयीनी** [illegible]ओ नामनुं आ पुस्तक वैद्यमंडळ तरफथी बहार पाडवामां आवे छे, ते पुस्तक आपश्रीने मानपूर्वक अर्पण करतां अमोने घणो ज आनंद थाय छे.

कार्यालय
श्री लोकहितार्थ देशी
दवाखानुं
सांकडीशेरी–**अहमदाबाद**
वसंतपंचमी १९८७

ली०
अमो छीए आपना स्नेहाधीन
वैद्यराज अंबाशंकर जी. त्रिवेदी
वैद्यराज अमृतलाल श्री. याज्ञिक
मंत्रीओ श्री. गु. क. का. वैद्यमंडल.

Ayurveda the science of life

वैद्यसमाजने माटे एक सोनेरी तक

तैयार छे ! **मंगावो** **तैयार छे !!**

आयुर्वेद—(सिद्ध विज्ञान)

नामदार मद्रास सरकारे, यु. पी. सरकारे, बीहार प्रांतनी सरकारे अने बंगाळा सरकारे आयुर्वेद ए वैज्ञानिक छे के नहि ? तेनी तपास करवा माटे जे कमीटीओ नीमी हती ते कमिटिओए ते देशना भागोमां तेमज आखा हिन्दना बधा भागोमांथी नामांकित वैद्यो, हकीमो, अन्य सदगृहस्थो अने प्रतिष्ठित अमलदारोनी लेखित तेमज मौखिक जुबानीओ लइ आयुर्वेदशास्त्र सर्वथा वैज्ञानिक होइ उपादेय छे एवुं पोताना रिपोर्टमां पूरवार करी बताव्युं छे अने ते रिपोर्टोना आधारे मद्रास विगेरे गवर्नमेन्टोए आयुर्वेदनो खीलवणी करवाना कार्य माटे महाविद्यालयोनी योजना करी छे. आ रिपोर्टनो निष्कर्षभूत सार आपणा वैद्य समाजने माटे बहु उपयोगी छे. तेमांथी आयुर्वेद संबंधे घणुंज नवुं जाणवानुं मळी आवे तेम छे. आयुर्वेदशास्त्रना पंचमहाभूतात्मक शरीर, त्रिधातु शरीर अने त्रिदोषतत्व जेवा कठण विषयोने प्राचीन अर्वाचीन मतोना समन्वयपूर्वक सरल रीते तेमां समजाव्या छे. आ एक पुस्तक पासे राखी तेनुं मनन करनार वैद्य हरकोइ वखते डाकटरोने पण आयुर्वेद संबंधी घटतो खुलासो करी शके तेम छे. आ रिपोर्टना उपयोगी भागनो तरजुमो करी पुस्तकरुपे प्रसिद्ध करवामां आव्यो छे, वळी पाश्चिमात्य विद्वानोना आयुर्वेद संबंधी उत्तम अभिप्रायोनो पण आमां समावेश करवामां आव्यो छे. आयुर्वेद अवैज्ञानिक छे एवा अणघटता आक्षेपो करनाराओने सज्जड जवाब आपवा माटे आ पुस्तक एक अद्वितीय साधन छे. आवा महत्वना पुस्तकनो उपयोग बधा वैद्य भाइओ करी शके एटला माटे तेनी किंमत मात्र एक रुपीओ ज राखी छे. जे मात्र खर्च पुरती ज छे. अमने आशा छे के स्थायी समिति तरफथी प्रसिद्ध थयेला आ उपयोगी सुन्दर पुस्तकनो बधा वैद्यराजो योग्य सत्कार करशे.

कार्यालय—श्री गुजरात कच्छ काठीयावाड वैद्य संमेलन स्थायि समिति अने वैद्य मंडळ
श्री लोकहितार्थ दवाखानुं, सांकडीशेरी-अमदावाद

वैद्य अंबाशंकर जी. त्रिवेदी
वैद्य अमृतलाल त्रिभुवन याज्ञीक
मंत्रीओ

वृद्धत्रयीनी वनस्पतिओ.

आमुख

चरक, सुश्रुत अने वाग्भट्ट—नी संहिताओमां वपरायली वनस्पतिओनुं एक लीस्ट बनाववानी घणा वखतथी इच्छा हती, पण ए महाभारत काम हाथमां लेता पहेलां अनेक विचारो आवता अने तेथी ते पडतुं मूकतो. अेकले हाथे काम उपाडतां हुं केटलोक वखते कमकमी उठतो. छेवटे आटलां वर्षो बाद आजे आ यादी तैयार थाय छे, अने ते माटे इश्वरनो आभार मानुं छुं.

चरक, सुश्रुत अने वाग्भट्ट वांचतां बांचतां दरेक वनस्पतिओने जुदी तारवी काढवी, पछी तेने अकारादि क्रम प्रमाणे गोठववी अने आखरे ए त्रणेनी वनस्पतिओने संग्रहित करीने अकारादि क्रममां गोठववी—ए काम केटलुं मुश्केल छे ते विद्वानो विना बीजा कदाच नहि जाणी शके. अने अकारादि क्रममां गोठव्या पछी पण तेना अर्थो आपवा ए काम तो एथीये मुश्केल छे.

अहिं आपेली वनस्पतिओ फक्त वृद्धत्रयीनी ज छे. वृद्धत्रयीमां नथी एवी वनस्पतिओ पाछळना ग्रंथकारोए वापरेली छे, पण तेनी संख्या घणी जूज छे—बहु मोटी नथी.

वृद्धत्रयीनी लगभग बधी ज वनस्पतिओ आ यादीमां आवी गइ छे, कदाच एकाद बे भूलथी आंखबहार रही गइ होय तो प्रभु जाणे. बने तेटली काळजी राख्या छतांये जो त्रूटी रहेवा पामी होय तो विद्वानो ते त्रूटी पूर्ण करवा बनतो प्रयत्न करशे ज एवी आशा हुं राखुं छुं.

वृद्धत्रयीना टीकाकारो

वृद्धत्रयीनी वनस्पतिओमांनी घणी वनस्पतिओनो पत्तो लागतो नथी. जो टीकाकारोनी सहाय लेवामां न आवे तो भाग्ये चोथा भागनी वनस्पतिओना अर्थ आपणा समजवामां आवे.

चरकसंहिता उपर आसरे तेर टीकाओ लखायली छे एम स्व. गिरजाचरण गुप्त तेमना ' वनौषधिदर्पण 'मां जणावे छे. आमांथी म्हारा जोवामां फक्त चक्रपाणी दत्तनीज टीका आवी छे. शिवदासनी टीकावाळो चरकसंहिता म्हारा जोवामां हजी नथी आवी.

चक्रपाणीदत्ते वनस्पतिओनो परिचय आप्यो छे. चक्रपाणिदत्त बंगाळामां ११ मा शतकमां (डॅा. गिरिन्द्रनाथ मुखोपाध्याय बी. ए; एम. डी; एफ. ए. एस. वी. एमणे चक्रपाणिदत्त उपर ' Journal of Ayurveda ' मां घणी माहितीवाळो लांबो लेख लख्यो छे. ते चक्रपाणिदत्तनो काळनिर्णय इ. स. १०६० (1060 A. D) आपे छे) थइ गया छे एटले चरकोक्त औषधोनो जे अर्थ तेमणे आपेलो छे ते बंगाळानो प्रचलित अर्थ समजवो जोइए. डल्हण जेटली विगतवार माहिती तेमनी टीकामांथी मळती नथी, छतांये एकंदरे प्रयास ठीक कर्यो जणाय छे.

सुश्रुत संहिता उपर पण अनेक टीकाओ लखायली छे एम सुश्रुतनी **डल्हण**नी टीका वांचतां समजाय छे. जेज्जट, गयदास, पंजिकाकार, ब्रह्मदेव, कार्तिक, गोमी, गयो-विगेरेनी टीकाओ हालमां अस्तित्वमां नथी. अत्यारे डल्हणनी ' निबंधसंग्रह ' अने चक्रपाणीनी ' भानुमति ' बेज टीकाओ सुश्रुत उपरनी जोवा मळे छे. म्हें भानुमति जोइ नथी. डल्हणनी ' निबंधसंग्रह ' टीका घणी सरस छे. डल्हणे वनस्पतिओनो जे परिचय (केटलीक जगोए) आप्यो छे ते जो न होत तो हाल ए बधी ज अपरिचित रही होत. वनस्पतिओना परिचय माटे डल्हणनी टीका वर्तमान टीकाओमां उत्तम-अपूर्व छे.

डल्हण मथुरा पासेना भादानक देशमां रहेता हता, पण डल्हणनी टीकामां मथुरा के उत्तर हिंदुस्तान तरफनी देशी भाषाना पर्यायो बहु ओछा आवे छे. डल्हण जाणे के गूजरातमां पण लांबो वखत रही गया होय एम घणी वखते आपणने लागे छे. कोषातकः घिसोडीति लोके, जीवन्ती ' डोडी 'ति लोके-आवो परिचय आपनार डल्हण मथुरा निवासी करतां गूजरात काठियावाडना निवासी होय एम लागे छे.

डल्हण इ. स. ना १०मा सैकाना अंतमां अने ११मानी शरुआतमां थइ गया छे.

वाग्भट (अष्टांग हृदयम्) ना टीकाकार श्री. **अरुणदत्त**नी ' सर्वांग सुंदरा ' टीका अत्यारे उपलब्ध छे. अरुणदत्त उपरांत चंद्रनंदन अने हेमाद्रि विगेरे टीकाकारोए अष्टांगहृदय उपर टीकाओ लखी हशे एम मानवाने कारण मळे छे. अरुणदत्त तेमना नाम उपरथी बंगाली होइ बंगालाना छे अने इ. स. १३मा शतकनो शरुआतमां थइ गया होवा जोइए एम डॅा. हर्नले सकारण तर्क कर्यो छे.

चक्रपाणिदत्त अने डल्हणाचार्य करतां अरुणदत्त अर्वाचीन छे एटलुं ज नहि पण चक्रपाणिदत्त के डल्हणनी टीकाओमांथी आ विषय उपर जेटलुं अजवाळुं पडे छे एटलुं अरुणदत्तनी टीकामांथी नथी पडतुं. अरुणदत्तनी टीकामां झाझो माल नथी छतां ज्यां कंइज साधन होतुं नथी त्यां केटलीक वखत अरुणदत्त व्हारे धाय छे.

बीजा टीकाकारो

आ सिवाय बीजा अनेक टीकाकारो थइ गया छे अने ते दरेकनी अहिंयां ओछावत्ता प्रमाणमां सहाय लेवामां आवी छे.

वृन्दकृत सिद्धयोग उपर **श्रीकंठे** सरस टीका लखी छे. ए टीकामांथी म्हें वनस्पतिने लगतां वचनो ' सिद्धयोग निरुक्त ' ए नामना लेखमां जुदां तारवीने छपाव्यां छे. (आयुर्वेद–विज्ञान पु, ७ अंक १–२) आ श्रीकंठ इ. स. १२०० थी १२५० नी अंदर थइ गया होवा जोइए एम रा. दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री जणावे छे. श्रीकंठनी टीकामां खूटता अंशो नारायण नामना नागर वैद्ये पूरा करेला छे एटले ए टीकामां क्वचित् १४-१५ मा शतकना गुजराती पर्यायो होवानो संभव छे खरो. श्रीकंठनी टीका डल्हण आगळ फीकी पडे छे छतांये केटलीक वखत तेनी पण सहाय लेवी पडी छे.

शार्ङ्गधर संहिता उपर आढमल्लनी **दीपिका** अने काशीरामनी **गूढार्थ दीपिका** नामनी बे टीकाओ छपायली छे. आ बन्ने टीकाओनी सहाय लेवामां आवेली छे. आ बन्ने टीकाओमां केवळ चर्वित चर्वण ज छे. उलटुं केटलीक वखत ऊंधुं वेतरेलु छे छतां केटलीक वखत तेनी सहाय लेवामां आवेली छे.

वैद्यक शब्द सिंधु

कविराज उमेशचंद्रगुप्त–कविए बनावेलो आ ग्रंथ जेणे जोयो हशे ते ए विद्वाने लीधेली अथाग महेनतनी तारिफ कर्या विना नहि ज रह्यो होय. कोष तो घणाए छे. अकारादि क्रम प्रमाणे बनावेलो अने केवळ वैद्यक शब्दोनोज कोष आ पहेल वहेलो ज छे एम हुं मानुं छुं. आ अक्षुण्ण पथ उपर विजयी प्रस्थान करवा बदल समस्त वैद्यकीय जगत कविराज उमेशचंद्रनुं ऋणी छे. " बंगीयजन कीर्तिग्रन्थ रत्नम् " अर्थात बंगालोओनी कीर्तिरुप आ ग्रन्थ रत्नमां अनेक त्रुटीओ होवा छतांये ते अनेक अंशे सफल कृति छे. वृद्धत्रयीनी यादी करतां टीकाकारोनां वचनो उपर वधारे आधार राखवामां आव्यो छे ए जो के खरुं छे, पण ज्यां टीकाकारोए मौन धर्युं होय छे त्यां तेवे वखते आ ग्रन्थ म्हारो साह्याय्ये आव्यो छे अने म्हने प्रकाश आपी कंइक अंशे दुर्गम पंथने सरल कर्यो छे.

अमर कोष.

पंडितवर अमरसिंहनो अमरकोष ए अत्यन्त आदरणीय ग्रन्थ मनाय छे. महामहोपाध्याय श्री भट्टोजी दीक्षितना पुत्र श्री **भानुजि दीक्षिते** तेना उपर टीका करेली छे. अमर कोष उपर बीजी टीका **क्षीर स्वामीनी** छे. आ बन्नेमी टीकाओनो यथायोग्य सहाय

लेवामां आवी छे. भानुजि दीक्षित के क्षीरस्वामी जाते वैद्य न हता एटले तेमनां वचनो उपर झाझो विश्वास में मूक्यो नथी, छतां न चाले तेमनो उपयोग पण करवानी में छूट लीधेली छे. " निघंटु आदर्श " मांथी आ छुट वांचकोने जोवा मळी शके खरी.

आनंदाश्रम संस्कृत ग्रन्थावलीए छपावेलो " राजनिघंटु सहितो धन्वन्तरीय निघंटु " एक रीते जोतां समस्त निघंटुओनो शिरोमणि छे. निघंटुना अंतमां अकारादिक्रममां जे वर्णानुक्रमणिका आपवामां आवी छे ते अभ्यासीओने माटे घणी उपयोगी छे. अनुक्रमणिकानो लाभ में घणो जगोए उठाव्यो छे. एकना अनेक अर्थोनी मुश्केली तो छेज पण विचारशील परीक्षक तेमांथी सुंदर दोहन करी शके खरो.

परचुरण

आ उपरांत पू. श्री जयकृष्ण इन्द्रजी ठाकरना " वनस्पति शास्त्र "नो, स्व डॉ. वामन देसाइना " औषध संग्रहनो "नो, पं. हरिप्रपन्नजीना " रसयोग सागर भा. १ " नो म्हारा " निघंटु आदर्श "ना पूर्वार्द्ध अने उत्तरार्द्धनो उपयोग करवामां आव्यो छे. कोइ वखते लेटीन नामो माटे तो कोइ वखत गूजराती नामो माटे तो कोइ वखत तेना अर्थ माटे विविध रीते ग्रंथो मने उपयोगी थया छे. आ ग्रंथसागरमांथी वीणीवीणीने काढेलां मोतीओथी आ टुंकी यादीने अलंकृत करी छे. केटलेक स्थळे पूर्वापर संबंध जोइने अर्थो आपवानी धृष्टता करी छे.

एकनां अनेक नामो.

वनस्पतिओना नाम निर्णयमां जो कंइ मोटामां मोटुं विघ्न होय तो ते एक वनस्पतिनां अनेक नामोनुं छे. कुतूहली जिज्ञासु पाठकने माटे राजनिघंटुमांथी एकज उतारो नीचे उद्धृत करुं छुंः—

भद्रायां तु बला नीली दन्ती काश्मीरी सारिवा ।
श्वेताद्रिकर्णी गौरी च सप्त प्रोक्ता भिषग्वरैः ॥

एक 'भद्रा' शब्द सात अर्थमां वपरायलो छे. हवे विचार करो के भद्रा शब्द ज्यां वपरायो होय त्यां शुं लेवुं ? दरेक स्वबुद्धि अनुसार द्रव्यो ग्रहण करे छे. पण आ पद्धति शास्त्रीय नथी. भले प्राचीन समय माटे ए पद्धति योग्य हशे, पण हवे आ प्रथा झाझीवार न टकवी जोइए. एक शब्दनो एकज अर्थ अथवा बे अर्थो होय तो आटली संदिग्धता उभी न थात–न थाय.

राजनिघंटुमां ज नहि पण टीकाकारोनां वचनोमां पण आवो ज गोटाळो छे. केटलीक वखत तो टीकाकारोए पण मनमानी रीते अर्थो करेला छे.

एक मोरट शब्दनो अर्थ करवो होय छे त्यारे केटली मुश्केली आवे छे तेनो टुंक परिचय अहीं अस्थाने नहि गणाय. इक्षुमूलनो अर्थ **मोरट** आपवामां आवे छे. (चरक टीका सू....४....९) एज टीकाकार मोरटनो अर्थ **मूर्वा** आपे छे. डल्हण वळी तेनो आंकोलनां फुल अथवा शेरडीमूल एवो अर्थ आपे छे. पं. हरिप्रपन्नजी तेमना 'रसयोग सागर'मां अमृतलोहना पाठमां मोरटनो अर्थ **लताकरंज** (जुओ पा. ८६) करे छे. श्रीकंठ 'हस्तिकर्ण पलास इत्यन्ये मूर्वा वा' आवो परिचय आपे छे. आतो मघवा बिडौजा जेवुं थयुं. हस्तिकर्णपलास एटले शुं ? हस्तिकर्णनो अर्थ शोधतां रातो एरंडो अथवा भूपलाश नीकळे. त्यारे आ शब्दारण्यमांथी प्रवासीने रस्तो केम जडे ? ते बिचारा मुंझाया विना शुं रही शके ? पं. हरिप्रपन्नजी हस्तिकर्णपलाशनो अर्थ भूमिकुष्मांड करे छे (रसयोग सागर. पा. ९०) आम प्रत्येक व्यक्ति आ शब्दारण्यमां यथेच्छ विहार करी शके एवी स्वतंत्रता आपणने आपणा पूर्वजो तरफथी मळेली छे !

आ वीसमी सदीना शास्त्रीय जमानामां आवो गोटाळो झाझीवार न टकवो जोइए. वैद्योए भेगा थइने आनुं सत्वर निराकरण करी नाखवुं ज रह्युं. पण पुराणप्रिय हिंदुमन निराकरण करवानुं पसंद ज नथी करतुं. तेने मन पुराण एटले पवित्र अने शुद्ध एवुं ठसी गयुं छे. सुभाग्ये हवे पंडितोनी बुद्धिमां पण शास्त्रीयता आववा लागी छे ए शुभ चिन्ह छे. वैद्यो कदीये भेगा मळशे के केम ते विषे मने जबरी शंका छे, अने भेगा मळ्या पछी लड्या विना रहेशे खरा ? **खदिरसार** जेवा शब्दनी चर्चामां दिवसो काढी नाखे एवा वैद्यधुरंधरोना समाजमां एके सपाटे काम करी नाखवुं ए रमत नथी. एटले ज आ यादीमां में तनतोड श्रम लइने विद्वानोने पसंद पडे एवी ढबे निर्णय करवा प्रयास कर्यो छे. टीकाओ जोइ छे, पूर्वापर संबंध जोयो छे अने तर्क पण कर्यो छे. आशा राखुं छुं के गूजरातना वैद्यराजोने मारो आ निर्णय कबूल रहेशे ज. जेने कबुल न होय ते मासिकोद्वारा आनी चर्चा उठावे अने मंथन आदरी नवनीत मेळवे.

बॉटेनीस्टोनुं अनुकरण करो.

वनस्पति शास्त्र (Botany) नां नामो केवी रीते बदलातां आव्यां छे ते बोटेनीस्टो सारी रीते जाणे छे. पहेलां तो लोकोए कामचलाउ अमूक नामो राखी लीधां, पछी दर कोंग्रेस वखते तेमां घटतो फेरफार करता रह्या. आ विषय उपर प्रो. लींडले तेमना "Vegetable Kingdom" नामना अद्‌भूत ग्रंथनी प्रस्तावनामां नीचे प्रमाणे लखे छे ते आपण सर्वेए जाणवा जेवुं छे.

"It is full time, indeed, that-some stop should be put to

this torrent of savage sounds, when we find such words as Calucechinus, oresigenesa, Finanstrina, Kraschenni nikovia Gravenhorstia, Amorgejofskya......and hundreds of others like them, thrust into the records of Botany without-even an apology. If such intolerable words are to be used, they should surely be reserved for plants as repulsive as themselves; and instead of libelling races so fair as flowers or noble as trees, they ought to be confined to slimes, mildews Blights & Toadstools. The author has been anxious to do something towards alleviating this grievous evil, which at least need not be permitted to eat into the healthy form of Botany, clothed in the English language."

P. XVI.

भावार्थ

" कॅल्युसेचीनस्, ऑरेसीजीनेसा, फीनेन्स्ट्रीना, कॅश्चीनी, नीकोलीया, ग्रेवन हार्स्टीया, एडुंझेजोफस्कीया–इत्यादि आ अने आवां ज बीजां हजारो जडबातोड, जंगली नामोना झंझाबाती प्रवाहने हवे अटकाववो ज जोइए. हवे ते माटे वखत भराइ गयो छे. वनस्पति शास्त्र जेवां सुन्दर शास्त्रमां, जरा पण क्षमा याचना सिवाय, आवां जडबातोड नामो घूसाडवामां आव्यां छे तेने माटे कंइ हवे करवुं ज जोइए. जो एवां नामो लगाडवां ज होय तो ए दुष्ट नामो केटलाक दुष्ट छोडवाओ माटे ज राखवां जोइए, अथवा तो बीजां कोइ विकराळ प्राणीओ के खनिजो माटे राखवां. पुष्पो जेवां सुन्दर अथवा तो वृक्षो सम उदात्त वस्तुओ माटे आवां नामो नज शोभे.

अंग्रेजी भाषारुपी वस्त्रोमां परिधान थयेली वनस्पति शास्त्ररुपी सुन्दरीनां सुघटित अने सुन्दर अंग प्रत्यंगो माटे आवां कढंगां नामो न शोभे. आ दुःखद स्थिति दूर करवाने माटे आ लेखक ए दिशामां कंइ प्रयत्न करवा इच्छे छे."

उपरना फकरामां आपणे जडबातोड नामोने बदले ' कर्णप्रिय पण अनेकार्थग्राही व्यर्थ नामो ' आवो शब्द राखीए ! कारण संस्कृत भाषामां जे नामो छे तेनुं लालित्य ओर छे. विष्वक्सेनकान्ता, अशोकरोहिणी, अश्वावरोहिका, आदारिशिम्बी, इक्षुबालिका, उत्तमवारुणी उदुम्बरपर्णी, ऋष्यप्रोक्ता, अंतःकोटरपुष्पी, ओदनपाकी, गुडमंजरी, गन्धर्वहस्तक, छगलान्त्री, ब्रह्मचारिणी, ब्रह्मसुवर्चला, भद्ररोहिणी, मृगगामिनी (विडंग माटे) मृतसंजीवनी (गोरक्ष दुधी माटे) म्लेच्छभोजन, (गोधूम=घउं), वर्णविलासिनी (हळदर माटे), अग्निदमनी (पं. हरिप्रपन्नजी एनो अर्थ नागदमनी करे छे.) तोयाधिवासिनी, हिडिम्बिका, धवलकुसुम-वल्ली–आ अने आवां हजारो नामोने आपणे तिलांजली आपवी पडशे.

श्लोको बनाववानो मोह आपणामां अजब छे. केम जाणे गद्य करतां पद्यमां लखवाथी विद्वत्ता वधारे महेकती हशे ! जो प्राचीन लेखकोए गद्यमां लख्युं होत तो आट आटलां नवीन नामो वैद्यकमां घूस्यां न ज होत. अने हजी पण सायन्सना विषयोने पद्यमां उतारवानो आपणो मोह गयो नथी ! निरंकुशाः हि कवयः—ए उक्ति वैद्यक कविओना विषयमां सार्थक छे एम कह्या विना रहेवातुं नथी. (लंबाण नहि करतां हुं वांचकोने रस-योग सागरमां पं. हरिप्रपन्नजीए विस्तार पूर्वक वर्णवेलो कासीसादिरसनो पाठ वांची जवा विनवीश. ब्राह्मीना नामोनुं लीस्ट राजनिघंटुमांथी वांची जवुं). गंधक माटे 'मारारीनारीरजः' शब्द बापरवानुं शुं प्रयोजन ? अशोक माटे कान्ताङ्घ्रिदोहदनुं शुं प्रयोजन ? प्राचीनोए गमे ते कारणथी ए शब्दो राख्या हशे, माटे आपणे पण ते शुं कायम ज राखवा ?

पण हां ! हुं भूल्यो. वैद्यो तो वैद्यकने अनादि माननारा छे. संस्कृत शब्दने शास्त्र माननारा वैद्योनी संख्या हजी जेवी तेवी नथी. ते तो कहेशे के 'आज कालना नवा भणेलाओ मोटा डाह्या के ऋषिओनी भूलो काढवा बेटा छो ? ' जो आज स्थिति होय तो लाचार. कालाय तस्मै नमः !

परिवर्तनशील विज्ञान.

सायन्स परिवर्तनशील छे. जगत् आखुं ये परिवर्तनशील छे. कोइ पण वस्तु तेना एकना एक स्वरुपमां जीवंत रही शकती ज नथी. जे बुद्धिए वैद्यकने जन्म आप्यो छे ते बुद्धि, योग्य लागे तो, वैद्यकने विकसावी शके छे—विस्तृत बनावी शके छे. एकने एक ज जगोमां रहेनारुं खाबोचीयानुं पाणी गंधाइ उठे छे ए कोण नथी जाणतुं ? ए खाबोचीयाना पाणीनो निकाल नहि करवामां आवे तो तेमांथी दुर्गंधी मारशे अने आजुबाजुना जनपदनुं स्वास्थ्य बगाडशे. आपणे आयुर्वेदने खाबोचीयुंज राखवुं छे ? बंधियाळ पाणी राखवुं छे के जीवंत वहेतो प्रवाह राखवो छे ? जे जे अशुद्धिओ जणाय, जे जे सुधारणाने अवकाश होय ते बहारथी ग्रहण करी लेवां जोइए. सायन्समां पूर्व अने पश्चिम जेवुं कशुं ज नथी. विज्ञान अमूक देशनी के जातिनी मुडी नथी. जे वापरे तेने माटे ते छे.

आपणे चरकना वखतथी ते आजदिन सुधीमां नहि जेवो सुधारो वधारो कर्यो छे. अलबत्त रस वैद्यकनी नोखी शाखा अस्तित्वमां आवी अने विकास पामी ए भूलवा जेवुं तो नथी ज, पण चरकसुश्रुतना वखतनी वनस्पतिओ उपरांत आपणे बीजी ओछी वनस्पतिओने अपनावी छे. भावमिश्रे चोपचीनी जेवी वस्तुओने अपनावी छे अने त्यारपछीना शोढल जेवाओए घणी नवी वनस्पतिओने निघंटुमां दाखल करी छे. पण आटला वखतमां (चरकथी ते आज दिन सुधीना आशरे २००० वर्षमां) आपणे जरा पण आगळ धप्या नथी एटलुं कह्या सिवाय चालतुं ज नथी.

" All things are undergoing incessant change. Every science is in a state of progression, and of all others the sciences of observation must be so."

Prof. Lindley. Ph. D. F. R. S., L. S.

अष्टवर्गनी वनस्पतिओ.

जीवक ऋषभक, मेदा महामेदा, काकोली क्षीरकाकोली विगेरे अष्टबर्गनी औषधिओने चरकना टीकाकार चक्रपाणिदत्त अने सुश्रुतना टीकाकार श्रीडल्हणाचार्य ' स्वनामख्यातम्' एवी ओळखाण आपीने ज संतोष माने छे. अर्थात् चक्रपाणिदत्त अने डल्हणना समय सुधीमां–११ मा सैका सुधीमां–आ वनस्पतिओ अति प्रसिद्ध हती एम जणाय छे. भावमिश्रना वखतमां आ वनस्पतिओ ' अति दुर्लभ ' थइ गयेली जणाय छे अने तेना बदलामां योग्य प्रतिनिधि द्रव्यो सूचववामां आव्यां छे ! भावमिश्रनो काल इ. स.ना १६मा सैकानी शरुआतमां छे. नवाइ जेवी वात छे के ३००–४०० वर्ष जेटला वचगाळाना समयमां अष्ट वर्गनी औषधिओ ओळखाती बंध थइ गइ ! ते वखतना वैद्योना मानसनो आपणने आथी ठीक परिचय मळे छे !

पण हर्षनी वात ए छे के हवे आ तरफ वैद्योनुं ध्यान गयुं छे. हरिद्वारमां एक **अष्टवर्ग कार्यालय** पण उघडयुं छे अने दरवर्षे संमेलन साथेना प्रदर्शनोमां नवा नवा नमूनाओ पण आववा लाग्या छे. **बूटी प्रचार** जेवा वनस्पतिनी चर्चा करता मासिकमां हवे वनस्पतिओना फोटा पण आवता थया छे. जो आवी ज प्रगतिथी आपणे मंडया रहीशुं तो घणांये किंमती, अज्ञात द्रव्योने आपणे आपणा निघंटुओमां–फार्माकोपीयामां स्थान आपी शकीशुं. जुनुं न जडे तो परवा नहि, पण नवुं जे कंइ हाथ लागे ते पूरा विचार पछीथी आपणे हजम करवुं जोइए.

बुद्धि प्रथम. शास्त्रो पछी.

उशीरः वीरतरुः—अर्थात् एक टीकाकार उशीर (काळो वाळो) नो अर्थ वीरतरु आपे छे. वीरतरु एटले वेल्लन्तरो (पंचमहाल)–Dichrostachys cineria. बीजो टीकाकार किणिही नो अर्थ अपराजिता आपे छे. त्रीजो टीकाकार स्पृक्काः मालती आवो अर्थ करे छे. चोथो कुष्माण्ड ने सर्पच्छत्रम् कहे ! कोइ कर्कशनो अर्थ पटोलभेदः करे तो कोइ वळी कंपिल्लक–कपिलो एवो अर्थ करे ! कोइ इंगुदिने पुत्रंजीव कहे छे तो कोइ जीवन्तीने पटोल जेवा पानवाळो उत्तरमां थनारी वेल एम ओळखावे छे ! आ संकरतामां आपणुं कर्तव्य शुं होवुं जोइए ? हुं एक ज जवाब आपुं. बुद्धि प्रथम, शास्त्रो पछी. चरक सुश्रुतमां वर्णवेलां अनेक शाको अत्यारे लगभग अज्ञात छे. चरक सुश्रुतमां वर्णवेलां स्थावर

विषने आपणे कोइ ओळखता नथी, दिव्यौषधिओने हजी कोइए जोइ नथी. **चरक सुश्रुत वाग्भट्टनी आशरे ५००-६०० वनस्पतिओमांथी आपणने खरी रीते तो भाग्येज अर्धनीये ओळखाय छे.** आवा समयमां आपणुं शुं कर्तव्य होवुं जोइए ! बुद्धि कबुल करे एवा निर्णयो ज्यांथी मळे ते हालने माटे आपणे ग्रहण करी लेवा जोइए. भविष्यमां जेम जेम आपणने भुलो जणाय तेम तेम तेमां फेरफार करी शकाशे. नवी वस्तुओने पण आपणे दवाओमां लइ लेवी जोइए.

उपसंहार

वृद्धत्रयीनी वनस्पतिओनी यादी आपता पहेलां चरक, सुश्रुत, वाग्भट, वृन्द, भावमिश्र शारंगधर--इत्यादि ग्रन्थकारोना ग्रंथोनी टीकाओमांथी वनस्पति विषयक वचनो तारवी काढी आपवामां आव्यां छे. जिज्ञासु वांचकोने आ तारवणीमांथी टीकाकारोनुं मतपार्थक्य, वनस्पतिओ विषेनुं तेमनुं तत्कालीन ज्ञान अने केटलेक स्थळे तेओए दाखवेलो मतिविभ्रम इत्यादि जाणवा-जोवा मळशे. यथाशक्तिमति म्हें आ यादीने संपूर्ण बनाववा प्रयत्न कर्यो छे, खामीओ तो घणीये हशे-छे.

"To demand perfection in a work of this nature is little less than impious; for perfection is the attribute, not of man, but of His Master."

Prof. Lindley. Intr. p. XI.

अर्थात्.

आवी जातनां कामोमां संपूर्णता इच्छवी ए अपवित्र छे; कारण के **संपूर्णता** ए मनुष्यनो नहि पण तेने बनावनार **परमात्मानो** गुण छे.

प्रो. लींडले.

एटले हुं, पं. हरिप्रपन्नजीना शब्दोमां 'त्रुटिविरहफलो रच्यते एष ग्रन्थः' एम तो नथी कही शकतो, पण तेमना उपसंहारना शब्दोमां म्हारो पण स्वर मेळवी एटलुं तो जरुर लखीश के:---

दृश्येताऽकठिनं जनैर्विरचितग्रन्थप्रयोगा इह
विन्यस्ता इति, किन्त्वगाधधिषणा दृष्टया श्रमो
ज्ञास्यते ॥

अर्थ---

खरी रीते तो जनसमाजने आ कार्य एक खेल जेवुं ज लागशे, कारण के तेओ कहेशे के ओहो हो ! एमां तो शो वाघ मार्यो छे ? थोडी टीकाओ जोइने एक नानी शो यादी

तैयार करी तेमां शुं भारे काम छे? परंतु आमां कुशाग्र बुद्धिथी अंदरनी घटनाओने जे जोशे तेने जणाशे के आमां केटलो बधो श्रम लेखकने पड्यो हशे?

बापालाल ग. वैद्य

संज्ञा-परिचय.

च: चरकसंहिता. (स्व. दाजीपदेवाळो गुटको.)

सु. सुश्रुतसंहिता. डल्हण भाष्य समेत. निर्णयसागर प्रेस.

वा. अष्टाङ्ग हृदयम्. अरुणदत्तनी टीकावाळी डो. कुन्तेवाळी आवृत्ति.

च. द. चक्रपाणिदत्त चरक टीकाकार.

च. टी. चरक टीका

अ. द. अरुण दत्त. वाग्भट्ट टीकाकार

नि. पू: निघंटु आदर्श पूर्वार्द्ध

नि. उ. ,, उत्तरार्द्ध

औ. सं: औषधसंग्रह (डो. वामन देसाइ कृत)

व. शा. वनस्पति शास्त्र

रा. नि, राजनिघंटु

ध. नि. धन्वन्तरीय निघंटु

वै. श. सिं. वैद्यक शब्द सिंधु

चरकनिरुक्त

अग्निमुखी—लाङ्गलिया इति ख्याता ।
सू-स्था. अ. ४—४

अङ्कालोडचं—ह्रस्वोत्पलकंदः ।
सू. २७—११३

अजकर्णः—शालभेदः ॥ चि. ८—२०।५

अजगन्धा—(१)फोकान्दी । सू. ४—४९
(२) फीकान्दी । सू. १—७७
(३) अजमोदा ॥ सू. २—२
फोकान्धीति केचित्
(४) फोफादीति ख्याता ॥
चि. २३—२१०
(५) अजमोदा। चि. २७—४०

अजडा—शूकशिम्बी । चि. २—१८

अजमोदा—उग्रगन्धा ॥ चि. अ.१३-१२२

अजश्रृंगी—विषाणी । क. ११—११

अजा—अजानाम औषधिः। अजश्रृंगीति ज्ञायते । मूल. चि. १ पा ३८३

अजाजी—सूक्ष्मजीरकम् ॥ सू. २७-३०४

अतसी—उमा इति ख्याता । सू. १३—१०

अतिच्छत्रा—(१) मधुरिका चि. १
(इन्द्रोक्तरसायनम्)
(२) शतपुष्पा अन्ये छत्रातिच्छत्रे द्रोणपुष्पीद्वयम् ।
चि. ९—५६

अतिछत्रा—अरुणकोकिलाक्षः ॥
वि. ८—२०/१

अतिरसा—(१) शतावरी । सू. ४—७
(२) यष्टिमधु । चि. १०—३२

अधोगुडा—वृद्धदारकः ॥ सू. अ. १—७६

अन्तःकोटरपुष्पी—नील बुहूना ।
सू. १—८१

अभिषुक—औत्तरापथिकम् । सू. १३-१०

अभीरुपत्री—शतावरीभेदः। वि. ८—२०।१

अंबष्ठकी—अकर्णविद्धा ॥ सू. ४....९

अम्भःश्यामाका—जलजा ओडिका लोके झरा इत्युच्यते । सू. २७—१६

अम्लिका—(१) कन्दप्रधाना कामरूपे प्रसिद्धा ॥ अम्लिकाभेदमित्याहुः
वि. ८—२०/२
(२) स्वल्प विटपप्रायः कामरूपादौ भवति ॥
सू. २७....११८

अंशुमती—शालपर्णी । चि. २८—९३

अमोघा—(१) पाटला आमलकी वा लक्ष्मणा वा । सू. ४—४९
(२) पाटला । शा. ८—२१

अमृणालम्—उशीरम् ॥ सू. ३—२४

अमृतासंगः—कपिकच्छुः। चि. २५—११५

अर्जकः—श्वेतपर्णासः सू. २७—१६५

अरिष्टा—कटुरोहिणी ॥ शा. ८—२१

अरुकं—निकोठा क्षोडां इति औत्तरापथिकाः॥
सू. १३—१०

अव्यथा— (१) कदलो गुडूची वा हरीतकी वा सू. ४—४९
(२) गुडूची । शा. ८—२१

अवघातः—कर्णिकाकारः । चि. ७—१२६

अवदंशक्षमम्—लवलीफलम् ॥
सू. २७—१४१

अवाक्पुष्पी—अधःपुष्पी। चि. १४-२३४

अश्मन्तकः—(१) अम्ललोटः सू. ४—३३

(२) मालुयासदृशपत्रो वृक्षः
सू. १–११२

अश्वकर्णः—(१) शालभेदः॥ सू. २९–४८
(२) शालभेदः । चि. ३–२५४

असनपर्णी—(१) अपराजिता ॥ चि. २६–६८
(२) अपराजिता । वि. ८–२०/१

अक्षिपीडकः—श्वेतपीत शिंबीभेदः ॥ चि. २३–२१३

अक्षीव—अन्दकः शोभांजनो वा ।सू. ४–१५

—आ—

आस्फोता–अस्फूरमल्लिका। चि. १५–१२३

आत्मजा—पुत्रंजराख्याता॥ चि. ३–२६३

आसुरी—राजिका मण्डको वा । सू. अ. २७ श्लो. ९७

आखुपर्णी—मूषिकपर्णी। वृषपर्णी च तद्भेदः पंजिपत्रिकेति ख्याता ॥ सू. अ. ४-१५

आदनी—घोषक भेदः । शा. ८–४६

आरुकं—कार्तिकपुरे प्रसिद्धम् ॥ सू. अ. २७–१२८

आदित्यपर्णी—नाम औषधिः या सूर्यकान्ता विज्ञायते । (मूलं) चि. १–५१–३८३

आम्रातं—आमडा इति ख्यातम् । सू. अ. २७–१२९
आम्रफलसदृशं इति चंद्रिका (तच्च द्विविधं)

—इ—

इंगुदी—पुत्रंजीवकफलम् । सू. २७–१४२

इक्षुवालिका—स्वाभारिका । सू. ४–१७

इक्षुमूलं—मोरटो वा । सू. ४–९

इन्द्रसाह्वा—बीजपूरका । चि. ६–४०

इन्द्राणि—निर्गुण्डी । चि. २१–८३

इन्द्राणीशाकं—केचित् मत्स्याक्षक इति आहुः निगुण्डीत्यपरे ॥ चि. २१....८८

—ई—

ईषिका—अम्बष्ठा ॥ चि. ३–२६३

—उ—

उद्दालः—बहुचारः । वि. ८–१८

उद्दालकः—बहुचारः । वि. ७–३०

उत्तोली—वृश्चिकाली। वृश्चिकापत्री ख्याता । चि. ९–५७

उपचित्रा—दन्ती । क. ६—५

—ऋ—

ऋष्यगंधा—(१) ऋष्यजाङ्गलकः । सू. ४-२
(२) ऋष्यजाङ्गलकी । बलाभेदो वा॥ वि.८–२०/१

ऋष्यप्रोक्ता—(१) बलाभेदः । वि. ८–२०/१
(२) अतिबला ॥ चि. २९–७०
(३) माषपर्णी । सू. ४–७

ऋषभि— शुकशिम्बा ॥ सू. ४-७

—ए—

एर्वारुकं—(१) लोमशकर्कटी इतिउल्बणः, राजकर्कटी त्वन्ये,स्फुटिसंज्ञया गौडे प्रसिद्धमिति त्रिविक्रम इति शिवदासः॥ सू. २७–१०७ टिप्पणी।
(२) राजकर्कटी। सू. २७-१०७

एरका—होगल। सू. ३–२५

एलापर्णी—(१) नागबला अहिंस्रा इत्यन्ये। क. ६–९
(२) रास्ना। वि. ८–१८

—ऐ—

ऐंदुकः—निक्षारः सू. अ. २७–११०

ऐन्द्री—गोरक्षकर्कटी। सू. ३–२५, शा ८–२१

—ओ—

ओदनपाकी – नीलझिंटी। वि. ८–२०/१

—क—

कर्कारुः—कूष्माण्डभेदः। चि. १९–३५

कर्बुदारः—(१) कांचनः। सू. २७–९६
(२) श्वेत कांचनः। सू. ४–२३

कर्कन्धुः—बदरीशृगाल। सू. २५–४८

कर्कशः—पटोलभेदः। वि. ८–२०/१

कठिल्लकः—पुनर्नवा। सू. अ. २७–९३

कठिल्लका—रक्तपुनर्नवा। चि. ३–१८७

कदरः—(१) श्वेत खदिरः। सू. २५–४८
(२) विट् खदिरः। ४–४३

कलशी—पृश्नीपर्णी॥ चि. ३–१८४

कम्पिलकम्—गुण्डारोचनी। सू. १–८१

क्रमुकम्—(१) गुवाकम्॥ सू. २५–४८
(२) पट्टिकालोध्रं पूगं वा। चि. ६–३९
(३) पट्टिकालोध्रं। चि. ४–७२

कपीतन—(१) गंधमुंडः। सू. ४–३३
(२) गंधमुण्ड इति ख्यातः॥ चि- १५–१२४

कण्डीरः—रामठभेदः। स हि जलस्थलभेदाद्विविधः॥ चि. ३–२६३

कटंभरा—कटभी। चि. ९–५६

कशेरु—चिञ्चोडकः वि. ८–२०।१

कशेरुकः—कशेरुकशब्देन चिंचोडका-राजकशेरुश्च गृह्यते। सू. २७–११३

कपोतवल्ली—(१)सूक्ष्मैला। वि. ८–२०।१
(२) कवडभेजु इति ख्याता। वि. ८–२०।१

कदम्बो—बहुफलः। सू. ४–२०

करमर्दः—कण्टकीफल इति चन्द्रिका, तद्द्विविधं महदल्पं च, तत्र महत्प्रायशो ग्रामभवमम्लं च, अल्पा तु करमर्दी वनजा मधुराम्लफला इति आहुःइति शिवदासः॥टिप्पणी.सू. २७-१५६

कायस्था—सुरसा। चि. १७–३७

कालंकृतो—कासमर्दः वि. ८–१८

काला—मञ्जिष्ठा। चि. २८–६८थी७४

कालशाकं—कालिया इति ख्यातम्। सू. २७–८९

काकाण्डः—शूकरशिम्बः । सू. अ. २७–३२

काकाण्डी—ख्याता । सू. १–७७

कारवी—(१) कृष्णजीरकम् ॥ सू. अ. २७–३०४
(२) कारवीति अल्पद्राक्षा । चि. २४–१७८
(३) अल्पजीरकम् ॥ चि. १३ –१२२

काष्टगोधा—नाम औषधिः गोधाकारा चि. १५–२८३ (मूल)

काकनासा—वासाफलका । काकतुण्डक इत्यन्ये ॥ चि. अ. १–६४

कालानुसार्यः—शीतला । चि. ३–२५४

काकाह्वा—गोष्ठोदुम्बरिका । चि. २१–८३

कालेयकं—कालियाकाष्ठम् ॥ सू. ३-२४

किणिही—कटभी । सू. ४–१५

क्लीतकं—यष्टिमधु । सू. १–८०
अस्यतु अद्यपि मूलं सुश्रुते प्रशस्तं, मूलेनैव व्यवहारः तथापि विरेचनं प्रति यष्टीमधुद्वयस्यापि फलमेव प्रशस्तं ज्ञेयम् ॥ सू. १–८०

कुमारजीवी—जीवशाकं । सू. २७ ९७

कुतुम्बकः—द्रोणपुष्पिका । सू. अ. २७–९६

कुचेला—अकर्णविद्धिकाभेदः सू. २७–९२

कुरण्टकः—म्लानकः चि. अ. २१–८७

कुन्दुरुकः—शितिमारकः कुन्दकुसुमख्यातः । चि. २६–६२

कुटन्नटं—कैवर्तमुस्तकम् ॥ चि. १५–१२३

कुलिंगाक्षी—पेटिका । वि. ७–२०११

कुलिंगः—उच्चटभेदः सू. ४–२०

कुलिंगा—उच्चटा । वि. ८–२०११

कुंचिका—स्थूलजीरकम् । सू. २७–३०४

कुलकं—(१) कारवेल्लकम् । चि. ३–१८७
(२) कारवेल्लकः केचित्तु कुलकं पटलभेदमाहुः ।सू. २७–९४

कुवलम्—स्थूलबदरी । सू. २५–४८

कूष्माण्डः—सर्पच्छत्रम् । २७–९८

कृतवेधनं—ज्योत्स्निका ॥ सू. १–८२

कृतमालः—सुवर्णहलिः । सू. ४–१४

केलुटं—केलुटे हारितवचनं ‘ केलुटं स्वादु विटपं तत्कन्दः स्वादुशीतलः ’ इति । सू. २७–११०

कैटर्य—पर्वतनिम्बः । सू. ४–४८

कोविदारः—स्वनामप्रसिद्धः ।

क्रौञ्चादन—घिंचुलिका । सू. २७–११३

—ख—

खराश्वा—(१) कृष्णजीरकम् ॥ सू. २७–१६७
(२) अजमोदा । सू. २३–१९
(३) अजमोदा । चि. २१–५८

खण्डिका—त्रिपुटकलायः ॥ सू. २७–२७

खुरकः—स्यन्दनः किं वा कोकिलाक्षः । चि. २३–२४२

—ग—

गण्डीरः—शमठशाकम् । सू. ४–१५

गवेधुकः—(१) घुलुंचः । स ग्राम्यारण्यभेदेन द्विविधः । सू. २७–१६

(२) घुलुंचः । सू. २–२३

गन्धफली—प्रियङ्गु । चि. २३–५९

गाङ्गेरुकं—नागबलाफलम् । सू. २७–१३८

गुन्द्रा—गुलुंच । सू. ४–१७

गृंजनकः—(१) स्वल्पनालपत्रः पलाण्डुरेव । सू. २७–१७९

(२) लोहितपलाण्डुः । चि. १७–१२८

(३) रसोनकः किंवा गृंजनकं शोभांजनम् ॥ चि. १२–६०

गोजिह्वा—दार्विपत्रिका । सू. २७–९३

गोपी—शारिवा । वि. ८–१८

गोलोमी—(१) भूतकेशः । सू. ४–४८

(२) श्वेतदूर्वा । शा. ८–६०

(३) नाकुली ॥ चि. १०–३१

—च—

चतुरंगुल—स्वर्णहाली ॥ सू. ३–१९

चंचुः—नाडीचाः । चि. १९–३५

चंडा—(१) चोरहुली ॥ सू. ४–३७

(२) चोरपुष्पी । सू. ३–६

चारुकः—शाणबीजं । सू २७–१७

चारटी—कुंभः । ब्रह्मयष्टिका इत्यन्ये ॥ चि. ९–५५

चिल्ली—गौडवास्तुकम् ॥ सू. २७–९५

चिवुपर्णी—नाडीपर्णी जालन्धरं शाकं ॥ चि, १४. ११४ थी १२५

चित्रा—(१) दन्ती । सू. ४–४

(२) गोरक्षकर्कटी तद्बीजमिह । सू. १३–१०

यदि वा चित्रा लोहितएरण्डः ॥

चुक्रिका—चाङ्गेरी । चि. १५–११२

चुचुपर्णिका—नाडीयभेदः । सू २७–९६

चोरकः—(१) चोरपुष्पिका स्वनाम प्रसिद्धः । सू. ३–२२

(२) चंडालकः । चि, ९–५५

—छ—

छत्रा—(१) कोकिलाक्षः । वि. ८–२०/१

(२) मधुटिका । चि. ९–५६

—ज—

जटिला—उच्चटः । सू. ४–२०

जम्बीरः—पर्णासभेदः । जम्बीरफलं सुगंधि । सू. २७–१६२

जलपिप्पली—जले पिप्पल्याकारा स्यात् ॥ सू. २७–१६६

जातुशाकं—वंशपत्रिका सू. २६–८६

जीवन्ती—(१) सुवर्णनाला । स्वमान प्रसिद्धा ॥ सू. ५–६१

(२) स्वनामख्याता । सुवर्णवर्णाभा । सू. ४–१

जीमूतः—(१) पीतघोषकः । क. २–१

(२) घोषकभेदः । सू. १–८२

जूर्णाह्वः—जोनार इति ख्यातः । सू. २७–१७

ज्योतिष्मती—कांगणिका । चि. २–२५.४

—ट—

टङ्कः—काश्मीरप्रसिद्धम् ॥ सू. २७-१३२

—त—

तरुटः—कल्हारकन्दः । सू. २७–११३

तिन्दुकं—केन्दुः । सू. २७–१४३

तिलपर्णिका—हुलहुलिका । सू. २७–९३

त्रिपर्णी—हंसपादिका । सू. २७–९९

तृणशून्यं—(१) केतकीफलम् । सू. २७–१४१

(२) केतकी । २५–४८

तूदं—औत्तरापथिकफलम् । सू. २७–१३१

तेजस्विनी—तेजोवती । वि. ८–२०/४

तोदनं—धन्वनभेदः । सू. २७-१३८
अन्ये तु तोदनं वामप्रियफलं आहु । वारणात्मिकेति दाक्षिणात्येषु ख्यातमित्याहुः । टिप्पणी

—द—

दर्भः—उलुयातृणम् । सु. ४-१७

द्रवन्ती—(१) दन्तीभेदः । सू. २–८

(२) द्रवन्त्येव चीरितपत्रा । सू. १–७८

द्वारदा—(१) शाकतरुः । वि. ८–२०/१

(२) शाकतरुः कपिकच्छुः वा । चि. १ चतुर्थपादः रुद्रोक्तरसायने

द्वीपा—कण्टकारी । द्वीपो शरुरितिपाठे शतावरी देया ॥ वि. ८–१८

—ध—

धन्वयासः—दुरालभा । सू. ४–१२

धामार्गवः—पीतघोषकः । क ४–१

धामार्गवः—पीतघोषकः । सू. १–८२

धावनी—कण्टकारी । चि. ३–१८४

ध्यामर्क—गन्धतृणं । सू. ५–१८

—न—

नतं—तगरपादिका । तदभावे शीउलीच्छोप गुडको गृह्यते । स. ३–२१

नता—प्रियङ्गुः चि. २६–११४

नन्दीतकः—कर्परनन्दी ॥ चि(?) २६–११४

नलिनं—(१) पद्मभेदः । चि. ३–२५४

(२) श्वेतमष्टदलपद्मम् । सू. २५–४८

नलिनी—पद्ममृणालम् ॥ सू. २७–९८

नाकुलीद्वयम्- रास्नाद्वयम् । चि. ९–५६

नाकुली—रास्ना । चि. २३–९५

नागदन्ती—काष्ठपाटला ॥ चि. १०–३९

नाडी—नाडीचः । सू. २७–९३

नालिका—गोनाडीयः । सू. २७–९७

नारी—नारी नाम औषधिः अश्वबलेति विज्ञायते या बल्वजसदृशपत्रा ॥ मूलं । चि. १ पा ३८३

नान्दीमुखी—यत्रिका ॥ सू. २७–२१

निचुलः—(१) हिज्जलमिति प्रसिद्धः । सू, २–८

(२) हिज्जलः । चि, १८–१८

निष्पावः—बल्ल । सू. २७–३१

नीला—नीला नाम औषधि स्तु नीलक्षीरपुष्पो लताप्रतानबहुला ॥ मूल. चि. १ पा. ३८३

नीलिका—नीलबुह्य । सू. २–७

नीवारः—ओडिका । सू. २७–१६
नन्दीमाषकः—उन्दीमानक इतिख्यातः ।। सू. २७–११०

—प—

प्रत्यक्पर्णी—मूषिकपर्णी । क. ११–१२
पद्मा—(१) ब्राह्मणयष्टिका ।। सू. ४–३१
(२) नाम ओषधिः पद्माकारा पद्मरक्ता पद्मगन्धा च ।। (मूल) चि. १ पा. ३८३
प्लक्षः—अल्पदीर्घपत्रः । चि. ११–८४
पत्तूरः—(१) सार्लिचिका । चि. २६–४४
(२) शार्लिंच ।। सू. २७–९६
प्रत्यक्श्रेणी—दन्ती ।। सू. १–७१
प्रत्यक्पुष्पी—अपामार्गः । सू. १–८४
प्रकीर्या उदकीर्या—करंजद्वयम् ।। सू. १–८१
पलंकशा—गुग्गुलुः जटामांसी वा ।। सू. ४–१८
पयस्या—(१) क्षीरकाकोली विदारीकन्दो वा । सू. ४–७
(२) विदारीकन्दः । सू. ४–२
प्रशातिका—(१) उडिकेति प्रसिद्धा । सू. २१–२९
(२) औडिकैव स्थलजा रक्तशूका ।। सू. २७–१६
पद्मम्—सरक्तमष्टदलपत्रम् । सू. २५–४८
पर्वपुष्पी—कुक्कुटी । सू. २७–१०४
पर्वणी—पर्वशाकं ।। सू. २७–१०४
पंचांगुल—चित्रैरण्डः ।। सू. २७–१०५

पालिन्दी—श्यामकन्दा ।। सू. ४–१६
प्रा[illegible]—पानीयामलकम् सू. २७–१४२
पापचेलिका—पाठा । चि. ३–१८३
पियालः—पियालोऽयम् मगधप्रसिद्धः ।। सू. २७–१९३
प्रियङ्गु—(१) कायमीति प्रसिद्धा ।। सू. २७–१६
(२) पुन्नागिति ।। चि. ४–७३
पिण्याकः—तिलकल्कः ।। निघण्टुकारस्तु आह "पिण्याको हरितशिग्रुः" सू. २७–४ टिप्पणी
पीलु—(१) औत्तरापथिकंफलम् । सू. २, २
(२) औत्तरापथिकं । सू. २७-१४१
पीलुपर्णी—(१) मोरटकः ।। सू. २७–९९
(२) मोरटः रास्नाभेदः इत्यपरे ।। चि. २७–३९
पुण्डरीकं—श्वेतशतपत्रं पद्मम् सू. २५-४८
पूतना—हरीतकी ।। चि. ९–९५
पूतीकः—कण्टकीकरञ्जः ।। सू. १–११४
पूतनाकेशी—गोलोमीत्युच्यते ।। चि. १०–३१
पृक्का—सौराष्ट्रिका ।। चि. २३–५२
पृश्निपर्णी—वर्तुलपत्रा सिंहपुच्छी । सू. २–१८
पृथ्वीका—कृष्णाजीरकम् ।। सू. ५–१७
पोटगुलो—होगुलः । सि. १०–१३थी४७
पोटगलो—होगलः । वि. ८–१८

—फ—

फणिज्जकः—पर्णासभेदः ॥ सू. ३-२

फंजी—ब्राह्मणयष्टिका ॥ सू. २७-९५

—ब—

बल्यं—कवर्तमुस्तकः ॥ चि. २१-७३

ब्रह्मसुवर्चला—या हिरण्यक्षीरा पुष्करसदृशपत्रा । (मूलं) चि. १ पा. ३८३

बिम्बी—ओष्ठोपमफला ॥ सू. १-७६

बिसं—करहाटः । वि. ८-२०/६

बिल्वपर्णी—बिल्वार्जकम् ॥ सू. २७-१८३

बुका—गन्धनाकुली ॥
रास्नाभेदः ॥ चि. ३-२६३

—भ—

भद्रश्रियं—श्वेतचन्दनम् ॥ चि. ३-२५४

भण्डी—स्वनामख्याता ॥ सू. २७-१८४

भव्यं—कर्मरंगफलं, केचित् त्वक् संहतिफलं वदन्ति ॥ सू. २७-१२७

भद्रपर्णी—भादाली ॥ वि. ८-१८

भद्रौदनी—पीतबला ॥ सू. ४-२

भारद्वाजी—वनकार्पासी । सू. ४-२, वि. ८-२०/१

भीरु—जालान्धरं शाकम् ॥ वि. ८-२०/१

भूतीकः—यमानिका ॥ सू. ४-४२

—म—

मधुवल्ली—यष्टिमधुभेदः ॥ वि. ८-२०/१

मकुष्टकः—मोठ इति ख्यातः ॥ सू. २७-२६

मण्डूकपर्णी—मणिमणि ख्याता ॥ थानकुनी ख्याता इति पाठः ॥ (टिप्पणी) सू. २७-९२

मधुली—गोधूमभेदः ॥ सू. २७-२१

मधूलकः—गोधूमभेदः ॥ सू. २७-१८९

मधूलिका—मर्कटहस्ततृणम् ॥ वि. ८-२०/१

मधुकपुष्पी—मधुकभेदः ॥ वि. ८-२०/१

मधुपर्णी—(१) गुडूची ॥ चि. २६
(२) विकंकतम् ॥ चि. २९-७१
(३) विकंकतम् ॥ वि. ८-२०/१

मसूरविदला—श्यामलता ॥ क. ११-१२
वि. ८-१९

महाश्रावणी—(१) अलंबुषा । वि. ८।२०/१
(२) अलंबुषा शीतपुष्पा ।
इन्द्रोक्त रसायन ॥ चि. १

महापत्रः—श्योनाकः ॥ चि. १४-११४ थी १२९

मर्कटी—शूकशिंबा ॥ चि. ९-५५

महापुरुषदंती—शतावरी ॥ चि. ९-५

मत्स्याक्षको—मच्छुरिति लोके ख्यातः । अन्ये तु ऐन्द्रीभेदं मत्स्याक्षकमाहुः ॥ ऐन्द्रीरसायनं ॥ चि. १

महाश्वेता—अपराजिताभेदः कटभी वा ॥ सू. ४-२७

माठीकः—देवदारु ॥ वि. ८-२०/५

मुकुन्दः—वाकसतृण इति लोके ॥ सू. २७-१७

मुक्ता—रास्ना ॥ भू. ४-५०

मूषकपर्णी—तिलपर्णी ॥ चि. ३-२६३

मूषिकपर्णी—पुंजीपत्रेति ख्याता ॥ चि. १२-१९

मूलकपर्णी—शोभांजनम् ॥ वि. ७–२४
मृष्टम्—राजिका ॥ सू. २७–१६५
मृणालम्—चेतसः सुगन्धि। चि. ३–२५४
मृणालनाडिका–वि. ८–२०/६
मृगलिण्डिका—बिभितकम् । सू. २५–४८
मोरटं—मूर्वा ॥ वि. ८–२०/१
मोरटा—मूर्वाइति अन्ये ॥ चि. ३–२१३

—य—

यवशाकं—क्षेत्रवास्तुकम् ॥ सू. २७–९८
यातुकः— शुक्ला शालपर्णी ॥सू. २७-९९
युंजातकः—औत्तरापथिककन्दः ॥ सू. २७ ११३
युवती—नवमालिका । चि. १–५८

—र—

रक्तमूली—समंगा ॥ सि. १०–१२थी४७
राजादनं—(१) क्षीरिका ॥ क. ६–५
(२) वेक्षुलिकीति ख्यातम् ॥ वि. ८–२०/१
राजक्षवकः—दुग्धिका ॥ सू. ४–२, सू. २७–८७
रुहा—वृक्षरुहा रोहाञ्जलिकारिका ॥ चि० ३–२६३
रोहिषो–वामकर्पूरः ॥ चि. ३–२६३

—ल—

लता—(१) मंजिष्ठा । सू. ३–२९
(२) श्यामदूर्वा ॥ सू. ४–८
लक्ष्मणा—स्वनामख्याता ॥ सू. २७–९८
लिलिरकः—पाषाणभेदः ॥ चि. ७ कुष्ठे
लोट्टाकः—लोट्टामारिषः । सू. २७–९७

—व—

वन त्रपुषी—बृहत्फला गोडुंबा ॥ वि. ८–२०/१
वरांगं—गुग्गुलुः । चि. ७–७८
वयस्था—सूक्ष्मैला ॥ चि. ९–५६
वशिर—सूर्यावर्तः ॥ सू. ४–३९
वसुकः—वसुहट्टकः अत्र जतूकर्णपठित एलवालुक कट्फलस्थाने ॥ सू. ४–२०
वरकः—सामबीजम् ॥ सू. २७–१७
वनतिक्तकं—पथ्यसुंदरं । सू. २७–९२
वार्ताकं—दक्षिणापथे फलवत् खाद्यते ॥ सू. २७–१५७
व्याघ्रनखा—नची ॥ चि. १२–६९
वाट्यपुष्पी—पीतबला ॥ शा. ८–२१
वाटचायनी—श्वेतबला ॥ सू. ४–२
विदुलः—हिंज्जलः ॥ सू. ४–२३
विश्वक्सेनकान्ता—प्रियङ्गुः । सू. ४–४९
विषाणिका—आवर्तनी ॥ सू. १–७६
वीरा—(१) जालन्धरं शाकम् चि. १ च्यवनप्राशे
(२) विदारीकन्दः ॥ चि. २१–७७
(३) क्षीरकाकोली ॥ शालीपर्णीति अपरः ॥ चि. ९–९५
वृश्चिकाली—पथ्या ॥ चि. १०–३१
वृश्चीरः—श्वेत पुनर्नवा ॥ सू. अ. ४–२२

वृक्षरुहा—शतावरी ॥ सू. ४–१९
वृक्षादनी—वन्दाको (वन्दारीक) वा ॥ सू. ४–३५
वृकधूमकः—भूमिशिरीषः ॥ सू. २७–९७
वृक्षाम्लं—महार्द्रकम् । सू. २७–१४७

—श—

शताह्वफलं—शरका इति ख्यातम् ॥ सू. २७–१४१
शतपत्रं—अरुणकम् ॥ सू. २५–४८
शतवीर्या सहस्रवीर्या—दूर्वे ॥ सू. ४–४९
शल्लकी—स्वनामप्रसिद्धा ॥ सू. ४–१२
शताह्वे—शतपुष्पा मधुरिके इति ॥ सू. ३–२३
शणपुष्पी—घण्टारवः ॥ सू. १–७६
शतपर्वा—श्वेतदूर्वा ॥ चि. ३–२५४
शंखिनी—(१) श्वेतबुह्ना ॥ सू. १–८० सू. ४–४
(२) श्वेतभल्लातको चि. १३–१२१
शाल्मलकः—शाल्मलीभेदः रोहितको वा । क. ६–५
शाल्मली—शिमली आटा ॥ सू. ४–१३
शाल्मलिकः—रोहडकः स्वल्पशाल्मलिर्वा । वि. ८–१८
शालेयः—चाणाक्यमूलं मरौ प्रसिद्धम् । सू. २७–११५
शाद्वलं—दूर्वा । चि. २१–७४
श्यामाकः—तृणविशेषः ॥ सू. २–२४
शालकल्याणी—शालिञ्चीभेदः ॥सू.२७–९९
श्याह्वः—नवनीतखोटिरिति प्रसिद्धः ॥ सू. ३–१
शार्ङ्गेष्टा—(१) काकतिक्ता ॥ सू. २७–९२
(२) गुंजा ॥ चि. १८–६९
(३) गुंजा ॥ वि. ८–१८
शार्ङ्गेष्टा काकजंघा विकसवनीति लोके, काकमाचीत्यन्ये । अन्येतु शार्ङ्गेष्टा-काकतिक्ता गौरवर्तुलावगुंठितचिरपोटिकेति प्रसिद्धम् ॥ झझरुषकेति पूर्वदेशे काकादनीत्यपरे सा च गुंजा इति प्रसिद्धेति निघण्टुः ॥ (टिप्पणी)
शिबिरं—तीरभुक्तौ सिद्धक इत्युच्यते । सू. २७–१७
शिता—श्वेतदूर्वा ॥ सू. ४–८
शितिमारकः—शालिञ्चः । चि. २६–५४
शीतपाकी—शीतला वि. ८–२०/१
शीतकुम्भिका—काष्टपाटला॥ चि.३–२५४
शीतकः—अम्बुलोठकः ॥ वि. ८–२०/२
शीतपर्णी—वृक्षफलः चि. ३–२६३
शुकबर्हं—ग्रन्थिपर्णकम् ॥ सू. ५–१९
शुषा—कासमर्दः सू. २७–८५
श्रृंगवेरी—गोजिह्विका किंवा आर्द्रकाकृतिः श्रृंगीवेरी ॥ सू. २७–११९
श्वेतनामा—श्वेतापराजिता सू. १–७६
श्वेताद्राक्षा—काश्मीरभवा ॥ चि.२४–१७६
श्रेयसी—(१) रास्ना । चि. १८–१५९
(२) सा रास्नाभेदः । सू. ४–१०
(३) हस्तिपिप्पली॥ चि.१०-१८

शताविष [illegible]—शतावरी । चि. १०—२९
शौस्वरिकः—विडंग । वि. ७–२२

—स—

सतला—चर्मकषा । सू. १–७६
सप्तपर्णः—पंचालसार्ः । वि. ८—२०/५
समंगा—(१) वराहक्रान्ता ॥ सू. ४–५
(२) वराहक्रान्ता लज्जालुरिति । चि. ४—७४
संवर्तकः—बिभीतकः । चि. ३–२५४
संहर्षा—वन्दाकः । वि. ८–२०/१
सर्पा—सर्पा नाम औषधिः सर्पाकारा॥ (मूल) चि. १–पा ३८३
सहचरः—झिण्टिकी । वि. ७–२५
सदापुष्पी—रक्तार्कः ॥ वि. ८–१८
सलोमशः—कासीसं तमालपत्रं वा ॥ सू.३–२
स्वर्णक्षीरी—अंगुष्टप्रभा ॥ सू. ४–४
सर्पच्छत्रं–सर्पफणाकारं छत्रकम् । सू.२७-१२०
स्वादुकंटकं—विकंकतम् ॥ चि. २७–३१ थी ३६
सुवर्णक्षीरी—सूर्यमण्डलाकार पुष्पी ॥ मूलं चि. १ पा. ३८३
सुरभी—(१) शूकशिम्बा ॥ सू. ५–६२
(२) पर्णासभेदः॥ चि. ३३–२३९
सुराह्वा—मोरक्षकर्कटीका ॥ चि. १४–१३८ थी १६८
सुवहा—रास्ना हाफरमाली वा ॥सू. ४-११
सुषवी—कारवेल्लकः । वि. ८–१८
सुवर्चिका—सूर्यावर्तः ॥ चि. १२–६०
सुवर्चला—सूर्यभक्तिका ॥ केचिन्नफलकमाहुः सू. २७–९६

सूर्यावर्तभेदः अन्ये तु मारिषसदृश नालमार्त्तगलसदृशपत्रं लम्फलकमाहुः इति शिवदासः॥टिप्पणी
सोमः—सोमोनाम औषधिराजः पंचदश पर्वा स सोम इव हीयते वर्धते च ॥ मूल चि. १ पा. ३८३
सौमनस्यायनी—जातिकलिका जातिकोषी वा ॥ वि. ८–१८

—ह—

हरेणुका—रेणुका । सू. ५–१७
हरेणवः—वर्द्धनकलायः । चि. २१–७६
हस्तिदन्ती–बृहत्फला गोडुम्बा नागदन्ती भण्यते इत्येके ॥ सू. १–७६
हस्तिपर्णी–मोरटः । अस्याश्च शरत्कालभव मेवफलं ग्राह्यं अत उक्तं "हस्तिपर्ण्याश्च शारदम् ॥" इति । सू. १–८३
हस्तिश्यामाकः–श्यामाकभेद एव। सू. २७-१६
हिंगुशिवाटिका–वंशपत्रकम् । चि. १०-३४
हिंगुपर्णी–वंशपत्रिका । चि. ९–६७
हेमदुग्धा–स्वर्णक्षीरी ॥ क. १२–२१
हेमकाला–मंजिष्ठा । चि. २९–११४

—क्ष—

क्षीरशुक्ला–त्रिवृत् । वि. ८-२०/१
क्षीरिणी—(१) अम्बिका । चि. १९-३४
(२) क्षीरलता । सू. ४–२
(३) दुग्धिका । सू. २१–७७
क्षुद्रसहा–कुमारी । वि. ८–२०/१
क्षुद्रा–कोकिलाक्षः ॥ क. ७–१५
क्षेनकः–चोरकः ॥ चि, ३–२६३

सुश्रुत निरुक्तम्

(श्री डह्लनाचार्य[illegible]त निबंधसंग्रह व्याख्याव[illegible]ः उद्धृतम्)

—अ—

अक्षः—बिभीतकः चि. ३, उ. ५८

अक्षं—बिभीतकम् चि. ९, उ. ४१, उ. ५७

अक्षपीडः—यवतिक्ता चि. ९

अक्षोटः—उत्तरापथे 'आखरोट्' इति प्रसिद्धः सू. ४५

अक्षोडः—मदनफलाकारफलः मध्ये किंचिदुन्नतरेखान्वितः पर्वतपीलुः 'आखरोट्' इति लोके । सू. ४६

अग्निः—(१) चित्रकः उ. ४४,५१,५२
(२) चित्रकः, अजमोदा इति अन्ये उ. २३

अग्निकः—(१) अजमोदा उ. ९,२४, ५३,५५
(२) कलिकारिका, अन्ये भल्लातकमाहुः । सू. ३७
(३) अजमोदः मोरट इत्यन्ये।क२.
(४) चित्रकः, 'अग्निमन्थ' इत्यन्ये 'मोरट' इति अपरे उ.४२

अग्निमंथः—(१) अरणी सू. ३७
(२) 'अग्निवधू' इति लोके। सू.३८
(३) तेजोवृक्षः पूर्वदेशे 'अगेथु' इति प्रसिद्धः सू. ३८
(४) तेजोवृक्षः 'अंगेशूर' इति लोके । सू. ३८
(५) सर्जोवृक्षः, 'अग्निवधू' इति पूर्वदेशे प्रसिद्धः । सू. ३९

अगवृत्तिका—शल्लकी । क. ७

अगस्त्यः—'अगथीया' इति लोके । सू. ४६

अगुरु—स्वनामख्यातं। सू. ३८

अजकर्णः—(१) सर्जः । चि. २०
(२) सर्जः पूर्वदेश प्रसिद्धः। चि. ११
सर्जः पूर्वदेशे प्रसिद्धः। क, १
(३) महासर्जः 'गंधमुण्ड' इति लोके । चि. २७, चि. ९
(४) सर्जः सालभेद एव।सू. ३८
(५) 'पियासाल' इति लोके। चि. १९
(६) शवकर्णः प्रसिद्ध एव पूर्वदेशे । चि. ३१

अजगंधा—(१) बोथयिका, लतौषधीत्येके, अन्ये यवानिकामाहुः।सू.३७
(२) जवानिका, बोथइ इत्यन्ये सू. ४४
(३) बोविका चि. १८
(४) बोवयिका उ. ४२
(५) 'चोवका' इति भाषा, गयी तु 'क्षेत्रयवानी' इति आह । चि. ५

अजमोदा—स्वनामख्याता, अन्ये यवानिकामाहुः। सू. ३८

अजरुहा—अजरुहालक्षणमुशनसा प्रोक्तम्:—" कंदः श्वेतः सपिंडको मेदे चाञ्जनसन्निभः। गंधलेपन पानैस्तु विषं जरयते नृणाम्॥ दष्टानाम् विषपीतानां ये चान्ये विषमोहिताः। विषं जरयते तेषां तस्मादजरुहा स्मृता॥ " इति क. १

अजलोमी—श्वेतदूर्वा उ. ६०

अजश्रृंगी—(१) मेढिकः, कर्कटश्रृंगीत्यपरे सू. ३८

(२) कर्कटश्रृंगी, उत्तमारणीत्यन्ये। उ. ३१

(३) कर्कटश्रृंगी, अन्ये ' अजमेढिका ' इति लोके। सू. ३७

(४) छगलविषाणिका, उत्तमारणी ' मेण्डिका ' इतिलोके सू.३८

(५) छागलविषाणिका, उत्तमारणीति लोके, गर[illegible]र्येण कर्कटश्रृंगी व्याख्याता। चि. १७

(६) विषाणिकेत्यपरे सू. ४४

अजा—अजगंधा ' वोव ' इति लोके चि.१७

अजाजी—उत्तरापथे प्रसिद्धः जीरकविशेषः उ. ४२, उ. ४७

अणुः—अश्मन्तकः उ. १९

अतसी—अलसी इति लोके प्रसिद्धा सू. ३७

अतिगुहा—शालिपर्णी क. ८

अतिबला—कंकतिका क. ८

अतिविषा—श्यामाभेदः उ. ४०

अतिमुक्तकः—(१) अवान्तकः सू. ४५

(२) माधवीलता, ' अवेतक ' इति लोके उ. ६०

(३) तिंदुकः चि. ३०

अतियवाः—निःशूकाः कृष्णारुणयवाः एव सू. ४६

अनन्ता—(१) सारिवा उ. ३३

(२) उत्पलसारिवा सू. १६; शा. १०; क. ६; चि. ३, ११, ३८; उ. १०, २४, २९, ३६, ६२.

(३) दुरालभा सू. ३७, उ. ३९

(४) लाङ्गलिका ' कलिकारि ' इति लोके सू. ४६

अपरलता—प्रियंगुः शा. १०

अपामार्गः—शिखरी, ' अन्धकुडक ' इति लोके

अपेहिवाता—प्रसारणी चि. १८

अब्दं—मुस्तं उ. ४०, मुस्ता उ. ५२

अब्जकेशरम्—पद्मकेशरम् उ. ४०

अभया—(१) हरीतकी उ. ६२

(२) हरीतकी, केचिदभयं मन्यन्ते तन्मते उशीरम् उ. ५७

अभिषुकः—अभिषुरिति लोके सू. ४६

अभीरुः—शतावरी चि. ३८, उ. ४२

अमरकाष्ठम्—देवदारु उ. ११

अमरदारुः—देवदारुः चि. ३७, उ. ३९

अल्लवणा—(१) काकमर्दनिका चि. १७
(२) ज्योतिष्मती वर्तुलपक्वरक्तफला; पीततैला 'काकमर्दनीका' इति लोके प्रसिद्धा। सू. ३८

अल्लसान्द्रः—राजमाषः सू. ४६

अलाबुः—(१) तिक्तालाबुः क. १
(२) तुम्बिनी सा च दीर्घवर्तुलादिभेदादनेकधा। सू. ४६

अवगुत्थं—वेगनामा काकादनीत्यर्थः सू.४६

अवल्गुजः—'बाकुची'ति लोके सू. ४६

अवल्गुजफलं—बाकुचीबीजम् सू. ४२

अवल्गुजा—बाकुची चि. २८

अशनः—बीजकः उ. ४५

अशुक्लचंदनम—रक्तचंदनम् उ. ५०

अशोकः—(१) स्वनाम प्रसिद्धः उ. १७
(२) लोहितकुसुमः स्वनामख्यातः सू. ३८

अशोकरोहिणी—कटुका सू. ४२

अश्मभित्—पाषाणभेदः उ. ५९

अश्मभेदः—पाषाणभेदः उ. ५८

अश्मभेदकः—पाषाणभेदकः सू. ३८

अश्मन्तकः—(१) अम्लोटकानुसारी क. ५
(२) अम्ललोटः कोविदारसदृशपत्रकः। चि. ७
(३) अम्लोटक सदृशो वृक्षः। सू. २९
(४) कोविदारसदृशः अम्लपत्रः 'अम्ललोटक' इति लोके। शा. १०
(५) यमलपत्रकः, आसम्त इति लोके सू. ४६

अश्वकर्णः—(१) गर्दभाण्डः उ. ३१
(२) शल्लकी उ. ४२
(३) सर्जभेदः क. ६
(४) पूर्वदेशे प्रसिद्धः क. ६
(५) पूर्वदेशे गंधमुण्ड पिप्पल सदृशः सू. ११
(६) पूर्वदेशे गंधमुण्डो अश्वत्थसदृशः। सू. ४६, चि. ९, क. २
(७) पूर्वदेशप्रसिद्धः अश्वत्थ सदृशः चि. २/१९
(८) पूर्वदेशे 'गंधमुण्डा' इति ख्यातः अश्वत्थ सदृशः चि. २१

अश्वगंधा—प्रसिद्धा सू. ३७

अश्वत्थः—पिप्पलः सू. ३८

अश्वबला—(१) हिस्फोत्थः मेथिका भेदः चि. ६
(२) उपोदकी, ब्रह्मदेवस्तु अश्वबलां उपवनभूमौ मेथिकाकारं वृक्षं कथयति। चि. १
(३) मेथिकेत्यन्ये, तन्न, अश्वबला तुरस्कदेशे बृहत्पत्रमेथिकाभेद एव 'हिस्फित्था' इति लोके, तन्त्रान्तरे मेथिका हिस्फित्थ-

योः पृथग्गुणनिर्देशः कृतः–
" वातपित्तहरा तिक्ता लघ्वी
श्लेष्माविरोधिनी । मेथिका
तत्समं किंचित् हिस्फिरथं पु-
ष्टिदं गुरु ॥ " सू. ४६
अश्वमारकः—करवीरः सू. ३८, चि. ८
असनः—(१) बीजकः क. ३; चि. ११;
उ. १८, ४१
(२) बीजकः पूर्वदेशे प्रसिद्धः
कटाख्यः स्वनाम प्रसिद्धः ।
सू. ३८
असनसारः—बीजकः उ. ५८
असरला—अरुणमूला त्रिवृत सू. ३७
असितमुष्ककं—कृष्णपुष्पमोक्षकम् सू. ११
असितसारिवा—श्यामोलता उ. १२
अहिपुष्पम्—नागकेसरम् चि. १७
अहिंस्रा—वृहदहिंस्रा सू. ३७

आ

आक्षिकं—अक्षिकीफलम् सू. ४६
आटरूषकः—वासकः सू. ४६
आढकी—तुवरी सू. २१,४६
आत्मगुप्ता—(१) कपिकच्छुः सू. ३७,४६
उ. ६२
(२) कपिकच्छूकः चि. ३८
आदारि—वेल्लन्तरसदृशपुष्पा लोहितफला
च, कार्तिककुण्डस्तु आदारिशिं-
बी आउळीरिति प्रसिद्धा इति
व्याख्यानयति । उ. ४४
आदित्यपर्णी—सूर्यावर्तः चि. १५

आमयम्—कुष्ठम् उ. ३९
आम्रातकं—आम्रफलसदृशम् आम्राटकमिति
लोके सू. ४६
आमिषम्—गुग्गुलुः चि. ३७, उ. ६१
आरग्वधः—(१) किरमालकः सू. ३८,
चि. १८
(२) कृतमालफलम् उ. ३९
(३) कृतमालकः चि. ८
आरेवतः—(१) आरग्वधः उ. १२
(२) किरमालकः सू. ३८;
चि. ९,२०
आरेवतकः—किरमालकः चि. ५
आरेवतफलम्—किरमालकफलम् उ. ५५
आर्तगलः—(१) ककुभः उ. ९३
(२) नीलसहचरः उ. १७
(३) कण्टकफलो जलमुक्तदेशजः,
'ककुभ' इत्यन्ये । उ. ९
(४) ककुभः, केचिदार्तगलं कंट-
कीवृक्षमाचक्षते । स. ३९
(५) ककुभः सुगंधमूलं 'कौहा'
इति नाम्ना पूर्वदेशे प्रसिद्धः
सू. ३८
(६) ककुभकः सुगंधिमूलः 'कौ-
हा' इति नाम्ना पूर्वदेशे
प्रसिद्धः, अन्ये तु आर्त-
गलः कुरबक इत्याहुः बहिः
केशरः कण्टकितफलो वि-
टप इत्यन्ये । चि. ७
आर्द्राकुस्तुम्बुरी—इति पुष्पफलोपेता हरित

धान्यविटप आर्द्राकुस्तुम्बु-
रीति उच्यते । सू. ४६
आलुकं—पिण्डालुकादिभेदेन अनेक प्रका-
रम् । उ. ४२
आसनः—बोजकः सू. ४६
आसुरी—राजिका सू. ४६
आस्फोता—(१) सारिवा सू. ११; चि. ६,
९, १८; उ-३२
(२) सारिवा, अर्को वा उ-३९

इ

इक्षुरकः—(१) तालमखाना चि. ४
(२) कोकिलाक्षः (कः) उ. ५८
(क. ६)
इक्ष्वाकुः—(१) कटुतुम्बी चि. ३०, उ-५५
(२) कटुकालाबुः सू. ३९
(३) तिक्तालाबुः उ. ४७
इत्कटः—खगली सू. २१
इन्द्रपर्णी—इन्द्रवारुणी चि. १७
इन्द्रयवः—कुटजफलम् सू. ३८
इन्द्रवृक्षः—कुटजः उ. ५७, उ. ६१
इन्द्रसुरा—इन्द्रवारुणी चि. ३७, उ. ११
इन्द्रा—इन्द्रवारुणी क. १
इन्द्राह्वः—कुटजः चि. ३८
इन्दीवर—(१) अपि तद्भेदः (कुरंटिकाभेदः)
दीर्घपत्रो बहुलपुष्पः । सू. ३८
(२) शरबालिका भेदः दीर्घपत्रः
बहुलपुष्पः । चि. ७
(३) कर्णपूरकाख्यो महापुष्पः
शरबालिकाभेदः । अन्ये
नीलोत्पलमाहुः । चि. ७
इभकणा—हस्तिपिप्पली उ. ५२
इंगुदी—(१) कंटकिवृक्षः प्रसिद्धः, अन्ये
पुत्रजीवकमाहुः । सू. ४९
(२) इंगुकः, पुत्रञ्जीवक इत्य-
न्ये । सू. ३९
इंगुदीत्वक्—इंगुदीवल्कलम् उ. ५२
इन्द्रपुष्पी—(१) लाङ्गलकी चि. १७
(२) कंटकी कृष्णपुष्पकरंजः,
कलिकारिका इत्यन्ये ।
सू. ३८
इन्द्रवल्ली—मत्स्याक्षकः, गण्डदूम इति लोके
उ. २८
इन्द्रवृक्षः—कुटज एव, द्विविधो हि कुटजः
बृहत्फलश्वेतपुष्पः स्निग्धपत्रः पुमान्
अणुफलवृन्ता श्यावारुणपुष्पा स्त्री ।
सू. ११

उ

उग्रा—वचा उ. २३, ४१, ५१, ६१
उच्चटा—श्वेतदूर्वारिका, स्वल्पविटपः प्रायशो
नदीतीरे दृश्यते । चि. २६
उडुम्बरी—भद्रनामा काकोदुम्बरिका महती ।
चि. ९
उत्कटः—महती खगाली चि. ७
उत्तमा—त्रिफला सू. ३७
उत्तमारणी—(१) योधामल्ली चि. ६
(२) उत्तमकरणी चि. १०
उत्पलम्—(१) स्वनामप्रसिद्धं सू. ४६

(२) नीलं उ. ४०

(३) ईषन्नीलम् सू. १३, उ. ३९

(४) नीलोत्पलम् सू. ३८, ४६; चि. २, ३८; क. १; उ. १७, ३०, ३९.

(५) नीलोत्पलम्, नागकेशरमपरे उ. ४५

(६) कुष्ठम् उ. ४३

(७) सौगंधिकम् सू. ४५

उदकीर्या—चिरबिल्वः सू. ३९

उद्दालः—आरण्यकोद्रवः चि. ५

उद्दालकः—(१) आरण्यकोद्रवः सू. १३, २०; चि. ९; शा. १०

(२) वनकोद्रवः सू. ४६

उदीच्यम्—बालकम् उ. ३९

उदुम्बरः—प्रसिद्धः सू. ३८

उन्दुरुकर्णिका—मूषिककर्णिका 'उन्दरी' इति लोके; उन्दुरुकर्णीम् द्रवन्तीमाहुरन्ये, अपरे दंतिनीमाहुः। सू. ३८

उन्मत्तः—धुस्तूरकः उ. २१

उपकुञ्चिका—स्थूलजीरकः ईषत्कृष्णो 'बृहज्जीरक' इति लोके। सू. ४६

उपकुल्या—पिप्पली उ. ५२

उपकुल्याद्वयम्—पिप्पली गजपिप्ली च इति उपकुल्याद्वयम् चि. ९

उपोदकः—'पोइ' 'पुंइ' इति वा लोके चि. १

उपोदिका—पोइ सू. ४६

उरुबूकः—(१) शुक्लैरण्डः सू. ४६, चि. ५ उ. ४२

(२) रक्तैरण्डकः सू. ४६, उ. ५१

(३) रक्तैरण्डः, शुक्लैरण्डमपरे उ.४२

उलुम्बकाः—सरसाः भृष्टयवाः चि. १०

ऊषणम्—(१) मरिचम् उ. १८

(२) पिप्पली उ. ५८

ए

एकैषिका—(१) शुक्लमूला त्रिवृत् सू. ३७

(२) अविद्धकरणी पाठेति लोके, त्रिवृदिति जेज्जटः। सू.४९

(३) शतावरी, अन्ये त्रिवृद्भेद माहुः। चि. १७

एरण्डः—स्वनामप्रसिद्धः सू. ३८

एर्वारुः—(१) ग्रीष्मकर्कटिका सू. ४९; उ. ३, ५५, ५८

(२) रोमशा कर्कटी सू. ४२

(३) लोमशा कर्कटी सू. ४६, चि. ३०

एलवालुकम् (१) स्वनामप्रसिद्धम् क. २, ६

(२) कुष्ठगंधिकम् उ. ३९

(३) हरिवालुकम् कृष्णगंधिक—फलसदृशम् सू. ३८

एलः—(१) सूक्ष्मैला उ. ४, ३९, ४७

(२) स्थूलैला क. ६

ऐङ्गुदम्—इङ्गुदीफलम्, अन्ये पुत्रञ्जीवकमाहुः। सू. ४६

ऐन्द्री—इन्द्रवारुणी, अन्ये श्योनाकभेदमाहुः। उ. ६२

ऐरावतः—नारङ्गम् उ. १२

(२) वंशांकुरम् सू. २०
(३) गूढपत्रः उ. १७
(४) मरुजद्रुमः स्वनाम ख्यातः सू. ४१
(५) मरुदेशेषु अतिप्रवृद्धो वृक्षविशेषः । नि. २
(६) गूढपत्रः मरुदेशेषु अतिप्रसिद्धः कंटकिवृक्षः उ. ५७

कर्चूरः—सटी सू. ३९

कर्कटाख्या—कर्कटशृंगी चि. २, उ. ५१

कर्कन्धु—अल्पं (बदरं) सू. ४६

कर्कारुः—(१) वाडवम् त्रपुसम् सू. ४५
(२) वाडवं त्रपुसम् 'खरवारू' इति लोके । सू. ४६
(३) वाडवं त्रपुसम् 'खेरसा' इति लोके । चि. ३०

कर्कोटकः—प्रसिद्धः सू. ४६

कर्दमकः—शालिभेदः । सातिशये पङ्के निष्पद्यते इति कर्दमकः लोकतोऽवगन्तव्यः । सू. ४६

कर्बुदार—(१) काञ्चनारः सू. ४५
(२) श्लेष्मातकभेदः सू. ४६
(३) श्लेष्मान्तकः 'बव' इति 'लिसोडा' इति च देशभाषया प्रसिद्धः । सू. ३९

कलभः— अंतर्वेद्यां कलविः इति लोके सू ४६

कलमः— शालिविशेष; कलंबिरिति लोके प्रसिद्धः सू. २०

कलशी—पृश्निपर्णी सू. ३८, उ. ३९

कलायः—(१) त्रिपुटः सू. १९, २१
(२) त्रिपुटकभेदः सू. ४६

कलिका—कालेयकम् उ. ५१

कलिंग—इन्द्रयवः उ. ५६, ४०

कशेरुकपिण्डालु— प्रसिद्धौ सू. ४६

कह्लारः—(१) रक्तोत्पलम् उ. २६
(२) रक्तोत्पलम् बृहत्पत्रिकेति लोके अन्ये सौगंधिकोत्पलम् सू. ३९
(३) सौगन्धिकोत्पलम् उ. ४७

क्रमुकः-(१) पूगफलम् सू. ३८, क ६, चि ११
(२) पूगः, वृक्षरोध्र इत्यन्ये, साराधिकारात् । सू. ३८

काकजंघा—एतन्नाम्ना प्रसिद्धा एव । चि. १९

काकणन्ती—गुञ्जा उ. ४०

काकणन्तिका—चिरिहिण्टिकेति लोके, काकादनीत्यपरे । नि. २

काकनन्ती—गुञ्जा चि. १८

काकनासा—वायसफला चि. १७

काकमाची—मृष्टफला स्वनामप्रसिद्धा । सू. ३८

काकाण्डफलं —अश्वकः, कपिकच्छुसदृशशिंबः काकाण्डः 'शूकरशिंबी' इति लोके । सू. ४६

काकादनी—(१) हिंस्रा सू. ३९
(२) काकहिंस्रा इति अर्थः चि. १९
(३) काकतिंदुकः उ. ४४
(४) काकतिंदुका उ. ३४

(५) काकतिंदुकः 'काला' इत्यन्ये। उ. ३२
(६) वायसतिंदुका, अल्पहिंस्रेत्यन्ये। चि. १८
(७) वायसतिंदुका चि. १४, उ. ५१
(८) कृष्णश्रीफलिका क. ७

काकाह्वयोदुम्बरिका—गोष्ठोदुम्बरिका उ.४७
काकोडुम्बरिका—काष्ठोडुम्बरिका चि. २२
काकोली—क्षीरी स्वनाम्ना प्रसिद्धा सू, ३८
काञ्चनक—धुस्तूरकः सू. ३९
काञ्चनक्षीर्यौ—द्वे, एकं कंकुष्ठम् अन्या पीतदुग्धा यवतिक्ता चि. ८
काणविकाणिके—काकोलीक्षीरकाकोल्यौ। उ. ६०
काण्डेक्षुकः—महती खगाली, अन्ये इक्षुमेवाहुः। सू. ३८
काम्बोजिका—कूविका, गयी तु माषपर्णीमाह। चि. १९
कारवी—कृष्णजीरकः उत्तरापथे प्रसिद्धा, कारवी यवानीत्येके, अजमोदेत्यपरे, अन्ये राजिकामाहुः। सू.४६
कार्पासी—(१) वनकार्पासिका, कार्पासविटपसदृशी सू. ३९
(२) वनकार्पासी उ. २१

कार्पासिनी—वनकार्पासिनी उ. ४७
कालमालं—बर्बरिका सू. ४६
कालमालः—कृष्णमल्लिका बर्बरिका इति लोके। सू. ३८
कालशाकम्—श्राद्धार्हम् सू. ४६
काला—(१) हिंस्रा चि. १८
(२) अहिंस्रा चि. ८, सू. ३७
(३) कटुहिंस्रा चि. १८
(४) कासमर्दः चि. १७
(५) कालानुसारिवा, श्रीपर्णिकामन्ये। उ. ५८

कालानुसार्यम्—(१) तगरमूलम् उ. १८
(२) तगरम्, शैलजमिति केचित्। सू. ३७

कालानुसार्या—(१) तगरम् चि. १७
(२) कालानुसारिवा क. ५

कालानुसारिवा—(१) तगरम् उ. १७
(२) कालवल्ली चि. २२
(३) कृष्णसारिवा चि. २०
(४) तगरभेदः क. ६

कालानुसारी—तगरं चि. २
कालिन्दम्—कृष्णबीजम् कूष्माण्डसदृशम् कलिन्देति लोके सू. ४६
कालिन्यक—जोन्नलकूष्माण्डभेदः सू. ९
कालीयम्—कृष्णचन्दनम् चि. २०
कालीयकम्—(१) दारुहरिद्रा क. १
(२) दारुहरिद्रानुकारि द्रव्यम् उ. ४५
(३) दारुहरिद्रानुकारि प्रसिद्धम् उ. १२
(४) मलेन्द्रीचंदनम् इति प्रसिद्धम्। सू, ३८

कालेयकः—वर्णचंदनविशेषः, मलयाद्रिचंदनमिति लोके सू. ३९

कालेयकम्—(१) पीतचंदनम् क. ६
(२) दारुहरिद्रानुकारि द्रव्यम् उ. ४४

काशः—(१) चमरपत्रः सू. ३८
(२) चामरपुष्पः सू. ३८

काश्मरी—श्रीपर्णी क. ६

काश्मर्यं—गाम्भारीफलम् सू. ४६; उ. ३९, ४७

काष्ठालुकः—उत्पलकंदः स्वनामप्रसिद्धः। सू. ४६

कासमर्दः—(१) प्रसिद्धः सू. ४६
(२) स्वनामख्यातः सू. ३८

कांगुकः—गौरकृष्णषष्टिकः सू. २०

किणिही—(१) अपामार्गः उ. १७
(२) कटभी सू. ३९; क. २, ९; चि. २२; उ. २४
(३) नीलस्यन्दा क. ९
(४) श्वेतस्यन्दः उ. ६१

किराततिक्तकः— भूनिंबः सू. ३८, ४६

किंजल्कः— (१) केशरः उ. १७
(२) पद्मकेशरम् उ. १५

किंशुकः—पलाशः सू. ४६

किंशुकम्—पलाशपुष्पम् सू. ४६

कीटशत्रुः—विडंगः उ. १२

कीटारिः—विडंगः, कीटमारणीति अन्ये चि. २

कुक्कटा—कुक्कटशिंबी, कुक्कटी कुक्कटसदृशकंदा महौषधिः। उ. ६०

कुक्कुटी—(१) कुक्कुटी शरीरवत् कुसुमचित्रा वल्ली स्फटिकरचितकुक्कुटाण्डतुल्यकन्दा। उ. २९
(२) स्फटिकरचितकुक्कुटाण्डसदृशकंदा, कुक्कुटशरीरवत् कुसुमचित्रा वल्ली। उ. ३३

कुक्कुटाण्डकः—कुक्कुटया अण्डानि इव वर्णेन वर्तुलतया च तंडुलाः यस्य स। सू. ४६

कुचंदनम्—(१) रक्तचंदनम् सू. ३८
(२) मलयाद्रिचंदनम् सू. ३८

कुटजः—(१) इन्द्रयवः सू. ३८
(२) इन्द्रवृक्षः सू. ३८

कुटन्नटम्—तगरम् उ. ११, ३६

कुटन्नटः—(१) स्योणाकः क. ९
(२) श्योनाकः सू. ३८, चि. २२
(३) श्योनाकः, [illegible] इति लोके। क. ६

कुठेरकः—तद् (बर्बरिका) भेद एव सू. ४६

कुतुम्बः—द्रोणपुष्पः सू. ४६

कुन्तलिका—चूच्चूसदृशा दीर्घफला सू. ४६

कुन्दः— निर्गन्धम् श्वेतपुष्पम् उ. ५१

कुन्दुरुकः—[illegible]चापः सू. ३८

कुब्जः—(१) स्वनामप्रसिद्धः उ. [illegible]
(२) गुब्जा चि[illegible]

कुबेराक्षी—[illegible]

(२) काष्ठपाटला, पोटिका इत्यन्ये सू. ३९

कुम्भिका—(१) वारिपर्णी उ. ३२

(२) पानीयकुंभिका उ. ४०

कुम्भी—स्थलकुम्भी यस्यास्त्वक् वक्रा भवति। उ. ५९

कुम्भीकः—(१) श्लक्ष्णत्वक्को रोमशः कुम्भीनामा वृक्षः यस्य त्वक् वस्त्राकारा भवति, अन्ये पाटलामाहुः, अपरे स्वल्पविटपमाहुः। सू. ३८

(२) स्थलकुम्भिका चि. १७

कुम्भीका—दाडिमाकारफला उ. ३

कुमुदम्—(१) 'कुइआ' इति लोके सू. १३

(२) चन्द्रोदयविकासि सू. ४६

(३) श्वेतम् उ. ४०

(४) श्वेतोत्पलम् सू. ३८,३९,४६

कुरवकः—स्निग्धपत्रः सितकुसुमः स्वनामप्रसिद्धः। क. ५

कुरण्टिका—(१) [illegible]भेदः चि. ७

(२) कृष्णसूक्ष्मफला 'सिरिवालिका' इति लोके। सू.३८

कुरुण्टक—(१) सहचरपुष्पम् सू. ४६

(२) पीतपुष्पः, कंटाशेलुआ इति लोके। सू. ३८

कुरुण्टिका—अम्लानसदृशपत्रकुसुमा हरितपुष्पा, अन्ये कुनालिकाकुरण्टिके उत्तरापथजे इति आहुः। सू. ४६

कुरुबकः—कण्टसेवयाकः सू. ४२

कुरुवृन्दकः—व्रीहिगुरुः सू. ४६

कुलाहलः—(१) मुण्डितकः सू. ४६

(२) मुण्डिकेति प्रसिद्धः सू.३८

कुलीरः—(१) कर्कटः चि. २५

(२) कर्कटशृंगी उ. २१

कुलेचरं—खुरखुण्डकः सू. ४६

कुवलयः—रक्तोत्पलम् सू. १३

कुवलयम्—(१) ईषत् नीलधवलम् सू. ३८

(२) कुमुद्भेदः सू. ४६

कुशः—(१) ह्रस्वदर्भः सू. ३८

(२) ह्रस्वो मृदुः सूचीपत्रः सू.३८

कुशादिपंचमूलम्—कुशकाशनलदर्भेक्षवः इति कुशादिपंचमूलम्। चि. ३८

कुस्तुम्बुरु—(१) धान्यकं सू. ३८

(२) धान्याकं उ. ३९

कुस्तुम्बुरुकम्—धान्यं सू. ४६

कुस्तुम्बुर्यः—धान्यकाः उ. ४९

कुंकुमम्—प्रसिद्धम् सू. ४६

केबुकः—ग्राम्यः वन्यश्च स्वनामप्रसिद्धः सू. ४६

केबूकः—'केमुर' इति नाम्ना प्रसिद्धः। उ. ५४

केशरः—बकुलः उ. ४७

केशरम्—बकुलम् सू. ३८; चि. ९,११

केशराह्वयैः—बकुलैः चि. ९

कैटर्यः—पर्वतनिम्बः चि. १८, शा. १०

कोकिलाक्षक—खगली उ. ५८

कोरदूषकः—कोद्रवः सू. ४६

कोलः—बदरमज्जा सू. ४५

कृमिघ्ना—विडंगाः उ. १०
कृमिशत्रु—विडंगम् उ. ६१
कृष्णगंधः—शोभाञ्जनक सू. ४६
कृष्णगंधा—(१) शोभाञ्जनकः चि. ४
(२) शोभाञ्जनकः, शमी इत्यपरे चि. १७, १८
कृष्णव्रीहि—कृष्णतुषतण्डुलः सू. ४६
कृष्णसारिवा—छलहेण्टापत्रसदृशच्छदा चंदनगंधा 'कालवेलि' इति लोके। सू. ३८
कृष्णा—पिप्पली चि. १५; उ. ५०,५१
कृष्णाबीजम्—पिप्पलीतंडुलः उ. १२
कृष्णाह्वा—पिप्पली उ. १७

ख

खदिर—गायत्री, स्वनामख्यातः सू. ३८
खरपत्रं—तस्य (क्षवकस्य) एव भेदः, बोबइकामपरे, मरुबकमन्ये। सू. ३८
खरपुष्पः—मरुबकः, अन्ये क्षवकभेदमाहुः। केचित् वोडयिकेत्यपरे। सू. ४६
खरमञ्जरी—अपामार्गः उ. १२, १९
खर्जूरम्—द्विविधम् वृक्षविटपभेदेन, त्रिविधमित्यपरे, त्रैविध्यं च वृक्षखर्जूरम् द्विविधम् इति कृत्वा तत्र पारसीकेषु देशेषु महत्प्रमाणं स्वादु भिन्नं पिण्डखर्जूरम् इत्यतो हेतोः। सू. ४६

—ग—

गजलेण्डम्—गजगण्डीरकः, नदीपिप्पलिकेत्यन्ये। चि. ९
गजादिनामा—हस्तिपिप्पली चि. १८
गजाशना—शल्लकी उ. ४०
गजाह्वा—गजपिप्पली उ. ६०
गण्डीरः—(१) अपि द्विविधः स्थलजो जलजश्चेति, तत्र स्थलजो हरितशाकम्। सू. ४६
(२) द्विविधः स्थलजो जलजश्च, तत्र स्थलजो हरितशाकपठितः जलजो जलपिप्पली गण्डीरः चि. ४
(३) सारप्रधानः तरुविशेषः सू. ४५
गलोडयम्—पद्मबीजम् चि. ९
गवाक्षी—(१) इन्द्रवारुणी सू. ३७, ३८; उ. ४४
(२) द्रवकर्णी चि- ३०
(३) श्वेतपुष्पा इन्द्रवारुणी सू. ३९
गवेधुकः—(१) तृणविशेषः सू. ४६
(२) तृणविशेषः, 'जलगोधुम' इति लोके, अन्ये तु पुलाकशब्देन अप्राप्तपाकं धान्यमाहुः। सू. २२
ग्रन्थिकम्—पिप्पलीमूलं उ. ४२, ९२
गंधनाकुली—(१) गंधमूला रास्ना क. ६
(२) सुगंधिरास्ना उ. ३२
गंधर्वहस्तः—एरण्डः च. ४
गायत्री—खदिरः उ. ४१, ४५
गायत्रीसारः—खदिररसः ५२
गाङ्गेयम्—मुस्ता उ. १७, ३९
गाङ्गेरुकी—नागबला सू. ४६
गिरिकदंबः—स्वनामख्यातः उ. ३१
गिरिकर्णिका—(१) श्वेतस्यन्दः चि. ११
(२) श्वेतस्यन्दा चि. ८

(३) सेफन्दः सू. ३९
(४) अपराजिता भेदः उ. ५९
गिरिकर्णी—श्वेतस्यन्दा उ. ६१
गिर्ग्राह्वा—श्वेतस्यन्दः क. २
गिल्लोडयः—(१) कंदः प्रावृड्जातः शणपत्राकारः वल्लीयुक्तः चर्मण्वतीनदीभवः चेत् वर्तुलपाषाण सदृशः, 'गुगिलोट' इति लोके । चि. ११
(२) कालकलंकः शितोडयकंदः प्रावृड्जातः शणपत्रिकाकारः वल्लीयुक्तो गिल्लोठीति लोके, कालिंदकतकः अंगलोडय इत्यन्ये पठन्ति चिचोटकमिति च व्याख्यानयन्ति । सू. ४२
गुञ्जा–(१) चिरहुण्डिका चि. १७
(२) चिरिहिण्टिका चि. १४
गुडम्–इक्षुविकृतिम् उ. ४४
गुडशर्करा—गाङ्गेटीफलम् उ. ४२
गुडुची–प्रसिद्धा सू. ३८
गुन्द्रा–(१) भद्रमुस्ता चि. १७
(२) पट्टोरकभेदः चि. ३७
(३) पादरकभेदो 'गोदर' इति लोके सू. ३८
(४) एरकाभेदः गवेधूकेत्यन्ये उ. १०
गुप्तफलम्—कपिकच्छुफलम् उ. ४६
गुहा—(१) शालपर्णी क. ६
(२) पृश्निपर्णी क. ८
गुहातिगुहे—शालिपर्णीपृश्निपर्ण्यौ सू. १९
गोचंदना–प्रियंगुः चि. २८
गोजिह्वा—(१) गोजीशाकम् उ. ३९
(२) दार्वीपत्रिका कर्कशा दीर्घपत्रा 'गोजिभी' ति लोके । सू. ४६
गोजी—(१) गोजिह्वा चि. १९, २२; क. ६, ७
(२) गोजिह्वा, अन्ये शाखोटकमाहुः । सू. १ चि. ९
(३) गोजिह्विका उ. २४
(४) गोजिह्विका, शाखोटक इत्यन्ये चि. १८
गोधा–'गोसाप्' इति भाषा चि. २५
गोपघोण्टा—(१) कर्कटी क. ६
(२) घोटाबदरी चि. ११
(३) कर्कोटी, बदरभेद इत्यन्ये, ग्रामकोलिकेति प्रसिद्धा पूगभेदमपरे । सू. ३८
गोपा—सुगंधमूला सारिवा क. १
गोलोभी–दूर्वा चि. ८; उ १९, ३२, ३६, ६०.
गौरी—(१) हरिद्रा चि. ५
(२) हरिद्रा, गोरोचनेत्यपरे चि. १७
गृञ्जनः—रसोनभेदः उ. ९६

—घ—

घनम्—(१) मुस्तम् उ. ४०
(२) मुस्ता उ. ५५
घोण्टाफलम्—बदरीफलम् चि. १७

—च—

चणकः—प्रसिद्धः सू. ४६
चण्डा–(१) अजमोदाकारा, सुगंधिद्रव्यम्

३९; उ. ६२

(२) कुङ्कुमर्दनिका चि. ८

(३) ककुन्दनी सू. ३९

ट

टुण्टुक---श्योनाक सू. ३८, क. ६, चि. २२

टंकम्---काश्मीरे स्वनाम प्रसिद्धम बहुप्रकारम् सू. ४६

ड

डुडुरक---'डोडी' इति स्वनामप्रसिद्धः सू. ४६

त

त्रपुस---(१) मुधातकः 'त्रुसण्डी' ति लोके चि. ३०

(२) सुधावासः उ. ५८

त्रपुसम्---(१) कर्कटीभेदः चि. ३

(२) तिरसीति लोके सू. ४२

(३) सुधावासः 'तेवसा' इति लोके सू. ४५

(४) कर्कटीफलं 'त्रिपुडी' इति लोके सू. ४५

त्रपुसाद्यः---कर्कटीभेदाः सू. ९

त्रायन्तिका---मदयन्तिका चि. ११

त्रायन्ती---त्रायमाणा उ. ३९

त्रायमाणा---स्वनामप्रसिद्धा सू. ३८

त्रिकंटः---गोक्षुरकः उ. ५९

त्रिकंटकः---गोक्षुरकः सू. ३८, चि. ७, उ. २४

त्रिपर्णिका---दुग्धिका वनकार्पासीत्यपरे। . ४६

त्रिपुटाः---स्वल्पाः त्रिपुटाः सू. ४६

त्रिभण्डी---(१) त्रिवृत् चि. १७ उ. ४४

(२) शुक्ला त्रिवृत सू. ४४

त्रिवर्गः---त्रिफला चि. २, उ. ४१

त्रिवर्णम्---त्रिजातकम् सु. ४४

त्रिवृत्---रक्तमूला त्रिवृत्, 'निशोत्र' इति लोके। सु. ३८

त्रिवृतया---त्रिजटया उ. ४७

त्रिसुगंधि---त्रिजातकम् उ. ४७

त्र्यूषणम्---त्रिकटुकम् उ. ४०

त्वक्---(१) चोचम् उ. ४७

(२) त्वचम् उ. ४०

(३) वराङ्गम् क. १

(४) वराङ्गम्, 'गुडतज' इति लोके सू. ३८

(५) वनवासिका त्वक् उ. ४७

त्वक्सारः---वंशः सू. १

त्वरितक---षष्टिकवत् त्वरितम् पच्यते इति। सू. ४६

तण्डुलीयकः---'चुलाइ' इति लोके। सू. ४६

तमालम्---(१) पत्रकम् उ. ४७

(२) तमालपत्रं, पत्रकमिति लोके सू. ३९

तरुणी---स्वनामप्रसिद्ध। सू. ४६

तर्कारि---अरणिका सू. ३८, ४६; उ. १७, २१, ३५

तलकोटः---अंकोठः उ. ५१

तस्करः---चौरकः चि. १७

ताडः---ताडी सू. ४६

ताम्बूलपत्रं—नागवल्लीपत्रं, पर्णमिति लोके
सू. ४६

ताम्रवल्ली—वामतरुणी मञ्जिष्ठा । शा. १०

तामलकी—(१) भूम्यामलकी उ. ५१
(२) दरफलिका भूम्यामलकी इति लोके । उ. ३९

तापसवृक्षः—(१) इंगुदः चि. १८
(२) इंगुदः, पुत्रञ्जीवक इत्यन्ये । सू. ३८

तालः—स्वनामख्यातः सू. ३८

तालपत्री—(१) मुषली
(२) मूषिकपर्णी चि. २५

तालपर्णी—मुषली चि. ११

तालमूली—मुषलो उ. ५१

तालमूलिका—मुषली, मुषकपुच्छाकारा शिफा। चि. ७

तालीतलम्—भूम्यामलकमूलम् । चि. १७

तालीशम्—तालीशपत्रम् सू. ३९

तिक्ता—(१) कटुका चि. ९
(२) कटुतुम्बी—उ. ६०

तिन्तिडीकं—वृक्षाम्लम् सू. ४६

तिन्दुकः—कालसारः वृक्षः सू. ४६

तिन्दुकी—तिन्दुकवृक्षः 'टिंबरुर्यणि' इति लोके । सू. ३८

तिनिः—तिनिशः चि. १६

तिनिशः—(१) स्यन्दः उ. ४०
(२) स्यन्दः चि. ११, ३१, १९; क. ६
(३) स्यन्दनः 'सादण' इति लोके प्रसिद्धः । सू. ३८

तिमिरः—नवरागिपत्रः 'तिवरिया' इति प्रसिद्धः । उ. ५१

तिल्वकः—(१) स्वल्परोध्रः सू. ३९, ४४
(२) स्वनामप्रसिद्धः सू. ११
(३) पट्टिकारोध्रः उ. १७, २४, ३९, ४२, ४४
(४) पट्टिकालोध्रः चि. ४, ८, १०, १४.
(५) रोध्राकारः बृहत्पत्रः रक्तत्वक् चि. ३०
(६) रोध्रः, अन्ये तिल्वकः रोध्राकारः बृहत्पत्रः रक्तत्वकः वैरेचनिकः । सू. ३८

तिलपर्णिका—चोरकः, श्रीहस्तिनीत्यपरे । सू. ४६

तिलपर्णी—हुलहुलः सू. ३९

तिलपर्णीक—'हुलहुल' इति लोके, गयी तु तैलपर्णीकः सरलरसः । क. ६

तीक्ष्णगंधा—शोभाञ्जनकः उ. २३

तुगा—(१) वंशरोचनानुकारि पार्थिवं द्रव्यमाहुः । उ. ५७
(२) वंशलोचना, अन्ये वंशलोचनानुकारि पार्थिवं द्रव्यमाहुः । उ. ५२

तुगाक्षीरी—(१) वंशरोचना सू. १२
(२) वंशलोचना सू. ३८, उ. ३२
(३) वंशलोचनम्, अन्ये वंशलोचनानुकारि पार्थिवद्रव्यम्। उ.४१

तुङ्ग—(१) पुन्नागः चि. ११
(२) पद्मकेशरम्, पुन्नाग इति अपरे। क. ८
तुण्डिकेरी—वनकार्पासिका नि. २, १६; उ. ४८
तुम्बी—तिक्तालाबु सू. ४५
तुरंगगंधा—अश्वगंधा उ. ४१
तुरुष्कः—(१) सिह्लकः उ. ५१
(२) सिह्लारकः सू. ३८
तुवरकः—(१) पश्चिमोदधितीरे सू. ४६
(२) पश्चिमसमुद्रभूमिषु प्रसिद्ध एव चि. ९
(३) पश्चिमसमुद्रभूमिषु पलाशानुकारी वृक्षः । चि. ३०
(४) "पत्रैस्तु केशराकारैः कलायसदृशैःफलैः। वृक्षाः तुवरनामानः पश्चिमार्णवतीरजाः ॥" सू.४१
(५) पश्चिमार्णवतीरजातमाहुः। तदुक्तं "पत्रैस्तु केशराकारैः कलायसदृशैः फलैः । वृक्षस्तुवरको नाम पश्चिमार्णवतीरज : ॥" सू. ४५
तृणम्—सुगंधितृणम् उ. ४७
तृणपंचमूली—कुशकाशनलदर्भकांडेक्षुका इति तृणसंज्ञा । चि. ५
तृणमूलम्—कुशादिपंचमूलम् । चि. ३८
तृणशून्यम्—मल्लिका, केतकीफलमित्यन्ये सू. ४६
तृणशून्यमूलैः—केतकीकंदैः चि. १८
तृणशून्या—केतकी, मल्लिका इत्यपरे । क. ६
तेजोवती—(१) कासमर्दनिका चि. २२
(२) काकमर्दनिका उ. २४, ३९, ४०, ५१ चि. २
तोदनं—राजप्रियं शीतफलं रावणाम्लिकेति प्रसिद्धम्, काश्मीराम्लिकेत्येके। सू.४६
तोदपर्णी—स्वनामप्रसिद्धा । सू. ४६
तोयं—बालकं । क. २, ६; उ. ४७

—द—

द्रवन्ती—(१) शम्बरी चि. १९, सू. ४५
(२) चीरितपत्रिका चि. २
(३) चीरितपत्रा दन्तीभेदः उ.४२,५२
(४) दन्तीभेदः सू. ११
(५) चीरितपत्रा संबरीति लोके सू. ३९, ४४
द्राविडी—एला सू. ३८
द्वे सहे—मुद्गपर्णी माषपर्णी च । उ. ४०
दक्षिणापथगाः—चंदनजातीफलकंकोललवंगादयः चि. ४
दधिनाम—कपित्थम् उ. ५०
दधित्थः—कपित्थः उ. २१, ४९
दन्तशठ—(१) जंबीर सू. ४२
(२) जंबीरफलम्, अन्येजंबीरभेदमाहुः । सू. ४६
दन्तः—गोदन्तः उ. १२
दन्ती—(१) दन्तिनी सू. ३७, चि. १९
(२) उडुम्बरपर्णी चि. २
दर्भः—(१) कुशः सू. ३८
(२) दीर्घः पृथुलः खरपत्रः सू. ३८

(२) अत्र प्ररोही ' पार्श्वपिप्पल ' इति लोके । सू. ३८

नराधिपः—कृतमालः । चि. ३७

नरेन्द्रः—किरमालकः चि. ९, १८

नरेन्द्रद्रुमः—आरग्वधः चि. ९

नलः—(१) स्वनाम्ना ख्यातः । सू. ३८

(२) स्वनामप्रसिद्धः शुषिरपर्वा उ.५८

(३) शुषिरपर्वा स्वनामख्यातः । चि. १७, उ. २६

(४) दूर्वाकारांकुरोऽन्तःशुषिरः स्वनामख्यातः । सू. ३८

नलदम्—(१) मांसी क. १, सू. ३८ उ. ३९

(२) उशीरम् उ. १७, ३९

(३) उशीरभेदः लामज्जकम् क. ६

(४) जटामांसी उ. ३१

नलिनम्—ईषद्रक्तम् पद्मम् उ. १७

नलिनकेशराणि—पद्मकेशराणि सू. ३८

नलीनम्—ईषद्रक्तम् सू. १३

नागः—नागकेशरम् सू ४५, ४६, उ. ४७

नागकेशरम्—स्वनामप्रसिद्धम् सू. ३८

नागदन्ती—(१) दन्तिनी सू. ३८, चि. ८, उ. ३०

(२) इन्द्रवारुणीभेदः जेज्जटाचार्यमते तु दन्ती क. ६

नागपुष्पम्—(१) नागकेशरम् सू. ३८; क. २, ९; उ. ३९, ४७

(२) नागकेशरम्, अन्ये नागकेशरपुष्पसमपुष्पो म[illegible]त्याहुः । सू. ३८

नागरम्—शुण्ठी उ. ४०, ६२

नागविन्ना—इन्द्रवारुणीभेदः, वृश्चिकपत्रिकेत्यपरे । उ. ६२

नाडिका—' नाली ' इति लोके सू. ४६

नादेयी—जलजंबू चि. ४

नान्दीमुखी—तद् (मधुलिका) भेदः सू. ४६

नालिका—शाकविशेषः शा. १०

निकुम्भा—दन्ती चि. ११, उ. २४

निकुम्भः—(१) दन्ती चि. १७, उ. ९१

(२) दन्तीवृक्षः उ. ५५

निकोचकम्—उत्तरापथिकं कोल्लकफलं उत्तरापथादवगन्तव्यम् । सू. ४६

निचुलः—(१) वेतसः क. ८, चि. १६, १९, २२

(२) जलवेतसः चि. ११, ३७

निचुलकः—जलवेतसः क. ६

निदिग्धिका—कंटकारिका । उ. ५५, ५८

निर्गुण्डी—नीलनिर्गुण्डी सू. ३८

निर्गुण्डीपत्रस्वरस—नीलसिन्धुवारस्वरस, नीलसिन्धुवारश्च शेफालिका इति लोके उ.५१

निर्दहनः—चित्रकः उ. ४०

निर्दहनी—(१) चित्रकः, अजमोदा इत्यन्ये उ. ५७

(२) अग्निमन्थः गणिकारिकेत्यन्ये । उ. ५९

(३) मोरटः, अग्निमन्थ इत्येके, अपरे चित्रकमाहुः । चि. ४

निशाः—हरिद्रा चि. ८, उ. ३९

निशाच्छदः—शठी चि. ३८

निशे—हरिद्रादारुहरिद्रे क. ८

निष्पावः—(१) शिम्बः चि. १८

(२) राजशिंबी चि. ९

(३) अत्र राजशिंबी सू. १९

निष्पावकः—राजाशिंबिः सू. २१

नीपः—(१) महाकदंबः चि. ४

(२) कदंबफलम् सू. ४६

(३) धूलिकदंब सू. १

नीरजम्—नीलोत्पलम् चि. २५

नीलपुष्प (कुरंटकः)— स एव दासीकुरण्टकः सू. ३८

नीलिनी—(१) श्रीफलिका सू. ४५

(२) रजनिका शारदफला उ. ६१

(३) नीलबुध्ना, श्रीफलिकेत्यन्ये। सू. ३९

(४) नीलाञ्जनिका शारदफला नीलिका चि. ९

नीली—(१) श्रीफलिका सू. ४४

(२) नीलाञ्जनिका शारदा चि. २

(३) नीलाञ्जनिका शारदं फलं क. ६, चि. ३०

(४) शारदंफलं, श्रीफलमिति लोके चि. १७, चि. १९

(५) नीलाञ्जनिका शारदफला, श्रीफलीति लोके चि. २९

नीवार—(१) उलिधान्यम् चि. १४

(२) प्रसाधिका, धान्यमध्ये रक्तशूको भवति, उलिजिधान्यमिति लोके प्रसिद्धम्। सू. २१

(३) प्रसादिका,....। सू. २०

(४) उलिकाधान्यं, तद्द्विविधम् एकम् धान्यसदृशविटपधान्यम् क्षेत्रजं, द्वितीयं महादलकाण्डं तत्तु सलिलजं, तत्र सलिलजं [illegible]त्रस्तंबपरोहम् रक्तशूकं, तदेव प्रशान्तिका इति तंत्रान्तरे पठ्यते। चि. ११, सू. ४६

नृपवृक्ष—(१) किरमालकः उ. ५७

(२) गिरिमालकः उ. ४२

नृत्तकौण्डक—मर्कटक उ. ५१

नैचुलं फलम्—वेतसफलम् उ. ५१

नैषध—'कोरक' इति आख्यायते स च धान्यविशेषः। सू. २१

प

प्लक्षः—पर्कटी सू. १२,३८, क. ६

प्लवः—गोपालदमनकः चि. ११

प्रकीर्या—कंटकीत्रिटपकरंजः सू. ३९

प्रग्रह—किरमालकः क. ६

प्रत्यक्पुष्पा—अपामार्गः सू. ४३

प्रपौण्डरीकम्—स्वनामख्यातं यष्टीमधुद्रव्यादीषत स्थूलं मधुरसम् नेत्राश्च्योतनार्हम् द्रव्यम्, अन्ये श्रीपुष्पमाहुः। सू. ३८

प्राचीनामलकं—प्राग्देशोद्भवं पानीयामलकं इति लोके। सू. ४६

प्राचीबल—मत्स्याक्षकः, काकजंघा नदी-

पर्णिनीद्वयम्—शालिपर्णी पृश्निपर्णी च। उ. ३९

पर्पटकः—प्रसिद्धः सू. ४६

पर्वतः—शिरबालिका उ. ५४

परिपेलवः—(१) वन्यकः उ. ४७

(२) वन्यकः, कैवर्तमुस्तकमन्ये क. २

परूषकं—(१) स्वनामप्रसिद्धम् उ. ३९

(२) फालसा इति लोके सू. ४६

परूषक—(१) अल्पास्थिः मृदुफलः 'फालसा' इति लोके सू. ४६

(२) धन्वपत्रकः, स्वनाम्नैव प्रसिद्धः। स द्विविधः वृक्षविटपभेदात् सू. ३८

परूषकाणि—परूषकफलानि उ. ४२

पलङ्कषा—गुग्गुलुः उ. ३९,५५,६१

पलाण्डु—(१) लशुनभेदः सू. ४६.उ.१९

(२) स्थूलनालाग्रपत्रः गुन्द्रालिकाभेदः सू. ४६

पलाशः—(१) किंशुकः सू. ११,४९; क. ६ उ. १७

(२) शठी चि. ४

पंचाङ्गुल—एरण्ड चि. १८

पाटलः—पाटलापुष्पवर्णव्रीहिः पाटलः सू.४६

पाटला—(१) सुगन्धिपुष्पवृक्षः उ. ४७

(२) वसन्तदूती स्वनामप्रसिद्धा सू. ३८

पाठा—अविद्धकरणी 'पाढ' इति लोके। सू.३८

पाण्डुकः—(१) पाण्डुकशालिः, स च पाण्डुतुषयुक्तः सू. २०

(२) इति पाण्डुतुषः पाण्डुशुकश्च पाण्डुकः सू. ४६

पापचेलिकं—पाठाशाकम् उ. ३९

पारावतः—(१) पारावतवत् शुक्लतण्डुलः सू. ४६

(२) कामरूपे मधुराम्लरसफलं सू. ४२

(३) कामरूपे फलम्, पाककाले धवललोहितं मधुराम्लं च.सू.४६

पारावतपदी—ईषल्लोहितः हंसपदीभेदः चि. ९

पारिजातः—(१) प्रसिद्धः चि. १४

(२) पारिभद्रकः चि. ११

पारिभद्रः—(१) पर्वतनिंब उ. ५४

(२) पर्वतनिंबः, अन्ये पारिभद्रशब्देन कंटकिवृक्षं रक्तकुसुमं फलभद्रवासंज्ञकं। उ.९८

(३) फलभद्रः रक्तकुसुमः कंटकी रोहिणीसदृशपत्रः पूर्वदेशे प्रसिद्धः क. ३

पारिभद्रकः—(१) रक्तकुसुमः क. ६

(२) निंबवृक्षः सू. २९

(३) देवदारुः, अन्ये रक्तकुसुमः कंटकीवृक्षविशेषः स्वनाम्ना प्रसिद्धः। सू. ११ vide text

पालङ्क्या—(१) 'पालङ्क' इति लोके सू.४६

(२) शाकविशेषः 'पालङ्क' इति लोके सू. ४२

पालाशः—शठी चि. २०

पालाशं शोणितं—किंशुकरसः, अन्ये पलाश-
खपुरमाहुः उ. १०

पालिन्दि—कालवल्ली चि. १७

पालिन्दी—(१) त्रिवृत् क. १,७
(२) त्रिवृत् कालवल्लीत्यपरे क.५
(३) कालवल्ली उ. २१
(४) श्यामात्रिवृत् सारिवामन्ये
उ. १०

पिचुकः—पक्ककरी, कार्पासफलमित्येकेचि.७

पिचुमन्दः—निंबः चि. २०, क. ६

पिचुमर्दः—निंबः चि. ३०

पिण्डफला—तिक्तालाबुः चि. १८

पिण्डीतकः—(१) मदनः सू. ३७ चि. ३०
(२) मदनकः, यस्य पत्रं पाण्डु
रवर्णं भवति तदिह ग्राह्यम्
चि. २५
(३) त्रिविधः, कृष्णपुष्पः, श्वेत-
पुष्पः, पीतपुष्पश्च । चि.१७

पिण्डीतकं कृष्णं—कृष्णपुष्पः मदनःचि.२५

पिण्याकः—तिलखली क. ७

पिप्पली—अपरे पिप्पलीशब्देन मदनफल-
बीजानि कथयन्ति । उ. ४२

पियालः—(१) चारः सू. ४२; चि. ५,९,
३०; उ. ४०,५२
(२) सारद्रुमः सू. ३८
(३) प्रसिद्धः मधुराम्लफलः सू.४५
(४) चारः मधुराम्लफलः प्रायशः
मगधेषु सू. ४६

पियालमज्जा—चारुलीति लोके प्रसिद्धःसू.४६

पीलुः—उष्ट्रप्रियो गुडफलः, भाषानके'पीलु'
इति प्रसिद्धः उ. ५५

पुण्डरीक—(१) श्वेतपद्मम् सू. ३८, उ.४७
(२) अतिश्वेतपद्मम् सू. १३
(३) श्वेतपद्मं तत्सदृशः सौकु-
मार्यवर्णसौरभैर्यः स पुण्डरीकः
सू. ४६

पुत्रञ्जीवः—मध्यवर्तुलतीक्ष्णाग्रफलः जंबीरप-
पत्रो वृक्षः उ. ३१

पुत्रञ्जीवक—अनेनैव नाम्ना प्रसिद्धःचि१९

पुत्रश्रेणी—(१) द्रवन्ती क. ६
(२) एरण्डसदृशफलपत्राल्पविटपा
'संबरी' इति लोके सू ३८

पुनर्नवा—(१) श्वेता सू. ४६
(२) शुक्ललोहितो चि. २५
(३) वर्षाभूः 'साटोडी' इति
लोके . ३८

पुनर्नवे—सितपीतपुष्पे क. २

पुन्नाग—(१) स्वनामप्रसिद्ध क. ६
(२) पद्मकेसरम्. सू. १
(३) तुङ्ग पूर्वदेशे प्रसिद्धः क. २
(४) तुङ्गः स्वनामख्यातः, अन्ये
सुरपर्णिका सुगंधिपुष्पा दक्षि-
णापथे 'सुरपती'ति
प्रसिद्धः । सू. ३८
(५) देववल्लभः, स्वनाम प्रसिद्धः
उ. ४९
(६) देववल्लभः राजचंपकमिति
लोके इत्यन्ये । सू. ३८

(७) सुरपर्णिका, सुगंधिपुष्पा दक्षिणापथे सुरपंति नाम्ना प्रतीता सू. ३८

पुन्नागकेशरम्—पद्मकेशरम् सू. ३८

पुर—गुग्गुलुः—क. ५, उ. ३९

पुराह्वया—शल्लकी, गुग्गुलुमपरे उ. ५२

पुष्करबीजम्—पद्मबीजम् सू. ४२

पुष्करवर्तिः—आमोदमिति उत्तरापथे सू. ४६

पुष्पफलम्—कूष्माण्डः सू. ९, ४६; उ. ४७

पुष्पाण्डकः—पुष्पाणीव सुगन्धीनि सुकुमाराणि अण्डानि तंडुलानि यस्य स पुष्पाण्डकः लोकतोऽवगन्तव्यः सू. ४६

पूतिकरंजः—(१) चिरबिल्वः, कंटकीकरंज इत्यन्ये चि. १४

(२) कंटकीकरंजः, अन्ये पूतिकः चिरबिल्वः, करंजः नक्तमालः इति पृथकुर्वन्ति । सू. ४६

पूतीकः—(१) चिरबिल्वः सू. ३८, ३९; चि. ४, ९, ३०; उ. ३६ ४२, ५१, ६१

(२) चिरबिल्वः, कंटकीविटप करंज इत्येके । सू. ३७

पृथक्पर्णी—पृश्निपर्णी सू. ३७

पृथ्विका—एला, हिंगुपत्रिका इति अन्ये क. ५

पृथ्वीका—(१) कृष्णजीरकः सू. ४५

(२) हिंगुपत्रिका उ. ४२

(३) हिंगुपत्रिका, 'कृष्णजीरक' इत्यन्ये । उ. ४२

(४) श्यामवर्णः स्थूलजीरकः, हिंगुपत्रिकेत्यपरे क. ६

(५) स्थूलजीरकः, एला इत्यन्ये, हिंगुपत्रिका इति अपरे चि. २

पृश्निपर्णी—पृथक्पर्णी, 'पीठवनी' इतिलोके सू. ३८

पौष्करम्—पुष्करमूलं उ. ६१

—फ—

फञ्जी—(१) भार्गी सू. ३८, क. १

(२) पाठाभेदः, अन्ये भार्गीमाहुः। उ. ४०

फञ्जीशाक—'वाड' इति प्रसिद्धः, भार्गीमेके मन्यन्ते । सू. ४६

फणिज्जकः—फाणिज इति लोके, अन्ये मरुबकमाहुः । सू. ४६

फणिज्झकः—(१) तीक्ष्णगंधः, स्वनाम्नैव प्रसिद्धः, अन्ये निर्गुण्डी माहुः । उ. ११

(२) तीक्ष्णगंधो 'मरुवक' इति लोके, अन्ये तु अनेनैव नाम्ना प्रसिद्धः। सू. ३८

फलं—(१) त्रिफला चि. ३८

(२) मदनफलं सू. ४३, चि. ३७

फल्गु—(१) काकोदुम्बरिका चि. ९; उ. ५१, ६१

बृहत्यौ—(१) क्षुद्रफला स्थूलफला च उ. ४०
(२) सूक्ष्मफला स्थूलफला च. सू. ३८
(३) स्थूलफला चणकबृहती च. शा. १०

—भ—

भद्रकाष्ठं—देवदारु क. ७
भद्रदारु—देवदारु सू. ३७, ३८; उ. ५५
भद्ररोहिणी—कटुका उ. ४०
भद्रश्रियम्—(१) शुक्लचन्दनम् चि. ५
(२) श्वेतचन्दनम् क. ६
(३) श्रीचन्दनम्, श्वेतचन्दनम् इति गयी । शा. २
भल्लुकः—श्योनाकः चि. ७
भल्लूकः—श्योनाकः, शोणा इति लोके सू. ३७
भव्यम्—(१) तालपत्रप्रमाणं उत्तरापथजम्, अन्ये कर्मरङ्गमाहुः । उ. ४७
(२) आरुकम् कार्तिकेयपुरे प्रसिद्धम् अन्ये तु कर्मरङ्गफलमाहुः, भव्यम् तालफलोपमं वल्कल संहतिमात्रमित्यपरे । सू. ४६
भाण्डी—भिण्डीति लोके समाहरन्ति । चि.३०
भार्गी—स्वनामख्याता । सू. ३८
भिल्लोटकः—हिमवदासन्नभूमिजः ककुभाद्कारिफला वृक्षविशेषः । उ. १७
भुजंगपुष्पम्—नागकेशरम् उ. ४६
भूतकेशी—मांसी उ- ६०
भूतिकम्—कत्तृणापरपर्यायम् चि. ३७
भूतीकम्—(१) सुगंधितृणम्, 'रोहिषम्' इति प्रसिद्धम् उ. ३९
(२) रोहिषम् उ. ५१
भूनिंब—(१) किरातम् उ. ४०
(२) किरातक उ. ६१
(३) किराततिक्तक उ. ३९
भूमिकदंब—मुण्डतिका चि. २
भूर्जे—मृदुत्वक् स्वनामख्यातः सू. ३८
भूस्तृण—(१) रोहिषः, तुम्बाकमन्य सू.४६
(२) अंगुदाकनामधेयः द्रोणपुष्पसदृशः अन्ये तु भूस्तृणम् रोहिषमिति । सू. ३८
भृंगराजः—मार्कवः चि. २५

—म—

मकुष्ठकः—मोठ सू. ४६
मगधोद्भवा—पिप्पली उ. ४१
मण्डूकपर्णी—(१) ब्राह्मी सू. ४२, सू.४६
(२) ब्राह्मीभेद चि. ९
मण्डूकी—(१) ब्राह्मी उ. ५७
(२) ब्राह्मीभेद उ. २१
मत्स्याक्षक— ब्राह्मी, 'भूस्तर' इत्येके, अन्ये रक्तपुष्पमानूपं 'मत्स्याक्षक' इति लोके प्रसिद्धमाहुः । शा. १०
मदन—(१) मदनफलम् चि. १८, उ. ५५
(२) पिण्डीतकः मयनफल इति लोके सू. ३८
मदनकोद्रवाः—मदोत्पादकाः कोद्रवाः चि. १७
मदयन्तिका- (१) मल्लिका क. १

(२) नखादिरागजननी 'महेन्द्री' इति प्रसिद्धा । चि. ९

मदयन्ती—मल्लिका चि. २

मध्वालुकम्—रोमशमधुरास्वादमेव सू. ४६

मधुकम्—(१) प्रसिद्धम् सू. ३८, ४६

(२) यष्टीमधु उ. १२, १९, ३९, ४०, ४३, ५५, ५८; क. ६

(३) यष्टीमधुक. सू. ३८, उ. २६

मधुकः—स्वनाम प्रसिद्धो वृक्षविशेषः उ.१७

मधुकद्वयम्—स्थलजलजभेदेन क. ८

मधुपर्णी—मधुयष्टिका शा. १०

मधुरसा—मूर्वा सू. ३८; उ. १९, ४९

मधुलिका—(१) कर्कटकः सू. ४२

(२) मर्कटहस्ततृणम् सू. ४६

मधुशिग्रु—रक्तशोभाञ्जनक सू. ३८, ४६

(२) लोहितकुसुमोऽल्पविटपः शोभाञ्जनकभेदः सू. ४६

(३) तर्कारी, मेशश्रृङ्गीत्येके चि. ६

(४) शाकविटपः रक्तशोभाञ्जनक इत्यपरे क. ६

मधूकः—(१) गुडपुष्पः उ. ३९, ४७

(२) गुडपुष्पम्, 'महुवा' इति लोके सू. ३८

मधूच्छिष्टम्—मदनम् उ. ५१

मधूलिका—मूर्वा उ. ३५

मधूलिका—(१) मर्कटक उ. ५२

(२) तृणजातिः 'मर्कट' इति लोके उ. ५१

(३) तृणविशेषः मर्कटिका इति लोके चि. ३८

(४) मर्कटतृणविशेषः चि. ३

(५) मर्कट हस्ततृणमित्यपरे उ. ३५

(६) गुडूची, मर्कटतृणमपरे उ. २४

(७) स्वल्पगोधूमो मध्यदेशे पीशीकेतिख्याता, मर्कटहस्ततृणं वा । सू. ४५

मयूरक—अपामार्ग सू. ३७, ३८; चि. ५—२३

मर्कटी—(१) कपिकच्छुः उ. २९

(२) कपिकच्छु; मर्कटमूली इत्यन्ये, शूकशिंबी इत्यपरे । उ. ३३

मरिचं शुक्लम्—(१) शोभाञ्जनकबीजम् उ.११

(२) शोभाञ्जनकबीजमित्यर्थः अन्ये शुक्लमेव मरिचं कथयन्ति । उ.११

मलपूः—काकोदुम्बरिका चि. ८

(२) सैव काकोदुम्बरिका अल्पविटपा चि. ९

मलयज—सुरभिचंदन उ. ४७

मल्लिका—प्रसिद्धा । सू. ४६

मसूराः—द्विविधाः कृष्णाः पाण्डुराश्च, तत्र कृष्णवर्णाः मसूराभिधानाः, पाण्डुवर्णाः मंगल्यकाभिधानाः । सू. ४६

महानिंबफलम्—इति महानिंबो 'बकाइन' 'पर्वतनिंब' इति लोके । सू. ३८

महामेदा—स्वनामख्याता सू. ३८

महावृक्ष—(१) सोहुण्ड क. ६

(२) सेहुण्ड सू. ४४; चि. १४, उ. २१, ४१,

(३) सेहुण्डभेद सू. ३९

महाशालि–महातंडुलक सू. ४६

महाश्यामा–वृद्धदारकः सू. ३८

महाश्वेता—नीलपुष्पः सेफन्दः, वन्ध्या कर्कोटिका इत्यन्ये । सू. ३८

महासहा–माषपर्णी सू. ३८, उ. ४२

महासुगंधा–उत्पलसारिवा उ. २६

महिषशूक–मध्यदेशे तिलवासीति प्रसिद्धः सू. ४६

महीकदंब—(१) मुण्डितिका उ. ४१

(२) अलम्बुषा, मुण्डितिकेति लोके, जेज्जटाचार्यो भूकदंबमाह । चि. १७

महौषधं—(१) शृङ्गी उ. ४०

(२) शुण्ठी सू. ३७

मंगल्याः–पाण्डुवर्णाः मसूराः सू. २०

मंडूकपर्णी—ब्राह्मी सू. २०

मागधी–पिप्पली चि. ८; उ. १७, ५५

माणकं—महापत्रं, यथापूर्वमधःपत्रपरित्यामि सू. ४६

मातुलुंग—(१) बीजपूरक सू. ३७, ४६; क. ५

(२) वीजपूरकः, 'मधुकर्कटी' इत्यन्ये । उ. ४५

मातुलुंगाम्लः–बीजपूरकरसः चि. ५

मातुलुंगी—(१) सुरभिफला वनजा अरण्य बोरपूरकः सू. ३९

(२) केचिन्मातुलुंगीं मधुकर्कटीमाहुः उ. ५६

मार्कवः—(१) भृङ्गराजः चि. १९, २०; उ. ५३

(२) भृङ्गारक चि. ७

मालती—जाती सू. ३७, ३८, ४६; क. ५; चि. ९

माषपर्णी–'माषवनी' इति लोके, अरण्यमाषस्तंब इत्येके सू. ३८

मुकुन्द–मुकुन्द सू. ४६

मुकुन्दक–ईषत्कृष्णषष्टिकः सू. २०

मुकुन्दककाकलकासनपुष्पककुरबककेदाराः—कृष्णषष्टिकाः स. ४६

मुचुकुन्दः—कण्टकायबदरः चि. १८

मुञ्जात—उत्तरापथज स्वल्पकन्द चि. १७

मुञ्जातक–स्वनामख्यातः स्वल्पकंदः उत्तरापथे सू. ३९

मुद्गपर्णी—'मुगवनी' इति लोके सू. ३८

मुद्गाः—नानाविधाः, हरितपीतकृष्णरक्तभेदेन सू. ४६

मुरङ्गी–शोभाञ्जनक क. ५; चि. ११, २३, १४

मुरङ्गी–मधुशिग्रुः चि. ६

मुस्तम्—प्रसिद्धम् उ. ३९

मुस्ता—'मुथा' इति भाषा । चि. ३८

मुष्कक–(१) कालमुष्कक क. १

(२) कृष्णपुष्पमुष्कक चि. ४

(३) क्षारवृक्ष, 'मोरवक' इति लोके सू. ३८

(४) क्षारवृक्ष, 'मोषउ' इति लोके सू. ४६

मूर्वा—(१) चोरस्नायु चि. २, ५, ९, ११, उ. ३९, ४०, ४१, ४४, ५२, ५५, ५८, ६१;
(२) धनुर्गुणोपयुक्ते लताभेदे चि. १
(३) हघौडः चोरस्नायुकः सू. ३८
(४) कन्दली सदृश स्वल्प विटप 'हघोड' इति लोके सू. ३९
(५) चोरस्नायुः विरापाटिकेत्यन्ये, अपरे तु काकजंघामाहुः। सू. ४४
(६) धनुर्गुणोपयोग्या, 'दूधउड' इति लोके, अन्ये चोरस्नायुमाहुः। सू. ३८
(७) चौरस्नायुः, यया पूर्वदेशे गुणान् कुर्वन्ति धनुषाम्। अन्ये कोविदार सदृशयुग्मपत्रलता विशेषम् अश्मन्तकमाचक्षते। सू. २५

मूलम्—पिप्पलीमूलम् क. ६

मूलकम्—पिप्पलीमूलम् उ. ४२

मूलकपोतिका—बालमूलकम् उ. १७; सू. ४६

मूलकशिंबी—कुशिंबी सू. ४६

मूषिकपर्णी—(१) द्रवन्ती, द्रव्यान्तरमित्यन्ये क. १
(२) दन्ती, अन्ये मूषिककर्णाख्यं द्रव्यान्तरमाहुः। उ. ५४

मूषिका—'मूषिका लोमशा कृष्णा भवेत् साऽपि च तद्गुणा।" (अजरुहासदृशगुणा) (इदं लक्षणं उशनसा प्रोक्तम्) क. १

मृगभोजनी—इन्द्रवारुणी चि. १७

मृगादनी—(१) कर्कटिका, इन्द्रवारुणीफलमित्यन्ये क. ५
(२) इन्द्रवारुणी चि. २, उ. २८

मृगेर्वारु—इन्द्रवारुणी सू. ३९, उ–३०

मृणालम्—(१) उशीरम् चि. २
(२) पद्मनालम् सू. ४६ चि. ५ १९; उ. ४१
(३) पद्मकेशरम् उ. ४५
(४) बिसम् उ. ३९
(५) पद्ममूलात् स्थूलप्ररोहः, अन्ये तु सूक्ष्मं नालमाहुः। सू. ४६

मृद्वीका—द्राक्षा सू. ३८

मेदा—स्वनामख्याता

मेषविषाणनामभिः—मेषशृंगी फलैरित्यर्थः उ. १७

मेषशृंगः—(१) कर्कटशृंगः सू. १३
(२) इङ्गुदीभेदः उ. १५
(३) पुत्रजीवानुकारीवृक्षः उ. १७
(४) कर्कटशृंगम् पुत्रञ्जीवक इत्यन्ये चि. २
(५) कर्कटशृंगः, स च पुत्रञ्जीवक सदृशो तरुविशेषः सू. ३८

मेषशृंगी—(१) कर्कटशृंगी सू. ३८, उ. ४०
(२) कर्कटशृंगी, गयी तु पुत्र-
जीवकमेढ्शृंग चि. ९
(३) मेढशृंगः, पुत्रञ्जीवक स-
दृशपत्रो वृक्षः, अन्ये
कर्कटशृंगमाहुः। सू. ३९
मोचः—(१) कदलीफलम् सू. ४६
(२) शाल्मलीचोचः चि. १७
मोचकी—शाल्मली चि. २
मोचरस—(१) शाल्मली निर्यास उ. ४०
(२) शाल्मलीचुपः सू. ३८
(३) शाल्मलीचोपनिर्यासः चि. ११
मोचा—कदलीपुष्पम् उ. ४८
मोदयन्ती—मल्लिकेति लोके ख्याता चि २५
मोरटः—(१) इक्षुमूलम् चि. ७
(२) अंकोल्लपुष्पा 'मोइहर' इति
लोके, हस्तिकर्णपलाश इत्य-
न्ये, इक्षुमूलमित्यपरे। सू. ३८
मोहनवल्लिका—वटपत्रिका उ. ६०
मोहनिका—पुत्रंजीवी, अवाक्पुष्पी इत्यपरे।
चि. २८

—य—

यवकः—शूकधान्यविशेषः, तस्य च यवा-
कारः तण्डुलाः सू. २१
यवतिक्ता—यवक्षेत्रेषु जायते, तिक्तसमाष्टपत्रा
यवतिक्तेति प्रसिद्धा सू. ४५
यवफलः—वंशः, अन्ये यवफला दुग्धिका
इत्याहुः उ. ३१
यवफला—दुग्धिका क. ६
यववेणुः—वेणुयवः इति अन्नजातिः उ. २१
यवशूकः—यवक्षारः उ. ५७
यवाः—प्रसिद्धाः उ. ३१, ४७
यवासः—(१) दुरालभा सू. ४४
(२) धन्वयवासकः, पूर्वपदलो-
पात् उ. ५२
यविकाः—निःशूकाः स्वल्पाः सू. ४६
यष्ट्याह्वम्—यष्टीमधु उ. ६०
यष्टिकाह्वयः—मधुयष्टिका उ. ४५
यासः—दुरालभा उ. ३९, ६१
यूथिका—वृक्षविशेषः, सा द्विधा ईषत् श्वेत-
पुष्पा अतिश्वेतपुष्पा च। सू. ४६
योजनवल्ली—मञ्जिष्ठा सू. ३८
रञ्जनी—शिरहला सू. ३८
रजनी—हरिद्रा सू. ३८, चि. २, उ. ४५
रजनीद्वय—पिण्डहरिद्रा दारु हरिद्रा च.
उ. ३९
रजनीं च मुख्याम्—पिण्डहरिद्राम् उ. ५७
रम्यक—(१) द्रेका पर्वतनिंबः 'राजनिंब'
इति लोके चि. ४
(२) द्रेका 'महानिंब' इति लोके
प्रसिद्धः, पटोलमूलमित्येके
सू. ३८
(३) द्रेका 'बकाइण' इति लोके
पटोलमूलमित्यपरे सू. ३९
रक्तवृक्षस्य—रक्तचंदनस्य सू. ४६
रक्तशालिः—स्वनाम्ना प्रसिद्धः सू. २०
रक्ता—मञ्जिष्ठा क. ५. चि. ३७, उ. ५२
रक्ता लता—मञ्जिष्ठा क. ९

का. लाहया—कलिकारिका चि. २

लाङ्गलाह्वा—कलिकारिका सू. ३७

लाङ्गलिका—कलिकारिका चि. १८

लाङ्गली—कलिकारिका चि. ८, उ. ५७

लाङ्गुली—कपिकच्छु सू. १९

लामज्जं—उशीरभेदः क. १

लामज्जक—(१) उशीरमूलम्, उशीरभेद इति पाठान्तरम् । चि. १७

(२) उशीरभेदः सू. ३९

(३) पार्वतोत्पलम्, अन्ये उशीरमाहुः उ. ४७

लावाक्षः—लावाक्षि सदृशतंडुलः सू. ४६

लोणिका—लोणिया सू. ४६

लोध्रम्—प्रसिद्धम् सू. ३७

लोहितशालि—रक्तशालिः सू. ४१

लोहितिका—मञ्जिष्ठा, रामतरुणी इत्यन्ये चि. ११

लोहम्— अगुरु चि. ८

—व—

वक्रम—तगरम् क. ६, ७, ८; उ. ९, १८

वचा—(१) स्वनामख्याता अरुणवर्णा सू. ३८

(२) द्वितीया अरुणा सू. ३८

वज्रप्रोक्ता—वज्रकंदः उ. ६०

वज्रवृक्षः—सेहुण्ड इति लोके सू. ३८

वज्राख्य—द्वितीयसेहुण्डः, अभ्रंवा चि. ९

वञ्जुल—(१) वेतस सू. ३८, उ. २६

(२) जलवेतस क. ८

वत्सादनी—(१) गुडूची सू. ३९

(२) वत्सपुत्रकः 'वत्सवितया' इति लोके, ... कूचीत्यपर । सू. ४६

वनमुद्गः—तु वने जायते, कृष्णमुद्ग इति प्रसिद्धः मुद्गिकेति लोके। सू. ४६

वयःस्था—(१) गुडूची उ. ६०

(२) गुडूची, ब्राह्मीत्यन्येउ. ३१

(३) ब्राह्मी, अन्ये गुडूचीमाहुः । उ. ३२

वर्णक—(१) रोचनिका कम्पिल्लक इत्यर्थः उ. ३५

(२) रोचनिका, अन्ये वर्णकत्वक् शब्देन कर्णिकार वृक्षस्य वल्कलं कथयन्ति,तन्न इच्छति गयी । उ. १०

वर्धमानः—एरण्डः क. ६

वर्षाभूः—(१) पुनर्नवा सू. ४६, उ. ५९

(२) श्वेतपुनर्नवा उ. २१, ४७, ५१

(३) रक्तपुनर्नवा चि. २३; उ ३९, ४२

वरक—(१) वरटिका, शाकम्भरीभूमौ प्रायशः । सू. ४६

(२) वरटिका, ...धान्यविशषः । सू. २१

...वास्तुकम्—टङ्क वास्तुकम् उ. १७

वराङ्गम्—वनवासिकात्वक् क. ६

वराहकंदः—'बकालुक' इति प्रसिद्धः।सू. ४६

वराही—वराही गृष्टिरुच्यते । सू. ४६

वरी—शतावरी चि. १५, उ. १७

वरुक—वरु इति लोके सू. ४६

वरुणः—(१) वृक्षविशेषः स्वनामप्रसिद्धः। सू. ४६
(२) तिक्तशाकद्रुमः 'वरुण' इति लोके। सू. ३८

वल्लीफल—(१) कुष्माण्डादिवल्लीजं अन्ये शिंब्यादिकमाहुः। सू. २०
(२) अलाबुप्रभृति, अन्ये कूष्माण्डकादीनि। सू. २१

वल्लीशिंबी—शूकशिंबी सू. ४६

वशिरः—मर्कटसंज्ञ तृणजातिविशेषः सूर्यावर्तभेद इत्यन्ये। चि. ७

वसिर—(१) सूर्यावर्तफलम् देशान्तरे ज्ञेयमित्यर्थः। सू. ४६
(२) मर्कटपिप्पली तृणजातिः अपामार्ग इति प्रसिद्धः सू. ३८
(३) अपामार्गः, सूर्यावर्तभेद मित्यपरे। सू. ३८

वसुकः—(१) बकपुष्पम् चि. ७
(२) शिवमल्लिका, बकपुष्पमिति लोके। सू. ३९
(३) बुकः, केदारगिरौ 'बगहुल' इति प्रसिद्धः। सू. ४६
(४) बुकः, 'बकपुष्प' इति लोके। सू. ३८

वह्नि—अजमोदा उ. ५२

वाजिगंधा—अश्वगंधा उ. ४१

बाताम—मज्जमधुरस्निग्धो दीर्घाकारः। सू. ४६

वायसी—(१) काकमाची चि. ९
(२) काकतिक्ता चिरपोटिकेति लोके काकमाचीत्यन्ये। चि. ९

वारणकेशरम्—नागकेशरम् उ. ५०

वाराहीकंदः—गृष्टिकाकंदः चि. १७

वार्ताकु—वृन्ताकः वर्तुलफलः 'बंइगण' इति लोके। सू. ४६

वास्तुक—टंकवास्तुकः। सू. २०, चि. ६

वास्तूक—टंकवास्तूकः 'टंकचूञ्चू' इति लोके सू. ४६

व्याघ्रनख—(१) नख उ. ३९
(२) बृहन्नखः, बृहन्नखीत्यन्ये सू. ३८

व्याधिघातः—किरमालकः चि. ९

वांशी—वंशलोचना उ. ३५

विकंकत—कंटकिका चि. ११

विकंकतवृक्ष—कंटकारिका चि. १८

विजया—हरीतकी उ. २४,३९

विडंग—(१) प्रसिद्धः सू. ३८
(२) कृमिहा सू. ४५

विदारी—(१) बिडाली सू. ४४
(२) विदारीकंद सू. ३८, ४६
(३) विदारीकंदः, कोहलाकारः लोहितकुसुमः, स च द्विविधः दीर्घकंदो बहुक्षीरः, हस्तिपादको महाल्पक्षीर इति। सू. ३८

विदारीगंधा—शालपर्णी सू. १६, ३८

विदुलः—वेतसः सू. ३९, चि. १, उ. ४७

विनिर्दहनी—चित्रकः उ. ४४

विशल्या—(१) पाटला शा. १०
(२) काष्ठपाटला क. ९
(३) गुडूची उ. ६२
(४) काष्ठपाटला, इन्द्रवारुणीत्यन्ये । उ. ५५
(५) अग्निशिखवृक्षः चि. १८

विशाला—इन्द्रवारुणी चि. ९

विश्व—शुण्ठी उ. ३९, ५२

विश्वदेवा—(१) गाङ्गेरुकी प्रसिद्धा, गुड शर्करा इति पूर्वदेशे सू. ३८
(२) गाङ्गेरुकी 'गुडशर्करा' इति लोके, अन्ये सितकुसुमां बलामाहुः। शा. २

विषम्—प्रसिद्धम् चि. ९

विषघ्नी—हरिद्रा, अन्ये निर्विषामाहुः । उ. ६२

विषमुष्टिक—द्रेका, राजनिंब इति प्रसिद्धः, बृहदलम्बुषामपरे, कर्कोटीमित्यन्ये । सू ३८

विषाणिका—(१) मेषशृंगी सू. ३९, चि. ३०, उ. ६०
(२) आवर्तनिका चि. १८

वीरतरः—शरः वेल्लन्तरो वा । उ. ३९

वीरतरुः—(१) शरः उ. ४०
(२) स्वनामप्रसिद्धः चि. १५
(३) बिल्वनासिका शर इत्यन्ये । सू. ३९
(४) शबरः, अन्ये तु वीरतरुः 'वेल्लन्तर' इतिनाम्ना प्रसिद्धः जांगलदेशे नर्मदातटे चर्मण्वती नदी समीपे च, तल्लक्षणमुच्यते—"वेल्लन्तरु र्जगति वीरतरुः प्रसिद्धः श्वेता सितारुण विलोहितनीलपुष्पः । स्याज्जातितुल्य कुसुमः शमी सूक्ष्मपत्रः स्यात्कंटकी [illegible] एष वृक्षः॥" इति सू. ३८

व्रीहयः—वार्षिकास्तु व्रीहयः, कण्डितशुक्लास्तु व्रीहय इत्यन्ये । सू. ४६

वृक्षः—कुटजः चि. ११, उ. ४०.

वृक्षक—(१) कुटज सू. ३८, ४५; चि. १७, १८, २३
(२) कुटजफलम् । उ. ४७

वृक्षकबीजानि—इन्द्रयवाः उ. ३९

वृक्षज—इन्द्रयवः उ. ४२

वृक्षादनी—(१) वन्दाकः चि. ७
(२) बन्दाकः चि. ८
(३) वन्दाकः, वृक्षकलिम्बुकेत्यन्ये । सू. ४६
(४) वन्दाक वृक्षः, कलम्बुकेत्यन्ये । उ. ९
(५) बंदाकः, 'कवलेखू' इति लोके, वृक्षकलम्बुकमलमपरे । सू. ३८
(६) अशोकः उ. ४०

वृक्षाम्लम्—तिन्तिडीकम् उ. ४२

वृषः—वासकः सू. ४६, उ. ३९

वृश्चिकाली—(१) वृश्चियाकः सू. ३८
(२) [illegible]श्रृंगतुंगाकारफला पाठापत्रा ईषद्रोमशा श्वेतपुष्पपुच्छा दक्षिणावर्तवल्ली मेषश्रृंगीभेदः, वृश्चियाकमन्ये। सू. ३८

वृश्चीकः—श्वेतपुनर्नवा उ. ३९

वृश्चीवः—शुक्लपुनर्नवा उ. ४२, ५९

वेणवः—वेणुयवाः—सू. २०

वेणुत्वक्—वंशच्छल्ली उ. ५२

वेणुपत्रिका—वंशपत्राणि, अन्ये वेणुपत्रिकां वंशसदृशपत्रिकां द्रव्यान्तरमाहुः। क. १

वेणुयवाः—वंशफलानि सू. ४६, चि. १०

वेत्रकरीर—(१) वेत्राग्रम् सू. ४६
(२) वेत्रांकुरः सू. ४२

वेत्रफलम्—पद्मबीजसमम् सू. ४६

वेत्राम्लम्—अम्लवेतसम् अन्ये तु वेत्रकरीरम्। उ. १२

वैजयन्ती—(१) अरणिका चि. ४, ११
(२) तर्कारी सू. ४२
(३) अग्निमन्थवृक्षः चि. १९

वैदलम्—मुद्ग[illegible]दिकम् उ. ४२

व्योषम्—(१) त्रिकटु उ. ५२
(२) त्रिकटुकम् उ. २३, २६, ४१, ४४, ६१
(३) शुण्ठी मरिचपिप्पल्यः उ. ६१

वंजुल—वेतसः चि. ५

वंशः—वंशत्वक् क. ८

वंशकरीरः—वंशाङ्कुरः सू. ४६

वंशजः—वंशकरीरः वंशाङ्कुरमिति यावत् उ. १२

वंशावलेखः—वंशत्वक् चि. १८

—श—

श्रवणाह्वया—मुण्डितिका सू. ३७

श्वदंष्ट्रा—गोक्षुरकः सू. ३८, ४६; चि. ९ उ. ३९, ५८, ५९

शक्रयव—इन्द्रयव उ. ३९, ४०

शकुनाहृतः—उत्तरकुरोः सकाशात् हंसैरानीतः, अवन्त्यां नगर्याम् स एव 'वक्रनाम्ना' प्रसिद्धः, मगधदेशे तु पाशक 'इति', वृद्धवैद्यास्तु—"द्वीपान्तरात्समानीता गरुडेन महात्मना। शकुनाहृतः स शालिः स्यात् गरुडापरनामकः॥" इति आहुः सू. ४६

शटी—स्वनाम्ना प्रसिद्धा सू. ४६

शणः—(१) बन्धनार्हत्वक् प्रसिद्धः सू. ४६
(२) परिपाके सस्वनफलः सू. ३७

शणपुष्पा—शणसदृशविटपः 'सणहुली' इति लोके। सू. ३९

शतपर्वकः—जलगण्डीरः उ. ५८

शतवीर्या—शतावरी, नीलदूर्वा इत्यन्ये। सू. १९

शतावरी—(१) प्रसिद्धा। सू. ३८
(२) शतमूली स्वनाम प्रसिद्धा। सू. ४६

(३) सूक्ष्मपत्रा ' शतावरी ' इति लोके । सू. ३८

शम्पाकः—किरमालक : सू. ४६; चि, ३०, ३८

शमीफलम्–सङ्करमुच्यते सू. ४६

शल्लकी—गजभक्ष्या ' साल ' इति लोके । सू. ३८

श्यामा—(१) अरुणमूला त्रिवृत् उ. ४२, ५९

(२) त्रिवृत् चि. १८, उ. २४

(३) त्रिवृद्विशेषः चि. ८, २०

(४) त्रिवृद्विशेषः वृद्धदारुक इत्यन्ये । चि. ५

(५) प्रियंगुः सू. २८; क, १; चि. ३७, ३८

(६) वृद्धदारुकः सू. ४४, ४५ चि. १०, १४, १९, ३७; उ. ४२, ४३

(७) श्यामलता, प्रियंगुरित्यपरे क. १, ९.

(८) श्वेता त्रिवृत् सू. ३८

श्यामाकः—त्रिविधः–श्यामाकः, उष्ट्रश्यामाकः हस्तिश्यामाकश्चेति । श्यामाक शब्देन तोयश्यामाक उच्यते, उष्ट्रश्यामाकः स्थूलश्यामाक :, हस्तिश्यामाकः श्यामिकेति लोके सू. ४६

शाकः—(१) कर्कशमसृणपृष्ठोदरपत्रो वृक्षः चि. ७

(२) खरमसृणपत्रपृष्ठोदरः सू. ४२

(३) पूर्वदेशे प्रसिद्धः सू. ३८

(४) महाखर पत्रः चि. ९

(५) महापत्रः ' श्रीपण ' इति लोके । क. ६

(६) महावृक्षः कर्कशपत्रः सू. १ शा. १०

(७) वृक्षविशेषः, महाखरपत्र लक्षणः । नि. १६

शाकफलानि—शाको मसृणककशोदरपृष्ठ-लो वृक्षविशेषः, तस्य फलानि । सू. ३८

शार्ङ्गेष्टा—(१) काकजंघा चि. २३

(२) कोठकरंजः सू. ४४

(३) ' [illegible] ' इति लोके। उ. २६

(४) काकतिक्ता, भमुरटा इति लोके गूथकरञ्ज इति अपरे । चि. ९

(५) काकजंघा, ' विकसवनी ' इति लोके, अन्ये तु शार्ङ्गेष्टा काकतिक्ता गौरवर्तुलावगुण्ठितफला ' चिरपोटिका ' इति प्रसिद्धा ' भुमुरुदाका ' इति पूर्वदेशे, काकादनीत्यपरे सा च गुञ्जेति प्रसिद्धा । सू. ३८

(६) यवतिक्ता गौर वर्तुलाव गुण्ठितफला, चिरपोटिका

इति प्रसिद्धा, ' झझरुष '
इति पूर्वदेशे, काकजंघा-
मन्ये, काकमाचीत्यपरे ।
सू. ३८

शाल्मली—प्रसिद्धा सू. ४६

शाल्मलीवेष्टक—शाल्मली निर्यासकः, अन्ये
वेष्टकम् वृन्तमाहुः। उ.४०

शालः—(१) प्रसिद्धः उ. ४१
(२) सर्जभेदः उ. १७

शालनिर्यास—(१) राला उ. ५१
(२) सर्जरस उ. ५०

शालयः—(१) रक्तशाल्यादयः उ. ४४
(२) इति अकण्डितशुक्लाः हैमन्ताः । अन्ये तु कण्डिताः शुक्लाः अकण्डितशुक्लाश्च हैमन्ताः शालयः । सू.४६

शालामुखः—कृष्णशुक्लाहार तण्डुलः। सू.४६

शालु—पद्मकंदः उ. ५४

शालूकम्—प्रसिद्धम् सू ४६

शिखी—(१) लाङ्गलकी क. ८
(२) मयूरः, कुक्कुट इत्यन्ये ।
क. ५

शिग्रुः—(१) शोभाञ्जनो विटपः उ. ३९
(२) शोभाञ्जनकः सू. ३७,३८;
उ. १७, ४५, ६१
(३) शोभाञ्जनफलं सू. ४५
(४) शोभाञ्जनकः, विटूशाकमन्ये । उ. २१
(५) शोभाञ्जनकः, सुवासमित्यन्ये । सू. ४६
(६) विटपशाकः, शोभाञ्जनमन्ये।
चि. ९
(७) विटपशोभाञ्जनः उ. ४२

शिम्बी—शिम्बीशब्देनात्र हरितमुद्राः उ.१७

शिरीषः—विषघाती, 'शिरीस' इति लोके
सू. ३८

शिवाटी—श्वेतपुनर्नवा, शेफालिकेत्यन्ये ।
उ. २३

शिंशपा—(१) कृष्णसारा ' सांसइ ' इति लोके । सू. ३८
(२) कृष्णसारा स्वनामख्याता
सू. ३८

श्रीः—(१) लवङ्गम् चि. २२
(२) इति श्रीवेष्टकः, नवनीतधूपः, 'गुगुली'ति लोके । उ. २४

श्रीनिकेतनम्—नवनीतधूपः सरलनिर्यासः इति । चि. ९

श्रीपर्णी—(१) काश्मरी उ. १२, २४, ४३, ४७
(२) गाम्भारीफलम् उ. ३९

श्रीवेष्टक—(१) सरलनिर्यासः चि. २२
(२) नवनीतधूपः सरलनिर्यासः
चि. ११
(३) सरलद्रुमः गुग्गुलीति लोके
सू. ३८
(४) सरलरसः, नवनीतपिण्डप्रायः गुग्गुलीति लोके प्रसिद्धः ।
सू. ३७

शीतम्—रसाञ्जनम् । कर्पूरमन्ये । उ. १७

शीतपाक्यम्—बलाफलम् सू. ४१

शीतभीरुकः—शीताद्बिभेतीत्येवं शीतभीरुकः लोकादवगन्तव्यः । सू. ४६

शीतशिवम्—(१) कर्पूरम् सू. ४२
(२) कर्पूरम् शमीत्यपरे क. ६
(३) कर्पूरम्, शतपुष्पाभेदमेके गवेधुकेत्यपरे । सू. ३९
(४) शतपुष्पाभेदःचि. ११,१७

शीर्णवृन्तम्—सुवासकम्, त्रपुसभेदः, अन्ये कर्बरमाहुः, एके तु शीर्णवृन्तम् पाकावस्थायां यस्य वृन्तम् शटितं भवति इत्यर्थः, अपरे तु खुरदपुत्रकमाहुः । सू. ४६

शुक्ति—(१) जलशुक्तिः सू. १३
(२) तद्भेदः अल्पनखः सू. ३८

शुकः—ग्रंथिपर्णः चि. १८

शुकनसा—चर्मकारवटः चि. १९

शुकनासा—(१) चर्मकारवटः चि. १७
(२) चर्मकारवटः 'कुप्यक' इति कान्यकुब्जे, चर्मकार जम्बूपलासिकेति मालवीया वदन्ति । चि. १
(३) श्योनाकः सू. ४२

शुकाख्यः—(१) चर्मकार वटः क. ७
(२) चर्मकारवटः, अन्ये शुकशिम्बामाहुः उ. ४४

शुकाख्या—(१) चर्मकारवटः चि. २
(२) चर्मकारवटः, शुकशिंबामपरे । उ. ५१

शुकाह्वय—चर्मकारवट चि. १८

शृगालविन्ना (१) पृश्निपर्णी चि. ५,उ.५८
(२) पृश्निपर्णीभेदः उ. ४२
(३) अन्ये पृथकूपर्णीभेदं दीर्घ पत्रं सिंहपुच्छमाहुः।सू.३८

शृंगवेरम्-शुण्ठी सू. ३८,४६; उ. ४०,५०

शृंगाटकम्—(१) जलमध्ये त्रिकंटकम्, सू. २१; चि. ११,१७
(२) जलमध्ये त्रिकंटकम्, सिंघाडा इति लोके । सू. ४६
(३) त्रिकंटकम् जलजंफलम् चि. ३, उ. ४२
(४) द्विविधम् स्थूलाल्पभेदेन । सू. ४२

शृंगी—कर्कटशृंगी उ. ९१, ९२, ६०

शेफालिका—रक्तवृन्ता शारदकुसुमा सू. १

शेलु—(१) श्लेष्मातकः क. २, उ. ४०
(२) श्लेष्मातकः, 'लिसा' इति लोके । सू. ४६
(३) दक्षिणापथजं शाकम् श्लेष्मान्तकमपरे । उ. ४५

श्लेष्मातकः—(१) बहुवारः क. ६
(२) शेलुः चि. ३८
(३) शेलुः, 'लिसोडा' इति लोके । चि. ५

श्लेष्मातकी—'बहुयार' इति लोके क. ५

श्लेष्मातकप्रसवम्—बहुवारपुष्पम् उ. ४७

(२) शाल्मली सदृशपर्णो गजमद गंधपुष्पः, शरदि विकसनशीलः उच्चैर्वृक्षः ' सातवन ' इति लोके । सू. ३८

सप्तला—(१) सातलेति प्रसिद्धा सू. ४५
(२) यवतिक्ता चि. १०
(३) यवतिक्ताभेदः चि. ३०, क. ५
(४) यवतिक्ताभेदः, शंखिनी अपि तद्भेदः चि. ४
(५) सातला, सेहुण्डभेदः, अपरे तु बुध्नामाहुः । सू. ३९
(६) सातला स्नुहीभेदः सू. ३८
(७) सेहुण्डभेदः सू. ४४
(८) सेहुण्डः, जेज्जटस्तु सप्तलां यवतिक्ता भेदमाहुः । सू. ४६

सप्ताह्वः—सप्तपर्णः सू. १ चि. ९

समङ्गा—(१) मञ्जिष्ठा । चि. २
(२) मञ्जिष्ठा, वराहक्रान्ता इति अपरे चि. १६, उ. २१
(३) लज्जालुः उ. ६१
(४) लज्जालुका उ. ४०
(५) लज्जालुका, अन्ये वराहक्रान्तामाहुः । उ. ४०
(६) वराहक्रान्ता क. ८ उ. ४०
(७) गणिकारिका, वराहक्रान्तेत्यपरे चि. ८
(८) अञ्जलिकारिका, वराहक्रान्तामपरे उ. ३९
(९) अञ्जलिकारिका, लज्जालुकीतिलोके प्रसिद्धा, वराहक्रान्तामपरे । सू. ३७

सर्जः—(१) लघुसर्जः चि. ९
(२) शालभेदः सू. १३
(३) सर्जरसः ' राल ' इति प्रसिद्धः, अंतर्लोपात् रसः गंधरसः ' बोल ' इति लोके सू. ३८

सर्जकः—स्वनामप्रसिद्धो वृक्षविशेषः । क. ६

सर्जरसः—(१) सरलनिर्यासः चि. २२
(२) सालनिर्यासः उ. ३१
(३) राला सू. १३; उ. २४, ३१
(४) राला इति लोके प्रसिद्धः सू. १७

सर्पगंधा—(१) नाकुली क. ९
(२) वर्षासु छत्राकारा उ. ६०

सर्पगंधिका—सर्पच्छत्रिका क. ७

सर्पाक्षी—(१) रक्तपुष्पा पूर्वदेशे प्रसिद्धा क. ६
(२) लोहितपुष्पा, शंखपुष्पी भेदः क. ८

सर्षपाः—श्वेतसर्षपाः विशेषेण वमनार्हाः सू. ३९

सरः—सरकर्णिका सू. ४६

सरलं—वृक्षविशेषः चि. ३८

सरला—(१) त्रिवृत् चि. ५, १७, १९, २२; सू. ३९, उ. २४
(२) त्रिवृत्, केचित् सरलाम् शालतरुमा[illegible]ः चि. १८

(३) शुक्ला त्रिवृत् उ. ३६

(४) धूपकाष्ठः चि. २५

(५) पीतदारु देवदारः चि. ३०

(६) सरति इति सरला त्रिवृत् विरेचनीयत्वात् । चि. ३७

(७) सरलः, विशंसिकामन्ये । सू. ३७

सविषचूर्णम्—वृश्चिकालीनामकं क्षुपभेदं केचित् कथयन्ति । चि. २३

सहचरः—कंटासेलियाकः सू. ३९

सहचरद्वयम्—कंटशेलुद्वयम् सू. ३८

सहदेवा—(१) नाङ्गेरुकी प्रति प्रसिद्धा । चि. ५

(२) पीतपुष्पा बला उ. ३०

(३) बलाभेदः पीतपुष्पा 'काङ्कसी' इति लोके शा. २

(४) पीतपुष्पा ' काङ्कसी ' इति लोके, अन्ये बलाम् नीलपुष्पामाहुः । सू. ३८

सहस्रवीर्या—(१) दूर्वा उ. ५८

(२) श्वेतदूर्वा सू. १९

सहा—(१) माषपर्णः चि. २३

(२) माषपर्णी चि. ५

(३) मुद्गपर्णी क. ८

(४) मुद्गपर्णी, माषपर्णीत्यन्ये उ. १७

सहाचर—शैलेयः चि. ३७

सहाद्वयम्—मुद्गपर्णीमाषपर्ण्यौ सू. ४६

सहे—(१) मुद्गपर्णीमाषपर्ण्यौ क. ७ उ. ३१

(२) मुद्गपर्णी माषपर्णी च. चि. २

स्वादुकंटकः—विकंकतवृक्षाः ?टकारिकेति प्रसिद्धा । सू. ४२

सारिवा—(१) प्रसिद्धा उ. २६

(२) उत्पलसारिवा क. ८; उ. १७, ३९

(३) उत्पलसारिवा सुगंधमूला । उ. ३९

(४) जम्बूपत्रा दुग्धगर्भावल्ली स्वनामप्रसिद्धा सू. ३८

सारिवाद्वयम्—(१) सारिवा उत्पलसारिवा च. उ. ३९

(२) आस्फोता काकवल्ली च. उ. ६१

सालः—शङ्कुः तस्य सारः सालसारः सू. ३८

सावरः—रोध्रः क. २

सावरकम्—रोध्रम् उ. ४०

सावररोध्र—लोध्रः तस्यैव ग्राहित्वात् नेतरः तस्य विरेचनत्वात् सू. ३८

सावरलोध्र—श्वेतस्थूलत्वक् सू. ३८

स्थिरा—(१) शालपर्णी चि. १७, उ. ३९

(२) शालिपर्णी क. २

सिञ्चितिका फलम्—तद्भेद (बदरभेद) एव, अतिमधुरो मुष्टिप्रमाणः उत्तरापथजः। सू. ४६

सितकर्णिकः—श्वेतकर्णिकारः उ. ४५

सितसिन्धुवारः—श्वेतनिर्गुण्डी क. ५

सितमरिचम्—शोभाञ्जनकबीजं, शुक्लमपि मरिचमस्तीत्येके। सू. ४६

सिता—(१) शर्करा सू. ४४, उ. ५०

(२) शर्करा, श्वेतदूर्वा इत्यन्ये। सू. ३७

सितोपला—शर्करा उ. ५२

सिद्धार्थः (क)—(१) सर्षपः सू. १९, ३९ उ. १७, ६१

(२) श्वेतसर्षपः सू. ४६; उ. ४०, ६०

सिन्दुकः—निर्गुण्डी उ. ३१

सिन्धुवारः—(१) निर्गुण्डी उ. ४५

(२) निर्गुण्डीभेद क. ६

(३) श्वेतपुष्पा निर्गुण्डी क. ५

सिंहः—रक्तशोभाञ्जनकः चि. ९

सिंही—बृहत्कंटकारिका। उ. ३९

स्नुही—(१) सेहुण्डः चि. ८, ९

(२) सेहुण्डः, स च बहुकंटकः श्रेष्ठः चि. १४

स्नुहीक्षीरम्—सेहुण्डदुग्धम् सू. ३७

सुगंधकः—(१) देवशालिः सू. २०

(२) देवशालिः पाञ्चाले सू. ४१

(३) गंधतृणम्, अल्पं भूस्तृणम्, सुगंधितृणमिति केचित्। सू. ४६

(४) द्रोणपुष्पः। अन्ये बृहत्सुगंधतृणम् इति। सू. ३८

सुगंधा—सर्पसुगंधा नाकुली इति यावत् क.५

सुगंधिका—(१) सर्पगंधिका क. ५

(२) सर्पसुगंधिः क. ६

(३) उत्पलसारिवा चि. १७

सुधा—(१) सेहुण्डः सू. ३८; चि. २,१८

(२) स्नुही चि. ८

सुनिषण्णकः—(१) सिरबालिका, चतुष्पर्णी त्यपरे। सू. १९, ४२ उ. ४५.

(२) चतुष्पत्री, अन्ये शिरबालिकामाहुः उ. १७

(३) शिरबालिका इति लोके, श्रीब्रह्मदेवस्तु चतुर्दलमाह, तल्लक्षणं कथ्यते "चांगेरीसदृशैः पत्रैः सुनिषण्णः चतुर्दलः। शाको जलान्विते देशे चतुःपत्रीति कथ्यते॥" इति॥ सू. ४६

सुमना—जाती सू. २८, ३७; चि. ९, १६; उ. १७, ३९

सुमनः फलैः—जाती फलैः सू. ४६

सुमुख—(१) वनबर्बरिका सू.—४६

(२) राजिका, अन्ये तु वनबर्बरिका 'सडहा' इति नाम्ना जेजीभुक्तौ प्रसिद्धा। सू—३८

सुरद्रुमः—(१) देवदारुः चि. ३७

(२) देववृक्षः उ. ६१

सुरभिः—रास्ना चि. ५

सुरसः—तुलसी उ. ४२

सुरसा—(१) तुलसी उ. ४२, ६२

(२) तुलसी इति लोके सू. ३९

(३) सुरभिपर्णा तुलसीति लोके स. ४६

सुरसा श्वेतसुरसा } श्वेतकृष्णकुसुमे ते च लोके तुलसी इति प्रसिद्धे सू. ३८

सुरसाग्रजम्—तुलसीपल्लवम्, मल्लिका कुसुममिति केचित् । क. ८

सुरस्याः प्रसूनम्—तुलसीपुष्पम् क. ५

सुरसो—कपित्थसदृशपत्रा, 'बिल्वनासी' इति लोके प्रसिद्धा, श्वेतनिर्गुण्डी इत्यन्ये । सू. ३८

सुरा—सुराह्वम्, अन्ये इन्द्रसुरा इन्द्रवारुणी इति उ. ६२

सुराह्वयम्—देवदारु उ. ४१

सुरेन्द्रकंदः—वज्रकंदः सू. ४६

सुरंगी—रक्तकुसुमः शोभाञ्जनकः 'पीलु' इति लोके सू. ३९

सुवर्चला—(१) सूर्यावर्त सू. ४५, चि. २३

(२) सूर्यभक्ता शा. १०, चि. २ उ. ४७

(३) सूर्यावर्तभेदः सू. ४६

(४) सूर्यावर्तः सौवर्चलीति लोके सू. ३७

(५) सूर्यावर्तः वृश्चिकपत्री सू. ४२

(६) सूर्यावर्तः केचिन्मारुषसदृशदण्डम् आर्तगलसदृशपत्रम् लप्पसमाहुः सू. ४६

सुवर्णक्षीरी—(१) कंकुष्ठम् चि. ४

(२) अनन्तासदृशपत्रा, कंकुष्ठमित्यपरे । सू. ३८

(३) अनन्तासदृशपत्रा 'हिया-बलि' इति लोके, कंगुष्ठ इत्यपरे । सू. ३९

सुवहा—(१) गोपदी चि. २

(२) गोधापदी उ. ५१

(३) रास्ना उ. ३४

(४) गंधनाकुली, नापीणीति लोके गोधापदीत्यपरे कन्दालीत्यन्ये । चि. १७

सुषवी—(१) पानीयवल्ली चि. ५

(२) कारवेल्लकः, अन्ये तु पानीयवल्लीमाहुः सू. ३८

स्फूर्जकः—(१) श्योनाकनाम्ना प्रसिद्धः लकुचाकारपत्रकाण्डः सू. ३

(२) फणिज्जकाकारः प्रायशः पारियात्रे भवति । चि. ५

(३) वनकुरण्टकाकारः फणिज्जकापरपर्यायः उ. ३९

स्थूलकंदः—ग्रामकंदः सू. ४६

सूर्यवल्ली—(१) अर्कपुष्पी, सूर्यावर्तभेद इत्यन्ये । सू. ४५

(२) पटोलसदृशपत्रा यस्याः पत्ररसेनाक्तं मांसं स्विन्नमिव भवति, अन्ये सूर्यावर्तमाहुः । क. २

सूरणः—स्वनाम प्रसिद्धः सू. ४६

स्पृक्का—कुटिलपुष्पा, सुगन्धि द्रव्यमौत्तरापथिकं सू. ३८
सेलुः—श्लेष्मान्तकः सू. ४६
सेव्यम्—उशीरम् उ. ४२
सैरेयकम्—कटशेलुकः चि. ३
सैरेयकद्वयम्—रक्तपुष्प नीलपुष्प कंटशेलुयाद्वयम् । सू. ३८
सोमः—(१) सोमवल्कः कट्फलाख्यः क.६
(२) सोम एव, सोमवल्कल इत्यन्ये अपरे सोमा ब्राह्मी इत्याहुः । सू. ३७
(३) सोमसंज्ञः, सोमलतेत्यन्ये, कन्थल इति जेज्जटाचार्यः तन्न इच्छति गयो चि. १७
सोमराजी—बाकुची क. ५, ६.
सोमवल्ली—गुडूची क. १: उ. २८
सोमवल्कः—(१) कट्फलम् सू. ३७
(२) कट्वलः क. १, ३
(३) वाकलः चि. १२
सोमा—गुडूची, सोमलता इत्यन्ये । क. १
सोमाह्वया—त्रिसंधिका, सोमलतेत्यपरे । चि. २
स्थौणेयम्—ग्रंथिपर्णिकम् क. ६
स्थौणेयकः—घुणेरकः सू. ३८
सौगंधिकं—(१) कुमुदभेदः उ. ४५
(२) गर्दभपुष्पाभिधानमत्यन्तसुरभि चंद्रोदयविकासि । सू. १३
(३) नीलोत्पलाकारवर्णम् उत्पलम् सुगंधि च । सू. ३८
सौवीरम्—महत्तमं (बदरं) आमपक्वावस्थाः मधुरं मरुदेशजम् सू. ४६

—ह—

हटः—जलकुम्भिका सू. ४५
हठः—जलकुम्भिका चि. ११, २९
हयमार(क):—करवीरः सू. ३७, चि. ८
हरिचंदन—रक्तचंदन उ. ४७
हरितकम्—"कुठेरक शिग्रुसुरससुमुखासुरिमूस्तृणाः ।
चुक्रकशुक्रिका चेति वर्गो हरितकं विदुः ॥"
सू. १९
हरिद्राम् —पिण्डहरिद्राम् उ. ४४
हरितपिप्पली—गजपिप्पली सू. ३८
हरिमन्थः—चणकः सू. ४६
हरिवृक्षः—इन्द्रवृक्षः, धवाकारः इति एके, कुटज इत्यन्ये पठन्ति, हरिद्रावृक्ष इत्यपरे पठन्ति चि. ११
हरेणवः—कलायाः चि. २
हरेणुः—(१) रेणुकः सू. ३७; उ.१७,३९
(२) रेणुकानाम गंधद्रव्यम् चि. २
(३) वर्तुलकलायः सू. २१, उ.१८
(४) स्वल्प वर्तुलः सू. ४६
(५) सतीनभेदः वर्तुलकलायः । सू. २०
हरेणुका—रेणुका सू. १८, क. ६

वाग्भट्ट निरुक्त

[आपणा प्राचीन आयुर्वेदिक आचार्योए लगभग ५०० वनस्पतिजन्य औषधोनो उपयोग कर्यो छे, पण एमांनी घणी चीजो अत्यारे संदिग्ध छे. आ संदिग्धतानां कारणो विषे 'आयुर्वेद विज्ञान'मां घणी वार लखवामां आव्युं छे एटले पुनरुक्तिनी जरुर नथी. पण संदिग्धतानुं एक मोटुं कारण प्राचीन आचार्योए वापरेलां वनस्पति नामो अपरिचित थइ गयां छे ए पण छे. चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट वगेरे प्रख्यात ग्रन्थकारोना टीकाकारोए ते ते स्थळे वनस्पतिनां अपरिचित नामोना पर्यायो आपवानो प्रयास कर्यो छे. क्वचित् आ रीते निरुक्ति आपतां ते ते वनस्पतिनी ओळखाण-पाननी रचना, मूळनी रचना वगेरे पण टुंकामां आपे छे. क्वचित् ते टीकाकारना वखतनी देशी भाषानो पर्याय आपे छे. जुदी जुदी टीकाओमांनी आ सामग्री एकठी करवामां आवे तो संदिग्ध वनस्पतिओमांनी कोइ कोइ उपर अजवाळुं पडवानो संभव छे. पण टीकाओना समुद्रमांथी आवा छूटक उल्लेखो एकठा करवामां श्रम घणो अने तात्कालिक फळनो संभव ओछो; एटले आवो श्रम कोण ले ? पण रा. रा. भाइ बापालाले खरो शास्त्रीय वृत्तिथी चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट (अष्टांगहृदय) वृन्दमाधव तथा शार्ङ्गधर एटलानी छपायली टीकाओमांथी आवां निरुक्तिदर्शक वचनोनो जुदो संग्रह कर्यो छे. एमांथी वाग्भट्टना अष्टांगहृदय उपरनी अरुणदत्तनी टीकामांथी जेटली वनस्पति निरुक्ति मळी ते अहीं आपी छे. टीकाकार अरुणदत्त बंगाळाना छे अने इ० स० १३मो शतकनी शरुआतमां थइ गया होवा जोइए एम डा० हर्नले सकारण तर्क कर्यो छे.

चरकना महान टीकाकार चक्रपाणिदत्त अने सुश्रुतना समर्थ व्याख्याकार डल्हणथी वाग्भट्टना आ टीकाकार अर्वाचिन छे एटलुंज नहि पण चक्रपाणिदत्तनी के डल्हणनी टीकाओमांथी आ विषय उपर जेटलुं अजवाळुं पडे छे एटलुं अरुणदत्तनी टीकामांथी नथी पडतुं. अरुणदत्ते घणी वार खाली पर्यायो—अस्पष्ट पर्यायो ज आप्या छे. छतां वाग्भट्टे वापरेल वनस्पतिओनी अरुणदत्तनी निरुक्ति आ नीचे नमुना तरीके आपी छे. क्रमे क्रमे आ बधा ग्रन्थोनी निरुक्ति छापवानो विचार छे. जुदा जुदा टीकाकारोना खुलासाओने सरखाव्या पछी संदिग्ध वनस्पतिओ उपर जेने जे कांइ सूझे ते आ मासिकद्वारा बहार पाडशे एवी आशा छे.]

("आयुर्वेद विज्ञान"ना तंत्रीनी नोंध.)

वाग्भट्ट निरुक्त

कुठेरः—वैकुंठः । „ ६–१०४

कुत्सितांबः—कदंबः । „ १५–२५

कुंभः—त्रिवृत् ॥ „ १५–२

कुंतली—सूक्ष्मतिलजाति ॥ „ ६–७४

कृतवेधनं—धामार्गवः ॥ „ १५–३

केशी—गंधमासी । उ. ६–३४

केल्हटं—हिस्यकसंज्ञं उदुम्बरमेद ॥ सू. ६–९०

कोशातकः—घंटोलिः ॥ „ ६–७६

कोशवत्यौ—घंटालिकैका धामार्गवो द्वितीया राजकोशातकी ॥ सू. १५–१

क्रौञ्चादनम्—तमेदम् ॥ „ ६–९१

कंडूकरी—कपिकच्छुः । „ १५–९

ख.

खपुरः—कुंदुरुकः । . १९–४३

खरबुसः—मरुबकः । „ १५–३०

ग.

गतशोकः—अशोकः ॥ „ १५–२६

गवेधूकः—तृणधान्यविशेषः । „ ६–९१

गवाक्षी—(१) गवादनी स्थाणुकर्णी संज्ञा इन्द्रबारुणी इत्यन्ये ॥ सू. १५–४९

(२) विशाला द्वितीया इन्द्रवारुणी ॥ सू. १५–२

गालान्—मदनान् ॥ चि. १–६

गुडमंजरी-कालाशाल्मली ॥ उ. ४०–५२

गुंद्रा—पदएरकः ॥ सू. १५–६, २१

गुंठः—वृंततृणम् ॥ सू. १९–२४

गोपसुता—सारिवा ॥ „ १९–९

गोक्षुरकः—मक्षकंटकः ॥ „ ६–११६

गोजिव्हा—गोधूमिका तु गोजिव्हा गोजी क्रोष्टुक मूलिका ॥ सू. ६–७९

गंधपलाशः—गंधपत्रम् ॥ चि. १४–२४

गंडीर—स्नुहि ॥ सू. १५–३३

—घ—

घराघरी—वेणी च देवदाली च जीमूतं चेति पर्यायाः ॥ क. १–२३

घुणप्रिया—अतिविषा । चि. १–१४३ सू. १९–३३

घोंटा—पूगविशेषः । „ १९–१७

—च—

चर्मसाव्हा—सातला । ब्राह्मीत्यन्ये ॥ सू. १५–४५

चारटी—पद्मचारिणी ॥ उ. ६–३४

चांगेरी—क्षुद्राम्लिकाम्ली सू. ६–७३

चित्रा—मूषिकपर्णी । „ १५–१

चिरबिल्वः—पूतिकरंजः ॥ „ ६–१७

चिर्भटं—डंगरं मालवेषु प्रसिद्धं अतिप्रसिद्धं जालंधरादिषु ॥ „ ६–८८

चोरकः—(१) ग्रन्थिपर्णी ॥ „ १५–४३

(२) चंडा ॥ उ. ६–३५

चोचं—(१) त्वक् ॥ सू. १५–४३

(२) पनसफलम् ॥ „ ३–३१

चंद्रलेखा—बाकुची ॥ चि. ३–१३४

चंद्रशकला—बाकुची ॥ „ १९–४४

चंडा—कोपना ॥ सू. १५–४३

—छ—

छत्रा—धान्यकम् ॥ उ. ६–३९

वृश्चीव—सूक्ष्मपुनर्नवा ॥ चि. १-११३
क्षुद्रवर्षाभूः ॥ सू. १५-९

वृक्षकः—नंदीवृक्षः। „ ३०-९

वृद्धिः—श्रावणी ॥ „ १५-१२

वृश्चिकाली—उष्ट्रधूमकः। „ १५-२८
उष्ट्रधूमको मेषशृंगी ॥ „ १५-९

वेत्रः—वंशसदृशः। „ ६-७४

वेल्लः—विडंगः ॥ „ १५-४

सरसी—तुंबारवत्रिका। „ १५-३०

सर्पगंधाख्या—नाकुली। उ. ५-३

सर्पसुगंधा—नाकुली। चि. १४-१०३

स्थविरम्—शैलीयम् ॥ चि. ३-१३३

स्वर्णक्षीरी—कंकुष्टम् ॥ सू. १५-४५

सदाफलः—उदुम्बरः। „ १५-४१

समंगा—नमस्कारी रक्तमूलाख्या ॥
सू. १५-३७

सप्तच्छदः—संयुक्तच्छदः ॥ „ १५-१७

सारिवा—उष्णवल्ली ॥ „ १५-११

स्थिरा—शालिपर्णी ॥ चि. २२-४२

सुषवी—स्थूलजीरकः। „ १४-१३

कारवी—पानीयवल्ली अजशृंगी । सू. १५-१७

सुमुखः—कटुपत्रकः। „ ६-१०४

सुवर्चला—रविभक्ता ॥ „ ६-९२

सुरसः—कृष्णतुलसी। „ ६-१०४

सुराला—श्रेष्टसर्जरसः ॥ „ १५-४

सुनिषण्णः—स्वस्तिकाख्यो जलमध्ये भवति। पत्रैः चांगेरी तुल्योऽग्निकरोऽपि
वृष्यः। सू. ६-७१

स्रुववृक्षः—विकंकतः कंटकी वृक्षः कंटकारिका इति प्रसिद्धः ॥ सू. १५-१७

सूर्यवल्ली—करवीरकाकारपुष्पी। उ. ३५-२१

स्पृक्का—देवी ॥ सू. १५-४३

सैर्यकः—सहचरः ॥ „ १५-१७

सैर्यकयुग्मं—सहचरद्वयमेको रक्तपुष्पः कुरबकाख्यो अन्यः पीतपुष्पः कुरंटकाख्यश्च। सू. १५-२१

स्फोटहेतुः—भल्लातकः। चि. २०-११

सोमवल्कः—सितसारः खदिरः सू. १५-४१

स्थौणेयम्—तैलपोतकम् ॥ „ १५-४३

सौवीरबदरम्—कर्णीकबदरम् ॥ „ ६-११७

शकुलादनी—कटुका ॥ „ ६-७६

शताह्वा—शतपुष्पा। चि. २२-३६

शबरकंदकः—लशुनः ॥ उ. १८-५८

शम्याकः—कर्णिकारः ॥ सू. १५-२
महानिम्बः ॥ चि. २१-२४

शाबररोध्रः—अक्षिभेषजापरसंज्ञः ॥
सू. १५-२६

शालूकं—पद्ममूलम् ॥ „ ६-१०
शा. २-४

शाकं—(१) खरच्छदं
वृक्षविशेषः। सू. १५-१३
(२) वरदारु ॥ „ १९-१९

शार्ङ्गेष्टा—अंगारवल्लिका ॥ „ ६-७४

श्यामा—(१) मालविका त्रिवृत्
मसुरविदलाख्या ॥ „ १५-४५
(२) मालविका ॥ चि. १५-१०

शितिवा कः—करंजः ॥ चि. ११–११

शिंशपा—मंडलपत्रिका ॥ सू. १५–१९

शिग्रु—फलपत्रकः । „ ६–१०४

शीतपाकी—शिखंडीका [illegible] भेदः॥ सू. १५–६

श्रीवासः—चंडाश्रीवेष्टकाख्यः॥ „ १५–४३

शुक्तिः—नखः । „ १५–४३

शूकरी—वृद्धदारकः । उ. ६–३५

शूर्पपर्णी—मुद्गपर्णी माषपर्णी च ॥ सू. १५–९

शृंगी—अतिविषा । उ. ५–३

शृंगाटकं—त्रिकोणाकृति जलोद्भवम् कंदम् ॥ सू. ६–९०

श्रेयसी—हस्तिपिप्पली ॥ चि. ६–४४

शंखिनी—यवतिक्ता ॥ सू. १५–२

श्वेतवाहः—अर्जुनः । सू. १५–१९

श्वेतायुग्म—एका किणिहिसंज्ञा अन्या महाश्वेता पालिंदीसंज्ञा ॥सू. १५–२८

श्वेतकटभी—श्वेतगुंजा ॥ उ. ९–१०

हरिचंदनं—यच्छेदे [illegible] सुष्ठु शीतवीर्यं च तद्हरिचंदन मुच्यते। सू. ३—४०

हेमदुग्धा—कनकक्षीरी । „ १५—२

हैमवती—श्वेतवचा — „ १५–४०

हंसपादी—कीटमारिका ॥ चि. ५–३७

त्रिपादी कीटमारी । चि. २२–४२

क्षवकः—क्षुद्विबोधनः ॥ सू. १५–४०

क्षीरिणी—कांचनक्षीरी ॥ „ १०–२४

क्षीरमोरटा—मधुस्रवा ॥ चि. ६–११३

क्षुमा—अतसी ॥ चि. २२–३४

चक्रदत्त निरुक्त

कुरुण्टक—श्रीहस्तिनो । कृष्ण सूक्ष्मफला मस्तकमंजरी दक्षिणदेशे स्थितचराख्या इत्याह ॥ ३८१

कुरुण्टो—नीलझिण्टी । २७७

कुलकं—पटोलपत्रम् । ५०९

कुलिका—कालकडभेद: स्वल्पफल: कुडकरापि इति ख्यात: ॥ ६८७

कुस्तुम्बरु—धनीयकम् ९३१

कुष्ठघ्नम्—एडगज: । ६९२

कुशी—गोरक्षतण्डुला । ७४१

कूलक:—पटोल: । १२

कृताञ्जलि:—लाजालिया । ४९
सूर्यभक्ता अंजलिकारिकेति ख्याता, लाजालुया इत्यन्ये, लज्जावती इति कुत्रचित् ॥ ६६७

कृष्णगन्धा—शोभांजनक:, अन्ये तु कृष्णगन्धा शमीत्याहु: तन्न ॥ २७३
शोभांजनक: । ४४६, ४९६

कृष्णवेत्रं—कालियालतेति प्रसिद्धम् । ५०४

कुष्टिक:—राजिका । ६६५

केतकी—केओडा इति ख्याता ॥ २७६

केबुक—केडताडा इति ख्यातस्य तस्य मूलस्वरसं ग्राह्यम् ॥ १४८

केशर:—नागकेसर: । १०८

केशिनी—भूतकेशी मांसी वा ॥ ९९९

केशी—भूतकेशी ॥ २३७

कैरवं—कुमुदम् । ६४१

कोला—चवी । ३३१

कोलं—कर्कोलम् । ५८०
शुष्कबदरम् । २६९, ३५६

कोष:—जातिकोष: । २८०

कोषातकी—घोषक: । १०४

कोशाम्र:—कुसुम्भ इति ख्यात: ४६९

क्रोष्ट्री—पृश्निपर्णी । ७९

कौन्ती—रेणुका । २३९, ४३२

कंगुनीका—कायनि । ४७७

क्लीतकम्—यष्टिमधु । ५२२

—ख—

खण्डकर्ण—खाण्डकान: (खारकोन:) इति ख्यात: । ५२५

खदिरीबीजम्—अशोकबीजम् । ३७८

खराश्वा—अजमोदा ३८९

खुड्डाकपद्मम्—श्वेतपद्मम् ॥ २९५

खोटि:—काष्टखोटि: । २८२

—ग—

गजचिर्भटो—गोरक्षकर्कटी । ३५३

गण्डीर:—रामठ:, स तु स्थलजो ग्राह्य:॥ २०१

गङ्गापालकम्—पालङ्कसदृशपत्रं गंगापालकम् गाङ्गरा इति ख्यातम् । १३०

गण्डीरिका—स्नुही, अन्ये तु मंजिष्ठा ॥ ५१७

गदं—कुष्टम् । ९१८

गन्धपत्रं—वाटियापत्रम् । २८८

गन्धफली—प्रियंगु: । १९२

गन्धरस:—स्वनामख्यात: । २१०

गवाक्षी—गोरक्षकर्कटी, श्वेतापराजिता इत्यन्ये ॥ १५६
गोरक्षकर्कटी ॥ ४११

—फ—

वत्सादनी—गुडूची. ६६४

वनिता—प्रियंगुः । १९२

वन्यम्—कैवर्तमुस्तकम् ॥ ४९७

वयःस्था—शुकानना, ब्राह्मीत्यन्ये २३७
 ब्राह्मी, गुडूचीत्यन्ये, अपरे तु निर्गुण्डीमाहुः ॥ २३७

वर्द्धमानः—एरण्डः । ५२६

वर्षाभूः—रक्तपुनर्नवा । ६०

वराङ्गम्—गुडत्वक् । २१३

वसुक—वसुहट्टः । ३८१

वशिरम्—सूर्य्यावर्तः ३३४ श्वेतसूर्यावर्तः । ५२६ सूर्यावर्तभेदः । ३८१

वाजिकर्णः—शालभेदः । ५७९

वानरी—शूकशिम्बी । १७९

वाप्यम्—कुष्टम् । १९२

वायसी—काकमाची । १९३

वाराही—वाराहीकन्दः । तदभावे चर्मकारालुकम् । ३८३, ५३१.

वाराहीकन्दः—तल्लक्षणं यथा—“ताम्बूलसदृशैः पत्रैः ग्रन्थिभिः समलंकृतम्। सर्जार्जुनाभिभैः पुष्पैः शोभते च सुगन्धिभिः ॥ वराहच्छविवर्णेन पिच्छलेन सुवर्चसा । कन्देन कटुतिक्तेन नीलोत्पल सुगन्धिना । जायते सा गिरौ रम्ये विन्ध्ये श्रीपर्वते तथा ॥” वृन्दे तु “वराहमूर्द्धवत् कन्दो वाराही कन्दसंज्ञितः, भिषजां तदलाभे च चर्मकारालुको मतः इत्युक्तम् ॥”
 किन्तु वाराही कन्दापेक्षया चर्मकारालुकस्याति हीनगुणत्वेन नास्य तत् प्रतिनिधित्वं युक्तम् ॥
 वाराही कन्दस्य दुर्लभतया चर्मकारालुकमेव गौडीयैर्वाराहीकन्द संज्ञया गृह्यते । वस्तुतस्तु वाराहकन्दकाच्चर्मकारालुकं द्रव्यान्तरं तल्लक्षणाभावात् ॥ ७४३

विकसा—मंजिष्टा. २६०, २७७

विकंकत—वैंखर इति लोके । ६६४ । वयङ्कलिरिति ख्यातः । ४४७

विडंगतण्डुलम्—विडंगस्य निस्तुष सारभागः । ३२८

विदारी गन्धा—शालपर्णी । ३७५

विशल्या—दन्ती, काष्टपाटला वा ६८८

विशाला—गोरक्षकर्कटी । ३८०, २३५, ५१४, १५५

वीरतरुः—शरः । ३८०

वीरा—क्षीरकाकोली, पृश्निपर्णीत्यपरे ॥ २३७
 क्षीरकाकोली ॥ ३५८

वेल्लः—विडंगः ४०१

वेष्टकम्—कुन्दुरिति ख्यातम् ॥ ५८१

व्याघ्री—विहनेति ख्यातं सुगन्धि द्रव्यम्, नखीत्यन्ये ॥ २८८

वृश्चिकाली—वृश्चिकपत्री । १४१ विछाटीति ख्यातः । १६०
 वृश्चिकपत्री, विछाटीति ख्याता ॥ २३७

शार्ङ्गधर निरुक्त

अनंता—यवासा । (गू) ऊ. ११–५९
यवासकः । म. २–१३५
अवल्गुजा—बाकुचीति शब्दवाच्यद्रव्यविशेषः ॥ म. २–१३५
अतिविषा—अतीस शब्दवाच्या ॥ ऊ. ११-८
असन—वृक्षविशेषः पीतसारः विजयसारः॥ म. २–१३२.
अजगंधा—(१) बनतुलसी (गू) म. ७-१२०
(२) बर्बरिका । बाकुची । (गू) म. ६–९७
(३) वावरी ॥ म. ६-१२६ थी १२९
(४) वनतुलसी (गू) म. ६-८१
अजश्रृंगी—कर्कटश्रृंगी (गू) म २–१३९
कर्कटाख्या । म. १–१२९
अजमोदा—यमानी ॥ म. ६–७६
अग्नि—भल्लातकः । म. ९–१८७
चित्रकः (गू) म. ९–१८७
अरलुः—प्रसिद्ध एव वृक्षविशेषः तदभावे स्योनाकः ॥ म. १–२९
अलावु—कटुतुम्बी ॥ तुम्बी (गू) ऊ. ११–८
अलम्बुषा—मुण्डितिका । म. १–११
अजाजी—कृष्णजीरकः । ऊ. ११–१०४
अम्बष्ठा—आम्रभेदः । (गू) । म. २–११२
अग्निमन्थद्वयम्—इति तर्कारि, तस्यभेदोऽरणिः । म. २–१२८

इ.

इन्द्रवारुणिका—चिर्भटः । म. ७–६
चिर्भटी ॥ म. १२–५६
इरिमेद—(१) दुर्गन्धि खदिरः । (गू)
(२) विट्खदिरः । ओजशब्द[illegible]च्यः म. ९–५३
इक्षुरः—कोकिलाक्षः तालमखाना इतिलोके ॥ म. १–१९४

ए.

एरण्डः—पंचाङ्गुलः । ऊ. ५–४७
एलीयः—(१) एलवालुकम् । (गू)
(२) कुमारीरसजनितनिर्यास द्रव्य विशेषः 'एलुवा' इति प्रसिद्धः । केचित् एलीयशब्देन एलवालुकं वदन्ति ऊ १२-५६

उ.

उशीरं—तृणभेदः रक्तपत्रं दर्भवत् ॥ म. २–५१
उपकुंचिका—(१) जीरकभेदः "करौंजी" । शब्दवाच्यः ।
(२) कलवाजिका । (गू) । म. ६-९९

(३) कृष्णजीरकः कल्वजिका।
म. ७–९०

एलवालुकम्–(१) स्वनामख्यात तच्च कुष्ट-गंधि षट्फल सदृशं।
म. ९–३८
(२) हरिवालुकम्(गू)म.१०-४८

ऐ.

ऐरावती—(१) नागबला इति भानुमती।
ऊ. ६–२३
(२) नागरंगफलम्।(गू) ऊ. ६–२३

क.

करकं—दाडिमम्। म. ६ पा. १८५

कम्भारी—'शीवन'॥

कर्कोटी—वन्ध्याकर्कोटी वल्ली॥ म. १२–४१

ककुभः—अर्जुनः सुगंधमूलो विटपविशेषः। अथवा 'कौह' शब्दवाच्य वृक्ष-विशेषः॥ म. २–११३

क्रमूकं—पूगफलम्। प्र. ४–२०

कपिकच्छु—वानरी॥ प्र. ४–१४

कलिंग—फलवर्तुलम, ब्रह्मशीर्षम्॥ (गू) प्र. ४–१७

करंजः—बृहत्करंजो वृक्षविशेषः लोके 'चोला' इति प्रसिद्धा॥ म.९–५३

कम्पिल्लक—(१) शेरिशब्दवाच्यः वृक्षवि-शेषः कम्पिल्लेत्यपरे॥ म. ९–५१

(२) रेचनकः 'कपिला' शब्देन विख्यातः।
(३) रक्तांगकः (गू) म. ५–२६

काकोदुम्बरिका—कठुमरिशब्द वाच्या। कटुम्बर। (गू) म. ४–३

कारवेल्ली—(१) 'करेला' शब्द वाच्या।
म. १२-४५. उ. ११-४३
(२) शाकविशेषः (गू)म.१२-४५

काकनासा—काकजंघा। (गू)।ऊ. ५–४७

काकनासिका—(१) कौवाडोडीति लोके।
(२) [illegible]। (गू)।
म. अ. ८–११

काकोली—चर्वणतः मधुरा क्षीरप्राया वर्णतः शुक्ला च॥ म. ५–२८

काकिनी—किकइबोजं॥ ऊ. ८–४६

काञ्चनारः—(१) वृक्षविशेषः प्रसिद्धएव निजनाम्ना॥ म. ७–९५
(२) जम्बूला॥ (गू) म.१०-१४

कुष्टं—गंधि, कट्फलसदृश द्रव्यविशेषं॥ म. १०–२९

कुल्माषा–(१) कुत्सितमाषाः।म. १०–१२
(२) अर्धस्विन्नमाषाः॥ (गू)।
म. १०–१२

कुस्तुम्बुरु–धान्यकम्॥ म. ६–१०१

कुटजः—गिरिमल्लिका। म. १–२४

कुठेरकः–(१) ग्रन्थिपर्णो निजनाम्ना प्रसिद्धः। स च द्विविधः एको क्षुद्रपर्णः, अपरो बटपत्रः इति।

(२) कटुम्बरः। रामतुलसीत्यन्ये॥
(गू.) क. ११–५४
(३) श्वेततुलसी॥ म. १२–२४४

कुठेरः—बावरी। गू। उ. २–६९

कुठारः—कुठारछिन्ना कुटजभेदः इत्यन्ये। तदभावे जम्बुत्वक् इच्छन्ति नापरे॥ अस्मत् संप्रदाये कुठारछिन्नाभिधानी शब्दवाच्यो द्रव्यविशेषः॥ म. ११–४४

कृष्णजीरकम्—पाश्चात्यखुरासानीति लोके। म. १–६६

कृतमालकः—राजवृक्षः॥ म. २–१९

कृष्णोत्पलम्—नीलकमलम्, तदभावे कमलबीजमिति एके कृष्णोत्पल शब्देन रीठा (अरिष्टकफल) शब्द द्रव्य विशेषं व्याख्यानयन्ति तन्न सर्वमतम्॥ उ. ११–६९

कोद्रवं—कुधान्यविशेषः॥ प्र. ४–२०

कोशाम्र—जंतुवृक्षः तत्फलं अम्लं ग्राही भवति॥ म. २–१११

कोशातकी—घोषारी॥ म. ९–६०

कौन्ती—रेणुका। म. ९–३८

कंकुष्ट—सुवर्णक्षीरी॥ म. ११–७२

कंकोलं—कंकोलफलद्रव्यं निजनामप्रसिद्धं तच्च विविधं मरीचकंकोलं क्षीरकंकोलं च॥ म. १–६७

कुन्दुरुकः—धूपः निर्यासविशेषः॥ ग. ९ पानुं २२४

—ग—

गजपिप्पली—चव्यफलम्। प्र. ४-११–१२ म. २–४१

ग्रन्थिकं—पिप्पलीमूलम्॥ म. २–१७ म. ६–२६

गिरिकर्णिका—(१) 'कोफन्दईशफन्द' इति प्रसिद्धः॥ म. ९–६१
(२) 'गणियारि' शब्दवाच्या- लोके 'इस्फन्द' इति प्रसिद्धः म. ७–५०
अपराजिता (गू) म. ७–५०

गुन्द्रा—पटेरकभेदः, गुन्द्रिणी। (गू)। म. २–१०३

गुग्गुलु—शालनिर्यासः॥ प्र. ४–१३

गांगेरुकी—(१) नागबला 'गुडसकरीत' शब्दवाच्या॥ म. ६–१५४
(२) गणग्रोरी। (गू) म.१–२०
(३) नागबला॥ म. १–२०

—च—

चक्रमर्द—प्रसिद्धः लोके प्रवाड [illegible]: उ. ११–५०

चन्द्रप्रभा—(१) कर्पूरः। [illegible] शठी शतावरी च कथयन्ति संज्ञाशब्दत्वात्॥ म. ७–५०
(२) कर्पूरः। चंद्रवत् प्रभा यस्येति व्युत्पत्त्या, यद्वा चं[illegible]लिका कर्पूरभेदः। (गू) म. ७–५०

त्रायोरी—प्रसिद्धा, साच अम्लरसा, अम्ल चांगेरीति लोके प्रसिद्धा ॥ म. ९–२१

चिरविल्व—वृक्षकरंजः विरहुल इति लोके ॥ उ. ११–८६

—ज—

जाती—मालती । (गू) उ. १०–१३

सुमना ॥ म. ९–८१

जम्बुद्वय—क्षुद्रजंबु राजजंबुमेदेन । म.२-११३

जवन्ती—शाकभेदः । जीवन्तीत्यपरे । म. १२–२१०

शाकभेदः ॥ म. ११–८८

जालिनी—' तोरह ' शब्दवाच्या । कटु-तुम्बी बीजानि (गू) उ. ११–८

ज्वालामुखी—जयन्ती । (गू) म. १२-२४०

(२) जयन्ती सा चतुर्विधा भवति ॥ म. ११–१३

जीवन्ती—शाकविशेषः साच उत्तरापथे पर्वतेषु वृन्दावृक्षशाखास्ति तत्रैव उत्पद्यते ॥

(२) दोडीशाकः । (गू) म, ६–१६–१७

—ट—

टुण्टुक—श्योनाकः । प्र. ४–१२

—ड—

डिण्डीघोषा—रक्तैरण्डः ॥ म. ९–२१

त्वक्क्षीरी—वांसी ॥ म. ६–७१

तिक्ता—लताकस्तूरी ॥ म. ९–१०२

त्रिवृत्—त्रायन्ती ॥ उ. ४–२५

तिन्तिडीक—(१) विटपविशेषः, तस्य फलानि अम्लानि भवन्ति ॥

(२) वृक्षाम्लं । (गू) म. ३–१०

तण्डुलीयक—(१) शाकविशेषः " चौराइ" इति शब्दवाच्यः ॥

(२) मेघनादः । (गू) म.५–२२

तेजीनी—यविका इति चक्रः । मूर्वा इति कार्तिकः ॥ उ. १०–१८

तेजोव्हा–(१) चव्यं । यत्र च तेजोव्हा चविका तत्र तेजोव्हा ज्योतिष्मती एवं सर्वत्र ॥ म. ७–६

(२) चवी ॥ म. ७–६

(३) तुम्बुरुः ॥ (गू) म. ७–६

तुम्बुरु—स्वनामप्रसिद्धः शूलघ्नः ॥ (गू) । १–१०१

तुणिः—' लीदि ' पादपो वस्त्ररंजनार्थकः पीतवर्णः ॥ म. २–१११

तुगाक्षीरी–(१) वंशरोचना । (गू) ।

(२) वांशी । तदभावे तवक्षीरं ग्राह्यम् । तवक्षीरं कर्चूरस्कन्त प्रकारः ॥ म. ६–६१

तुरुष्कः— सिह्लकनिर्यासविशेषः । म. ९ पृष्ठ २२४

—द—

देवदाली—(१) वल्लीसंज्ञा । प्र. ४–८

(२) वंदाली । (गू) म. ९–५०

दार्वी–(१) दारुहरिद्रासमं गाजलिकारीका । उ. १०–१८

(२) दारुहरिद्रा ॥ म. १–९

दन्ति—जयपालमूलम् । (गू) म.६–१००

द्रोणपुष्पी–(१) नहुल इति प्रसिद्धा । 'गूमा' शब्दवाच्या इतिलोके । म.१२–३६

(२) 'गूमा' इतिलोके॥ म. १–१०

दुरालभा— समुद्रान्ता तस्याः अलाभे यवासकः ॥ उ. ४–२२

—ध—

धन्वः—यवासकः । (गू) । उ. ६–२३

धन्वनागरः—धन्वदेशजः नागरमुस्तम् ॥ उ. ६–२३

धन्वयासः—(१) दुरालभा । म. २–८८

(२) यवासा । (गू) म. २–८८

(३) धमासा । (गू) म. २–१६

धान्यकं—कुस्तुम्बरी ॥ म. ३–७

कुस्तुम्बरु ॥ म. २–१९९

न.

नतं—तगरपादिका । म. ९–३८

नखं—सुगंधौषधिः ॥ म. ९–१९१

नलदं—मांसी । तगरम् । (गू) ऊ. ११-६३

नक्ताव्हम्—करंजफलम् ॥ म. ९–१८४

नलिका (१) गंधनलिका उत्तरदेशे प्रसिद्धा तदभावे त्वक् ॥ (गू) म. ९....१७–१८

(२) इन्दिवरा । म. ९–१९२

(३) सुगंध तृणविशेषः ॥ म. ९ पृष्ट २२४

निचुलः—जलवेतसः ॥ उ. ११–९७

नीलिनी—अपराजिता । (गू) म.१२-१७०

नागबला—गांगेरुकी । प्र. ४–१४

—प—

परुषकः–(१) गिरिपीलुः । (गू) म. ३-१०

(२) फालसाशब्दवाच्य ह्रस्वविटपः ॥ म. ३-१०

पद्मक—काष्ठविशेषं, तत्तु चंपकवत् वृक्ष विशेषः ॥ म. ९-३०

पर्पटः—कटुपत्रः (गू) म. २–१६

प्रसारिणी–(१) गंधमादालि पूर्वदेशे । (गू) म. ९–११९

(२) पूर्वदेशे प्रसिद्धा । (गू) । म. ९–१००–१०१

(३) स्वनामख्याता ॥ प्र. १-४५

प्रपुन्नाटं—चक्रमर्दबीजानि ॥ म. २-३३

पाठा—पाटला । (गू) ।

पारसीकयमानीका–(१) पारस्यदेशभवा पारसी खुरासानी शब्दवाच्या । म. ५-२६

(२) "अजवायणि" गूर्जरदेशे प्रसिद्धा (गू) म. ५-२६

पाषाणभेदः—प्रतीतः वजेतीति लोके । म. २–१०१

पातालगरुडी—पातालमूली प्रसिद्धा साच छिन्नरुहा आकृतिः तद्भेदश्च तदभावे छिरहण्टैवग्राह्या ॥ म. ११–४४

पाटला—पाण्डुरा (गू) । म. ८-१०

फलेरुहा । (गू) म. २–२९

प्रियंगुः–(१) कान्ता । उ. ६–१९

(२) लताविशेषः तस्याः फलानि
म. ६–१४५
(३) लताप्रियंगुफलम् ॥ (गू) ।
म. २–१४
(४) लताविशेषः तस्याः फलानि
न तु वृक्षप्रियंगुः। म. २-१४
पियालबीज–चिरोञ्जीति प्रसिद्धम् उ. ११-१८
पिप्पलः—चिरौंजी ॥ म. २–१११
पीतदारु–दारुहरिद्रा ॥ म. ९—१८५
पीतिका—हरिद्रा । उ. १०–१८
पुनर्नवा–वर्षाभूः 'साठ' इतिलोके ॥ म.
२–७६
पृथ्वीका–सूक्ष्मैला ॥ म. ६–१९३ पृष्ठ
पृष्टपर्णी—संजीवनी । (गू) म. ६–२९
म. २—२८
पूतीकः—पूतीकरंजः । उ. ५–४७
पूतीकेसरं—गंधमार्जारी ॥ म. ९–१९१
पौष्करं—कुष्ठम् ।
पुष्करमूलम् तदभावे कुष्टं ग्राह्यम् ॥
म. ६–३८
प्रतिविषा–शुक्लकन्या । म. ६–४३
अतिविषा । (गू) म. ६–४३
—ब—
बला—खरककाष्ठिका (गू) म. २–१०
बकपुष्पः–(१)अगस्तिवृक्षः (गू)म. २-१२८
(२) काकइ लोके । म. २-१२८
(३) वसुकः । अर्कः यद्वा बकुलः
॥ (गू) म. १–१०३
बालकम्–उदीच्यम् । (गू) म. ६–४९
ब्राह्मी—पश्चिमदेशे प्रसिद्धा ॥ (गू) म.
२–१०४
बाकुची—कृमिघ्नः । (गू) । म, ६–१५०
बिल्वः—श्रीफलः । (गू) । म. २–२९
बिम्बी—बिरौति इतिलोके । सा च पीलुपर्णी
कथिता । ग. २–१२९
बीजकः—विजयसारो वृक्षविशेषः ॥ प्र.
२—६२
बृहती—बृहत्कंटकारिका ॥ प्र. ४-१७
—भ—
भद्रः—पारिभद्रः रक्तकुसुमः कण्टकी वृक्ष-
विशेषः स्वनाम्ना प्रसिद्धः । फल-
हृदामूलम् इति अपरे । तदभावे
देवदारु ग्राह्यम् ॥ म. ९–१०१
भद्रैला–बृहदेला म. ६–७६
भार्ङ्गी–(१) ब्राह्मणयष्टिका ॥ म. २-१५१
(२) द्वीजा । ऊ. ५–४७
भृंगराजः–केशरंजनः 'वमना' इति प्रसिद्धः
॥ म. २–१३५
—म—
मधूकपुष्पं–'मुहुवा' शब्द वाच्यं ॥ म.
३–७ उ. ८–२०
मधुक–(१) मधुयष्टीति जलजाता वल्लीवि-
शेषः मधुरा भक्षणतः असौ वि-
ख्याता सर्वत्रैव ॥ म.६–१६-१७
(२) गुडपुष्पः । (गू) । उ.
१–१७-१८
महेरणा–शल्लकी वृक्षः ॥ म. ९–२०१
मलपूः—काष्टोदुम्बरिका ॥ म. १२-३५

महानिम्बः—(१) कार्मुकः 'बकाइनी' इति लोके। म. ५६
(२) निम्बार्कः 'बका' इति लोके प्रसिद्धः॥ म. २-१३५
महा—धातकी ॥ म. ६. पा. १९५.
महाश्यामो—दीर्घपत्रः स च चिधाराशब्द वाच्यः॥ म. ९—६०
माषपर्णी—मार्जारमोदिनीति कृष्णनाला ह्रयपुच्छिकाकारा पर्वतोद्भवा मधुरा च॥ म-६—१६—१
मातुलुंगः—बीजपूरकः। तस्य केशरं मध्यस्थितावयवविशेषम् लोके चतूरीनामकं वाच्यं॥ उ. १०—११.
मिसी—शतपुष्पा। उ. २—२५
मीनाघ्नी—'मछेछी' शब्दवाच्या। मत्स्यगंधा। (गू) । म. ११-३०
मुकूलं—दन्ती उ. ४. पा. ३१६
मुशली—तालमूली॥ म. ७-२९
मुरा—गंधद्रव्यम्। म. ९—१९१
मुचुकन्दः—कुन्दभेदः प्रसिद्ध एव। तौ तु शुक्लरक्त पुष्पभेदेन ज्ञातव्यौ॥ उ. ११—१३
मुण्डतिका—भूकदम्बकं केदारमुण्डीतिलोके। म. ७—९९
मुण्डी—केदारमुण्डी कदंब इति प्रसिद्धः। म. १—१७
मुद्गपर्णी—मुद्गवत्पर्णं यस्याः सा। मुद्गपर्णी क्षुद्रा वनसंभवा॥ म, ६, १६—१७

मृणालम्—कमलनालं। म. ३—३
मूषककर्णिका—(१) इति वातिभेदाः॥म. २-७४
(२) 'मूषाकर्णी' औषधी केचिद्दन्तीमाहुः॥ (गू)। म. २—७४
मूर्वा—(१) चोरस्नायुः। म. २—१२९
(२) मोरटा (गू) म. २-१०३
(३) चोरस्नायुः मोरहरीति लोके॥ उ. ११—६०
मेषदुग्धी—प्रसिद्धा॥ [गू] म. ११-८७
मेषशृंगी—वल्लीसंज्ञा प्रसिद्धा, मेठाशृंगीति लोके। म. २—१२९
मोचरसः—शाल्मलीनिर्यासः॥ म. १-२९
मांसी—गंधमांसी, जटावद्विटपः। म. ९-५१

—य—

यवतिक्ता—सर्पा। म. ११—७७
यष्टीमधुक—'मुलहटी' शब्द वाच्यम्॥ म. ९—११५
याम्यं—चन्दनम्॥ म. ९—१९१

—र—

रविप्रियः—रक्तकमलम्। म. ९—२०१
रसांजनम्—कृष्णपाषाणसदृशं द्रव्यविशेषः। उ. १—१९
रास्ना—सुरभि॥ म. २—८९
रुदन्ती—शाकभेदः पश्चिमे अतीव विख्यातः प्र. ४—१३
रेणुका—कौन्तीति पर्यायनाम्ना प्रसिद्धा। निर्गुण्डीबीजानि रेणुकाशब्दवाच्यानि इत्येके॥ म, २—८२

रोहिषं—गंधतृणम् । म. २–९३

रोहितक—(१) विटपविशेषः रुहेरीति लोके म. २–११७

(२) सुगंधीतृणम् (गू) म. २–११९

(३) रोहीषतृणः(गू)म.१०–७३

—ल—

लकुचः—क्षुद्रपनसः नारंगफलं इति एके प्र. २–२१ ।

लज्जालु—लज्जावती, स्वनामख्याता ॥ म. २–६७

लक्ष्मणा—श्वेतकण्टकारिका । अन्ये अल्पविटपमाहुः ॥ म. ९–८७

लाक्षा—अलक्तकजननी ॥ ऊ. ११–४३

लाङ्गली—(१) कलिकारिका ।। म. ९-१४२

(२) कलिहारी (गू.) म. ९-१४२

—व—

वन्या—विटपलग्नो गुल्मविशेषः । म. १२–२७०

वनिता—प्रियंगुः ॥ म. ९–१९२

वज्री—सेहुण्डः । म. ९–१८५

वचा— खुरासान देशोद्भवा (गू) म. २–८८

व्याघ्रनखः—नखभेदः शुक्तिकाकारं सुगंध द्रव्यविशेषः ॥ ऊ. ११–६४

विषमुष्टिः—(१) कुचलशब्दवाच्यः ॥

(२) महानिम्बम् ॥ (गू.) । म. १२–१९६

(३) महानिम्बफलं कुबेरकं वा । द्वयोः अभावे समुद्रफलं वा देयम् ॥ (गू) म. १२–२२३

विकचा—मंजिष्ठा । (गू.) म. ९–२१५

वीरतरुः—उशीर इतिलोके शरो वा । वेल्लंतरुःवा ॥ म. २–१८२

वेतसः—वंजुलः जलवेतसः इतिप्रतीतः ॥ म. २–१११

वृक्षाम्लं—तिन्तिडीक ॥ म. ६ पा १८५

वृद्धदारुः—निःसृताभेदः ॥ म. २–८९

वृक्षवन्दा—वृक्षादनी ॥ म. २–१०२

—श—

शणः—परिपाके सस्वनफलः प्रसिद्धः ॥ ऊ. ११–८४

शलाटु—बिल्वफलम् । म. ५–२८

शठी-कर्चरभेदः ॥ म. २–१८

शतपुष्पा—मिसी ॥ म. ९–१२६

शल्लकी—करिप्रिया ॥ म. २–११३

शाखोटः—(२) प्रसिद्धः सिहोरो इतिलोके ॥

(२) हिंगोटः । (गू.) म. २–१२९

शालिपर्णी—शालिपत्री । म. २–१०

श्यामा—वृद्धदारकः । (गू.) उ. ४–२९

शातला—(१) चर्मकषा लोके सेहुण्डभेदः इति ॥ त्रिसटेनापि यवतिक्तकशब्देन लिखितः ॥

(२) पीतसेहुण्डः । तदभावे सेहुण्डजटात्वक् वा पत्राणि ॥ (गू) म. ६–८४

शुंठ—नालग्रन्थिः ॥ म. २-१९५

शुकनासा—श्योनाकः म. ९-८७

शूलिका—अल्पविटपा बर्बूरीति लोके ॥ म. १-१२

शेलु—(१) शाखोटकमज्जा ॥ ऊ. ८-४६

(२) गुन्द्रिणी (गू) ऊ. ६-२३

शिग्रुद्वयम्—शिग्रुमधुशिग्रु च हरितरक्तभेदेन म. २-१२८

शतपुष्पाद्वयम—लघुस्थूलभेदेन एका 'सौंफ' इति प्रसिद्धा । अपरा 'सोवा' शब्दवाच्या ॥ म. १-९७

शेफाली—(१) निर्गुण्डी ॥ म. २-८४

(२) निर्गुण्डी 'संभारु' इतिलोके ऊ. २-२५

श्रेष्टा—स्थलपद्मिनी ॥ म. ९-२०१

श्योनाकः—(१) टुण्टुकः (गू) म. २-२९

(२) अरलुः (गू) म. १-१२

शंखपुष्पकम्—श्वेतपुष्पी । म. ८-३२

शंखिनी—(१) शंखपुष्पी (मू) म. ९-६०

(२) नाकुली प्रसिद्धा । म. १-१८

—ष—

षड्ग्रन्था—शठी तदभावे वचा ग्राह्या । म. १-१८

—स—

समंगा—(१) मंजिष्ठा ॥ म. ९. पृ० २२४

(२) लज्जालुका मंजिष्टा वा ॥ ऊ. ११-९९

सप्तच्छदः—सप्तपर्णशब्दवाच्यः सच शाल्मली [illegible] युग्मपत्रः ॥ म. ९-४५

सहचरः—(१) कुरण्टकः पियावासा इति शेषः प्र. १-४५

(२) प्रीतवासा [गू] म. २-९०

सरलं—धूपवृक्षः ॥ म. ९-१९१

सातला—सेहुण्डभेदः 'घटघव' लोके । म. ९-६०

सारिवा—(१) आस्फोता सा च गोपवल्लीति प्रसिद्धा ॥ ऊ. ११-५८

(२) अनन्तमूलम्, यद्वा उत्तरापथे 'सारिस' इति सुगन्धि द्रव्यम् ॥ [गू] म. २-१३७-१४२

(३) आस्फोता । सा द्विविधा । शुक्लाकृष्णा भेदेन । शुक्ला-जम्बुवत्पत्रा व्रततिः । कृष्णा कलहंसवत् पत्रा सुगंधा । म. २-१३७ थी १४२

(४) अनंतमूलं 'आफोड' इति लोके म. २-११

स्थिरा—शालिपर्णी ॥ म. ९-७२

सुवर्णपुष्पी—सोनी शब्दवाच्यो विटपविशेषः तदभावे बृहद्बलाग्राह्या अपरे वस्थूलकं गृह्णन्ति ॥ ऊ. ११-४०

सूचीपुष्पं—केतकी ॥ (गू) म. ९ पृ. २१५

सूर्यावर्ता—सुवर्चला । सा च द्विविधा, एका मोचली शब्द वाच्या अपरा ब्रह्म-सौवर्चलीति ॥ ऊ. ११-१५२

स्थूलजीरकम्—(१)कृष्णजीरकम् ।ऊ. २-२५
(२) स्थूलकणा (गू) । म ६-८२
स्पृक्का—मालती । म. ९ पानुं २२४
सेव्यं—उशीरम् ।। म. ९–१५१

—ह—

हपुषा } (१) द्रव्य विशेषं विपटसंज्ञा ।।
हपुषं } ऊ. ११–१०४
(२) विपुषा ।। ऊ. ६–३१
(३) सातला ।। ऊ. ४–२५
(४) जंबुविटपविशेष व्याख्यातः
म. ६–१२०
(५) स्वनामख्यातं तच्च जंबुवद्वि-
टपविशेषः ।। म. १–९०
(६) विगन्धिका । (गू) म. ६-८१
हरेणु—(१) त्रिपुटः । ऊ. १३–६८
(२) द्रव्य विशेषं हरेणुका इति
वाच्यम् । तदभावे निर्गुण्डी
बीजमिति सर्वत्र।।ऊ.११-६०

हिज्जलः—(१) हिजलस्य फलं कतकफलं
इति प्रसिद्धम् ।।
(२) हिंगोठः (गू) ऊ. १३-१०४
हिंगुपत्री—वटपविशेषः तस्याः पत्राणिहिंगु
गंधसदृशानि भवन्ति । स द्विवि-
धा । एका च अरुणपत्रिका तन्वी
अपरा वणपत्रिका हिंगुलफला ।।
म. ६–९९
हेमाव्हा—(१) चोकपत्रमात्रम् ।। (गू) ।
म. १२–१४१
(१) स्वर्णक्षीरी सतु रक्तक्षीरो-
हुण्ड भेदः यस्यमूलं चोक
इति प्रसिद्धम् ।म. ९-१४३
(३) चोकं (गू) । म. ६-८२
हेमक्षीरी—स्वर्णक्षीरी, कंकुष्टभेदः इत्यर्थः
चोक इति लोके ।। म. ६–९०

—क्ष—

क्षुद्रा—लघुकंटकारिका ।। म. १–३६

...स्कृत सि... ग्राम...

अवंता—यवासकः अ. १५–२

अलम्बुषा—मुण्डितिका । अ. ४१–२० ।
अ. २५–१९

अग्निक:—लांगलकी, अन्ये भल्लातकमाहुः॥
अ. ४४–२१

अनलः—भल्लातकः ज्योतिष्मती वा ॥ अ.
५१–५०

अश्मभित्—पाषाणभेदः तदभावे चर्मकारालुकम् ॥ अ. ३४–१२

अजशृंगी—आवर्तनिका, छगलविषाणिका
तूत्तमारणी
मिंढिआऊली इति लोके ॥
अ. ३४–१

अरिष्ट (पत्रं)—निम्बपत्रं फेनिलवृक्षपत्रं वा ।
अ. ३६–१९

अमृतफलं—आमलकम् । अ. ५१–८९

असनः—पीतशालः । अ. ३५–१८

अजगंधा—(१) फोंफानिका बोवइका इति देशान्तरे प्रसिद्धा ॥ अ. ३०–१
(२) फोंफनी बोथइका इति देशान्तरे प्रसिद्धा ॥ लतौषधीत्येके । अन्ये यवानिकामाहुः । अ. ४४–७

अभीरु:—शतावरी । अ. २२–१७९
अ. २३–१२

अतिरसा—यष्टिमधु ॥ अ. २२–१२०

अभयम्—उशीरम् । अ. २२–१७५

अमृतलता—गुडूची ॥ अ. २२–१२७

अर्जकः—श्वेतपर्णासः ॥ अ. ६–५९

अजमोदा–यवानिका ॥ कस्यचिट्टिपणी—
"अन्तः प्रमार्जने प्रायेणाजमोदा यवानिका । बहिः संमार्जने योज्या त्वजमोदाऽजमोदिका" ॥

अतिच्छत्रा— शतपुष्पा ॥ अ. २०–२९

अश्मन्तक:—(१) कोवि[illegible]रसदश। अम्लपत्रो अम्ललोहितः
'मालु आवा' इति लोके ॥ अ.
६९–१
(२) 'मलुआ' ॥ अ. ३५–२७

अश्मन्तकः—(3) अम्ललोटकः । कोविदारसदृशपत्रो मलुआवा ॥अ.३४-१

अरुणा—अतिविषा अ. ६६–५

अजाजी—(1) अजं स्वाभाविकं मंदाग्नित्वम् अजति क्षिपति इति अजाजी जीरकः ॥ अ० ३०–१
(2) कृष्णजीरकम् सितजीरकमित्यन्ये ॥ अ. १–२२८

अवाक्पुष्पी—हेठाहुली ॥ अ. ४–२९

अहिंस्रा—कलाचकडः । बृहदहिंस्रा कंथारि इति डल्लणः ॥ अ. ४४–३

अश्वकर्णः—शालभेदः पूर्वदेशे प्रसिद्धो अश्वत्थसदृश इति डल्लणः ॥ अ. ४९–६

अश्वकर्णः—गर्दभाण्डः गंधमुण्डः इति डल्लणः अ. ४९–६

अक्षं—सौवर्चलं त्विहेति चक्रः ॥ अ. २२–१५४

अग्निमंथः—तेजोवृक्षः अरणीति लोके ॥ अ. ३४–१

अम्बष्ठा—दक्षिणे ख्याता । गृह्णन्ति अन्ये च लक्ष्मणाम् अ. ६३–१४

अम्बष्ठकी—दक्षिणापथे ख्याता । तदभावे पाठैव द्विगुणा । अ. ६३–१४

—आ—

आढकी—तुवरीबीजम् । अ. ३५–१

आमयः—कुष्ठम् ॥ अ. २१–४

आरेवतं—सुवर्णालु । अ. २९–७

आम्भ—'आभ' इत्याख्यातं वणिग्द्रव्यम् ॥ अ. २२–६७

आरग्वधः—सुवर्णालुः । अ. १–९९

आखुपर्णी—(1) मूषकपर्णी दन्तीभेदो वा ॥ अ. ७–५

(2) आखुपर्णी दन्ती । अन्ये मूषिकपर्णाख्यं द्रव्यान्तरमाहुः ॥ अ. ७–६

आर्जः—श्वेतपर्णासः ॥ अ. १८–११

आमण्डः—एरण्डस्य बीजम्॥अ. ५४–१२

आर्तगल—(1) अर्गडाकः । अ. ३४–७ डल्लणस्तु ककुभः सुगन्धिमूलः कवहा इति नाम्ना पूर्वदेशे प्रसिद्धः॥ अन्ये तु आहुः केसरिकण्टकितफलो विटप इति [illegible] ॥ अ. ३५–७

(2) अर्जुन आगाडको वा । उष्ट्रकंटकः । अथवा नीलः सहचरः इतिडल्लणः ॥ अ. ५४–५

(3) अर्गाडकः अर्जुनो वा ॥ अ. ३४–१

आखोमशः—तमालपत्रमिति बाष्पचन्द्रः ॥ अ. ५१–२४

आलुकं—पिण्डालुक काष्टालुक मध्वालुक हस्त्यालुक शालूक शृंगाट मृणाल बिसादिकम् अ. ३०–६०

आस्फोता—(4) उरमल्लिका सारिवा इति डल्लणः ॥ अ. ५१–१०८

(2) अफरमल्लिका॥ अ.६१–२१

—इ—

इक्ष्वाकुः—कटुकालाबूः । अ. ७३–१०

इक्षुबालिका—खरजडिका (?) । अ. २६–२४

इत्कटः—महती खगली ॥ अ. ३४–११

इक्षुबालिका—(ii) षड्गली । सुश्रुते इक्षुबालिका स्थाने इक्षुरकपाठः तत्र कोकिलाक्षकः अ. २६–३१

इक्ष्वालिका—वनखण्डिका । अ. १०–७८

इर्वारुः—ग्रीष्मकर्कटिका ॥ अ. २८–१५

इन्दीवरः—(1) चूया । डल्लणस्तु इन्दीवरे अपि तद्भेदो दीर्घपत्रो बहुलपुष्पः

कपोतवंका सुवर्चला केवाऽवेंदुआ। अन्ये शिरीषसदृशपत्रा विटपेति द्रव्यान्तरमाहुः अ. ३४–१
(2) शिरिवालिकाभेदो दीर्घपत्रो बहुलपुष्पः। जैज्जटस्तु इन्दीवरं नीलोत्पलं तन्नेच्छति गयी ॥ अ. ३४–१२

इन्द्रक्षुरा—गोरक्षकर्कटी निर्गुण्डी वा ॥ अ. ३६–१५

इंगुदी—पुत्रजीवकः तस्य च फलं ग्राह्यम् अ. ११–२५

उ.

उत्पलसारिवा—श्यामलता ॥ अ. १५–२

उग्रगंधा—वचा ॥ अ. ३०–३३

उपकुल्या—पिप्पली। अ. २८–९ अ. ६–१३

उषणं—पिप्पली। अ. ३३–२

उत्पलं—नीलोत्पलं न तु कुष्टम् टीकाकारैः अव्याख्यातत्वात् ॥ अ. १०–३१

उपकुंचिका—स्वल्पजीरकम् अ. ६–३४

उरुबूकः—शुक्लैरण्डः। अ. ३०–५७

उद्दालः—वनकोद्रवः ॥ अ. ३६–१

उदुम्बरः—काकोदुम्बरिका कर्कशपत्रत्वात्॥ अ. ४१–३६

उजटा—सूक्ष्मैला ॥ अ. ७०–३१

ए

एलम्—एलवालुकम्। अ. १४–१

एलवालुकम्—स्वनामख्यातम् ॥ अ. १-२५५

एलकाल्यम्—एलवालुकं होगालो वा ॥ पिडिकेति चक्रः। अ. ४१–२९

एकैषिका–(१) त्रिवृत् पाठा इति अन्ये ॥ अ. ४४–७
शुक्लमूला त्रिवृत् इति डल्लणः ॥
(२) पाठा ॥ अ. ५४–१४
अन्ये एकैषिका अंबष्ठकी। कुरण्ड इति लोके। अन्ये त्रिवृद्भेदमाहुः अ. ५४–१४

ऐ

ऐलेयम्—एलवालुकम्। अ. ९–६०

अं

अंशुमती—शालिपर्णी ॥ अ. ६१–२११

क

कदर—विट्खदिरः ॥ अ. ३५–१३

कलायविदली–स्वनामख्याता लता ॥ अ. ४४–४४

कटुका–लताकस्तुरी ॥ अ. २२–१७५

कटुक—मरिचम्। अ. २२–१२७

कच्चोरकः–गंधशठी ॥ अ. २२–१७५

कच्छुरा–शूकशिम्बा दुरालभा वा ॥ अ. २२–१७४

कण्टाकुः—वाढु (?) स्वनामख्याता लता ॥ अ. ५१–५

कपोतवंका—कटभीसदृशपत्रो विटपो मध्यदेशे प्रसिद्धः ॥ अ. ३४–७

कटंकटि–दारुहरिद्रा। अ. ५८–१०५

कम्बुक—पत्तूर ॥ अ. ७–२

कर्कारुः—कूष्माण्डभेदः अ. ५६–१२

(२) तिक्ततुम्बी कुष्माण्डभेदः वा ॥
अ. ४१–६

(३) कुष्माण्डभेदः जोताल इति लोके।
अ. १२–२४

कत्तृणम्–गंधतृणम् ॥ अ. ३१–२४

कटंभरा–(१) प्रसारणी वृश्चिकपत्रिका वा तस्याः अंध्रिमूलम् ॥ अ. २२-१७५

(२) कटभी भद्राली वा ॥ अ. २०–२६

कटभी–तद्रवडिः (गिरिकर्णी) अ. २०–६

कलशी–पृश्निपर्णी ॥ अ. १–८९

काकनासा—काउ आटोटिका यंगलताफलम् जैज्जटस्तु काकनासा वासा फलवदिति अ. १०–३२

काकादनी—वायसतिन्दुकः अहिंस्रा इति अन्ये ॥ अ. ४१–३१

कायस्था–सिन्दुवारः सूक्ष्मैला वा ॥ अ. २०–२५

काञ्चन—जलजः विटपः चीरितपत्रः । अन्ये कच्चक इति पठन्ति । कच्चको मध्यलेखानिचितः चुञ्चूकसदृशपत्रः ईषद्रक्तमूलः कचक इति मालवदेशे प्रसिद्धः । अ. ३४–७

कारवी—कृष्णजीरकम् ॥ अ. २५–२४
अ. ११–६
अ. १–१५५

कामाची—काकमाची ॥ अ. ५४–१७

कालकमुष्ककः–कृष्णपुष्पा घण्टापाटली ॥ अ. ५–१११

काकणन्ती—गुञ्जा अ. ४१—३१

कार्पास—पर्कट । अ. ३–१८

कासमर्द–शोभाञ्जन, मूलक। अ. १२–१५

कालीयकं–मलेन्द्री ॥ अ. १९–७

काशः—चामरपुष्पः । अ. ३४–१

काला—(१) कडावकडी मंजिष्ठा वा ॥ अ. ४१–३१

(२) वडहिंस्रा । अ. ५४–१४

कालानुसारिवा–तगरपादिका ॥ अ. ३३-१४

किणिही–कटभी ॥ अ. ६०–११

कुटज—बृहत्फलशुक्लकुसुमस्निग्धपत्रस्य पुंनामधेयस्य कुटजस्य । अ. ३-३७

कुठारः–कुठ्हाहिच्छिन्नः ॥ अ. ४५–२१

कुटन्नटः–तगरः । अ. ५७–७४

कुलिक–स्वल्पहिंस्रा । अ. ६८–८

कुन्दु–कुन्दुरुः । अ. २२—१७४

कुश–ह्रस्वदर्भः ॥ अ. ३४–१

कुस्तुम्बुरु–धान्यकम् ॥ अ. ५–६१
अ. १—१२४

कुण्डली–गुडूची ॥ अ. ५९-६

कुम्भा—त्रिवृत् ॥ अ. ३०–३३

कुरण्टिका–(१) श्रीहस्तिनी । अ. ३४-१ कृष्णसूक्ष्मफला शिलालिका इति लोके ॥

(२) शिरिवालिकाभेदो लोहितपुष्पः अ. ३४–१२

कुम्भीकः—(१) कुभाण्डुः दाडिमसमानफलः ॥ अ. ४७–१६

(२) पान्ही ॥ अ. ३५-४५

कुलकं—पटोलपत्रम् ॥ अ. १-४५

कोतवेधन:—घोषिका कोशातकी ॥ अ. ७३—१०

कृष्णगंधा—(१) शोभांजन: । अ. ५१-२५

(२) शोभांजनक: शमीत्यपरे ॥ ४१-२७

केशी—भूतकेशी ॥ अ. २०-२४

केम्बुकम्—स्वनामप्रसिद्धम् ॥ अ. ३६-९

कोला—चवी ॥ अ. २७—२०

कौन्ती—रेणुकम् ॥ अ. २२—१७५
अ. १—२५५
अ. २२—७९

कंचटं—कलोकलं च वा शाकम् (?) अ. ३-२९

कांपिल्लकं—गुडरोचनिका ॥ अ. १-१७९

ग

गजचिर्भटम्—गोरक्षकर्कटी ॥ अ. ३०-२६

गवाक्षी—(१) श्वेतापराजिता । गोरक्षकर्कटी वा ॥ अ. ८-१४

(२) गोरक्षकर्कटो तस्याः मूलमेव सर्वत्र न तु गवाक्षी श्वेतापराजिता क्वापि टीकाकारैः अव्याख्यातत्वात् अ. ५—६८

गण्डीर—समठः स तु स्थलजो ग्राह्य रतीक्ष्णत्वात् ॥ अ. २४-१३

गण्डीरिका—मंजिष्टा समंगा वा ॥ अ. ५१-११७

गवेधुकं—(१) गोरक्षतण्डुला ॥ अ. २२ -१०५

(२) धुलुञ्चः ॥ अ. १९—१६

गवेधुः—धुडुवः ॥ अ. ५६—३३

ग्रन्थिकम्—(१) ग्रन्थिपर्णी ॥ अ. २२-१७४

(२) पिप्पलीमूलम् ॥ अ. २२-१५४

गुच्छकः—उञ्चडुंचः (?) गुन्द्रा इति डल्लणः अ. ३४-७

गुहा—पृश्निपर्णी, स्नुहा वा ॥ अ. ११-२४६

गुन्द्रा—(१) धुलुञ्चः पट्टेरकभेदः गावर इति लोके ॥ अ. ३४-१

(२) पट्टेरकभेदः धुलुञ्चः ॥ अ. ५४—७

गोजी—(१) दार्वीपत्रिका शाखोटक इत्यन्ये ॥ अ. ४१—३६

(2) गोजीव्हा, शाखोटक इति अन्ये ॥ अ. ४१-२७

(३) शाखोटकः ॥ अ. ५-११७

गंधरसः—बोलः ॥ अ. २२-७९

—घ—

घनसारः—कर्पुरम् ॥ अ. २२-१७४

घोषवती—शतपुष्पेति वृन्दस्य व्याख्या ॥ अ. २२-६८

घोण्टा—स्वल्पकोलिः एलावणिका इति अन्ये ॥ अ. ४७-५

—च—

चपला—(१) चवी, हस्तिपिप्पलीत्यन्ये ॥ अ. २७—२५

(२) पिप्पली ॥ अ. २७-२०

चण्डा—चोरपुष्पिका ॥ अ. ९२–१०
चौरपुष्पी ॥ अ. २२–७९;
अ. ३९–४
चाम्पेयं—चम्पक कलिका ॥अ. २२–१७५
चिरबिल्वः—(1) करंजः ॥ अ. ३०–३७
अ. ९–४
(2) वृद्धकरंजः, चिरिहिलि इति लोके ॥ अ. ४४–२१
चिल्ली—चिल्लाशाकम् गौडवास्तुकम् ॥ अ. ६१–११५
चित्रफला—गोडुम्बी गोदुग्धिका इन्द्रवारुणी पर्यायाः ॥ अ. ३३–१९
चुक्रीका—अम्ललोणिका ॥ चुक्रिका कुवावि ॥ अ. १६–२०
चैलं—सिह्लकम् ॥ अ. १०–७३
चोचं—गुडत्वक् ॥ अ. २२–१७५
चोरटी—कूंवादु ब्रह्मिका वा ॥ अ.२०–२४
चोरकः—चण्डा ॥ अ. २०–२४
चोरकम्—चोरपुष्पो ॥ अ. १२–१३

छ.

छत्रा—अजाजी मधूलिका वा॥ अ. २०–२५
छत्रातिच्छत्रा—द्रोणपुष्पीद्वयम् ॥ अ. २०–२९
छिन्नोद्भवा—गुडूची ॥ अ. १–२०७

ज

जया—जयन्ती, अरणिका ॥ अ. ३५–३
जयन्ती ॥ अ. २०–२४
जपापुष्पं—दूहल्ल इति ॥ अ. ५७–९१
जटिका—मांसी,शतावरी वा ॥ अ. २०–२४
ज[illegible]क—पान्ही ॥ अ. ४१–७
जाती—धात्री । जातीस्वन्दन इह धात्री गृह्यते अ. [illegible] यत्वाच्च ॥ अ. १५–१७
जीमूतक—देवदाली ॥ अ. ७३–१०
जीवन्ती–(1) जीवन्ती शाकं कर्णाटदेशे प्रसिद्धं डोडिका इति लोके अ. ११–११५
(2) पटोलसदृशैः पत्रै कन्दवती पश्चिमदेशे प्रसिद्धैव लाटदेशे तु स्थूलवल्ली लक्षणैश्च ॥ अ. ११–४७
(3) स्वनामख्याता वणिग्द्रव्यम् ॥ अ. १०–३०
ज्योतिष्मती—कंकुमर्दनिका ॥ अ.४८–१६

त.

तगरं–तगरपादिका तदभावे शैयली चोपडः पिण्डतगरमित्यन्ये ॥ अ. २२-९६
ताम्रवल्ली—रामतरुणी मंजिष्टा वा अ. ६५-१
तालपत्री—तालमूली ॥ अ. ४१–२७
तामलकी—तालमूली स्वनामख्याता ॥ अ. ५–९४
तिक्तालता—कस्तूरीका ॥ अ. १०–७४
तिल्वकः—शावरोलोध्रः ॥ अ. २८–४
तिन्दुकः—केयुरिति लोके ॥ अ. ३५–१४
तिनिशः—बुकः ॥ अ. ४३–११
अच्छकः ॥ अ. ३५–८
तित्तिडी—शैलजं तिन्तडीक अ. ३०–१
तित्तिडीकम्—महार्द्रकम् ॥ अ. १३–४
तिरीटं—पट्टिकालोध्रम् ॥ अ. ९–१०२

नीलिनी—लता नेलीति ख्याता तदभावे शरपुंखासदृशविटपा ग्राह्या ॥ अ. ५७—८५

नीचुलः—हिज्जलफलम् ॥ अ. २१—२०

(१) हिज्जलः जलवेतसः ॥ अ. ५८—१९

प

पत्राङ्गम्—रक्तचंदनं ॥ अ. ५८—१९

पत्तङ्गम्—रक्तचंदनम् ॥ अ. ५८—५९

पलाशः—शठी अ. ३९—२६

पत्तुरः—(1) शालिंच शिरिवालिका इति ॥ अ. ३४—१२

(2) शालिम् (?) ॥ अ. ७—२

पथ्या—गुडूची अ. २३—१६

पर्वतभेद—पाषाणभेदः ॥ अ. ३२—१९

पयस्या—क्षीरकाकोली । जैज्जटाचार्यस्तु अर्कपुष्पामाहुः ॥ अ. ४३—५

पलाशा—शठी ॥ अ. ३१—२४

पद्मा—(1) पद्मचारिणी ॥ अ. १५—२

(२) अवस्फोटी अ. ५५—८

प्लवं—कैवर्तमुस्तकः ॥ अ. ३९—२६ ॥ अ. ५८—४९

प्रसारिणी—भद्राली ॥ अ. २२—९३

यत्रिशती ॥ अ. २२—१५३

प्रत्यंगिरा—कण्टकशिरीषः अ. ६८—१

प्रत्यक्पुष्पी—अपामार्गः ॥ अ. ४७—२

पारसीय यवानी—पारसदेशसमुद्भवा यमानो ॥ अ. ७—१

पारिभद्रः—(२) पर्वतनिम्बः ।अ. ३३—२

अन्ये पारिभद्रशब्देन कण्टकीवृक्षं रक्तकुसुमं फलभद्रसंज्ञं वदन्ति ॥

(2) कम्बुक ॥ अ. ७—२

पारिजातः—पारिभद्रः ॥ अ. ३९—३

पिण्डारकतरुः—स्वनाम प्रसिद्धः ॥ अ. ४२—४

पीलुः—उत्तरापथिकः तरुः ॥ अ. ६१—२३

पीतिका—हरिद्रा ॥ अ. ५८—१०

पीलुनी—मूर्वा ॥ अ. २८—७

(द्वि) पुनर्नवम्—शुक्ललोहितनालभेदेन ॥ अ. ८—२१

पुरा—स्वनामख्यातं वणिग् द्रव्यम् ॥ अ. १०—७३

पूतना—हरीतकी ॥ अ. २०—२४

पूरकम्—बीजपूरफलम् ॥ अ. १८—१६

पूतीक—(1) करंजः । अ. ३५—५

(2) चिरबिल्वः ॥ अ. ३४—१

(3) लदाकः (?) ॥ अ. ३०—२६

(3) लाटकरंजः अ. २२—१०४

पूतिः—(1) पुतिकः स च लाटकः तस्य-मूलम् फलं वा ॥अ. ५६—५

(2) खटासिका ॥ अ. २२—७९

अ. १०—७१

पूतिकरंजः—चिरबिल्वः इत्यपरे ॥ अ. ४१—११

पूगम्—(1) गदारुनेली ॥ अ. २२—१७५

(2) गूवाकफलम् ॥ अ. ५८—९९

पूगः—पर्कटिः ॥ अ. ३५—११

माणकम्—आलुकम् ॥ अ. ३८–६
मिशि:—मधुरिका ॥ अ. ६६–९
शतपुष्पा न तु मधुरिका संप्रदायात् ॥ अ. ५१–९९
मुरंगी—रक्तशोभांजनकः ॥ अ. ५९–३
मुण्डितिका—मुण्डिनी ॥ अ. ९–१५
मुंजातम्—औत्तरापथिक: कन्दः तदभावे तालमस्तकम् ॥ अ. २१–२१
मुंजातफलम्—,, ,, अ. ७०–२३
मूर्वा—स्वनामख्याता तदभावे जिल्लमूलम् ॥ अ. १–१०८
मेषशृंगी–स्वनामप्रसिद्धा मढासिंगीति लोके। मेषशृंगी कर्कटशृंगी इतिडल्लण :॥ अ. ३४–१
मोरटः—(1) अंकोलपुष्पः मोरट इति लोके। हस्तिकर्ण पलाश इत्यन्ये मूर्वा वा ॥ अ. ३४–१
(2) इक्षुमूलम् अ. ३४–११

य

यासः—दुरालभा । अ. १–१५५
योजनवल्ली—मंजिष्ठा ॥ अ. ७०–३१

र.

रसोनः—पिप्पली ॥ अ. १–२११
रूपिका—श्वेतार्कः । अ. ४२–३
रेणुः—रेणुकम् ॥ अ. १०–७४
रोहिषं–भूतिकं गंधतृणाव्हयम् ॥ अ. २१–२०
रोहितक—रोहिडः ॥ अ. ३५–१५

ल.

लता—(1) प्रियंगुः अ. ४४–५५
(2) दूर्वा मंजिष्ठा वा ॥ अ. ६५–२
लज्जा—वराहक्रान्ता समंगा वा ॥ अ. ९८–१०१
वराहक्रान्ता ॥ अ. ४–२६
लवणा—ज्योतिष्मतीत्येके ॥ अ. ३०–३२
लामज्जकम्—उशीरम् ॥ अ. ३६–१७
लाङ्गली—लाङ्गलकी ॥ अ. २३–२०
लोहितयष्टिका—मंजिष्ठा ॥ अ. १–२१३

व.

वनिता—-प्रियंगुः अ. १०–७३
वरुणः—तिक्तसारः शाकद्रुमः वरुणः इति लोके ॥ अ. ३४–१
वयःस्था–गुडूची ब्राह्मी वा ॥ अ. २७–२१
वज्राख्य—द्वीतीयः स्नुही सेहुण्डः ॥ अ. ५१–१०८
वन्यम्—कैवर्तमुस्तकम् ॥ ज. ५२–१०
वर्षाभूः—रक्तपुनर्नवा ॥ अ. ३०–५७
पुनर्नवा ॥ अ. २९–७
वसुकः—(1) बकः बकपुष्पः इति लोके। अन्ये तु वसुकः अर्क :॥अ.३४-१
(2) वसुहट्टकः। वसुको बुको बक-पुष्प इति लोके इति डल्लणः ॥ अ. ३४–१
वशिरः—(1) मर्कटपिप्पली तृणजातिः अपामार्ग इति प्रसिद्धः सूर्यावर्तो वा ॥ अ. ३४–१
(2) मर्कटसंज्ञस्तृणविशेषः सूर्यावर्तभेद इत्यन्ये ॥ अ. ३४–६

(3) सूर्यावर्तः अपामार्गः इत्येके ।
अ. ३४–१
वज्रवल्ली—अस्थिसंहारः ॥ अ. ५८–९७
वाप्यं—कुष्टम् ॥ अ. १०–७२
वाटयाभिधानं—पुष्करम् ॥ अ. ३०–३३
वाजिकर्णः—सालभेदो गर्दभाण्डो वा ॥ अ. ५८–९७
वातघ्नानि—भद्रदार्वादिनि ॥ अन्ये तु वातघ्नः सौभांजनकः अपरे तु वातघ्नमूलकल्कः इत्यत्र वातघ्नस्थाने मुरंगी इति पठन्ति ॥ मुरंगी शोभांजनकः अ ४३—२
विशाला—गोरक्षकर्कटी ॥ अ. ३३–१५
अ. १–१८८
विशल्या—दन्ती काष्टपाटला वा ॥ अ. ६८–१३
विकंकतः—वयंकिलिरिति ख्यातः ॥ अ. ४१—३१
विजया—हरीतकी ॥ अ. ३०–३३
विकसा—मंजिष्टा । अ. २२–८०
वीरा—क्षीरकाकोली पृश्निपर्णी वा । अ. २०–२४ अ. ४–२९.
वृक्षाम्लम्—महार्द्रकम् ॥ अ. ९७-२५.
अ. ६–३४.
वृश्चिकाली—वृश्चोपत्री ॥ अ. २०–२६
विच्छावती ॥ अ. ८–२२.
वृश्चीवः—श्वेतपुनर्नवा ॥ अ. ३०–५७
वृक्षादनी—(1) वन्दाकः वृक्षफलंबुकेत्यपरे ॥ अ. ६५–२.
(2) वन्दाकः, वृक्षकलम्बुकेत्यपरे ॥
अ. ५१–६४.
(3) वन्दाकः बांदु इति लोके वृक्षकम्बुक इत्यपरे ॥ अ.३४–१
(4) वन्दाकः अ. ३४–७
वैदेही—पिप्पली ॥ अ. ६१–२२९

स.

सरला—सरलकाष्टम् । अ. २२–१७४
सरलकाष्टं, त्रिवृत इत्यन्ये ॥ अ. ४४–७.
समंगा—अंजलिकारिका । वाराहक्रान्तामपरे अ. १–१०७.
सप्तताला—तालमूली ॥ अ. ५१–१०
सतीनः—(1) अल्पः वर्तुलः कलायः ॥ अ. ४६–५
(2) वर्तुलः महान्कलायः ॥ अ. ९–३.
सहा—माषपर्णी ॥ अ. ६१–१.
अ. २२–११६.
सप्तद्लः—सरघवीति नाम्ना आख्यातम् गंधद्रव्यम् ॥ अ. ७०–३१.
सहचरः—नीलझिण्टी ॥ अ. २२–१०५
समन्वितकारः—सहकारः ॥ अ. ९७–७१
सर्पगन्धा—सर्पच्छत्रिका ॥ अ. २०–२६
सहदेवा—दण्डोत्पलभेदः ॥ अ. २६–३१
सप्तला—चर्मकषा इत्यन्ये ॥ अ. २८–४
सप्तलाशंखिन्यौ—नीलश्वेतवुन्हे ॥ अ.२८-४
सरणी—भद्राली ॥ अ. २२–१२७.
स्थलपद्मम्—माणकम् ॥ अ. ३९–१४.

सातला—चर्मकषा नीलबुन्हा वा ॥ अ.३७

सारिवा—अनन्तमूलम् ॥ अ. १–९०.

स्यान्हं—नवनीतखोटिः अ ५१–२४

सिंही—पृश्निपर्णी ॥ अ. ६१–४.

सिंहपुच्छी—कट्टराशिहुच्छकम् । अथवा सिंहपुच्छी शृगालविन्ना पृश्निपर्णी भेदः ॥ अ. ३६–३१.

स्थिरा—शालपर्णी ॥ अ. २०–२१. अ. १–१५६.

सुमना—जाती ॥ अ. ४५–१५.

सुरसः—(1) सिन्दुवारः ॥ अ. ६८–१०.
(2) पर्णासभेदः ॥ अ. ६१–२३
(3) पन्नासः । अ. ५६–६.
अ. १२–१३.
(४) पर्णासः ॥ अ. ४२–२५.

सुरसा—निर्गुण्डी ॥ अ. ६५—१२. निर्गुण्डी पन्नासो वा ॥ अ. ५०–१६.

सुषवी—कारवेल्लकः ॥ अ. ४४–३१ कारवपत्रकम् ॥ अ. ५६–३

सुरभिः—शल्लकीवेष्टकं मुरेतिख्यातं रास्ना वा ॥ अ. ५८–१०५.

सुनिषण्णक—चतुष्पत्रा, अन्ये शिखिलिकामाहुः ॥ अ. ६१–११५

सूकरी—वाराहिकन्दः तदभावे चर्मकारालुकम् ॥ अ. २०–२५.

सोम—-कट्फलं इति गदाधरः ॥ अ. ४७–२१.

सोमवल्कः—कट्फलम् ॥ अ. ३५–२७.

सौगन्धिका—अनन्तमूलम्, उत्पलसारिवा । अ. ४७–१७.

स्थौणेयम्—ग्रन्थिपर्णम् । अ. ५१–१०. अ. २२–७९.

श.

शणः—परिपाके सस्वनफलः अ. ४४–१७

शतपर्वा—वंशः । अ. ३४–३४.

शल्यकम्—मदनफलम् ॥ अ. ३५–७

शकटी— स्वनामख्याता ॥ ५६–५.

श्रवणाह्वया—मुण्डितिका ॥ अ. ९०–३

शारदः—सप्तपर्णः । अ. ३९–३.

शाल्मली—शिवली (सावरी) मूलम् ॥ अ. १–११६.

शाकः—(1) कर्कशमसृणपृष्ठोदरपत्रो वृक्षः। अ. ३४–७.
(2) महातरुजस्तरुः कर्कशपत्रः । खरमसृण पत्रो महातरुः श्रीपर्णः इति लोके इति डल्लणः ॥ अ. ४१–३६.

शालः—शंकुः । अ. १०–१८.

शार्ङ्गेष्टा--गुंजा काकजंघा वा ॥अ.३७–५०

श्यामा—(1) वृद्धदारकम् ॥ अ. २२–४८
(2) श्याममूला न तु श्यामा वृद्धदारकः श्यामलता वा ॥ अ. ९–४

श्राविणी—मुण्डितिका देशान्तरीफलं वा ॥ अ. ११–२६.

शितिमारकः शार्लिंचः ॥ अ. ३२–१०

शीतलि—स्वनामख्याता ॥ अ. ३४–२९

ह.

क्ष.

सिद्धमन्त्र निरुक्तः

—अ—

अक्षोट—(१) कर्पराल ।
(२) मदन फलाभं मध्योन्नतरेखम् ।

आम्लिकाकन्द—"अम्लिका स्वल्पविटपा सुकुमाराल्पनाडिका । प्रायेण कामरूपादौ तत्कन्दश्चार्शसे हितः' इति बाष्पचन्द्रोक्तः ॥

अर्कवल्ली—आदित्य भक्ता ।

अर्गट—आर्तगल ।

अद्रिकर्णी—सूर्पिका ।

अरिमेदः—अहिमारः ।

अवशिरः—सूर्यावर्तः, तस्याःफलम् गजपिप्पल्याकारः फलविशेष इति अन्ये ॥

विवृक्षः—मेषाश्रृङ्गी ॥

अस्थिशृंखला—वज्रप्रोक्ता ।

अश्मन्तः—अम्लोटजः ।

अश्वकर्णः—सस्यसंवरः 'एन' इति प्रसिद्धः ॥

अश्वछन्दा—अश्वगन्धा ॥

आ

आघाटः—अपामार्गः ।

आम्रातम्—आम्रवाटम् ।

आरग्वधः—कार्तिकेयपुरे प्रसिद्धम्, तच्चतुर्विधम् । आरुकं वीरसेनं च वीर वीरारुकं तथा । विधाजातिविशेषण तच्चतुर्विधमारुकम् ॥

आलुकानि—पिण्डालुकमध्यालुकहस्त्यालुककाष्ठालुकरक्तालुकादीनि ।

उ

उद्दालः—वनकोद्रवः ॥

उदुम्बरः—कृमिफलः ।

उत्कटः—लोहितशागलबीजम् ।

(कुधान्य)

उत्तमारणी—करम्भा ॥

उरुमाणम्—वरुण ॥

उशीरम्—वीरणकम् ॥

ए

एरण्डः—पंचाङ्गुलः ।

एकैषिका—पाठा ॥

एर्वारु—कर्कटीफलम् ॥

एलवालुकम्—एलेयम् ॥

एलानम्—ऐरावतम् ॥

ऐ

ऐरावती—गोवावती ॥

क

कर्कारु—लघुकूष्माण्डम्, लघुकालिंग मित्येके । दीर्घालावुकं फलविशेष इत्यन्ये ॥

कर्चूरः—शटी ॥

कर्णिकारिका—कर्णिकाद्रुमः ॥

कटभी—किणिही ॥

कसेरुकम्—कृष्णः सूक्ष्मो वर्तुलो लोमशः कन्दः ॥

कण्टाली—कण्टकारिका ॥

करमर्दी—क्षीरफला ॥

कङ्गुणिका—ज्योतिष्मती ॥

कल्पकः—गन्धकर्चूरः ॥

कङ्कोलम्—कटुकफलम् ॥

कत्तृणम्—ध्यामम् ॥

कठिल्लकः—पुनर्नवाभेदः ॥

कलम्बुः—नालकः । कलम्बु नाडीकातयोः लक्षणम्— " कलम्बुः नालिकः स्वादुः सुशिरो बहुतोयजः । तद्भेदो नालिका श्लक्ष्णा ज्ञेया सान्या कलम्बुका इति ॥

कलम्बुकाकञ्चुटकौ—जलशाक विशेषौ ॥

करञ्जी—उत्तन्डकी ॥

करंजः—नक्तमालः ।

कराम्लम्—करमर्दम् ।

कङ्कता—अतिबला

कलायः—वर्तुलो शिम्बिधान्यम् ।

कच्छुरा—कांसुली फणिहा ।

करुणः—छगलान्त्यः ।

काककुष्टम्—कङ्कुष्टम् ॥

काकतुण्डी—काकनासा ॥

काञ्चन—कोविदारः ।

कालाञ्जनी—नोली ॥

कामाता—काकमात्री ॥

काशः—काशेक्षुः ॥

काष्टपाटला—पुष्पहीना पाटला ॥

काष्टेक्षुः—अतिकठिनइक्षोः भेदः ॥

किणिही—शिरीषपत्रा ॥

किङ्किरातः—किङ्कराङ्गः ॥

कुक्कुटी—कुक्कुटाण्डनिभैः कंदैः किंचित् कटुकपिच्छिलैः । स्निग्धैः मरकतच्छायैः खर्जूरीसदृशच्छदैः । इति अष्टाङ्गसंग्रहे उक्ता ॥

कुङ्कुमम्—बाल्हिकम् ॥

कुचैला—पाठाभेदः ॥

कुठिञ्जरः—कुञ्जरः ॥

कुत्सिताम्बः—कदम्बः ॥

कुन्तली—चुञ्चुसदृशी दीर्घपत्रः शाकविशेषः । चिरपोटीत्येके । सूक्ष्मतिलजातिरित्यपरे ॥

कुन्दः—माध्यः ॥

कुन्दुरुः—शल्लकी खपुरः ॥

कुबेरः—नन्दीवृक्षः ॥

कुरंगलेण्डिकम्—कर्कटम् ॥

कुरुण्टिका—शितिवारः ॥

कुरुविन्दः—व्रीहिगुरुः ॥

कुलेवरः—छत्राकभेदः ॥

कूर्चपर्णी—मिटवल्ली ॥

केबुकम्—पेचुका ।

केदूलम्—स्वल्पविटपं कन्दे तत्स्वादुशीतलम् । कोविदेन तु लोकेन केव्हठ इति भण्यते । जलोदुम्बरिकेत्येके ॥

कोलानि—बदराणि । बहुवचनं बृहत्तहृस्वमध्यानां फलानां ग्रहणार्थम् ॥

कोविदारः—कांचनारः ॥

कोशाम्रः—लाक्षावृक्षफलम् ॥

क्रौचादनम्—थैबुलिका ॥

ग

गण्डदूर्वा—गण्डाली ॥

गजद्रुमो—छताश्वत्थः ।
गन्धा—पशुगंधा ।
ग्रन्थिपर्णी—गंध द्रव्य विशेषः ।
गर्दभाण्डकः—छायावृक्षः ।
गर्मोटी—गर्मोटीका (कुधान्य)
गवेधुका—(।) वार्षिकी (कुधान्य)
(१) कपिला ॥
गिरिपादिका—काकाण्डोला ।
गुन्थः—वृत्ततृणः ।
गृञ्जनः—पलाण्डुभेदः । तथाच
बाष्पचन्द्रः—" गंधाकृतिरसैस्तुल्यो
गृञ्जनस्तु पलाण्डुना । सूक्ष्मनालाग्र
पत्रत्वात् भिद्यतेऽसौ पलाण्डुतः ॥"
गोजिव्हा—दर्विपत्रिका ॥

घ

घुणपादी—नर्तनकः । (कुधान्य)

च

चञ्चपर्णी—चञ्चसदशपत्रा ।
चञ्चुः—नाडिकाकारपत्रः ॥
चर्मरंगो—आवर्तकी ॥
चाङ्गेरी—अम्लपत्री ॥
चिर्भिटम्—डङ्गरम् ॥
चिंचा—चुक्रिका ।
चीड—सरलः ।
चीनाकः—दीर्घमण्डपवल्लीफलम् ॥

छ

छत्राकम्—कर्बरकम् ॥
छागकर्णः—कुशरीरः ॥

ज

जतुकरी—चक्रवर्तिनी ॥
जाती—मालती ।
जीवन्तः—नक्तमालः ।
जीवन्ती—(१) जीवनी
(२) स्वर्णजीवंती ॥
जूर्णाव्हः—जवनालः (कुधान्य) ।
ज्योतिष्मती—कंगुणिका ॥
जंबू—महास्कंधा ॥

—झ—

झिंटिः—पाण्डुकर्कशा (कुधान्य) ।
झुझुः—भुंभूकः ।

ट

टङ्कः—मन्मथद्रावणः ।
टिण्टुकः—अरलुः ।

ढ

ढण्ढणः—वृकधूमकः ।

त

तरणी—रामतरणी ।
तरूढकम्—कल्हारम् ।
तर्कारी—अग्निमन्थः ।
त्रपुसम्—बालकम् ॥
त्र्यक्षः—नारीकेलः ॥
ताम्बुली—नागवल्ली ।
तिन्दुः—वीरकाः ।
तिन्दुकः—वीरली ।
तिन्दिशम्—छाटकम् ।
तिरिगिच्छि—कण्टकरञ्जः ।
तिलकः—स्त्रीवीक्षणदोहदः ॥

तिलपर्णी—बर्बरकः ।

त्रिपुटः—छांकः ॥

त्रिवृत्—कुम्भः ॥

तुम्बी—अलाबुः ॥

तुम्बुरुः—तीक्ष्णत्वत ।

तुलसी—देवदुन्दुभिः ॥

तुवरः—पत्रैस्तु बकुलाकारः कलायसदृशः फलैः वृक्षस्तुबरको नाम पश्चिमार्णव तीरजः । इत्युक्तः ॥

तूदम्—उत्तरापथजम् ॥

तूनी—नन्दीवृक्षः ॥

तेजोवती—तेजोव्हा ।

तोदनम्—राजप्रियं शीतफलम् रावणाम्लिके-त्येके ॥

तोदपर्णी—तोयपर्णी ।

द

दमनः—पाण्डुराङ्गः ।

द्रवन्ती—शम्बरी ॥

दीनकी—आशीतकः

दुरालभा—यवासिका

देवगन्धा—आरामशीतला ॥

देवसर्षपः—गौरसर्षपः ।

द्रेक्का—महानिम्बः ॥

द्रोणपुष्पी—कुम्भी ॥

ध

धवः—शकटाक्षः ।

धनहरी—चण्डी ।

धातकी—धातुपुष्पी ।

धान्यकम्—कुस्तुम्बुरी ॥

धूकः—अरमल्लिका ॥

न

नलः—देवनलः ।

नलिका—कपोतचरणा ।

नदीमाषः—वानरिका ।

नन्दी—जलतुण्डिकेरी ॥

नन्दीकामुकः—प्राचीबलः ।

नन्दीमुखी—नोदुरिका नन्दीवक्त्रेति जेज्जटः । निःशूकयवक इति बाप्पचन्द्रः ॥

निकोचकः—अंकोलः ॥

नीपः—राजकदंबफलम् । 'नीपो बृहद्गृहसमीपभुवि प्रभूतो लोकप्रसिद्धतर राजकदंबनामा । प्रांशुः मधूकतरुपत्रसमानपत्रः स्वाद्वम्लपक्वफल च सुगन्धिपुष्पः, ॥

नीलिका—कालाञ्जनी ।

नीवारा—वनव्रीहयः ।

नेपाली—नवमल्लिका ॥

प

पटोली—राजीफला ।

पत्तङ्गम्—पट्टरङ्गम् ।

पत्तूरः—लोहमारः ।

पनसः—कण्टकिफलः ।

परुषकः—धन्वनाकार हरितपत्रो भण्टाकृतिर्भवेत् । परुषकोऽल्पास्थि ॥

पलाण्डुः—उल्ली ॥

पर्वपुष्पिका—नागदन्ती ।

पर्वणी—शाकविशेषः ।

प्रसारिणी—सुप्रसरा ।

प्रशातिका—एकशूकोपशुण्डिका ॥
पाठा—वृकतिक्ता ।
पाटला—वसन्तदूती ।
पार्थी—आदित्यभक्ता ।
पालंक्या—वास्तुकसदृशी चीरित्रपत्रा शाकविशेषः । उपोदकाभेद इत्येके ॥
पारिभद्रः—कंटककिंशुकः ।
पारेवतम्—"पारेवतं मधुरमम्लमिति द्विधा स्यात् । स्यात्तिन्दुकाकृतिफलं लघुपाण्डुपुष्पम् । नीलच्छदाद्विगदितं तु परेवताख्यं तत्पुष्कराश्रमसमीपवने प्रसिद्धम् । इति ॥
प्राचीनामलकम्—पानीयामलकम् ।
प्रियंगुः—गंधद्रव्यम् ।
पुंडरीयकः—प्रपुण्डरीकः ।
पाटलाभागः—पाटलपुष्पम्
पुस्तकशिम्बिका—पुस्तकाकारशिंबो ॥

फ

फल्गु—काकोदुम्बरीकाफलम् । तद्वातश्लेष्मोदासीनम् ।

ब

बकुल—मद्यदोहदः ।
बला—(१) वाट्यालकः ।
(२) नागबला ।
ब्रह्ममूर्तिः—प्रसिद्धा (कुधान्य)
ब्रह्मसुवर्चला—मण्डूकपर्णी ।
ब्रह्मसोमा—देवाग्निका ।
बाकुची—सोमवल्ली ।
बाष्पिका—हिंगुपत्री ॥
ब्राह्मी—मत्स्याण्डुका ।
बिम्बी—तुण्डीकेरी ।
बिल्वः—मालूरः ॥
बिल्वपर्णी—शाकविशेषः ।
बृहती—सिंही ।

भ

भव्यम्—कर्मरङ्गम्
भार्गी—द्विजयष्टिः ।
भूर्जः—लेख्यपत्रः ।
भूस्तृणम्—मालातृणम् ।

म

मदनः—गालवृक्षः ।
मधुकर्कटी—मातुलुंगजातिः ।
मरिचः—जम्बीरशाकं, तल्लक्षणम् 'जंबीरगंधि हरितं यदम्लकटुकं रसे । शाकं जम्बीरमित्युक्तं जम्भजं चोत्तसपथे ।' इति ।
माणः—महापत्रो यथापूर्वमधः पत्रत्यागी कन्दविशेषः ॥
मात्रिका—मात्रिकम्
माधूली—मर्कटतृण इति जेज्जटः ।
स्वल्पो गोधूम इति बाष्पचन्द्रः ॥
मार्षकम्—माढकम् ।
मार्षो—जलवास्तुक इत्यन्ये ॥
मिश्रेया—(१) शतपुष्पा भेदः ।
(२) मधुरिका ।
मुकुलकः—दन्ती ।
मुकुन्दो—मूलकन्दः । (कुधान्य)
मुञ्जः—शरः

मुञ्जातं—कन्दविशेषः ।
मुचकुन्दो–हिवचकुन्दः ।
मुण्डी–कुणहलः ।
मुश—गन्धकुटी ।
मुस्ता—गाङ्गेरी ।
मुसली–तालमूलिका ।
मुष्ककः—मोक्षः
मृगलेण्डम्—कर्कटम् ।
मृदुफलः—फरसुनामकः इत्युक्तः ॥
मूलकम्—हरित्पर्णम् ।
मूर्वा—मधुरसा ।
मेदोगला—मृगदन्ती ।
मोटा—जयन्ती ।
मोदकी–गुडमंजरी ।
मांसरोहा—मांसरोहिणी ।
मांसी—जटिला ।
मंगल्यः—पाण्डूरः मसूरभेदः ।
मंजिष्टा—योजनवल्ली ॥

य

यवतिक्ता–यवक्षेत्रजा तिक्ता सप्ताष्टपत्रा ॥
यातुकी—केशपर्णी ।
यूथी—नीलपुष्पी ।

र

रास्ना–एलापर्णी
राजमाषाः—चवलः ।
रामठी—काण्डीरभेदः । यदाह
बाष्पचन्द्रः—'हरितो द्विविधः प्रोक्तो काण्डीरस्तत्त्वदर्शिभिः कटुकं कटदेशादौ भक्षयन्त्याममेवतु । द्वितीयस्तु दवोद्भेदो रामठेति गीयते'

रिष्टः–रक्षाबीजः
रुणेयकफलम्—कारन्थफलम् ।
रेणुका—कान्ता ।
रोध्रः—तिल्वकः ।
रोहीतो—रोहितकः

ल

लकुचम्—क्षुद्रपनसम् ।
लज्जा–नमस्कारी ।
लताकस्तुरी–प्रसिद्धा ॥
लवङ्ग–चन्दनपुष्पः
लवली—'घनस्निग्धहरित्प्रान्त प्रपुन्नाट सदृक्च्छदा । सुगन्धिमूला लवली पाण्डुकोमलवल्कला । इत्युक्ता ॥
लक्ष्मणा—रक्तबिन्दुच्छदा ।
लाङ्गली—कलिहारी ।
लोणिका–घोलिका ।

व

वठी–पिप्पली ।
वनतिक्ता–तिक्तपटोली ।
वन्दा—कामवृक्षः ।
वरुणः—सेतुवृक्षः ॥
वत्सादनी–सुदर्शनी ॥
वरकः—वरहाटकः (कुधान्य)
वज्रकन्दः—सुरेन्द्रकन्दः
वाताम–मज्जमधुरस्निग्धं दीर्घम् ।
वाराहीकन्दः—क्षीरान्विता मूलकतुल्यकन्दा सप्ताष्टपत्रा सितरक्तकाण्डा । बिभर्ति या पल्लवमष्टषट्वा सकंचुकी श्वेतवपुर्वरेण्या ॥ इति अष्टाङ्गसंग्रहे ॥

'शाककर्कशवाराहवृषणाकारक-न्दका । ताम्बुलवल्लीच्छदवद्वाराही गृष्टिकोच्यते ' इति अन्यत्रोक्ता वा वाराहीकन्दः ॥

विकंकतः—ग्रावतरुः ॥

विरुकः—शरबीजम् । (कुधान्य)

विषमुष्टी—केशमुष्टी ॥

वृद्धदारकः—वेल्लरी । तल्लक्षणमष्टाङ्गसंग्रहे—" त्रिकोणकाण्डा सुबहुप्रताना फलेषु पीता कुसुमेषु रक्ता ॥ पत्रैः सदुग्धैः मृदुरोमवद्भिः ताम्बुलतुल्यैः घनमूलकन्दैः ' इति ।

वृक्षाम्लम्—तिन्तिडिकम् ॥

वृषगंधिको—बस्तगंधा ।

वृषसारकः—कौण्डिन्याकः ।

वृषकाली—अग्निकः ।

वृषधात्री—वेणुपत्रसदृशपत्रा ।

(कुधान्य)

वेल्लम्—विडंगम् ॥

श

शरः—शरकर्णिका । (कुधान्य)

शमी—शक्तुफला ।

शतपुष्पा—मिसी ॥

शतपोरकः—इक्षुविशेषः

शणपुष्पो—घण्टारवः ॥

शालः—राजवृक्षः

शाकवृक्षः—खरपत्रः ॥

शान्तनुः—शान्तिकरः । (धान्य)

श्यामा—श्याममूलात्रिवृत् । वृद्धदारुक इत्यन्ये ॥

श्यामाक—तृणबीजः ॥

शिम्बिरो—बहुशिम्बः ॥

शिपिः—गुन्द्रा ॥

शिरीषः—शुकतरुः ॥

शिरीषिका—दण्ढणिका ॥

शीलापुष्पम्—शैलेयम् ।

शुकनासा—शुकाव्हा ।

शृंगाटकः—त्रिकोणजलकन्दः ।

शृंगवेरिका—गोजिव्हाभेदः । शृंगवेरवदाहृत्य शृंगवेरी विभाविता । कुस्तुम्बुरुवदाहृत्य तुम्बुरुणी बृहंति च इत्येके ॥

शेफाली—पुष्पवर्षिणी ॥

शंखपुष्पी—कम्बुमालिनी ॥

शंखिनी—यवतिक्ता ॥

स

सरलः—चीडा ।

सल्लकी—गजभक्ष्या ।

सरहा—राजजम्बूः

सहदेवा—दण्डोत्पला ।

सतीनः—महाकलायभेदः ।

स्थलकन्दः—ग्राम्यकन्दः ओलंक इतिएके

स्वरसी—कपित्थपर्णी ॥

सारिवा—गोपर्णी ।

सिंचती—उत्तरापथजा मुष्टिप्रमाणा अतिमधुरफला बदरी ॥

सीरी—लाङ्गली ॥

सुनिषण्णः—चतुर्दलः ' शाको जलान्विते देशे चतुःपत्री तु कीर्त्यते । इत्युक्तम्

स्नुही—समस्तदुग्धा ।

स्पृका—स्पृक् ।

सूरणः—चित्रदण्डः ।

सूषा—बृहत्पत्रा कासमर्दभेदो यः केदारे पूर्यते । शिग्रुस इत्येके

सूर्य्यपर्ण्यौ—मुद्गपर्णी माषपर्णी ॥

सोमा—सोमपर्णी

सौवीरम्— मरुदेशजं मधुरं महद्वदरम् ॥

स्थौणेयम्— शीर्णरोमकम् ॥

ह

हरेणुः—स्वल्पकलायभेदः ।

हस्तिश्यामाकः—श्यामिका । (कुधान्य)

हरिद्रक—प्रसिद्धः ॥

हस्तिकर्णः—रक्तैरण्डः महापर्णो भूशाल इत्यन्ये ।

हपुषा—विषा ।

हिलमोची—जलब्राह्मी ।

हिलिमरचः—बृहत्पत्रो मेथिकाभेदः तुरुष्कप्रसिद्धोऽभक्ष्यः ॥

हिंस्रा—कन्थारी ॥

हेमदुग्धा—स्वर्णक्षीरी ।

हंसपादी— त्रिपादी ॥

क्ष

क्षणः—मातुलानी ।

क्षवः—छिक्किका ।

क्षीरमोरटो—कोरटमुखः

क्षीरावी—दुग्धिका ।

क्षीरी— राजादनः ।

क्षीरपलाण्डुः—सक्षीरो मधुरः पलाण्डुभेदः

क्ष्वेडः— कोशातकी ॥

भावप्रकाश निरुक्त

अपामार्गः—चिरचिटा ।
अबीजा द्राक्षा—' किस्मिस् ' इति लोके ।
अमृतफलम्—यत्काण्डाहारकाबिलप्रभृतिषु देशेषु नाशपातीति नाम्ना प्रसिद्धम् ।
अर्जुनः–कोह ।
आढकी—अरहर ।
आरग्वधः—धनबहेरा, अमलतास ।
इन्द्रवारुणी—फरफेन्दुआ ।
एरका—मोथी तृणविशेषः ।
एलवालुकम्—कंकोलसदृशं कुष्ठगन्धि ।
कटुपर्णी—स्वर्णक्षीरी यस्याः मूलं चोक इति।
कर्णिकारः—पांगारा इति महाराष्ट्रे प्रसिद्धः।
कलायः–मटर ।
कसेरु–चिचोढम् ।
काकजंघा–मसी ।
काकनासा–कौआठोढी ।
काकमाची–मकोय ।
कालशाकम्—नाडीकाशाकम्
किङ्किरातः—गौडादौ प्रसिद्धः ।
कुकुन्दरः–कुकुरवँदा ।
कुपीलुः—कुचला, मकरतेंदुआ ।
कुष्ठभेदः–पुष्करमूलम् ।
कोलशिम्बि–सुअरा सेम ।
कंकोल–सुगन्धद्रव्यम्, सीतलचीनी ।
गण्डदूर्वा–गांडरदूब ।
गन्धपलाशी — कपूरकचरी ।
गवेधुका—गरडेहुआ ।
गुन्द्रः—पटेरा ।
गोस्तनी–' मुनक्का ' इति लोके ।
ग्रन्थिपर्णम्—गठिवन ।
ग्रन्थिपर्णस्यैव भेदः–भटेउर ।
चक्रमर्दः–चकवड ।
चाङ्गेरी—अंबिलोना ।
चारुकः—सरबीज ।
चिर्भिटम्—कचरिया ।
चंचुको—चेबुना ।
जघनेफला—कठूमर ।
जपापुष्पम्—गुडहरा ।
जलपिप्पली—पनिसगा ।
जीवन्ती–शर्करावन्मधुरपुष्पा व्रततिः ।
ज्योतिष्मती–मालकांगनी ।
डिण्डिशः–ढेंढस ।
डोढिका–करेरुआ ।
तण्डुलीयः–चौलाइ ।
तुवरी–तोरी, तोडिस ।
तेजवती–तेजवल्कल, तेजपात इति च लोके।
त्रिपुटः–खेसारी ।
देवदाली—घघरवेल ।
द्रोणपुष्पी—गोमा ।
नन्दिवृक्षः–वेलियापोपर इति लोके तुणिश्च ।
नलिका–उत्तरापथे प्रसिद्धा सुगन्धा वलाकृतिः पवारीति च कचित्प्रसिद्धा ।
नागवल्ली–पान ।
निष्पावः—भटवाँसु ।
नीलदूर्वा —हरीदूब ।
नीवार–तीनी ।

पट्टशाकः—पटुआ शाक ।
पद्माक्षं——कमलगट्टा ।
पनस—कटहर ।
पारिभद्रः—फरहद ।
पिण्डीतकः—मैनफल इति लोके ।
पीतचन्दनम्—कलम्बक इति लोके ।
प्रपौण्डरीकम्—सुगन्धद्रव्यम् (पुण्डेरी) ।
बन्धुजीवः——गोजुनिया ।
बर्बरी—वनतुलसी ।
बलाभेदः—ककही इति लोके ।
बाणपुष्पः—गौडादौ प्रसिद्धः ।
बिम्बी—कन्दूरी ।
बीजकः—विजयसारः ।
भद्रमुञ्जः—रामशरः ।
भूतृणम्——शरबाण ।
भूमीसहः—सागोन ।
मखान्नम्——मखाना (पद्मबीज) ।
मरुबक—मरुआ इति लोके ।
महाकोषातकी—नेनुआ ।
माचिका——पश्चिमदेशे मोइआ इति लोके प्रसिद्धो वृक्षविशेषः ।
मार्कण्डिका--भूइँखखसा ।
मुरा—मुरहरी, एकाङ्गी ।
मूर्वा—चुरनहार ।
यावनालः—पनेरा, जुआर ।
रक्तशालिः—' दादखानी ' इति लोके मगधदेशे प्रसिद्धः ।
रक्तालुः——अरुइ ।
राजकोषातकी—तोरई ।

लकुच——बड़हर
लामज्जक-उशीरवत् पीतच्छवितृणविशेषः ।
लोणी—नोनिया ।
वचा—अपरा सुगन्धा स्थूलग्रन्थिः यस्याः लोके महाभरीति लोके ।
वाराहीकन्दः—गेठि ।
वारिपर्णी—काई, सिवार ।
वास्तुक——बथुआ ।
वीरतरुः——वरवेल ।
वेरातरा—लोविया आदिभेद ।
शणपुष्पी——पटसन ।
शतपत्री—सेवतीगुलाब ।
शाखोटः——सिहोरा ।
शातला——सीहुण्डभेदः । अनेनैव नाम्ना प्रसिद्धा ।
शालूकम्——भसींडा ।
शितिवारः—शिरियारी ।
शिरीषिका—ढाढोन ।
शैलेयक——भूरिछरीला ।
सप्तपर्णः—सतौना ।
सुवर्चला—हुर हुर इति लोके । हुलहुल ।
स्थौणेय—थुनेरकम् ।
स्पृक्का सुगंधिद्रव्यम् शाकविशेषः ।
श्वेतकृष्णसारिवा—करिआवांसा । इयमपि जम्बूवत्पत्रा दुग्धगर्भा व्रततिः भवति ॥
श्वेतखदिरः——पपरिया कत्था ।
हैमवती-यस्य मूलं चोक इति प्रसिद्धम् ॥

वृद्धत्रयीनी वनस्पतिओनी यादी

સંસ્કૃત નામ	ઉલ્લેખ	ગુજરાતી નામ	લેટીન નામ.	વિશેષ ઉલ્લેખ.
अगवृत्तिका	सु. क. ७	શક્ષકી-(ડલ્હણ) શાલેડી.		
अगस्ति	वा.उ. १३-८९; सु.सू. ४६-२८१,२८२	અગથીયો	Sesbania grandiflora.	नि. पृ. ३३२
अगुरु	सु. सू ४५-१२३, च. सू. ४६-१; वा. सू. १५-४३	અગર	Aquilaria Agallocha.	नि. উ. ३३८
अग्नि	च. चि. २६-१८; सु. उ. ५१-२७; वा. सू. १५-१७	ચિત્રા	see चित्रक.	नि. पृ. ६८४
अग्निकः	सु. सू. ३७; च. सू. ४-५०; वा. सू. १५-२४	અજમો, ચિત્રા, ભીલામો, અરણી વિગેરે અર્થમાં.		
अग्निमन्थ	सु सू. ३८-८,	અરણી	Clerodendron phlomoides.	नि. উ. २३६
अग्निमुखी	च. सू. ४-२८	लाङ्गलिया इति ख्याता (चरक टीका) દુધીઓ વછનાગ see लाङ्गली.		
अजकर्ण	च. चि. ८-१६५; सु. क. १-७१	સફેદ ડામરનું ઝાડ.	Vateria indica.	नि. पृ. १२१
अजगरी	सु. चि. ३०—५	(દિવ્યૌષધિની ગણત્રીમાં.)		नि. উ. ६५३
अजगंधा	सु. सू. ४८-१६; च. सू. ४-६९; वा. उ. ५-२०	તલવણી.	Gynandropis pentaphylla.	नि. पृ. ८९
अजडाफलः	च. चि. २—६७, १२३.	કૌચાં.	Mucuna pruriens.	नि. पृ. ३६१
अजमोदा	च. चि १७-४१; सु. सू. ३८-२२; वा. सू. १५-३३	અજમો.	Ptychotis ajwan.	नि. पृ. ५८९
अजरुहा	सु. क. १—७८	દિવ્યૌષધિ છે. विषं जरयते तेषां तस्मादजरुहा स्मृता ॥		नि. উ. ६५३
अजलोमी	सु. चि. ३०-५; वा. उ. ५-२	દિવ્યૌષધિ છે. શ્વેત દૂર્વા ચાલી શકે.	જુઓ	नि. উ. ६५४

अजशृंगी	च. चि. ८-१५८; सु. सू. ४४-४१; वा. चि. ८-१५७	मींढी आवळ	Senna folia.	नि. पृ. ४७४
अजा	च. चि. १—१६८; सु. चि. ३०—५	१ દિવ્યૌષધિ ૨. 'અજશૃંગી' અર્થમાં.		नि. ઉ. ૬૫૨
अजाजी	च० सु० वा०	જીરૂં.	Cuminum cyminum.	नि. पृ. ૫૯૬
अतसी	,,	અળસી.	Linum usitatissimum.	नि. पृ. ૧૭૮
अतिगुहा	च. चि. २५-२१०; सु. सू. १९-२९; वा. सू. २९-३१	શાલિપર્ણી. (सु. क. ८)		नि. ઉ. ૬૫૬
अतिच्छत्रा	च. चि. १-१६७, सु. चि. ३०-५	દિવ્યૌષધિ. જુઓ.	नि. ઉ. ૬૫૫, ૬૦૧, ૬૦૩. (સ્મરણ. કેકિલાક્ષ. ચક્રપાણિદત્ત. વિ. ૮-૨૦-૧.)	
अतिबला	च० सु० वा०	ખપાટ, કાંસકી.	Abutilon indicum.	नि. पृ. १३५
अतिमुक्तक	वा. उ. ६—५८	માધવી લતા.		
अतिमुक्ता	सु. सू. ४५-१२०	માધવી લતા.	Hiptage madablota.	नि. पृ. १८३
अतिरसा	च. सू. ४—७	શતાવરી.	Asparagus racemosus.	नि. ઉ. ૫૨૩
अतिविषा	च० सू० वा०	અતિવખની કળી	Aconitum heterophyllum.	नि. पृ. ४
अधोगुडा	च. सू. १-७६	વરધારો.	see वृद्धदारु.	
अनन्तम्	च. चि. ११-८६	સારિવા.	see सारिवा.	
अनन्ता	च० सु० वा०	સારિવા.	Hemidesmus indicus.	नि. ઉ. ४०
अनल	सु. सू. ३८—१०	ચિત્રો.	see चित्रक.	
अन्नपाकी	च. सि. १२-५७	ડૉ. દેસાઇના "ઔષધિ સંગ્રહ"માં अन्नपाचकનો અર્થ રાસ્ના કરેલો છે. अन्नपाकी શબ્દનો અર્થ કોઈ જગેથી મળતો નથી.		
×अन्नपाचक	सु. क. २-५	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં.		

× ચરકસુશ્રુતમાં સ્થાવર વિષનાં જે લીસ્ટ આપવામાં આવ્યાં છે તે અત્યારે ઓળખવાં મુશ્કેલ છે. ડલ્હણ પણ એ વાતનો સ્વીકાર કરે છે. આ યાદીમાં જ્યાં જ્યાં એ નામો આવેલાં છે ત્યાં ત્યાં તેના અર્થો આપેલા નથી, એ પણ ઉપરની મુશ્કેલીને લીધેજ. આ. ગ. વૈદ્ય.

अन्ययव	वा. सू. ६-१३	अन्ययवो नाम शूकधान्यविशेषः लोकप्रसिद्धः (अ. द.) જવની કોઇ જાત.		
अपेतराक्षसी	च. चि. १५-३६	કાળી તુલસી.	Ocimum gratissimum.	નિ. ઉ. ૨૫૮
अपामार्ग	च० सू० वा०	અઘેડો.	Achyranthes aspera.	નિ. ઉ. ૨૭૮
अब्जं	सु. वा०	કમળ.		
अभया	च० सु० वा०	હરડે.	Terminalia chebula.	નિ. પૂ. ૪૯૫
अभिषुक	वा. सू. ६-११८, सु. सू. २७-१५०;	औत्तरापथिकम् फलम् (ટીકા). પીસ્તાં ?		
अब्दम्	च० सु० वा०	મોથ.		
अभिरुजा	वा. उ. १३-८९	શતાવરી.		
अभीरु	सु उ. ४२-७०, वा. सू. ६-११८	શતાવરી.	see अतिरसा.	
अभीरुपत्री	च. चि. ८-१६०	शतावरीभेदः (ટીકા). દરીયાઈ એકલકંટો.	Asparagus dumosus.	વ. શા. ६६३
अभ्रम्	सु. उ. १०-४	મોથ.	see मुस्ता.	
अमरदारु	च० सु० वा०	દેવદાર.		
अमृतफला	च. चि. २२-८६	આંબળાં. રા. નિ. માં દ્રાક્ષનો પર્યાય પણ છે.		
अमृतवल्ली	च. चि. १-७४, सु. उ. ३९-२५२	ગળો.		
अमृता	च० सु० वा०	ગળો.	Tinospora cordifolia.	નિ. પૂ. ૩૧
अमोघा	च. सू. ४-७३	પાટલા, આંબળાં, વિડંગ, લક્ષ્મણા ઇત્યાદિ અર્થમાં વપરાય છે.		
अम्भः श्यामाकाः	च. सू. २७-१६	ચોખાની જાત છે.		
अम्लचाङ्गेरी	च. चि. ३-२६२	તીનપાનકી રૂખડી.	Oxalis corniculata.	નિ. પૂ. ૧૯૧
अम्लबदरः	च. सू. ४-५२	ખાટાં બોર.		
अम्लवेतस	च. सू. ४-३०; सु. सू. ४२-१८ वा. सू. १०-२५	ખાટું નેતર.	Rumex vesicarius.	નિ. ઉ. ૩૦૨

*अम्लिका	च. सु. २७-१४५, वा. सू. १०-२५	આંબલી.	Tamarindus indicus.	નિ. પૃ. ૪૨૯
अम्लोकाकन्द	च. सू. २७-११५	આમલીયો કંદ (પંચમહાલ).	Dioscorea oppositifolia.	નિ. ઉ. ૬૫૫
अरलु	च. उ. ४०-९२, वा. उ. १८-२	અરલવો.	Ailantus excelsus.	નિ. પૃ. ૨૨૨
अरविन्द	च चि. १७-१०	કમળ.		
अरिमेद	च. सू. ४-६७, च. सू. १४-३७; वा. उ. २२-९६	હરમો બાવળ.	Acacia leucophlœa.	વ. શ્રા. ૩૧૫
अरिमेदा	च. सू. ४-७२		same as **अरिमेद**.	
अरिष्ट	च० सु० वा०	લીમડો.	Melia azadirachta.	નિ. પૃ. ૨૩૮
अरिष्टा	च. शा. ८-११८	અરીઠી.	Sapindus emarginatus.	નિ. પૃ. ૨૭૬
अरुष्कर	वा. उ. ३९-६८	ભીલામાં.		
अरुंषिका	वा. उ. २४-२४	ભીલામાં.		
अरोहा	च. चि. ३-२६२	રોણુ.	Soymida febrifuga.	નિ. પૃ. ૨૪૯
अर्क	च० सु० वा०	આકડો.	Calotropis gigantea.	નિ. ઉ. ૪૫
अर्कपुष्पी	सु. सू. ४६-२६२; वा. उ. १-४८	ખરખેર.	Holostema rheedii.	નિ. ઉ. ૫૬
अर्जक	च. सू. २७-१६४; सु. सू. ४६-२३५ वा. सू. ६-१०५.	રામતુલસી.	O. gratissimum.	નિ. ઉ. ૨૫૯
अर्जुन	च. सू. २५-४१; सु. सू. ३८-१२; वा सू. १५-४१.	સાજડ.	Terminalia glabra.	નિ. ઉ. ૨૭૭
अर्धपर्णी	सु. क. ८-१०६			
अलक्तक	च. चि. २२-७१, च. चि २१-१२९	અળતો, લાખ.		
अलर्क	च० सु० वा०	આકડો.		

*अम्लिका कन्दप्रधाना कामरूपे प्रसिद्धा, अम्लिकाभेद एव इत्याहुः अम्लिका च. द. वि. ८-२०-२ અમ્લ સ્કંધમાં છે.) એટલે આંબલી એ અર્થ ખંડિત નથી પણ अम्लिका માટે આંબલી અર્થ કરવો સારો છે.

अलवणा	सु. सू. ३८-१६	માલકાંકણી.	see **ज्योतिष्मती.**	
अलम्बुषा	च. वि. ८-१६, वा. चि. ३-१३३	ગોરખમુંડી.	Sphœranthus indicus.	નિ. પૂ. ६६८
अलसान्द्र	सु. सू. ४६	રાજમાષ: (ડલ્હણ)		
अलाबु	च. सू. २७-१०६; सु. सू. ४२-१८ वा. उ. ३७-३८	કડવી તુંબડી.	Lagenaria valgaris.	નિ. પૂ. ૫૪૨
अवगुत्थम्	सु. सू ४६	**वेगनामा काकादनोत्स्यर्थः** (ડલ્હણ).		
अवघात	च. चि. ७-१२६	હરફારેવડીનાં ફુલ.	see **लवली.**	નિ. ઉ. ६५४
अवल्गुज	च० सु० वा०	બાબચી.	Psoralea corylifolia.	નિ. પૂ. ६३८
अवाक्पुष्पी	च. चि. ७-१११	ઉધાપુલી.	Trichodesma indicum.	નિ. ઉ. ९८
अव्यथा	च. सू. ४-७३	હરડે, કેળ, ગળો વિગેરે અર્થોમાં વપરાય છે.		નિ. ઉ. ६५५
अशुक्लचन्दनम्	सु. उ. ५०	**रक्तचन्दनम्** (ડલ્હણ).		
अशोक	च. सू. ४-७१; सु. सू. ३-१४; वा. सु. १५-२६	અશોક.	Saraca indica.	નિ. પૂ. ४२६
अशोकरोहिणी	च. सू. ४-७२; सु. सू. ४२-१८; वा. उ. २-४७	કડુ.	Picrorrhiza kurroa.	નિ. ઉ. ११७
अश्मन्तक	च. सू. ४-५७; सु. सू. २५-२०; वा. चि. ११-१८	આસોતરો.	Bauhimia racemosa.	નિ. પૂ. ४३४
अश्मभेद	च. सु. २३-१३; सु. सू. ३८-१०; वा. सू. १५-२४	પાષાણભેદ.	Iris pseudo-achorus.	નિ. ઉ. ६४१
अश्वकर्ण	च. सू ४-६७; सु. सू. २८-१२; वा. सू. १५-१९	રાળનું ઝાડ.	Shorea robusta.	નિ. પૂ. ११८
अश्वगन्धा	च. सू. ४-३१; सु. सू. १६-२२; वा. उ. ३९-६१	આસન.	Withania somnifera.	નિ. ઉ. १३८
अश्वत्थ	च० सु० वा०	પીપળો.	Ficus religiosa.	નિ. ઉ. ४२३

अश्वदंष्ट्रा	च. चि. २६–४८	ગોખરૂ.	Tribulus terrestris.	નિ. ઉ. ૬૫૨
अश्वबला	सु. सू. ४६–२५६	પોથી. (Basella rubra) અથવા ગદહભ (Medico sativa).		નિ. ઉ. ૬૫૨
अश्वमारक	सु. क. २–५; वा. सु. ३०–९	કરેણુ.	see करवीर.	
अश्वहन	च. सू. ३–१५	કરેણુ.		
अश्वावरोहिका	च. चि. १०–३५	અશ્વગંધા.		
अश्वाह	च. चि. ३०–१०४	,,		
असन	च० सु० वा०	બીયો.	Pterocarpus marsupium.	નિ. પૂ. ૩૯૪
असनपर्णी	च. चि. ८–१६०	अपराजिता (ટીકા). ગરણી.		
असनपुष्पक	सु. सू ४६–८	ચોખાની જાત.		
असित तिल	सु. सू ४६–४०	કાળા તલ.		
असित मुष्ककः	सु. सू. ११	કાળા ફુલનો મોખો.		
असित सर्षप	सु. सू. ४६–४९	કાળા સરસવ.		
असित सारिवा	सु. उ. १२	श्यामलता (ઉપલસરી).		
अहिंसा	सु. उ. ४५–३३	કંથાર.	Cappris sepiaria.	નિ. પૂ. ૮૦
अहिपुष्पम्	सु. चि. १७	નાગકેસર.		
अहिमारक	वा. उ. २२–१०७	अरिमेदक (अ. ह.)=ધોળો ખેર. see अरिमेद.		
अक्ष	सु० वा०	બેહેડાં.	Terminalia bellerica.	નિ. પૂ. ૪૯૨
अक्षक	च. चि. ३०–६४	,,		
अक्षताः	च. चि ९–५०	જવ.	Hordeum vulgarœ.	નિ. ઉ. ૬૧૦
अक्षिकीफलम्	च. सू. २७–१५६; सु. सू, ४६–१९४	पित्तश्लेष्मघ्नमम्लं वातिकं चाक्षिकीफलम् બેહેડાં ?		
अक्षिभैषज्य	वा. चि. ९–२३	લોધર.	see लोध्र.	
अक्षिपीडः	च. चि. २५–२१२	यवतिक्ता. (ચ. દ.) આંખફુટામણી.	Ctenolepis cerasiformis.	નિ. પૂ. ૫૭૯
अक्षीव	च. सू. ४–३९	સરગવાનાં બીજ.		
अक्षोट	च. सू. २७–१५०	અખરોટ.	Juglans regia.	નિ. ઉ. ૪૩૮
अक्षोड	वा. सू. ६–११८; सु. सू. ४५–१२०	,,	,,	

आखुपर्णिका.	च. सू २७-९५, वा. चि. २०-२९	**द्रवन्ती**-રતનજોટ.	Jatropha curcas.	નિ. ઉ. ૩૭૬
आटरूषक	च. चि. १९-१२३; सु. सू. ४६-२६२; वा. सू. १०-२९	અરડુસી.	Adhatoda vasica.	નિ. ઉ. ૨૧૧
आढकी	च. सू २७-३१; सु. सू. ४६-३१; वा. सू. ६-१५	તુવેર.	Cajanus indicus.	નિ. પૂ. ૩૯૧
आत्मगुप्ता	च. सू. २७-३२; सु. सू. ४६-३६; वा. सू. ६-२१	કૌવચ.	Mucuna pruriens.	નિ. પૂ. ૩૬૧
आदानी	च. शा. ८-१०१	**घोषकभेदः**-તુરીયાંની જાત.		નિ. પૂ. ૫૫૨
आदारिशिम्बी	सु उ. ४४-१५	**कदंबपुष्पी** (ટીકા)-વેક્ષન્તરો લેવો.		
आदित्यपर्णी	च चि. १-१६८; सु. चि. ३०-५	સુરજમુખી.	Helianthus Annus.	નિ. પૂ. ૬૭૪
आदित्यवल्ली	च. चि. २६-२६५	"	" "	"
आमलक	च० सु० वा०	આંમળાં.	Phylanthus emblica.	નિ. ઉ. ૩૫૯
आमिषम्	सु. उ. ५१-४९; वा. सू १७-२	ગુગળ	see **गुग्गुलु**.	
आम्र	च० सु० वा०	આંબો.	Mangifera indica.	નિ. પૂ. ૨૮૫
आम्रातक	"	અંબાડો.	Spondias mangifera.	નિ. પૂ. ૩૦૫
आरग्वध	"	ગરમાળો.	Cassia fistula.	નિ. પૂ. ૪૧૪
आरण्यमाषाः	सु. सू. ४६-३६	જંગલી અડદ.	Phaseolus radiatus.	નિ. પૂ. ૩૮૦
आरुक	च. सू. २७-१२७; वा. सू. ६-१३५;	આલુ	Prunus communis Var. insititia.	નિ. પૂ. ૪૭૮
आरुष्कर	च. सू. ४-३७; सु. सू. ४६-१९६	ભીલામાં.	Semicarpus anacardium.	નિ. પૂ. ૨૯૯
आरेवत	सु. सू. ३८-६४; वा. उ. ३२-९	ગરમાળો.		
आर्त्तकाल	च. चि. २६-१३६		see **आर्त्तगल**.	
आर्त्तगल	सु. सू. ३८-६; वा. चि. १८-११	કાંટાસેરીયો.	Barleria prionitis.	નિ. ઉ. ૨૧૯
आर्द्रक	च० सु० वा०	આદુ.	Zznziber officinalis.	નિ. ઉ. ૪૬૯

आर्द्रा कुस्तुम्बरी	सु. सू. ४६–२३१	કોથમી.	Coriandrum sativum.	નિ. પૃ. ૬૦૭
आर्द्रिका	वा. सू. ६–१०७	आर्द्रधानिका (अ.ह.)=કોથમી.	,,	
आलुकानि	च. सू. २७–९४	અનેક પ્રકારના કંદો.		
आवर्तकी	वा. चि. १९–२२	કુષ્ઠના અધ્યાયમાં છે. આવળ	Cassia auriculata.	નિ. પૃ. ૪૨૧
आसुरी	सु. सू. ४६; वा. सू. ६–१०४	રાઈ.		
आस्फोता	च. चि. १९–१२३: सु. सू. ११–११; वा. सू. ३०–९	સારિવા. કપુરીમધુરી.	Hemidesmus indicus.	નિ. ઉ. ૪૦
इ				
इङ्गुदी	च० सु० वा०	હીંગોરીયું.	Balanites Roxburghii.	નિ. પૃ. ૨૨૫
इत्कट	,,	ધકડ.	Sesbania aculeata.	નિ. પૃ. ૩૩૬
इन्दीवर	सु० वा०	નીલ કમળ.		
इन्दुक	च. सू. २७–१०८	अश्मन्तकवृक्षे (रा.नि.) पेन्दुकं फलम् આસોતરો ?		
इन्द्र	च. चि. २५–९	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં.		
इन्द्रपर्णी	सु. चि. १७	ઇન્દ્રવારૂણી. (ટીકા).		
इन्द्रपुष्पी	सु. सू. ३८–१६	દુધીઓ વછનાગ.	see लाङ्गली.	
इन्द्रबीज	सु. सू. ४४–२६	ઇંદ્રજવ.		
इन्द्रयव	च० सु० वा०	ઇંદ્રજવ.		
इन्द्ररेखा	वा. उ. १–४४	બાકુચી.		
इन्द्रवल्ली	सु. उ. २८–७	બ્રાહ્મી.		નિ. ઉ. ૬૫૬
इन्द्रवारुणी	च० सु० वा०	ઇંદ્રવારૂણી.	Citrullus Colocynthis.	નિ. પૃ. ૫૬૫
इन्द्रवृक्षः	सु. सू. ११–११	ઇંદરખ (પંચમહાલ)	Anogeissus acuminata.	નિ. ઉ. ૬૫૬, ૬૮૨
इन्द्रसुरा	सु. चि. ३७; सु. उ. ११	ઇંદ્રવારૂણી.		
इन्द्रा	सु. क. १–३७	ઇંદ્રવારૂણી.		
इन्द्राणी	च. चि. ११–८३; वा. चि. १८–१७	નગોડ.	Vitex negundo.	નિ. ઉ. ૨૪૬

इन्द्राह्वः	सु. चि. ३८	કડો.	
इन्द्रायुध	च. चि २५-१०	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં છે.	
इभकणा	सु. उ. ५२	ગજપીપર	
इभगन्धा	सु. क. २-५	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં છે.	
इरुक	च. चि. ९-४३	इरु एरण्डवृक्षे (वै. श. સિંધુ)=એરંડો. see एरण्ड.	
इक्षु	च० सु० वा०	શેરડી.	Saccharum officinarum. નિ. ઉ. ૫૯૩
इक्षुवालिका	च. सू. ४-४१	એખરો.	see इक्षुरक.
इक्षुरक	च० सु० वा०	,,	Hygrophila spinosa. નિ. ઉ. ૨૦૫
इक्ष्वाकु	च. सू. ४-३; सु. सू. ३९-२; वा. क. १-२७	કડવી તુંબડી.	Lagenaria vulgaris. નિ. પૂ. ૫૪૨
इक्ष्वारिका	वा. चि. ३-७५	?	
इक्ष्वालिक	च. चि. १६-१५	?	
ईषिका	च०	अंबष्टा (ટીકા). કાળીપાઠ. see पाठा	
उ			
उग्रगन्धा	च. चि. २६-२०; सु. उ. ५०-२४; वा. उ. ३९-४६	વજ, તલવણી, અજમો-આ ત્રણ અર્થમાં વપરાય છે. વજ-	Acorus calamus.
उग्रा	सु० वा०	અજમો અથવા વજ.	
उच्चटक	च. सि. १२-५६	ઉટીંગણ. જુઓ. રસયોગસાગર. પા. ૧૨૧ ભા. ૧.	
उच्चटा	च० सु० वा०	श्वेतदूर्वा. સફેદ ધ્રો.	જુઓ. નિ. ઉ. ૬૫૭
उज्वाल	वा. सू. ६-८	શાલિભેદ=ચોખાની જાત.	
उत्कट	सु. चि. ७-९; च. नि. ४-४	महती लगाली (ટીકા). ચરકમાં ધાન્યની ગણત્રીમાં છે. શર અર્થ કરવો ઠીક. શર=Sacchrum sara.	
उत्कटज	च. सू. २७-१७	ચોખાની જાત	
उत्कण्टक	च. चि. ३-२५३	ઉટકંટો.	Echinops echinata. નિ. પૂ. ૬૫૩

उत्तमकारणी	वा. उ. ३०-२७	**करम्भ (अ. ह.)।**		
उत्तमचन्दन	च. चि. २३-३०	સારામાંનું ચંદન.	Santalum album.	નિ. ઉ. ૩૪૫
उत्तमवारुणी	वा. उ. ३७-७९	ઇન્દ્રવારૂણી ?		
उत्तमा	च चि. २३-३१; सु. सू. ३७-१७; वा. चि. १९-३८	ત્રિફલા.		
उत्तमारणी	सु. चि. ६-१२	ઇન્દ્રવારૂણી. see નિ. ઉ. ૬૫૭. **इन्दीवरी** (રા. નિ.); **योषावल्ली** (ડલ્હણ).		
उत्तुंडिकोफलम्	वा. उ. ३०-१८	**उत्तुण्डकी करञ्जके** (વૈ. નિ.) (વૈ. શ. સિ.). કરંજનાં ફલ.		
उत्पल	च० सु० वा०	કમળ–નીલોત્પલ,	Nymphœa lotus.	
उत्पलसारिवा	सु. क. २-४८; वा. शा. २-५५	કપુરી મધુરી.	see **आस्फोता.**	
उदककन्द	सु. शा. १०-५७	પાણીમાં થનારા કંદો.		
उदकपत्राः	सु चि. १-११३	પાણીમાં થનારી વનસ્પતિઓનાં પાન.		
उदकीर्या	सु. सू. १-८०; सु. सू. ३९-८; वा. सू. १५-२८	કરંજની જાત.	A species of Pongamia glabra.	
उदीच्य	च. सू. २५-३३; सु. उ. ९-१२, वा. क. २-२४	વાળો.	Andropogon squarrosus.	નિ. ઉ. ૬૦૨
उदुम्बर	च. सू. २७-१५७; सु. सू. ३८-४८ वा. उ. २५-५९	ઉમરડો.	Ficus glomerata.	નિ. ઉ. ૪૧૨
उदुम्बरपर्णी	च. क. १२-१	**दन्तीवृक्षे** (વૈ. શ. સિંધુ).	Croton triglium.	નિ. ઉ. ૩૭૮
उद्दालक	च० सु० वा०	કોદરા.	Paspalam scrobicutalium.	નિ. ઉ. ૫૮૮
उन्मत्त	सु०	ધંતુરો.		
उन्दुरु	वा. चि. ९-५३	રાસ્ના. (અ. દ.)=રાસ્ના.		
उन्दुरुकर्णी	सु. उ. २१-६	ઉંદરકણી.	Ipomœa reniformis.	નિ. ઉ. ૧૦૭
उपकुल्या	च० सु० वा०	**पिप्पली.** (ટીકા).	see **कणा.**	નિ. ઉ. ૩૧૭

उपकुल्याद्वयम्	सु. चि. ९	પીપર-ગજપીપર.		
उपकुञ्चिका	च० सु० वा०	કલોંજી જીરૂં.	Nigella sativa.	નિ. પૂ. १
उपचित्रा	च. वि ८-१५७	દંતી-નેપાળો.	Croton triglium.	
उपोदिका	च. सू. २-३१; सु. सू. ४६-२५६; वा. सू. ६-८३	પોઇ.	Basella rubra.	નિ. પૂ. २७६
उमा	च० वा० सु०	અળસી.	see अतसी.	
उरुबूक	च० सु० वा०	એરંડો.	see एरण्ड.	
उरुमाण	वा. सू. ६-११९	स्निग्धफलम् (अ. द.) અખરોટ? શ્રીકંઠ વરૂણ અર્થ કહે છે. स्निग्धफलम्નો અર્થ મચુફળ થાય છે?		નિ. ઉ. ६५७
उरुमाल	च. चि. २९-६२	सरसा मृष्टयवाः (ડલ્હણ).		
उलुम्बकाः	सु. चि. १०	પીલુ આસવમાં છે.		
उल्लूक	वा. चि. ८-१४९	કાળો વાળો.	Andropogon muricatus.	નિ. ઉ. ६०७
उशीर	च० सु० वा०	ખરી.		
ऊषणम्	च० सु० वा०			
ऋ				
ऋद्धि	च० सु० वा०	દિવ્ય વનસ્પતિ.		
ऋषभक	च० सु० वा०	અષ્ટવર્ગ પૈકીની અજ્ઞાત વનસ્પતિ.		
ऋषभी	च. सू. ४-३१; सु. सू. ३८-४	કૌવચ.	Mucuna pruriens.	નિ. પૂ. ३६१
ऋष्यगन्धा	च. सू. ४-२६	વરધારો.	Argyrea speciosa.	નિ. ઉ. ६५८
ऋष्यप्रोक्ता	च. सू. ४-३१	अतिबला (ટીકા). ખપાટ. बलाभेदः (च. द.)		નિ. ઉ. ६५७
ए				
एकाष्ठीला	च. सि. १०-२१	પાઠા.	Cyclea peltata.	નિ. પૂ. ३६
एकैषिका	सु. सू. ४५-१२६; वा. उ. २२-६७	શતાવરી, પાઠા અથવા શુક્લત્રિવૃત્		નિ. ઉ. ६५८
एडगज	च० वा०	કુંવાડીયો.	Cassia tora.	
एरका	च. सू. ३-२५; वा. चि. २२-२९	ધાબાજરીયું.	Typha elephantina.	નિ. ઉ. ६५८

एरण्ड	च० सु० वा०	એરંડો.	Ricinus Communis.	નિ. ઉ. ૩૯૧
एरण्डद्वय	वा. चि. १-१३७	એરંડ અને રક્તેરંડ.		
एलवालुक	वा. सू. २१-१४	એલવાલુક. સુગંધી દ્રવ્ય છે.		
एला	च० सु० वा०	એલચી.	Elattaria cardamomum.	નિ. ઉ. ૪૭૭
एलाद्वय	वा. सू. १५-४३	નાની અને મોટી એલચી.		
एलापर्णी	च. चि. ८-१५७	રાસ્ના.	A plant of the scitamineœ order.	નિ. ઉ. ૬૫૮
एलुका	सु. चि. १९-५९	એલવાલુક.		
एर्वारु	च० सु० वा०	કાકડી.	Cucumis sativus.	નિ. પૂ. ૫૬૧
एर्वारुक	सु. सू. ४२-१८	"	"	"
ऐ				
ऐन्द्री	च. सू. ४-३१; सु. उ. ६२-३०; वा. उ. १-९	ઇન્દ્રવારૂણી.	Citrulus colocynthis.	
ऐन्दुकम्	च. सू. २७-१०८	see इन्दुक. આસોતરાનું ફલ.		
ऐरका	च. सू. ३-२५	see एरका.		
ऐरावतक	च. सू. २७-१५५; वा. सू.६-१३६	નારંગી.	Citrus aurantium.	નિ. પૂ. ૨૦૫
ऐरावतम्	सु. सू. ४६-१६२	"	"	
ऐरावती	सु. चि. ३८-८४	નાગબલા.	Grewia populifolia.	નિ. પૂ. ૧૭૨
ऐलवालुक	च. सू. २५-४१; सु. सू. ३८-१४	એલવાલુક.		
ऐलेय	वा. उ. २२-९३	એળીયો.		
ओ				
ओद्रपाकी	च. चि. ८-१६०	આસમાની રંગનાં ફુલવાળો કાંટાસેરીયો.	Barlaria prionitis.	નિ. ઉ. ૬૫૮

अं

अंकोट	च. सू. २७–१५३	આંકોલ.	Alangium Lamarkii.	नि. पृ. ६१०
अंकोठ	सु. क. ७–३४	”	”	”
अंजनकी	सु. चि. १८–३४	ગળીનો એક પર્યાય अंजनकेशिका છે. હું ધારું છું કે ગળી અર્થ લેવો સારો છે.		नि. पृ. १०१
अंत:कोटरपुष्पी	च. सू. १–८१	વરધારો.		
अंबु	च० सु० वा०	મોથ.		
अंबुज	च० वा०	કમળ.		
अंबुद	च० सु० वा०	મોથ.		
अंबष्टा	च. चि. ३०–८८; सु. सू. ३८–४६; वा. सू. १५–३८	પાઠા.	see पाठा.	
अंभोज	सु. सू. ६·२८	કમળ.		
अंशुमती	च. चि. २९–७८; सु. उ. ५८–५८; वा. सू. ६–१६६	શાલિપર્ણી.	Desmodium gangeticum.	नि. पृ. ३५३

—क—

ककुभ	च० सु० वा०	સાદડ.	see अर्जुन.	
कक्कोल	च. सू. ५–७०; सु. चि. २४–२१	ચણકબાબ.	Cubeba officinalis.	नि. पृ. ३२७
कषक	सु चि ७–६	कषको मध्यलेखानिचितः ऋजुकपत्र ईषद्रक्तमूलः 'कवहक' इति मालवके प्रसिद्धः। अन्ये तु कषकस्थाने ककुभ इति पठन्ति, स च प्रसिद्धः ॥ ડલ્હણ:		
कच्छुरा	च० सु०	કૌવચ.		
कट्तृणम्	वा. चि. १–६२	રોહિષઘાસ.		
कटुका	च० सु० वा०	કડુ.		
कटुकालाबु	”	કડવી તુંબડી.		

कटुकिका	सु. सू. ४६–२६२	જંગલી કાસુંદો (ટીકા).		
कटुतुम्बी	च० सु०	કડવી તુંબડી.		
कट्फलम्	च० सु० वा०	કાયફળ.	Myrica sapida.	નિ. ઉ. ૪૪૧
कटभी	च. चि. २५–२१०; सु. चि. ३१–५; सु. उ. ३८–२५	માલકાંકણી અથવા વાપુંભા અથવા અઘેડો. Calastrus paniculata or Careya arborea.		નિ. પૂ. ૨૫૬, ૫૦૯
कटिल्लः	वा. सू. ६–७६	કારેલાં. (વૈ. શ. સિ.) **कटभी किणिही** (શ્રીકંઠ:) એટલે શ્રીકંઠના મત પ્રમાણે કટભી=**અઘેડો.**		
कटुदौग्धिक	वा. उ. ३७–७९	કડવી દુધી.		
कटुफला	च. क. ४–१	ધામાર્ગવનો પર્યાય. કડવાં તુરીયાં.		
कटुरोहिणी	च० सु० वा०	કડુ.	Picrorrhiza Kurroa.	નિ. ઉ. ૧૭૭
कटंकटेरी	च सू. ३–८; सु उ. १२–७;	દારૂહળદર.	Berberis Asiatica.	નિ. પૂ. ૪૧
कटंभरा	च. चि. १४–५७	**कटभी** (ટીકા)	see **कटभी**	
कट्वङ्ग	च० सु० वा०	અરલુ.	Ailantus excelsa.	નિ. પૂ. ૨૨૨
कट्वी	सु. सू. ४४–२६	કડુ.		
कठिञ्जर	च. सू. २७–९४; सु. सू. ४६–२७४	કાળી તુલસી.		
कठिल्लक	च. सू २७–९२; सु. उ. ३८–१५०	**रक्तपुनर्नवा.** રાતાફુલની સાટોડી.		
कणकणिका	च. शा. ८–७८	માલકાંગણી. અર્થ સ્પષ્ટ નથી.		
कणा	च० वा० सु०	લીંડીપીપર.	Piper longum.	
कणाह्वय	वा. चि. १९–८	બન્ને પીપર. પીપર અને ગજપીપર.		
कणामूल	वा. उ. २७–८३	પીપરીમૂલ.		
कण्टकारी	च० सु० वा०	ભોરીંગડી.	Solanum indicum.	નિ. ઉ. ૨૨૯
कण्टकिवृक्षाः	सु. चि. १०–४	**खदिर, बदरी, अरिमेद, सृग्दारु प्रभृतयः (डल्हण)**		
कण्टकी	सु. सू. ३८–६	**विकंकतवृक्षः** (ટીકા)–વીકળો.		

कण्डीर	च. चि. ८–१६१	અમ્લસ્કંધમાં. कण्डीरः रामठभेदः स हि । जलस्थलभेदाद्विविधः ॥ च. द. ॥ વૈ. શ. સિં. માં कण्डीरः 'लघुकारवेल्लके' એવો અર્થ આપેલો છે. सुमुखसुरसकुठेरककण्डीरकालमाल–આવી રીતે બે ત્રણ જગોએ યોજાયલું છે. જંગલી કારેલી કે જંગલી સૂરણ–આ બેમાંથી ગમે તે અર્થ લેવો.
कतक	च. सू. ४–४०; सु. सू. ३८–४३; वा. सू. १५–१३	નિર્મળી. Strychnos potatorum. નિ. ઉ. ૮૭
कतृण	च० सु० वा०	રોહિષઘાસ. Andropogan schœnanthus. નિ. ઉ. ૬૦૬
कदम्ब	,,	કદંબ. Anthocephalus Cadamba. નિ. પૂ. ૬૧૫
कदम्बपुष्पी	सु. उ. ४४–१९	भूकदम्बः–ગોરખમુંડી. Sphœranthus indicus. નિ. પૂ. ૬૬૮
कदरः	च० सु० वा०	विट्खदिरः श्वेतखदिरः-(ચરકટીકા)=ગોરડ. A. senegal નિ. પૂ. ૪૫૨
कर्दमक	सु. क. २–५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.
कदली	च० सु० वा०	કેળ. Musa Paradisiaca. નિ. ઉ. ૪૮૨
कनक	,,	કાળો ધંતુરો. Datura fastuosa. નિ. ઉ. ૧૬૪
कनकपुष्पी	च. चि. ७–१६३	વૈ. શ. સિંધુમાં गणिकारिका, भ्रमोत्पल, ओलट्कंबल–અર્થો આપેલા છે. કુષ્ઠના પ્રકરણમાં છે એટલે સ્વર્ણક્ષીરી અર્થ હોવો જોઇએ.
कनकक्षीरी	च. चि. ७–१०८; सु. सू. ११–१३; वा. सू. ३०–२१.	સ્વર્ણક્ષીરી. સારીત્રા જેવાં પાનવાળું, જેમાંથી કંકુષ્ઠ નીકળે છે તે હિમાલયમાં થતું ઝ.ડ. દારૂડી નહિ. વધુ માટે જુઓ મારો લેખ. આયુર્વેદ–વિજ્ઞાન પુ. ૬. અં. ૩
कन्या	सु. चि. ३०–५	सोमसमानवीर्या महौषधिः
कपिकच्छु	च. चि. २८–१२१	કૌચાં.
कपित्थ	च० सु० वा०	કોઠી. Feronia elephantum. નિ. પૂ. ૨૧૨

कपोतन	च० सु० वा०	અંબાડો. અથવા પારસપીપળો.	Spondias mangifera. see Thespesia populnœa.	નિ. ઉ. ૬૫૮
कपोतवंका	सु. सू. ३८–१०	'कपोतवंका श्योनाकः' लताफट्कीति प्रसिद्धायाम् लतायाम्। सु. सू. ३८. ब्राह्मयां। भा. प्र. म. ४। અરલુ, બ્રાહ્મી, સુરજમુખી, વાપુંભા એવા ભિન્ન ભિન્ન અર્થો થાય છે. વાપુંભા–Careya arborea. see		નિ. ઉ. ૬૫૯
कपोतवल्ली	च. चि. ८–१६०	सूक्ष्मैला(ટીકા)=નાની એલચી.		નિ. ઉ. ૬૬૦
कबरी	च. सू. २७–२९९	आहारयोग वर्गे.		
कमल	सु० वा०	કમળ.	Nymphœa lotus.	નિ. પૂ. ૮૬
कम्पिल्लक	च. सू. ३–८; सु. सू. ३८–२९; वा. सू. १५–२	કંપીલો.	Mallotus phillipensis.	નિ. ઉ. ૩૮૭
करघाट	सु. क. २–५; वा. उ. ३७–८४	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં છે. करघाटक શબ્દ પણ સુશ્રુતમાં છે.		
करञ्ज	च० सु० वा०	કરંજ.	Pongamia glabra.	નિ. પૂ. ૩૯૭
करञ्जद्वय	वा. सू. १५–१७, २१.	કરંજ અને ચરેલ.		,,
करञ्जिका	सु. क. ६	नक्तमालक (ટીકા). કરંજ		,,
करम्भः	सु. क. २–५ वा. सू. १५–२४	સ્થાવરવિષ ગણત્રીમાં.ઉત્તમારણી. (અ. દ.) ઉત્તમારણી એટલે ઇંદ્રવારૂણી ?		
करमर्दक	च० सु० व०	કરમદાં.	Carissa Carandas.	નિ. ઉ. ૨૧
करवीर	,,	કરેણ.	Nerium odorum.	નિ. ઉ. ૩૫
करहाट	च. क. १–३७; सु. क. ६–३.	મીંઢળ.	Randia dumetorum.	નિ. પૂ. ૬૨૦
कराल	च. सू. २७–८७	लघूष्णं वातलं रूक्षं करालं शाकमुच्यते॥ કૃષ્ણતુલસી (वै. श. सिंधु)		
करीर	च० सु० वा०	કેરડો.	Capparis aphylla.	નિ. પૂ. ૮૨
करेणु	सु. चि. ३०–५	सोमसममहावीर्या औषधिः		

कर्कटक	च. चि. २२-११३; सु. उ. ५८-४२	त्रपुसम् (ટીકા). કાકડી.	Cucumis sativus.	નિ. પૃ. ૫૬૧
कर्कटशृङ्गी	च० सु० वा०	કાકડાસીંગી.	Pistacia integerrima.	નિ. પૃ. ૨૮૨
कर्कटकी	वा. चि. ३-१५३; वा. चि. २२-४९	કાકડી.		
कर्कटाख्या	च. क. ७-१४; सु. चि. २-३९; वा. क. ४-६०. सु. उ. ५१-३२, ३९	કાકડાસીંગી		
कर्कटिका	च. चि. १०-११०; सु. क. ५-६९; वा. चि. ८-११०	इन्द्रवारुणीफलम् (डल्लणः सु. क. ५-६९.) ઇંદ્રવારૂણી.		
कर्कटी	च. चि. २२-१५१	કાકડી.		નિ. પૃ. ૫૬૧
कर्कन्धु	च० सु० वा०	ચણીબોર (अल्पबदरम् ટીકા).	Zyziphus nummularia	નિ. પૃ. ૨૬૨
कर्कशः	च. सू. २७-९२; वा. सू. ६-७६.	पटोलभेदः (च. द)। कम्पिल्लकः (અરૂણદત્ત) શાકવર્ગમાં છે એટલે પટોલ લેવું સારૂં છે.		
कर्कारु	वा. सू. ६-८५; सु. सू. ४६-२१६	खरबारु इति लोके (ડલ્હણ)=સકરટેટી.	Cucumis melo.	નિ. પૃ. ૫૭૬
कर्कारुक	सु. चि. १८-२९	कुष्माण्डभेद इति चक्रदत्तः।	„	
कर्कोटक	च. सू. २७-९१; सु. उ. १७-५१; वा. सू. ६-७५	કંકોડાં.	Momordica dioica.	નિ. પૃ. ૫૫૮
कर्कोटी	वा. उ. ३०-१८	કંકોડી.	„ „	
कर्चूरः	च. सू. २७-१४९	પટ્કચૂરો.	Curcuma zedoaria.	નિ. ઉ. ૪૬૫
कर्णिकारः	च. क. ८-१	ગરમાળો.	Cassia fistula.	નિ. પૃ. ૪૧૮
कर्तरीय	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં		
कर्दम	च. सि. ७-५७, सि ८-३४	પરિકર્તવ્યાપચ્ચિકિત્સામાં છે. બસ્તિમાં કાદવ હોય? વાળના કલ્પમાં સુશ્રુત કાદવ (कर्दम)નો ઉલ્લેખ કરે છે, ડલ્હણ ત્યાં 'पद्मिनीमूलपंकः' એવો અર્થ કરે છે.		
कर्दमक	सु. सू. ४६-४	कर्दमक એ શાલિભેદ છે તો कर्दमનો અર્થ પણ ચોખા કરવામાં વાંધો નથી.		

कर्पूर	च० सु० वा०	કપૂર.	Dryobalanops aromatica.	નિ. પુ. ૧૨૩
कर्बुदार	च० वा०	ગુંદા.	Cordia Rothii.	નિ. ઉ. ૯૫
कलमः	च. सू. २७-७	ચોખાની જાત. सु. सू. ४६-४, वा. सू. ६-१.		
कलम्बः	वा० च. सू. २७ ९६	कलम्बः कदम्बः (અરૂણદત્ત). કદંબ, અથવા કલમીશાક અર્થ પણ લેવાય.		
कलसी	च० सु० वा०	पृश्निपर्णी (ટીકાકારો).		
कलाय	,,	લાંગ.	Lythrus sativus.	નિ. ઉ. ૬૫૯
कलि	वा. उ. २८-३८	બેહાં.	see बिभीतक.	
कलिङ्ग	वा० सु० च०	ઇંદ્રજવ.		
कलिङ्गक	,,	,,		
कलोड्यम्	च. सू. २७-११२; वा. सू. ६-९१	पद्मबीजम् (अरुणदत्त) કમળકાકડી.		
कह्लार	च. चि. ३-२५५. सु. सू. ३९-८; वा. सू. २२-२०.	લાલકમળ. (ડભણુ).		
×कशेरुक	च. सू. २७-११२; सु. चि. ३७-३०; वा. उ. १६-१४	ગીચુડી મોથ.	Cyperus minima.	નિ. ઉ. ૫૮૨
क्रमुक	च. सू. २५-४१; सु. सू. ३८-२९; वा. सू. १५-१९.	સોપારી.	Araca catechu.	નિ. ઉ. ૫૫૧
काकजंघा	सु. चि. १९-६३; वा. सू. ३०-१०	અઘેડી.	Peristrophe bicaliculata.	નિ. ઉ. ૨૦૭
काकणास	च. चि. ७-१२०		see काकनासा.	
काकतिक्ता	वा. सू. १५-१७	શાર્ઙ્ગેષ્ટા. (अ. द.)=પીલુડી.	Solanum nigrum.	

कशेरु—चिञ्चोडकः (चक्रपाणिदत्त चि. ८-२०-१). હિંદી ભાષામાં चिचोड શબ્દથી પણ મોથ જેવી વનસ્પતિ જ નિર્દિષ્ટ છે. ભાવમિશ્રના વખતથી કશેરૂ चिचोड તરીકે જાણીતી છે. मुस्तकाकृति लघु स्यात्तच्चिचोडमिति स्मृतम् (भा०प्र०) કૈયદેવ-નિઘંટુના સંપાદક આયુર્વેદાચાર્ય પં. સુરેન્દ્રમોહન બી. એ. લેટીનનામ Scirpus kysoor આપે છે અને તે યોગ્ય છે. બીજી राजकसेरु છે, પણ તેની જગોએ શું લેવું તે સમજાતું નથી.

काकनन्ती	सु. चि. १८-१३.	ચણોઠી.	Abrus precatorius.	નિ. પૂ. ૩૫૬
काकणन्तिका	च. नि. ५-१६	"		
काकनासा	च० सु० वा०	સીંધરોટી.	Pentatropis microphylla.	નિ. ઉ. ૫૯
काकमाची	"	પીલુડી.	Solanum nigrum.	નિ. ઉ. ૧૩૩
काकमालिका	वा. उ. ३५-२५	?		
काकलक	सु. सू. ४६-८	ચોખાની જાત.		
काकाण्डकी	वा. उ. २४-३५	કાકનાસા.		
काकाण्डफल	च० सु०	કૌચાં.		
काकाण्डोला	च. सू. २७-३२; वा. सू. ६-२१	કુવચનો ભેદ. कटभो (अ. द.)		નિ. પૂ. ૩૬૩
काकादनी	वा० सु सू. ३६-९	કંથાર.	Capparis sepiariā.	નિ. પૂ. ૮૦
काकाह्वा	च. चि. ११-८८; वा. चि. १८-१७	પીલુડી.		નિ. ઉ. ૧૩૩
काकोदुम्बरिका	च. चि. ८-११४; सु० वा०	ઢેડ ઉમરડી.	Ficus hispida.	નિ. ઉ. ૪૧૮
काकोली	च० सु० वा०	અષ્ટવર્ગની અપ્રાપ્ય ઔષધિ.		
काङ्गुक	सु. सू. ४६-८	ચોખાની જાત.		
काणविकाणिके	सु. उ. ६०	કાકોલી ક્ષીરકાકોલી. (ડલ્હણ).		
कालविषाणिके	वा. उ. ५-३	"		
काञ्चन	सु. सू. २९-७२	ધંતુરો.	Datura alba. काञ्चनक सु. सू. ३९-७	
काञ्चनक	सु सू. ४६-४	ચોખાની જાત.		
काञ्चनक्षीरी	च. क १०-११	સ્વર્ણક્ષીરી.	Himalayan Tree.	
काञ्चनक्षीर्यौ	सु. चि. ८-४०	घर्कं कंकुष्टं, पीतदुग्धा यवतिक्ता (ડલ્હણ): એક જેમાંથી કંકુષ્ટ નીકળે છે તે અને બીજી આંખફુટામણી.		
काञ्चना	च. चि. १८-१३०; वा. उ. १-४८	સ્વર્ણક્ષીરી અર્થ હોવો જોઇએ.		
काञ्चनाक्षीरी	च. चि. १८-१३०	"		

काण्डिका	च. वि. ८-१५७	વમનોપગ દ્રવ્યોની ગણત્રીમાં છે. **अलाब्वाम्** (वै. श. सि.)= કડવી તુંબડી.		
काण्डेक्षुका	च०. सु. सू. ३८-७५	પંચતૃણમાં છે. શેરડીની જાત.		
कादम्ब	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
कान्ता	वा. उ. २२-१२	ગંધપ્રિયંગુ (**अ. द.**)		
कापोती	सु. चि. ३०-५	**सोमसममहावीर्या दिव्यौषधिः**		
काम्पिल्लक	च. चि. १८-११७	કંપીલો.	see **कम्पिल्लक.**	
काम्बोजिका	वा. उ. ३४-२	કંબોઇ.		
काम्बोजी	सु. चि. १९-४२	કંબોઇ.	Breynia patens. **गवी तु माषपर्णीमाह** (કલ્હણ)	નિ. ઉ. ૩૭૩
कामुका	वा. सू. १५-३०	**रक्तमंजरी, अतिमुक्तक इत्यन्ये (अरुणदत्तः) ચંબેલી.**		
कायस्था	च. चि. १४-५६, ५७; वा०	**सुरसा (च. द.)**	Ocymum sanctum.	
×**कारवी**	च० सु० वा० चरक चि. ९-७२, ८९, १०३ चि. १२-१७८, १७९ सु. सू. ४६-२३० वा. चि. १४-१८; चि. ८-४६, ५०	બોડી અજમોદ.	Apium graveolens.	નિ. પૂ. ૫૯૩
कारवेल्ल	सु० वा०	કારેલી.	Momordica charantia.	નિ. પૂ. ૫૫૬

× **कारवी**—મરાઠીમાં '**कारवो**' નામથી જે વનસ્પતિ પ્રચલિત છે તે તો " **ગિરનારી પાંદડી** " (Strobilanthes Callosus. N. o Acanthaceæ) છે. સ્વ. કીર્તિકરે તેમના Poisonous Plants of Bombay vol. I માં '**कारवी**'નું ચિત્ર આપેલું છે. પંડિત હરિપ્રપન્નજી માને છે કે હિંદના બીજા પ્રાંતો કરતાં કોંકણ–મહારાષ્ટ્રના જંગલી લોકોની અંદર વનસ્પતિઓનાં શાસ્ત્રીય નામોની જાણ સુંદર છે. જો આ વાત સાચી હોય તો **कारवी** માટે આપણે બોડી અજમોદ, કારેલી કે એવો કોઈ અર્થ કરવા કરતાં આ જ અર્થ લેવો જોઇએ. ચરકે **कारव्यः** ૨૫૯ કહ્યું છે અને આ મરાઠી **कारवी** ની ઘણી જાતો છે, એટલે શાસ્ત્રોક્ત **કારવી** એ મરાઠી **કારવી** નહિ શું ?

कारवेल्लक	सु. ४२-१८	કારેલી.	Momordica charantia.	નિ. પૃ. ૫૫૬
कारवेल्लिका	च. वि. ८-१६४; सु. सू. ३९-५	,,	,,	,,
कारव्यः	च. सू. २७-२९८	see कारवी. ગિરનારી પાંદડી (ગુજરાતી); કારવી (મરાઠી).		
कार्पास	च० सु० वा०	કપાસ.	Gossypium herbaceum.	નિ. પૃ. ૧૪૬
कार्पासो	च. चि. ७-९३; सु. सू. ३९-७; वा. उ. २-४२	,,	,,	,,
कार्पासिवी	सु. उ. ४७-३४	જંગલી કપાસ. (ટીકા).	Hibiscus vitifolius.	નિ. પૃ. ૧૪૬
कालंकतक	च. वि. ८-१६०	કાસમર્દ (અરૂણદત્ત). કાસુંદ્રો.		
कालकूट	च. चि. २५-९	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
कालमाल (क)	च. क. १-३५; सु. सू. ३८-१८	આવચીબાવચી.	Moschosma polystachyum.	નિ. ઉ. ૬૬૧
कालमाला	वा. सू. १५-३०	कृष्णार्जक (अ. द.)	,,	,,
कालशाक	च. सू. २७-८७; सु. शा. १०-३०. वा. सू. ६-९६.	છુંછ.	Corchorus Capsularis. પાણીમાં થનારૂં કલમી શાક (Ipomœa aquatica) એ અર્થમાં પણ વપરાય છે.	નિ. ઉ. ૬૬૧
कालस्कन्धः	सु. सू. ३८-१२	ટીંબરવો.	Diospyros embryopteris.	નિ. પૃ. ૭૦૦
कालंकत	च. वि. ८-१५७-१६०.	મધુરગણમાં છે.		
काला	च. चि. २८-१५६; सु. उ. ५८-५८; वा. चि. १४-१३.	સારિવા અથવા મજીઠ.		
कालागुरु	च. शा. ८-९१.	અગર.	Aquilaria agalocha.	
कालानुसारिवा	सु. उ. १७-१७, १८	કાલાનુસારિવા=કૃષ્ણસારિવા.	Cryptalopis Buchananii.	
कालानुसारिणी	च. चि. २६-२३८	પાવાગઢ ઉપર ઢગલાબંધ થાય છે તે.		
कालानुसारी	च० सु. सू. ३७-२७	તગર. ટીકાકારોએ આ ત્રણ શબ્દોના અર્થો આપવામાં ભારે ગોટાળો કરેલો જણાય છે. એ બધામાંથી મ્હેં कालानुसारिवा માટે કૃષ્ણસા-		

कालानुसार्यम्	सु. क. ५-६५; उ. १८-९१.	રિવા અને **कालानुसारी**, **कालानुसारिणम्**, **कालानुसार्यम्** ઇત્યાદિ માટે તગર કે તગરભેદ અર્થો રાખ્યા છે.
कालिका	सु. उ. ५१-२३	રા. નિ.માં. ઉપકુંચી, કાકોલી અને શૃંગી એવા અર્થો આપેલા છે. ડલ્હણ **कालेयकम्** અર્થ આપે છે. દારૂહલદર અને કુંકુમ (કેસર) એવા અર્થો પણ થાય છે. આપણે **દારૂહલદર** અર્થ કરીશું.
कालिङ्गः	चा. सू. ६-८५, ८८.	કાળીંગડું, તડબુચની જાત.
कालिन्दकः	सु सू. ८-४	**जोन्नलकुष्माण्डभेदः**=(ડલ્હણ). કોળું પતકાળું Cucurbita Pepo. નિ. પૂ. ૫૭૩
		कृष्णबीजं कुष्माण्डसदृशम् (ડલ્હણ). કાળીંગડું.
कालिन्दम्	सु. सू. ४६-२१४	
कालिन्दी	सु. सू. ४२-१८	**નસોતર.** Ipomœa turpenthum.
कालीय	च. चि. ११-७३; सु चि. २०-३५.	**पीतचन्दनम्**=પીળું ચંદન.
कालीयकम्	च. सू. ३-२४; सु० वा०	,, ,,
कालीयम	च० सु०	મલયાદ્રિચંદન.
कालेयकम्	सु सू. ३९-९.	દારૂહલદર અથવા કેસર.
काश	च० सु० वा०	કાસડો. Sachharum spontanum. નિ. ઉ. ૫૯૯
काश्मरी	,,	શીવણ. Gmelina arborea. નિ. ઉ. ૨૩૨
काष्ठगोधा	च. चि. १-१६८	**काष्ठगोधानामौषधि गोधाकारा ॥** ?
काष्ठालुक	सु. सू. ४६-२९८	**कंदविशेषः**
कासमर्द	च० सु० वा०	કાસુંદ્રો. Cassia Occidentalis.
काश्मीरजः	चा. उ. ३७-४४	કેસર. Crocus sativus. નિ. ઉ. ૪૯૧

२०

कालिकम्	च. चि. २०–१३३	પાંડુમાં છે. વનમુદ્ર (વૈ. શ. સિં.)=જંગલી મગ.		
किणिहि	च० सु० वा०	અઘેડો.	Achyranthus aspera.	નિ. ઉ. ૨૭૮
किराततिक्तक	,,	કરિયાતું.	Swertia chirata.	નિ. ઉ. ૯૦
क्लिम	च. चि. ८–१६३	દેવદાર.		
किंशुक	च० सु० वा०	કેસુડાનાં ફુલ.		
क्रिमिशत्रु	सु. उ. ६१–३६	વાવડીંગ. (ટીકા)	Embelia ribes.	નિ. પૂ. ૬૮૯
कीटशत्रु	सु. उ. १२–४४	,,	,,	
कीटारि	सु चि. २–९१	,,	,,	
वलीतक	च० सु०	જલજ યષ્ટિમધુ.		
कुक्कुटाण्डक	सु. सू. ४६–१२	ચોખાની જાત.		
कुक्कुटाण्डक पा-लाख्यः	वा. सू. ६–७	,,		
कुक्कुटी	सु. उ. ३०–१७; वा०	स्फटिकरचितकुक्कुटाण्डसदृशकन्दा, कुक्कुटीशरीरवत् कुसुमचित्रा वल्ली। (ડલ્હણ).		નિ. ઉ. ૬૬૩
कुङ्कुम	च० सु० वा०	કેસર.	Crocus sativus.	નિ. ઉ. ૪૯૧
कुञ्चिका	च. सू. २७-२९९	કલોંજી જીરૂં. રા. નિ. માં મેથી અર્થ પણ આપેલો છે.	Nigella sativa.	
कुच	सु. सू. ४२–१८	કુચફલ=દાડિમ. એકલા કુચ માટે પણ દાડિમ ચાલશે.		
कुचेला	च. सू. २७–९१; वा०	अकर्णविद्धिकाभेदः (च. द.)=પાઠા.	Cyclea peltata.	
कुचंदन	च० सु० वा०	रक्तचंदन. રતાંજલી.	Adenanthera pavonia.	નિ. ઉ. ૩૪૫
कुटज	,,	કડો.	Holarrhena antidysensterica.	નિ. ઉ. ૨૮
कुटन्नटम्	,,	તગર. (ડલ્હણ).	Valeriana Hardwickii.	નિ. પૂ. ૬૩૪
कुटरणी	वा. सू. १५–४५	शुकला त्रिवृत् (अ. द.)=સફેદ નસોતર.		
कुटिञरः	वा. सू. ६–९१	ताम्रमूलकम् (अ. द.)		

कुठेरक	च. सू. २-३; वा. सू. ६-१०४.	રામતુલસી.	Ocimum gratissimum.	નિ. ઉ. ૨૫૯
कुतुम्बकम्	वा. सू. ६-९१	द्रोणपुष्पी (अ. द.)=કુબી.	Leucas cephalotus.	
कुत्सिताम्बु	वा. सू १५-२६	કહંબ. (અ. દ.)		
कुन्तली	वा. सू. ६-७४	सूक्ष्मतिलजातिः (अ. द.)=નાના તલ ?		
कुन्तलिका	सु. सू. ४६-२७६	चुञ्चुसदृशा दीर्घफला (ડલ્હણ)=મોટી છુંછ. Corchorus olitorius.		
कुन्ती	च चि. १७-६२	રેણુકબીજ.		નિ. ઉ. ૬૬૩
कुन्द	सु. उ. ५१-३७; वा. सू. १९-७२	કુંદ.	Jasminum arborescens.	નિ. ઉ. ૭
कुन्दुरुक	च० सु० वा०	શાલેડી.	Boswellia. serrata.	નિ. પૂ. ૨૩૪
कुबेरक	च. सू. २७-९६	नंदीवृक्षः	Ficus retusa.	નિ. ઉ. ૮૨૨
कुबेराक्षी	सु. सू. ३९-७	काष्टपाटला=સફેદ ફુલની પાટલા. અભાવે કાંકચ લેવી.		
कुब्जः	सु. चि. ७-६	गुंजा (ડલ્હણ)=ચણોઠી. રા. નિ. માં અપામાર્ગ.		
कुब्जक	सु. उ. १७-८	શ્વેતગુલાબ અથવા શીંધોડાં. (વૈ. શ. સિં. પ્રમાણે.)		
कुमारजीव	च. सू. २७-९५	શાકવર્ગમાં. પુત્રંજીવ.	Putranjiva Roxburghii.	નિ. ઉ. ૩૭૪
कुमुद	च० सु० वा०	ચંદ્રોદયવિકાસિ કમલ. (ડલ્હણ) સૂ. ૪૬.		
कुमुदघ्नी	सु. क. २-५	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં.		
कुतुद्वती	,,	,, ,,		
कुम्भ	वा. सू. १५-२	ત્રિવૃત્ (ચ. દ.)=નસોતર.		
कुम्भाह्व	वा. चि. १७-२	,, ,,		
कुम्भिक	च० सु. उ. ४०-१५४	જલકુંભી=જલશંખલાં.	Pistia stratioites.	નિ. ઉ. ૫૬૩
कुम्भी	सु. उ. ५९-१७	स्थलकुम्भीक यस्याः त्वक् वक्रा भवति (ડલ્હણ)=વાપુંભા.	Careya arborea.	નિ. પૂ. ૫૦૯
कुम्भीका	सु. सू. ३८-४५	વાપુંભા.		
कुरण्टक	च० सु० वा०	કાંટાશેરીઓ	Barlaria prionitis.	નિ. ઉ. ૨૧૯

कुरण्टिका	सु. सू. ४६–२७६	शरवालिकाभेदः (ડલ્હણ). કાંટાશેરીયો જ લેવો.	
कुरुण्टक	सु. सू. ३८–१०	કાંટાશેરીયો.	
कुरुबक	सु. सू. ४६–२७४	રાતાફુલનો કાંટાશેરીયો. B. ciliata.	નિ. ઉ. ૨૧૯
,,	सु. सू. ४६–८	ચોખાની જાત.	
कुरुविन्द	सु. सू. ४६–२१	કુધાન્યની ગણત્રીમાં છે. ચોખાની જાત હોય એમ લાગે છે.	
कुरुविन्दा	च. सू. २७–१३; वा. सू. ६–८	ચોખાની જાત.	
कुलृन्दक	सु. सू. ४५	व्रीहिगुरुः–ચોખાની જાત છે.	
कुलक	च. चि. २५–२२२;	પરવળ અથવા કારેલાં.	
कुलत्थ	च० सु० वा०	કળથી. Dolichos biflorus.	નિ. પૂ. ૩૮૭
कुलत्थिका	सु. चि. १६–२६	चक्षुष्या=ચમેડ. Cassia absus.	નિ. પૂ. ४१३
कुलहल	वा. सू. १५–३०	भूकुंबकोऽलंबुसाख्यः (अ. द)=ગોરખમુંડી.	
कुलाहल	सु. सू. ३८–१८	मुण्डितिका સૂ. ૪૬. ગોરખમુંડી Sphœranthus indicus.	નિ. પૂ. ૬૬૮
कुलिंगः	वा. सू. १५–१९	શક્રયવ=ઇંદ્રજવ. (ટીકા).	
कुलिंगा	च. सू. ४–४३	उष्टभेदः (च. द.) ઉટીંગણ. શુક્રજનન દશેમાનિમાં છે.	નિ. ઉ. ६६३
कुलिंगाक्षी	च. चि. ८–१६०	पेटिका (ટીકા). સફેદ દૂર્વા.	નિ. ઉ. ६६३
कुलीरश्रृंगी	च. सू. ४–५४ वा. चि. ४–२४	કાકડાસીંગી. Pistacia integerrima.	નિ. પૂ. ૨૮૨
कुलेश्वर	सु. सू. ४६–२५०	ઉદ્‌ભિદશાકની ગણત્રીમાં છે. खुखुण्डकः (ડલ્હણ), छत्राकभेदः (वै. श. सि.). edible mushroom–બીલાડીના ટોપની ખાદ્ય જાત.	
कुवल	च सू. ४–४८	स्थूलबदरो–મોટાં બોર	
कुवलय	च. सू. ४–३४; सु. सू. ३८–५२	सौगंधिकम्=સુગંધિ કમળ. ईषन्नीलधवलं कमलम् (ડલ્હણ).	
कुल्माष	सु. उ. ४२–६६	यवपिष्टमयान भक्ष्यान् (ટીકા).	

कुश	च० सु० वा०	દર્ભ. દાભડો	Eragrostis cynossuroides. નિ. ઉ. ૫૯૯
कुशपुष्पकम्	च. चि. २५-१०	સ્થાવર વિષમાં છે.	
कुशिम्बी	सु. सू. ४६-४६	मूलकशिम्बी (ટીકા)=મોગરી.	
कुसुम	च. चि. ८-१६३	ધાવડીનાં ફુલ.	
कुसुम्भ	च० सु० वा०	કસુંબો.	Carthamus Tinctorius. નિ. પૃ. ૬૪૪
कुस्तुम्बरी	वा. चि. १-६१	કોથમી.	Coriandrum sativum. નિ. પૃ. ૬૦૭
कुस्तुम्बरु	च. चि. ६-१०७; सु. सू. ३८-५०	લીલા ધાણા.	" "
कुष्ठ	च० सु० वा०	કઠ. ઉપલેટ.	Saussurea Lappa. નિ. પૃ. ૬૩૯
कुष्माण्ड	"	ભુરૂ કોળું.	Benicassa cerifera.
कृतमाल	च. सू. ४-३८, सु चि. ३१-५.	ગરમાળો.	
कृतवेधन	च० सु० वा०	કડવાં તુરીયાં.	Luffa acutangula var. bitter. નિ. પૃ. ૫૫૨
कृमिघ्न	च०. सु. उ. ४०-४०; वा०	વાવડીંગ.	
कृमिघाती	सु. उ. ४२-४२	વાવડીંગ.	
कृष्णगन्धा	च० सु० वा०	સરગવો.	Moringa Pterygosperma. નિ. પૃ. ૩૦૮
कृष्णजीरक	वा. चि. १४-१७	શાહજીરૂં અથવા કાલીજીરી.	
कृष्णतिल	च० सु०	કાળા તલ.	
कृष्णपाटला	वा. उ. ५-४२	કાળાફુલવાળી પાટલા ?	
कृष्णव्रीहि	सु. सू. ४६-१२; वा. सू. ६-७	ચોખાની જાત.	
कृष्णशण	च. चि. २६-२६५	કાળા શણ.	Crotalaria Juncea.
कृष्णसारिवा	सु. सू. ३८-४	छलहेण्टापत्रसदृशपत्रा चन्दनगन्धा 'कालवेलि' इति लोके (ડલ્હણ સૂ. ૩૮-૪). કૃષ્ણસારિવા. Cryptolepis Buchananii.	નિ. ઉ. ૪૩
कृष्णा	च० सु० वा०	લીંડીપીપર.	Piper longum.

कृष्णागुरु	च. चि. २६-२६७	અગર.	
कृष्णाह्वा	सु. चि. ३७-८	પીપર.	
कुलीर	सु. उ. २१-४५	કાકડાસીંગી.	
कूटरणा	च. क. ७-२	નસોતર.	
केतक	सु. सू. ६-३३	કેવડો.	Pandanus fascicularis. નિ. ઉ. ૫૫૮
केतकी	सु. उ. ४२-४५	"	" "
केदार	सु सू. ४६-८	ચોખાની જાત છે.	
केन्द्रका	सु. उ. २१-१५	?	
केबूक	च. सू. ४-३९; सु. सू. ४६-२६२	केसूर इति नाम्ना प्रसिद्धः। (ડલ્હણ) ?	
केम्बूक	वा. सू. ६-७६; सू. १४-२६	શાકની ગણત્રીમાં છે.	
केलूट	च. सू. २७-१०८; वा. सू. ६-९०	केलूटं स्वादुविटपं तत्कन्दः स्वादुशीतलः। (ડલ્હણ) हिस्यकसंज्ञः उदुम्बरभेदः। (अ. द.) ઉમરડાની જાત.	
केशी	च चि. १४-५५; वा. उ. ६-३४	ગંધમાંસી.	Nardostachys Jatamansi. નિ. પૂ. ६३१
केशिका	च. चि. ३-२६२	શતાવરી. (રા. નિ.)	
केसर	च० सु० वा०	બોલસરી.	Mimusops elengii. નિ. પૂ. ६९५
कैटर्य	च. सू. ४-३३, ७२; सु. उ. २८-४	महानिम्बः=બકાન લીંબડો.	Melia Azadirach. નિ. પૂ. २४५
कैडर्य	वा. उ. १-४९	"	" "
कोकनद	च. चि. ६-२३	લાલકમળ.	નિ. પૂ. ४६-५६.
कोकिलाक्ष	वा०; सु. उ. ५८-४४	એખરો.	Hygrophylla spinosa. નિ. ઉ. २०३
कोठफलम्	च. चि. २५-२४०	કોઠું.	
कोद्रव	च० सु० वा०	કોદરા.	Paspalum scrobicutalium. નિ. ઉ. ५८८
कोपना	वा. चि. २१-६७	रक्तकरवीरः (वै. श सि.). રાતી કરેણ.	
कोरदूषक	सु. सू. ४६-२१	કોદરા	Paspalum scrobicutalium નિ. ઉ. ५८८
कोरदूषः	च० वा०	"	" " "

कोरदूष्य	च. चि. १८-१८७	,, ,, ,,		
कोरंट	वा. उ. २४-३५	કુરંટકના અર્થમાં હોય એમ લાગે છે.		
कोल	च० सु० वा०	બોર. see **बदरी**.		
कोलक	च. शा ८-७२	,,		
कोलवल्ली	च. चि. ३-२०३	**चविका**=ગજપીપર.	Scindapsus officinalis	નિ. ઉ. ૫૭૦
कोला	च. चि. २६-४४	,, ,,		
कोलाम्ल	च. चि. ९-२००; सु. उ. १२-४२	ખાટાં બોર.		
कोविदार	च० सु० वा०	કાંચનાર.	Bauhinia racemosa.	નિ. પૂ. ૪૩૬
कोशकार	सु. उ. ४०-१२६	**इक्षुभेदः** (ડલ્હણ)=શેરડીની જાત.		
कोशाम्र	सु. सू. ४६-२०७; च. सू.२६-११६	જંગલી આંબો ?		
कोशातकः	च. सि. ३-५६;	કડવાં તુરીયાં. **घंटोलिः** (अ., द.)		
कोशातकी	सु. उ. ५६-१७	**घोषकः**-કડવાં તુરીયાં	Luffa acutangula–Var bitter.	
कोषवती	सु उ. ५६-१७	,, ,, ,,		
कोषवत्यौ	वा. सू. १५-१	**घंटालिकैका धामार्गवो द्वितीया राजकोशातकी च ।** (अ. द.)		
कौन्ती	च. चि. २५-५३; वा. सू. २१-१४	રેણુકબીજ.		
क्रौञ्चादन	च. सू. २७-१११; वा. सू. ६-९१	**घिचुलिका** (च. द.); **पद्मबीजम्** । (રા. નિ.)=કમળકાકડી.		
कंकोल	वा. उ. २२-९३; सु. सू. ४६-२०२	ચણુકબાબ.	Cubeba officinalis.	નિ. ઉ. ૩૨૭
कंगु	च. सू. २६-११७; वा. सू. ६-१०	કાંગ.	Panicum miliaceum.	નિ. પૂ. ૬૧૩
कंगुकः	सु. चि. ३१-५	ઘઉંલા	Aglaia Roxburghii.	નિ. પૂ. ૨૫૨
कंगुका	सु. सू. ३७-२८	રોપણ તરીકે છે. ,, ,,		
कंदली	सु. सू. ३९-८	**श्वेतश्लक्ष्णबहुपुटकन्दविशेषः सर्पच्छत्रिकम् इति लोके । सू. ३९-८. महाबिडालसमो व्याघ्राकारः कदलीहण्ड इति पौण्ड्रे प्रसिद्धः ॥ अन्ये सर्पविशेषमाहुः। अन्ये कन्दलीमृगं इति समस्तं पठन्ति ।** ડલ્હણ**. सू. ४६**		

कंडूकरी	वा. सू. १५-९	પદ્મબીજ. (રા. નિ.) ' કુવચ ' અર્થ પણ હોઇ શકે.		
कंपिल्लक	च० सु० वा०	કપીલો. see कम्पिल्लक.		
—ख—				
खडयूष:	च. नि. २-१			
खण्डिका	च. सू. २७-२७	શમીધાન્ય વર્ગમાં છે. करटः (રા. નિ.); त्रिपुटकलायः (ચ. દ.)=લાંગ ?		
खदिर	च० सु० वा०	ખેર.	Acacia catechu.	નિ. પૂ. ૪૫૨
खद्योत	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષમાં છે.		
खपुरः	वा. सू. १५-४३	कुन्दुरुकः (अ. द.)=ઇસસનો ગુંદર. खपुरनो સાધારણ અર્થ નિર્યાસ થાય છે. see વા. ઊ. ૪૦-૫૨.		
खरपुष्पा	च. चि. ८-१६३ सु. सू. ३८-१८	બોડી અજમોદ. કેટલાક અજગંધા (રા. નિ.), ડલ્હણ मरुबक અને બીજા વળી નાકછીંકણી—આવા અર્થો કરે છે.		નિ. ઉ. ૬૬૩
खरबुसः	वा. सू. १५-३०	मरूबकः (अ. द.). ડમરો—O. Bascilicum.		
खरमंजरी	सु. चि. ३१-५	see अपामार्ग.		
खरागरी	च. क. २-१	જીમૂતકનો પર્યાય. કુકડવેલ.		
खराह्वा	च. सू. २३-१३	અજમોદ.		
खराश्वा	च. सू. २७-१६६	,, (ટીકા).		
खर्जूर	च० सु० वा०	ખજૂર.	Phœnix sylvestris.	નિ. ઉ. ૫૪૬
खुड्डाकपद्मक	च. चि. २९-११३	खुड्डाकपद्मतैल એવું નામ છે.		
—ग—				
गज	सु. उ. ५१-३३	નાગકેસર.	Mesua ferrea.	નિ. પૂ. ૧૦૮
गजचिर्भटः	वा. चि. १४-३८	ઇંદ્રવારૂણી. ગોરક્ષકર્કટી (ટીકા)		
गजदंतिका	वा. उ. ३६-६१	નાગદન્તી ?-નેપાળાનો ભેદ.		
गजपिप्पली	च० सु० वा०	ગજપીપર.	Scindapsus officinalis.	નિ. ઉ. ૫૫૦
गजाह्वा	वा. उ. ५-८	,,	,,	,,

गजाशना	सु. उ. ४०–१५४	શાલેડી. Boswellia serrata. નિ. પૂ. ૨૩૪ જુઓ. ઉત્તરરામચરિતમ્
गण्डोर	च. सू. २७—१०१, १६५ सु. सू. ४६–२३८ वा. सू. १५–३३	द्विविधः स्थलजो जलजश्च, तत्र स्थलजो हरितशाकपठितः, जलजो जलपिप्पलीगण्डोरम् । सू वि. ૩૪ (ડલ્હણ.) सारप्रधानतरुविशेषः (ડલ્હણ). રા. નિ. કારે समष्ठिलः અને स्नुक् એવા બે અર્થો ગણ્ડીરના આપેલા છે. ચક્રપાણિદત્તે रामठशाकः (सू ૪–૧૫) કહેલું છે. વૈ. નિ. પ્રમાણે ગણ્ડીરનો અર્થ જંગલી સૂરણ થાય છે. સાધારણ રીતે આજ અર્થ કરવામાં આવે છે.
गण्डीरपुष्पो	च. चि. ८–१७४	?
गदा	वा. उ. ३२–३१	नेपालीहरितालकुंकुमगदा गोरोचनागैरिकम् । કુષ્ટ અર્થ હું લઉં છું.
गन्धला:	च. सू. २७–१३	ચોખાની જાત.
गर्गरक	सु. क. २–५	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં.
गर्मूटो	च. सू. २७–१७	ચોખાની જાત છે.
गलोड्यम्	सु. सू. ४२–१८	કમળકાકડી. (ડલ્હણ). નિ. ઉ. ૬૬૪
गवाक्षी	च. सू. २–७; सु. सू. ३९–४; सू. १५–४५	ઇંદ્રવારૂણી. (ડલ્હણ).
गवेधूक	च. सू. २५–३३; वा. सू. ६–९२; सु. सू. ४६–२१.	गवेधूकम्=गैरिकम्; गवेधूका=गोजिह्वा (રા. નિ.). तृणधान्यविशेषः (अ. द). श्यामाकसदृशैः गुणैः (चरक). तृणविशेषः (ડલ્હણ). સામો ? નિ. ઉ. ૬૬૪
गवेधूका	च. सू २७–१६	ચોખાની જાત છે.
गाङ्गेय	सु. उ. १७–१७	મોથ.
गाङ्गेयी	वा. क. ४–४३	મોથ.

गाङ्गेरुकम्	च. सू. २७–१३६	ફલવર્ગમાં. નાગબલાનું ફલ (ટીકા)	
गाङ्गेरुकी	सु. सू. ४६	નાગબલા (ડલ્હણ). Grewia Asiatica.	नि. पृ. १७२
गायत्री	वा, उ. ३९–१७०; सु. सू. २९–७२	ખદિર.	
गालव	च. चि. २५–१०	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં છે. गालवનો અર્થ સફેદ લોધ્ર તેમજ મીંઢળ પણ થાય છે.	
गिरि	च. चि. २५–९३	सलितगिरिकोलमध्याः etc. ?	
गिरिकदम्बः	सु. उ. ३२–६; वा०	મોટો કદંબ. Anthocephalus. Cadamba.	
गिरिज	च. चि. ११–१३०	શિલાજતુ.	
गिरिकर्णिका	च० सु० वा०	ગરણી. Clitorea ternatea.	नि. पृ. ३८३
गिरिमल्लिका	च. क. ५–२	कुटज (કડો)નો પર્યાય છે. કડો.	
गिर्याह्वा	सु. क. २–४५	श्वेतस्यन्दः (ડલ્હણ); અને શ્વેતસ્યન્દ એટલે અપરાજીતા (રા. નિ.). ગરણી.	
गिलोड्यम्	सु. सू. ४२–१८	અજ્ઞાતકંદવિશેષ. see गलोड्यम्.	नि. उ. ६६५
गुग्गुलु	च० सु० वा०	ગુગળ. Balsamdendron Mukul.	नि. पृ. २२९
गुञ्जा	,,	ચણોઠી. Abrus precatorius.	नि. पृ. ३५६
गुडमंजरी	वा. उ. ४०–५२	कालाशाल्मली (अ. द.). गुडमंजर्याः खपुरो नस्यात्स्कंधांसबाहुरुजम् (મૂળમાં). કૂટશાલ્મલી.	
गुडानन्दी	च. क. १०–६	તીક્ષ્ણ કાંટાવાળો થોર. A species of Euphorbia.	
गुडूची	च० सु० वा०	ગળો. Tinospora Cordifolia.	नि. पृ. ३१
गुन्द्रा	च. सू. ४–५८, ४१; सु. चि.१७–६; वा. सू. १५–२४	ધાબાજરીયું અથવા ભદ્રમોથ.	नि. उ. ६६४
गुप्ताफल	सु. उ. ४६–२३	કૌચાં.	
गुहा	च० सु० वा०	શાલિપર્ણી.	
गुंठ	वा. सू. १५–२४	वृन्ततृणम् (अ. द.). ગુંઠોઘાસ.	

*गृञ्जनक	च. सू. २७–१६८; वा०.	ગાજર	Daucus Carota.	નિ. પૃ. ૫૫૮
गृध्रनखी	वा. उ. ३५–४६	કંથાર.	Capparis sepiaria.	
गृष्टिक	सु. चि. ९–८	કાશ્મરી (રા. નિ.)=શીવણ.		
गोकर्ण	सु. सू. ४६	गोसदृशकर्णः गोनद इति प्रसिद्धः (ડલ્હણ).		
गोजिह्वा	च० सु० वा०	ગળજીભી.	Elephantopsus scaber.	નિ. પૃ. ૬૬૫
गोकंटक	वा. सू. १५–२४	ગોખરૂ.		
गोवन्दना	सु. चि. २८–२१	પ્રિયંગુ (ડલ્હણ)=ઘઉંલા.		
गोजी	सु. सू. ८	ગળજીભી		
गोधूम	च० सु० वा०	ઘઉં.	Trictum vulgaræ.	નિ. ઉ. ૬૧૫
गोजली	सु. चि. ३०–५	તાંબડા રાનઘેવડા (મરાઠી).	Cylista scariosa.	નિ. ઉ. ૬૬૫
गोपकन्या	वा. उ. ३७–८२	સારિવા.		
गोपघोण्टा	सु. सू. ३८–६	ગટબોરડી. घोटावदरी (ડલ્હણ).	Zyziphus xylopyrus.	નિ. ઉ. ૬૬૫
गोपवल्ली	च. चि. ८–१६०; सु. उ. ५१–२६	સારિવા.		
गोपसुता	वा. सू. १५–९	સારિવા.		
गोपा	सु. क. ३–१४	सुगंधमूला सारिवा (ટીકા). સારિવા.		
गोपाङ्गना	वा. क. ४–१२	સારિવા.		
गोपी	वा. सू. २०–३७; च. चि. ८–१५७	„		
गोलोमी	च० सु० वा०	दूर्वा. ધ્રો.	Cynodon dactylon.	નિ. ઉ. ૫૮૪
गोक्षुरक	„	ગોખરૂ	Tribulus terrestris.	નિ. પૃ. ૧૮૫
गौर	च. सू. २७–७	ડાંગરની જાત.		

* गृञ्जनक—ચક્રપાણિદત્તે ‘ गृञ्जनकं रसोनकः किंवा गृञ्जनकं शोभांजनम् ’ (च. चि. १२–६०) આવો અર્થ કર્યો છે. ટીકાકારો ઉપર આધાર રાખવાથી આપણી શી વલે થાય ? ટીકાકારોના આવા પ્રમાદને મ્હેં ધ્યાનમાં ન લેતાં રૂઢીપરંપરાથી જે અર્થ થતો આવ્યો છે તે જ અર્થ લીધો છે.

गौरधूम	च. चि. २९–१४७	વાતરક્તમાં લેપ છે. શળ ?		
गौरसर्षप	च० सु० वा०	સફેદ સરસવ.		
गौरामलक	च. चि. २२–१८३	મોટાં પાકાં આંબળાં.		
गौरी	सु. सू. १६–९	હળદર.	Curcuma longa.	નિ. ઉ. ૪૬૧
गंधनाः	वा. सू. ६–८	ચોખાની એક જાત.		
गंधनाकुली	च. चि. ३–२६; सु. क. ६–२२	સુગંધી રાસ્ના. (ડલ્હણ)=રાસ્ના.		
गंधपलाश	वा. चि. १४–१४	गंधपत्रम् (अ. द.)=તમાલપત્ર ?		
गंधप्रियंगु	च. सू. २५–३३	ધઉલા.		
गंधफली	च. चि. २५–५५	"		
गंधा	च. चि. २७–५१	ષટ્કચુરો. કેટલાક અજગંધા માટે પણ ગંધા વાપરે છે.		
गंधाह्वा	सु. चि. ९–६०	પ્રિયંગુ.		
गंधर्वहस्तक	सु. उ. २५–३; वा. चि. ११–२१	એરંડો. (ડલ્હણ).		
गंधैरण्ड	वा. चि. १३–४१	?		
ग्रन्थिक	सु. उ. ५२–४२; वा०	પિપ્પલીમૂલ (ટીકા).		
ग्रन्थिकी	च. चि. २०–७१	વજ.		
ग्रन्थि	सु. चि. २०–५४	વજ અથવા પિપ્પલીમૂલ.		

घ

घन	च० सु० वा०	મોથ.	Cyperus rotundus.
घुणप्रिया	वा. चि. ८·१०३	अतिविषा.	
घोण्टा	वा. सू. १५–१७; सु चि. १७–३४.	ગટબોરડી. અરૂણદત્ત घोण्टानो અર્થ 'पूगविशेष' કરે છે ! જ્યારે ડલ્હણ घोण्टाफलम्–बदरीफलम् એવો સ્પષ્ટ અર્થ કરે છે.	
घोषा	वा. उ. १६–७	તુરીયાં.	

—च—

चक्रका	सु. चि. ३०–५	सोमसमवीर्या महौषधि.		
चक्रमर्द	च० सु० वा०	कुंवाडीयो.	Cassia Tora.	नि. पृ. ४१०
चञ्चुः	च. चि. २५–२२२	छुंछ.	Corchorus oletorius.	नि. पृ. १७०
चणक	च० सु०	चणा.		
चण्डा	च० सु० वा०	अजमोदाकारं सुगंधि द्रव्यम् (ડલ્હણ), ईषत्कृष्णाचोरक-भेदः ॥ ચોરક		नि. पृ. ९०
चतुरंगुल	च० सु० वा०	ગરમાળો.	Cassia fistula.	
चपला	वा. क. ४–६४	લીંડીપીપર.		
चर्मरी	सु. क. २–५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
चर्मसाह्वा	च. क. ११–१; वा. सू. १५–४५.	સમલાનો પર્યાય. ચીકાખાઈ.	Acacia concina	नि. पृ. ४६०
चर्मिवृक्ष	सु. चि. ११–९	लकुचद्रुमाकारो महावृक्षः (ડલ્હણ)=ભૂર્જપત્ર.		
चविका	च० सु० वा०	ગજપીપર.		नि. उ. ५७०
चव्य	,,	ચવક.		
चाङ्गेरी	,,	તીનપાનકી રૂખડી.	Oxalis corniculata.	नि. पृ. १५१
चारटी	च. चि. २५–५३; वा. उ. ६–३४.	कुंभः ब्रह्मयष्टिका इत्यन्ये (ચ. દ.). સ્થલપદ્મ.	Ionidum suffruticosum.	नि. पृ. ९३
चारक	च. सू. २७–१७	ચોખાની એક જાત.		
चित्रक	च० सु० वा०	ચિત્રો.	Plumbago zeylanica.	नि. पृ. ६८८
चित्रफला	सु. चि. ३२–८, उ. ५८–६२	ઇંદ્રવારૂણી (ડલ્હણ).		
चित्रा	च० सु० वा०	એરંડ (ડલ્હણ सु. चि. २), દ્રવન્તી, દન્તી, ગોરક્ષકર્કટી ઇત્યાદિ. मूषिकपर्णी (अ. ह.). નેપાળો અથવા એરંડો અર્થ લેવા.		
चिरबिल्व	,,	ચરેલ.	Holoptelia integrifolia.	नि. पृ. ३९७
चिर्भट	च. चि. १०–३५; वा०	ચીભડું.	Cucumis sativus (Var. sweet).	नि. पृ. ५६४

चिर्भटी	च. सू. २७–१०७	ચીભડી.	"	"
चिल्लीक	च. सू. २७–९३; सु. सू. ४२–१८; वा. सू. ६–९२.	ચીલની ભાજી.	Chenopodium atriplicis.	નિ. ઉ. ૨૯૫
चीन	च. सू. २७–१३; वा. सू. ६–८	ચોખાની એક જાત.		
चीनक	च. नि. ४–४	?		
चीनाक	वा. सू. ६–८६	धान्यविशेषः કાંગ કે બંટી જેવું ધાન્ય.		
चुक्र	सु. उ. ४७–२४	ચાંગેરી.		
चुक्रिका	च. चि. ८–१२७; वा. चि. ७–३१	ચાહ્ગેરી (ટીકા).		
चुञ्चु	सु. सू. ४६–२५१	છુંછ.		
चूत	सु. सू. ६–२८	આંબો.		
चूर्णक	च. सू. २७–७; सू. सु. ४६–८	ચોખાની જાત.		
चेतकी	वा. उ. ३०–२९	હરડે.		
चोच	सु सू. ३८–२४; वा. सू. १५–४३	તજ.		
चोचक	सु क. ६–२	"		
चोरक	च. सू. ४–७२; सु. सू. ३८–२४; वा. सू. १५–४३.	ચોરક. સુગંધિદ્રવ્ય છે. પંજાબ તરફથી સુગંધી મૂળ આવે છે. નિ. ઉ.૨૩૧, ६६६		
चंचु	च. चि. १०–३५; वा. चि. ९–२२	છુંછ.		
चंदन	च० सु० वा०	ચંદન.	Santalum album.	નિ. ઉ. ૩૪૫
चंद्रलेखा	वा. चि. ३–१३४	બાવચી.		
चंपक	सु. सू. ४५–१२	રાજચંપો.	Michalia champaka.	નિ. પૂ. ૨૨
चंद्रशकला	वा०	બાકુચી.		
छ				
छगलान्त्री	सु. सू. ३८–२९	વરધારો. (ડહ્હણ)	Argyrea speciosa.	

छत्रा	च. वि. ८-१६०; सु. चि. ३०-५; वा. सू. २९-३१.	छत्रातिछत्रा श्रोणपुष्पीद्वयम् (ડલ્હણ. सू. १९. २९). छत्रा कोकिलाक्ष: (च. द. वि. ८-२०-१). આવા અસલ ગોટાળામાં શો અર્થ લેવો તે સૂઝતું નથી.
छागकर्णः	वा. सू. १५-१९	बस्तकर्णः (अ. द.)=અજકર્ણ. Shorea robusta.
छिन्नरुहा	च० सु० वा०	ગળો.
छिन्नोद्भवः	वा. चि. १-६०	"
ज.		
जटा	सु. उ. ६२-३०; वा. उ. ६-३८.	જટામાંસી.
जटामांसी	सु. उ. ६०-४७; वा. उ. ५-२.	જટામાંસી. Nardostachys Jatamansi. નિ. પૃ. ६३१
जटिला	च० सु० वा०	જટામાંસી. (ટીકા). उच्चटः (च. द.)
जतु	च. चि. २५-५८	લાખ.
जतुमुख	सु. सू. ४६-१२; वा. सू. ६-७	ચોખાની જાત.
जम्बु	च० सु० वा०	જાંબુ. Eugenia Jambolana. નિ. પૃ. ५१२
जयन्ती	वा. चि. १७-२६	જયતી. Sesbania Ægyptiaca. નિ. પૃ. ३३८
जया	च. चि. १४-५५; वा. उ. ६-३५.	" " " "
जयाद्वयम्	वा. सू. १५-२१	तर्कारी हरीतकी च इति जयाद्वयम् (अ. द.). અરણી અને હરડે.
जलज	च. चि. २४-३५	કમળ અથવા મોથ.
जलपिप्पली	च. सू. २७-१६५	રતવેલીયો. Lippia nodiflora. નિ. ઉ. २२६
जलम्	च० सु० वा०	વાળો. Andropogan squarrosus. નિ. ઉ. ६०२
जलद	वा० सु० च०	મોથ.
जाति	च० सु० वा०	ચંબેલી અથવા જાયફળ. जातिशब्देन जातिफलं कथ्यते (ડલ્હણ).
जातिका	वा. चि. २१-७६	જાયફળ !
जातिपत्री	वा. उ. २२-८३	જાવંત્રી.

जातीफलम्	च० सु० वा०	જાયફળ.	Myristica fragrans.	નિ. ઉ. ૩૩૦
जातीरस	वा. सू. १५-४३	बोलः (अ. हृ.)=હીરાબોલ.		
जाती	सु. चि. १८-२१	જુઇ અથવા જાયફળ.		
जातीकन्द	सु. सू. ३७-१६	જુઇનાં મૂળ. जातीमूलम् પણ છે.		
जातीकोश	सु. सू. ४६-२०२	જાવંત્રી. (ડલ્હણ)		નિ. ઉ. ૩૩૦
जातुकन्द	सु. सू. ३७-१७	ગુગળ. (ડલ્હણ)		
जातुकम्	सु. सू. ४६-२७४	शुक्लशालिपर्णी (ડલ્હણ)-સફેદ સાલવણ.		
जातुकशाक	सु. सू. २०-१३	जातुशाकम् वंशपत्रिका (चरकटीका सू. २६-८६); पौष्करशाकम् (ડલ્હણ). હું ધારૂં છું કે કમળના કંદનું શાક એ અર્થ વધુ સારો છે.		
जालमालिनी	च. चि. २५-२०३	કડવાં તુરીયાં.	Luffa acutangula.	નિ. પૂ. ૫૫૨
जालक्षीरी	सु. क. २-५	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં છે.		
जालिनी	सु. क. ७-३४; वा०	કડવાં તુરીયાં.		
झिङ्गिनी	च. चि. ८-१६५-१७४; सु. सू. ३८-१४; वा. सू. १५-२६.	મવેડી. અરૂણદત્ત કૃષ્ણશાલ્મલી અર્થ કરે છે.	Odina Wodier.	નિ. પૂ. ૨૯૭
जीमूतक	च. चि. ४-३; सु. सू. ३९-३; वा. उ. ३०-१८.	કુકડવેલ.	Luffa echinata.	નિ. પૂ. ૫૪૬
जीरक	च० सु० वा०	જીરૂં.	Cuminum cyminum.	નિ. પૂ. ૫૯૬
जीरकद्वयम्	वा. चि. ३-१२२	જીરૂં, શાહજીરૂં.		
जीवन्ती	च० सु० वा०	ડોડી.	Leptadania reticulata.	નિ. પૂ. ૩૯
जूर्ण	वा. सू. १४-२१	तृणधान्यविशेषः दक्षिणापथे गोंधलक इति प्रसिद्धः (अ. हृ.) ?		
जूर्णाह्वः	च. सू. २७-१७	ચોખાની જાત છે.		
जूर्णाह्वा	च. सू. २१-२५	जोमार इति ख्यातः (च. द.). જુવાર નહિ હોય ?		
जोङ्गकम्	च. चि. १-१७६; वा०.	અગર.	Aquilaria agallocha.	નિ. ઉ. ૩૩૮

ज्योतिष्क	सु. चि. ९–१०	**काकमर्दनिका तस्याः फलम् (ડલ્હણ)=કાગડોળીયો.** પંજાબની તેજોવતી.	Cardiospermum halicacabum.	નિ. પૂ. ૨૬૦
ज्योतिष्मती	च० सु० वा०	**માલકાંકણી.**	Celastrus paniculata.	નિ. પૂ. ૨૫૬
जंतुघ्न	सु. सू. ४६–२४९; वा०.	વાવડીંગ.		
जंबीर	च० सु० वा०	લીંબુ.	Citrus acida.	નિ. પૂ. ૨૯૩
—झ—				
झिण्टी	च. सू. २७–१७	ચોખાની જાત.		
झंझु	वा. सू. ६–९२	**झुझुरिका. (अ. द) ?**		
—ट—				
टिण्टिकेर	च. चि. ९–१०			
टिण्टुक	वा०. सु. सू. ३८–६८	ટેંટુ.	Oroxylum indicum.	નિ. ઉ. ૧૯૦
टुण्टुक	च० वा० सु०	”	” ”	”
टंक	च. सू. २७–१३०; सु. सू. ४६–१९२	**काश्मीरे स्वनामप्रसिद्धं बहुप्रकारम् (ડલ્હણ); काश्मीरप्रसिद्धम् (च. द.).** કાશ્મીરમાં થનારૂં બહુ જાતનું આ ફળ લાગે છે.		
—ड—				
डुडुरक	सु. सू. ४६–२७४	**‘डोडी’ इतिनाम्ना प्रसिद्धः (ડલ્હણ)=ડોડી.**		
—त—				
तगर	च० सु० वा०	તગર.	Valeriana Hardwickii.	નિ. પૂ. ૬૩૪
तण्डुल	”	ચોખા.	Oryza sativa.	નિ. ઉ. ૬૧૭
तण्डुलीयक	”	તાંદલજો.	Amarantus polygamous.	નિ. ઉ. ૨૮૮
तपनीयाः	च. सू. २७–८; वा. सू. ६–२	ચોખાની જાત છે.		
तमाल	च. क. १–८; सु. सू. ३९–६; वा. उ. ११–३५	તમાલપત્ર.	Cinnamomum Tamāla.	નિ. ઉ. ૩૩૩
तर्कारी	च० सु० वा०	અરણી.	Clerodendron phlomoides.	નિ. ઉ. ૨૩૬
तरुणी	च. चि. ८–१७४; सु. सू. ४६–२३९	ગુલાબ.	Rosa Centifolia.	નિ. પૂ. ૪૮૩

तल	वा. सू. १५-१९	તાડ.	see ताल	
तलकोट	सु. उ. ५१-४४	अंकोलः (ડલ્હણ)=આંકોલ.		
तवक्षीरी	वा. चि. ५-३०	વાંસકપુર.		
तस्कर	सु. चि. ३७-१७	ચોરક.		
तापसवृक्ष	वा. सू. १५-२८; सु. सू. ३८-१६	ઇંધોરીયું.	see इंगुदी.	
तामलकी	च० सु० वा०	ભોંયઆંબળી.	Phyllanthus niruri.	નિ. ઉ. ૩૬૯
ताम्बूल	च. सू. ५-७१; सु. सू. ४६-२७९	નાગરવેલ.	Piper Betel.	નિ. ઉ. ૩૧૩
ताम्रवल्ली	सु. शा. १०-५९; वा. उ. ३५-४६	મજીઠ.	Rubia cordifolia.	નિ. પૂ. ૬૨૬
ताल	च० सु० वा०	તાડ.	Borassus flabellifer.	નિ. ઉ. ૪૫૦
तालपर्णी	सु. चि ११-२३; वा. सू. ३०-२२	મુશલી. (ડલ્હણ)	Curculigo orchioides.	નિ. ઉ. ૪૯૯
तालपत्री	सु चि. १८-५	"	"	"
तालमूली	सु उ. ५१-३८	"	"	"
तालोतल	सु. चि. १७-२५	भूम्यामलकीमूलम् नलमित्यन्ये (ડલ્હણ). ભોંયઆંબળીનું મૂળ.		
तालीश	च० सु० वा०	તાલીસપત્ર.	Abies Webbiana.	નિ. ઉ. ૪૪૫
तार्क्ष्यम्	वा. चि. ९-५८	રસવંતી.		
तार्क्ष्यशैलं	सु. चि. ९-१३, ४६	रसांजनम्-રસવંતી.		
तिक्त	वा. सू. १०-२८	કડુ.		
तिक्तरोहिणी	च० सु०	કડુ અથવા રોહિણ		
तिक्तला	च. क. ११-१	સપ્તલા-શંખિનીનો પર્યાય. ચીકાખાઈ.		
तिक्ता	च० सु० वा०	કડુ.		
तिक्ताह्वय	वा. सू. १५-४०	एका कटुका, अन्या काकतिक्ता। (अ. द.) કડુ અને પીલુડી.		
तिक्तकोशातकी	वा. क. १-४१	કડવી ડોડકી.		
तिक्तालाबु	सु. सू. ४६-२१५	કડવી તુંબડી.	Lagenaria vulgaris	નિ. પૂ. ૫૪૨
तिक्तेक्ष्वाकु	च. चि. २५-२०३	"	"	"

तिन्तिडीक	च० सु० वा०	આમલી.	Tamarindus indicus.	નિ. પૃ. ૪૨૯
तिन्तिडीका	वा. सू, ६–८५	?		
तिन्दुक	च. सू. ४–१७; सु. सू. ४२–१८; वा. उ. ३२–२२	ટીંબરવો.	Diospyros Embryopteris.	નિ. પૃ. ૭૦૦
तिन्दुकी	सु. सू. ३८–४८	"	" "	
तिनिश	च. क. १–७; सु. सू. ३८–१२; वा. सू. १५–१९	તણુછ.	Ougeinia dalbergioides.	નિ. પૃ. ૪૭૨
तिमिर	सु. उ. ५१–३२	तिमिरो नवरागीपत्रः तिवरिया इति प्रसिद्धः (ડલ્હણ) ચેરીયાં–Mangrove.		
तिरीटक	च. क. ९–१	લોધ્રનો પર્યાય.		
तिल	च० सु० वा०	તલ.	Sesamum indicum.	નિ. ઉ. ૧૯૩
तिलकमंजरी	वा. उ. ३८–२९	લોધ્રની મંજરી. तिलकः लोध्रः।		
तिलपर्णी	च. सू. २७–९२; सु. सू. ३९–९; वा. सू. ६–७४.	हुलहुल इति लोके. તલવણી. Gynandropis pentaphylla. અરૂણદત્ત तिलपर्णी बदरकः આવો અર્થ કરે છે.		નિ. પૃ. ८૯
तिल्वक	च. सू. १–११५, ११६; सु. सू. ३९–४; वा. सू. १५–२.	લોધ્ર.		
तीक्ष्ण	वा. चि. ५–५४	મરીયાં.		
तीक्ष्णक	वा शा. १–८८	પીલુ.		
तीक्ष्णगन्धा	सु. ड. २३–४	शोभांजनक–સરગવો.	Moringa Pterygosperma.	નિ. પૃ. ૩૦૮
तीक्ष्णवृक्ष	वा. सू. १५–४५	પીલુ.	Salvadora persica.	
तुगा	च०. वा०. सु. उ. ५७–१०	વાંસકપુર.		
तुङ्ग	च. सू ३–२४; सु. क. ८–१०८.	पुन्नाग=નાગકેસર.	Mesua ferrea.	
तुगाक्षीरी	सु. उ. ४५–३२	વાંસકપુર.		

तुगाक्षीरी	च० सु० वा०	„		
तुण्डिकेरी	सु. उ. ४८–२७	कार्पासिनी–જંગલી કપાસ.		નિ. પૃ. ૧૬૬
तुम्ब	वा. सू. ६–८५, ८८.	તુંબડી.		
तुम्बी	च० सु० वा०	કડવી તુંબડી.		
तुम्बुक	च. सू. २७–९२	„		
तुम्बुरु	च. सू. २७–१६५; सु. उ. ४२–६९; वा. चि. २१–३५.	નેપાલી ધાણા.	Xanthoxylum alatum.	નિ. પૃ. ૨૦૧
तुरंगगंधा	सु. उ. ४१–४१	અશ્વગંધા.	Withania somnifera.	
तुरुष्क	च. चि. २८–१४८; सु. सू. ३८–२४; वा. सू. १५–४३	सिह्लकः (ઉલ્હણ). શેલારસ.	Altingia excelsa.	નિ. પૃ. ૪૮૫
तुवरक	सु. चि. ३१–५	ચેલમોગરો.	Gynocardia odorata or Hydnocarpus Wightiana.	નિ. પૃ. ૯૭
तुवरिका	वा. उ. ३२–३१	તુવેર ?	Cajanus Sativus.	
तुवरी	वा. चि. १९–२५	„	„	
तुषा	च. सू. २७–८४	શાકવર્ગમાં છે. કાસમર્દ ?		નિ. પૃ. ૪૦૮
तूतो	वा. उ. ४–४७	पूतिकरंजः (अ. द.). કાંકચ.		
तूद	च. सू. २७–१२९	શેતૂર.	Morus indica.	નિ. ઉ. ૪૩૪
तूर्णक	वा. सू. ६–१	ચોખાની જાત.		
तेजस्विनी	च. चि. ८–१६३	તેજોવતી.	Zanthoxylum alatum.	નિ. પૃ. ૨૦૧
तेजिनी	वा. शा. २–४२.	„	„	„
तेजोवती	च. क. ७–१२; सु. उ. ४०–४१; वा. उ. २२–३८.	„	„	„
तेजोह्वा	च. चि. १९–१६३; सु. चि. २–९४	„	„	„
तोदन	च. सू. २७–१३६	धन्वनभेदः (ટીકા)=ત્રાંબટનાં ફૂલનું શાક.		

तोदपर्णी	सु. सू. ४६–२१	કુધાન્યવર્ગમાં છે. આમ અર્થ થાય છે.		
तोयम्	सु. क. २–५१	વાળો.		
तोयद	वा. उ. ३४–४६	વાળો અથવા મોથ.		
तोयपर्णी	च. सू. २७–१६	ચોખાની જાત.		
तौवरक	च. चि. ३०–१२२	see तुवरक.		
त्रपुस	च० सु० वा०	કાકડી.		
त्रपुषी	सु. उ. ४७–३३	કડવી કાકડી.		
त्रायन्तिका	च. क. ७–५३; सु. चि. ११–९	ત્રાયમાણ? ડલ્હણ 'मदयन्तिका' અર્થ આપે છે. Delphinium saniculœfolium.		નિ. પૃ. ૮
त्रायन्ती	च. चि. १७–५०; सु. उ. ३९–२१९; वा. सू. १०–२८.	"	"	"
त्रायमाण	च० सु० वा०	ત્રાયમાણ.		
त्रिकंटक	"	ગોખરૂ.	Tribulus terrestris.	નિ. પૃ. ૧૮૫
त्रिजातक	"	તજ, તમાલપત્ર, એલચી.		
त्रिदशाह्व	च. चि. २८–१५७	દેવદાર.		
त्रिपर्णी	च. सू. २७–६७	हंसपादिका (ટીકા)=હંસરાજ Adiantum—		
त्रिपर्णिका	सु. सू. ४६–२७४	(वुग्धिका सु. सू. २७४. ડલ્હણ), वनकार्पासीत्यपरे। ?		
त्रिपादी	वा. सू. १५–९	हंसपादी (अ. द.)=હંસરાજ.		
त्रिफला	च० सु० वा०	હરડે, બેહાં, આંબળાં.		
त्रिभण्डी	च. क. ७–२	નસોતર.		
त्रिवर्णक	सु. सू. ४४–७	ત્રિજાતક (ટીકા).		
त्रिवृत्	च० सु० वा०	નસોતર.	Ipomæa turpethum.	નિ. ઉ. ૧૧૦
त्रुटी	च० सु० वा०	એલચી.	Elattaria Cardamomum.	નિ. ઉ. ४७७
तृणमूल	च. चि. ४–१०१	કેતકી?		

तृणमूल्या	सु क. ६–२१	કેતકી અને મલ્લિકા.		
तृणशून्य	च. सू. २७–१३९	केतकीफलम् (ટીકા). કેવડાનું ફળ.		
त्वक्	च० सु० वा०	તજ.	Cinnamomum zeylanicum.	નિ. ઉ. ૩૩૫
त्वक्क्षीरी	,,	વાંસકપૂર.		
त्वरितक	सु. सू. ४६–१२	ચોખાની જાત.		
—थ—				
थौणेयक	च. चि. १७–६२	થુણેર. ભટીઉર (મરાઠી).		
—द—				
दण्डोत्पल	च. चि. २६–४९	સહદેવી.	Vernonia cineria.	નિ. પૂ. ૬૩૬
दधित्थ	वा० सु० च०	કોઠી.	see **कपित्थ.**	
दन्तशठ	,,	ખાટું લીંબુ.	Lemonum acidum.	નિ. પૂ. ૨૦૩
दन्ती	,,	નેપાળો.	Croton triglium.	નિ. ઉ. ૩૭૮
दर्दुराः	च. सू. २७–१३; वा. सू. ६–८	ચોખાની જાત.		
दर्भ	च० वा० सु०	દાભડો.	Eragrostis cynosuroides.	નિ. ઉ. ૫૯૯
दशमूल	,,	શાલિપર્ણ્યાદિ દશમૂલ.		
दशमूली	च. चि. २१–९९; सु. चि. ३८–६३	દશમૂલી (પોરબંદર).	Dædalacanthus purpurascens.	વ. શા. ૫૫૪
दशाङ्गी	वा. उ. ३–४७	દશમૂલના અર્થમાં છે એમ હું માનું છું.		
दहन	वा. सू. १५–२१	ચિત્રો.		
दाडिम	च० सु० वा०	દાડમ.	Punica granatum.	નિ. પૂ. ૫૨૭
दार्वी	,,	દારૂહલદર.	Berberis asiatica.	નિ. પૂ. ૪૧
दारु	वा. क. ५–५; च०; सु. उ. ३९–२६४	દેવદાર.		
दारुहरिद्रा	च० सु० वा०	દારૂહલદર.		
दासीकुरण्टक	सु. सू. ३८–६	ભુરાપુલનો કાંટાશેરીયો.	Balaria cristata.	નિ. ઉ. ૨૧૮

दीपिका	च. क. १-३२	અજમો.		
दीप्यक	च० सु० वा०	„		
दीर्घमला	सु. सू. ३८-४५	ધમાસો (ડલ્હણ).		
दीर्घवृन्त	सु. उ. ४०-७०; वा. सू. १७-८	ટેંડું.	Oroxylon indicum.	નિ. ઉ. ૧૫૦
दीर्घशूक	च. सू. २७-७; सु. सू. ४६-४; वा. सू. ६-१.	ડાંગરની જાત.		
दुग्धिका	वा. उ. २४-३८; च. चि. ९-१९८.	નાગલાદુધેલી.	Euphorbiā pilulifera.	નિ. ઉ. ૩૫૨
दुग्धिनिका	वा. उ. ३७-८६	शुक्लदुग्धालाब्धाम् (वै. श. सि.); रक्तापामार्गक्षुपे (રા. નિ. व. ४)=કડવી તુંબડી ?		
दुरालभा	च० सु० वा०	ધમાસો.	Fagonia arabica.	નિ. પૂ. ૧૮૮
दुःस्पर्शा	„	„	„	„
दूर्वा	„	ધ્રો.	Cynodon dactylon.	નિ. ઉ. ૫૮૪
दूषक	सु. सू. ४६-४	ચોખાની જાત.		
देवताडक	च. क. २-१	કુકડવેલ.		
देवदारु	च० सु० वा०	દેવદાર.	Cedrus Deodara.	નિ. ઉ. ૪૪૮
देवदाली	वा० सु० च०	કુકડવેલ.	Luffa echinata.	નિ. પૂ. ૫૪૬
देवधूप	वा. सू. १५-४३	ગુગળ અથવા રાળ.		
द्रोणा	वा. उ. ३६-९२	દ્રોણપુષ્પી—		
द्रोणीपुष्पा	च. चि. २६-२३७	કુંભો.	Leucas Cephalotus.	
द्रवन्ती	च. सू. १-७७; सु. सू. ३९-४; वा सू. १५-४५.	રતનજોત.	Jatropha curcas.	નિ. ઉ ૩૭૬
द्राविडी	सु. सू. ३८-५४	એલચી.	see एला.	
द्राक्षा	च० सु० वा०	દ્રાક્ષ.	Vitis vinifera.	નિ. પૂ. ૨૬૮
द्रारदा	च. चि. ८-१६०	સાગનું ઝાડ અથવા કપિકચ્છુ (ટીકા).		

द्विहस्तिकर्ण	वा. चि. १७-२६	બે જાતના એરંડા.	
द्रौवि	च. चि. ८-१५७; वा. सू. १५-३२	કંટકારી–ભોરીંગણી. (ટીકા).	
—ध—			
धत्तूरक	वा. उ. २४-३०	ધંતુરો.	Datura alba.
धनञ्जय	च. चि. ४-७३	સાજડ.	Terminalia tomentosa or glabra.
धनिका	वा. चि. ८-७७	ધાણા.	
धन्या	सु. चि. ५-२८	ધામાર્ગવ (રા. નિ., ધ. નિ.)=કડવાં તુરીયાં.	નિ. પૃ. ૫૫૨
धन्याक	च. सू. ४-६६	ધાણા.	Coriandrum sativum.
धन्वन	च. सू. २७-१३६; सु. सू. ४६-१७०	ધામણ.	Grewia tiliæfoliā. નિ. પૃ. ૧૭૫
धन्वयासक	च. सू. ४-५३, ३६; वा. सू. १०-२९.	ધમાસો.	
धव	च. सू. ३-१, सू. ३८-१२; वा. सू. १५-३२.	ધાવડો.	Anogeissus latifoliā. નિ. પૃ. ૫૦૬
धातकी	च० सु० वा०	ધાવડી.	Woodfordia floribunda. નિ. પૃ. ૫૨૫
धानका	वा. सू १५-१६	ધાણા.	
धानाः	सु. चि. १०-५	शुष्कभृष्टयवाः (ટીકા).	
धान्यक	च० सु० वा०	ધાણા.	
धान्यतुम्बुरु	च. सू २७-२९९	ધાણા.	
धामार्गव	च० सु० वा०	કડવાં તુરીયાં.	Luffa acutangula var bitter. નિ. પૃ. ૫૫૨
धात्री	”	આંબળાં.	
धावनी	च. चि. ३-१८२; वा. चि. १-८९.	કંટકારી. (ચ. દ.)=ભોરીંગણી.	
धावन्यौ	वा. सू. २०-३७	નાની અને મોટી ભોરીંગણી. (ટીકા)	
ध्याम	च. सू. ५-१५	ધમાસો.	
ध्यामक	वा. सू. १५-४२; सु. सू. ३८-२४	कत्तृणम् = રોહિષઘાસ. ખરી રીતે ધમાસો અર્થ કરવો ઉચિત છે.	
धुस्तूर	सु. क. ७-५२	ધંતુરો.	Datura alba.

धूमक	च. सू. २७-९६	શાકવર્ગમાં ?	
—न—			
नक्तमाल	च. सू. ४-३८; सु. सू. १४-३६; वा. सू. १०-२९.	કરંજ.	Pongamia glabra.
नक्ताह्व	वा. उ. २५-६७	”	” ”
नखम्	वा. चि. १-१:६; सु. सू. ३८-२४	નખલા. સુગંધી દ્રવ્ય.	
नगवृत्तिका	सु. चि. १५-९; सु. क. ५-७६	**શલ્લકી** (ડલ્હણ). **જિંગિની** અને **વૃશ્ચિકાલી** અર્થોપણ થાય છે. પણ શલ્લકી અર્થ લેવો સારો છે.	નિ. ૬. ૬૬૭
नत	च० सु० वा०	તગર.	
नदीभल्लातक	सु. सू. ४६-२४९	ભીલામાં. નદીકિનારે ઉગેલું ભીલામાનું વૃક્ષ.	
नदीमाषकम्	च. सू. २७-१०८	શાક છે ?	
नन्दीमुख	सु. सू. ४६-१२	ચોખાની જાત.	
नमस्करी	वा. सू. १५-३८	**समंगा.** (**अ. ह.**) લજામણુ. **Mimosa**-A sensitive plant. **मृत्युपुष्पाक्यः (अ. ह.)**	નિ. ૬. ૫૫૬
नल	च. चि. ३-२५३; सु. सू. ४६-४३२; वा. सू. १५-२४	નાલી.	Phragmites karka.
नलदम्	च. सू. ४-३८; सु. सू. ३८-४१; वा. सू. २१-१३.	જટામાંસી (ડલ્હણ).	
नलिका	च. चि. २८-१४७; सु. शा. १०-३०; वा. चि. १७-२५	**इन्दीवरीलतायाम्** (રા. નિ.); **नाडीशाके** (વૈ. નિઘ.)	
नलिन	च. सू. ४-५९; सु. उ. १७-८; वा०	સફેદ અષ્ટદલ પદ્મ.	
नवमालिका	च. चि. २६-१६७; सु. शा. १०-५७	મોગરો.	Jasminum sambak.
न्यग्रोध	च० सु० वा०	વડ.	Ficus Bengalensis.
न्यग्रोधी	च. क. १२-१	‘ દન્તી ’નો પર્યાય.	

नाकुली	च. चि. २५-५५; सु. क. ८-१०२; वा. उ. ३०-१५.	નોળવેલ.	Aristolochia indica.	નિ. ઉ. ૩૦૬
नाकुलीद्वयम्	वा. उ. ६-३६; च. चि. १४-५६	रास्नाद्वयम् (ચ. દ.). (૧) Pluchea lanceolata, (૨) P. indica.		
नागकेसर	च. चि. ४-६५	નાગકેસર.	Messua ferrea.	નિ. પૂ. ૧૦૮
नागदन्ती	च. चि. ८-१७४; सु. सू. ३८-१६; वा. सू. १५-२९.	पर्वपुष्पिका (अ. द.)=નેપાળાની જાત? મોટો નેપાળો?		નિ. ઉ. ૬૬૮
नागपुरीषच्छत्रम्	वा. उ. ३७-४२	વૃશ્ચિકદંશના લેપમાં છે. હાથીનું છાણ જ્યાં પડતું હોય ત્યાં ઉગેલો બીલાડીનો ટોપ હોય એમ લાગે છે. Mushroom?		
नागपुष्प	सु. सू. ३८-२४; वा. उ. ३५-२४.	નાગકેસર.		
नागबला	च० सु० वा०	ગંગેટી.	Grewia populifolia.	નિ. પૂ. ૧૭૨
नागर	,,	સુંઠ.		
नागरंग	च. सू. २७-१५०	નારંગી.	Citrus aurantium.	નિ. પૂ. ૨૦૫
नागजिह्वा	सु. उ. ६१; वा. उ. ६;	नागदन्ती (अ. द.), इन्द्रवारुणीभेदः (ડલ્હણ)?		નિ. ઉ. ૬૬૭
नाडीकलाय	च. सू. २७-९२; वा. सू. ६-७५	सकुलाक्षकः सुवर्चलाभेदः (अ. द.)। શાક છે?		
नाडीभंग	सु. सू. २०-१३	नाडीपल्लवशाकम् (ડલ્હણ)?		
नादेयम्	सु. उ. ११-१६	કાસ-કાસડો.		નિ. ઉ. ૬૦૧
नादेयी	सु. चि. ४-३२	જલજંબુ (ડલ્હણ), ભૂમિજંબુ (શ્રીકંઠ).		
नान्दीमुखी	च. सू. २७-२१; सु. सू. ४६-२१; वा. सू. ६-१५	શૂકધાન્ય વર્ગમાં છે. यविका (च. द.). સુશ્રુતે કુધાન્ય વર્ગમાં ગણાવી છે.		
नान्दीमुखानि फलानि	च. शा. ८-८०	નાંદરૂકીવડનાં ફલ?		
नारी	च. चि. १-१६८	नारीनामौषधिः अम्बष्ठेति विज्ञायते या पुनः अजसंज्ञपत्रा ॥		
नारंग	सु. सू. ४६-१६१	નારંગી.		

नालिका	च. सू. २७-६३; वा. सू. ६-९१	दीर्घनालरूपा कलंबुसंज्ञा (अ. द.)=શાકવિશેષ		
नालिकाशाकम्	सु. सू. ४६-२७३	शाकविशेषः। આપણે નારી=આંદવેલનું શાક એ અર્થ લઇ-તો ?		
नालुकम्	च. चि. ८-१५९	?		
नालिकेर	च० सु० वा०	નાળીએર.	Cocos Nucifera.	નિ. ઉ. ૫૩૪
निकुच	च. सू. ४-३४	પીસ્તાં ?		
निकुम्भ	च. चि. २६-५८; सु. उ. ५६-१७; वा. सू. १५-२.	નેપાળો.		
निकोचक	वा. सू. ६-११८; च. सू. २७-१५०	ચીસ્તાં.	Pistacia vera.	નિ. પૂ. ૨૮૪
निचुल	वा. क. ४-६२; च. सू. २-८; सु. उ. ५१-२३	જલવેતસ (ડલ્હણ), હિજ્જલ (ચ. દ.)=જલવેતસ.		
निदिग्धिका	च० सु० वा०	ભોટીંગણી.	Solanum indicum.	
निम्ब	,,	લીંબડો.	Melia Azadirachta.	નિ. પૂ. ૨૩૮
निर्गुण्डी	,,	નગોડ.	Vitex negundo.	નિ. પૂ. ૫૭૦
निदहनी	सु. उ. ५५-४८	ચિત્રો.	see चित्रक.	
निर्यास	च. चि. २५-७५	ગુંદર અથવા ધનના અર્થમાં.		
निशा	च० सु० वा०	હળદર.		
निशाद्वय	,,	હળદર અને દારૂહળદર.		
निष्पाव	च. सू. २७-३१; सु. सू. २१-१९; वा. सू. ६-१९.	રાજશિંબી (ડલ્હણ)=વાલ.		નિ. ઉ. ६६८
निर्बिशपत्रक	च. क. १०-६	થૉર.		
नीप	च. सू. ४-४७; सु. सू. ४६-१५८; वा. चि. २०-२०	કદંબ.	Anthocephalus Cadamba.	નિ. પૂ. ६१५
नीरजम्	सु. चि. २५	નીલોત્પલ (ડલ્હણ).		
नीला	च. चि. १-१६८	नीला नामौषधिः नीलक्षीरपुष्पी लताप्रतानबहुला ॥		

नीलिका	च. चि. २६-१०; सु. चि. ९-३७; वा. चि. २१-७६.	ગળી.	Indigofera tinctoria.	નિ. પૃ. ૩૧૯
नीलिनी	च. सू. २-७; सु. क. ७-२५; वा. चि. १-१५८	„	„	„
नीली	च. चि. २२-८५; सु. चि. २५-२८; वा. सू. १५-२.	„	„	„
नीलोत्पल	च० सु० वा०	ભુરૂં કમળ.		
नीवार	च. सू. २७-१६; सु. सू. २०-५; वा. सू. ६-१०	નમાર ચોખા.	Hygrorhiza aristata.	ઔ. સં. ૭૮૨
नीवारक	सु. सू. ४६-२१	„	„	„
नृत्तकौण्डल	सु. उ. ५१-३४; वा. चि. ११-३०.	तुवरोबीजः (अ. द.); मर्कटकः (ડલ્હણ). તુવરી એટલે તુવેર. અને મર્કટકઃ એટલે અપામાર્ગ અથવા કુવચ—આ કરતાં વીંછુડો Martynia diandra એ અર્થ લેવો સારો છે. વાગ્ભટમાં 'नृत्यकौण्डलबीजानि' છે.		
नृपवृक्ष	सु. उ. ५७-९; वा. चि. १-१२०	ગરમાળો.		
*नेत्र	च. चि. १७-६०	सवायसीमूलकनेत्रनिम्बम्। હું ધારૂં છું કે वेत्र ને બદલે Misprint હશે.		
नैषध	च. नि. ४-४; सु. सू. २१-२३.	'कोरक' इति आख्यायते, स च धान्यविशेषः (ડલ્હણ).		
नैषधक	च. सू. २७-११; वा. सू. ६-४	ચોખાની જાત.		
नंदन	सु. क. २-५	સ્થાવર વિષ.		

* चरकની બન્ને પ્રતોમાં 'नेत्र' જ છે, એટલે તે છપાઇની ભૂલ તો નથી જ. ત્યારે नेत्रનો શો અર્થ? नेत्रનો અર્થ મૂલ એવો થાય છે પણ 'मूलकमूलकम्'નો અર્થ શો? મૂળાનાં મૂળ એવો અર્થ તો ન જ કરાય, કારણકે मूलक એટલે જ મૂળો. હું ધારૂં છું કે नेत्र એટલે નેતરસીંગી (પંચમહાલ); નેતસીંગી, મેરસીંગી (નૅર્ન. પા. ૨૨૪); Dolichandrone falcata. N o. Bignoniaceæ. આ અર્થમાં नेत्र વપરાયલો છે. નેતરસીંગી પાટલાના વર્ગની વનસ્પતિ છે.

नंदी	वा. सू. १५-४१; सु. उ. ३४-३	नन्दीवृक्ष.	Ficus retusa.	नि. ह. ४२२
नन्दीतक	च. वि. ८-१६१.	„ नांदरुखी वृ.	„	„
नन्दीवृक्ष	सु. सू. ३८-४६; वा. सू. १५-३८	„	„	प्ररोही (अ. ह.)
—प—				
पटोल	च० सु० वा०	कडवी पाडळ.	Trichosanthus cucumerina.	नि. पू. ५३९
पटोला	वा. सू. १०-२८	„	„	„
पतङ्गाः	च. सू. २७-८; वा. सू. ६-८	ચોખાની જાત છે.		
पतंग	च. चि. २६-१९७; सु. सू. १६-३०; वा. उ. १८-६३.	रक्तचन्दनम् રતાંજલી	Pterocarpus santalum.	नि. ह. ३४५
पत्तूर	च. सू. २७-९५; सु. उ. ५४-२६; वा. सू. ६-९८.	રાજગરો ?	Amaranthus paniculatus.	
पत्तूरा	वा. सू. ६-९८	मत्स्याक्षकः (अ. ह.) બ્રાહ્મી.		
पत्रम्	च० सु० वा०	તમાલપત્ર.		
पथ्या	„	હરડે.		
पद्म	„	सूर्योदयविकासि कमलम् (ડલ્હણ).		
पद्मक	च. सू. ४—३२, ७१; सु. सू. ३८-३५; वा. सू. १५-१२.	પદ્મકાષ્ટ.	Prunus pudum.	नि. पू. ४८१
पद्मा	च. सू. ४-५५; सु. उ. ४०-७३; वा. सू. १५-३७	ભાર્ગી (ડલ્હણ)=ભારંગમૂલ.		
पद्मिनी	सु. उ. १८-३५	કમળ.		
पनस	च० सु० वा०	ફણસ.	Artocarpus integrifolia.	नि. ह. ४३२
पन्नूर	वा. चि. १-१३७	शालिञ्चशाके—		
पयस्या	च० सु० वा०	ક્ષીરવિદારી.	Ipomœa digitata.	नि. ह. ६६८
परिपेलव	च. वि. ८-१६५; सु. क. २-५१; वा. सू. १५-२६	કેવડી મોથ.	Cyperus....	

परिव्याध	कृ. शा. ८-६१	कर्णिकार=गरमाळो.		
परूषक	च० सु० वा०	फालसां.	Grewia asiatica	नि. पृ. १६७
पर्णासक	च. क. १-३५	तुलसीनी अनेक जातोमांनी एक जात.		
पर्णिनीद्वयम्	च० सु० वा०	शालिपर्णी, पृश्निपर्णी.		
पर्णिन्यः	वा. सू. १०-२३	" "		
पर्ण्यः	च. चि. १-५९	शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी.		
पर्पटक	च० सु० वा०	खडसलीयो.	Justicia parviflora.	
पर्वणी	च. सू. २७-१०३	पर्वशाकम् (च. द.).		
पर्वपुष्पी	च. सू. २७-१०३	कुक्कुटी (च. द.).		
पलंकषा	च० सु० वा०	गुगळ. अरुणदत्त लाक्षा अर्थ करे छे.		
पलाण्डु	च० सु० वा०	डुंगळी.	Allium cepa.	नि. छ. ५१४
पलाल	सु सू. ४६-२८३	छत्राक जातिनुं कोई शाक.		
पलाश	च० सु० वा०	खाखरो.	Butea frondosa.	नि. पृ. ३६८
पशुगन्धा	वा सू १५-३४	अजगंधा (अ. द.)=तलवणी.	Gynandropis pentaphylla.	
पाकलम्	च. चि. २५-१८३;	कुष्ठ. कठ.	see कुष्ठ.	
पाटल:	च. सू २७-१४; सु. सू. ४६-१२; वा. सू. ६-९	चोखानी जात छे.		
पाटला	च० सु० वा०	पाटला.	Steriospermum chelonoides.	नि. छ. १८७
पाटलि:	वा. सू. १५-१७	वसंतदूति:-पाटला.	" "	
पाठा	च० सु० वा०	काळीपाठ.	Cyclea peltata.	नि. पृ. ३६
पाठाद्वयम्	च. चि. २२-३७	पाठा, लघुपाठा (करंढीयुं).		
पाण्डुक	च. सू. २७-७; सु. सू. ४६-४	चोखानी जात छे.		
पापचेलिका	च. चि. ३-१८५; सु. उ. ३८-१५०	पाठा.		

पारावत	च सू. २६-११६; सु सू. ४६-१५८	कामरूपे फलम्, पाककाले धवललोहितं मधुराम्लं च ॥ મંગુસ્તાન. નિ. ઉ. ૬૬૯
पारावतक	सु सू ४६-१२; वा. सू. ६-७	ચોખાની જાત છે.
पारावतपदी	च. क. १-३३; सु. चि. ८-३२; वा०	ईषल्लोहितो हंसपदीभेदः (ડલ્હણ). અર્થાત્ ડલ્હણ પ્રમાણે હંસરાજની લાલ જાત. ધન્વન્તરિ અને રાજનિઘંટુમાં તેના બે અર્થો આપેલા છે (૧) જ્યોતિષ્મતી અને (૨) કાકજંઘા. હંસરાજની ઘણી જાતો પારાવતના પગ જેવી આવે છે માટે એ જ અર્થ લેવો સારો છે.
पारिजातक	सु. चि. ११-८	હારશણગાર. Nyctanthus arbortristis. નિ. ઉ. ૧૪
पारिभद्र	सु० वा०	પાંડરવો. Erythrima indica. અથવા લીમડો.
पालक	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં છે.
पार्थ	सु० वा०	સાજડ.
पार्था	वा. सू. १५-२१	सुवर्चला (अ. द.)=સુરજમુખી.
पालनि	वा. चि. १-८९	ત્રિવૃત=નસોતર.
पालिक	वा. उ. १३-७	ત્રાયમાણ ?
पालिन्दी	च. सू. ४-४०; सु. उ. १०-७	श्यामा त्रिवृत् सारिवामन्ये (ડલ્હણ. ઉ. ૧૦)=કાળું નસોતર.
पालेवत	वा. सू. ६-१३३	रैवताख्यं द्विधा (अ. द.). શાક છે.
पालंक्या	च० सु० वा०	પાલખની ભાજી. पालक इति लोके Spinacea oleracea. નિ. પૂ. ૬૦૬
पाषाणभेद	"	પાષાણભેદ. Iris pseudo-achorus. નિ. ઉ. ૬૪૧
पांशुबाष्प	वा. सू ६-७	ચોખાની જાત છે.
पांशुवाप्य	च. सू. २७-११	"
पिचुक	सु. चि. ७-१७; वा. उ. ३६-६१.	पकृकरी, कार्पासीफलमित्यन्ये ॥ કપાસનાં જીંડવાં.
पिचुमर्द	च० सु० वा०	લીમડો.

पिण्डालुक	च. सू. २७–११७; सु. सू. ४६–२९८; वा. सू. ६–१०४.	કંદ છે. અજ્ઞાત.	
पिण्डि	च. चि. ९–१०	?	
पिण्डीतक	च० सु० वा०	कृष्णपुष्पः मदनः. કાળા ફુલનું મીંઢળ.	
पिप्पली	,,	લીંડી પીપર.	Piper longum.
पिप्पलीमूल	,,	પીપરીમૂલના ગંઠોડા.	
पियाल	च. सू. २७–१५२; सु. ड. ४६–१५	ચારોળી.	Buchanania latifolia. નિ. પૃ. ૨૯૫
पीतक	सु. सू. ४६–८	ચોખાની જાત.	
पीततैला	वा. सू. १५–२८	કાકાદની. (અ. દ.)	see काकादनी.
पीतदारु	च० सु० वा०	દારૂહલદર.	Berberis asiatica.
पीतद्रु	च० वा०	,,	,, ,,
पीताङ्गा	वा. ड. २२–९८	,,	,, ,,
पीलु	च० सु० वा०	પીલુ.	Salvadora persica.
पीलुपर्णी	वा. उ. ३०–२७; च. चि. २७–३९, ९७;	मोरटः (च. द.)=मूर्वा.	Clematis triloba.
पुण्डरीक	च० सु० वा०	કમળ. (सु. सू. ४६–૪માં પુંડરીક ચોખાની જાત ગણાવેલી છે.)	
पुण्ड्रः	वा. सू. १५–१२	प्रपौण्डरीकम् (अ. द.)=સફેદ કમળ.	
पुण्ड्रक	च. सू. २५–४१	શેરડી, અતિમુક્તક, તિલક–એવા ભિન્ન ભિન્ન અર્થો છે. શેરડીનીજાત.	
पुण्ड्राह्व	वा. सू. २२–२१	,, ,,	,,
पुत्रञ्जीव	सु. उ. ३१–८	જીયાપુતા.	Putranjiva Roxburghii.
पुत्रश्रेणी	सु. सू. ३८–३९	દ્રવન્તી (ડલ્હણ)=રતનજોટ.	Jatropha Curcas.
पुनर्नवा	च० सु० वा०	સાટોડી.	Boerhavia Repens. નિ. ઉ. ૨૭૫
पुनर्नवाद्वय	च० वा० सु०	(૧) સાટોડી. B. repens અને (૨) Trianthema crystellina. નિ. ઉ. ૨૭૪	

पुन्नाग	वा. सू. १५-४३; सु. सू. ३८-२४, २५	નાગકેસર.
पुर	वा. चि. १-१६२; सु. क. ५-६९.	ગુગળ.
पुलाक	च. चि. ८-४०	गवेधुकः तृणविशेषः जलगोधूमम् इति लोके ॥ દરીયાઈ ઘઉં લઇએ તો ?
पुष्करफल, बीज.	सु. सू. ४६-१७३	કમળનું ફળ, કમળકાકડી.
पुष्करमूल	सु. चि. ५-२१; वा. उ. ७-२०	પુષ્કરમૂલ. Iris germanica. Orris root (Eng.) નિ. પૃ. ६४३
पुष्कराह्व	च० सु०	,, ,, ,,
पुष्पफल	सु. सू. ९-४	કુષ્માંડ. ભુરાં કોળું. Benicassa cerifera.
पुष्पाण्डक	सु. सू. ४६-४	ચોખાની જાત.
पूग	वा० सु०	સોપારી. Araca Catechu.
पूतना	वा. उ. ६-७४	હરડે.
पूतिक	च. सू. १-११६; सु. सू. ३९-४; वा. सू. ३०-२१.	કાંકચ. Cæsalpinia Bonducella. નિ. પૃ. ३९७
पूतिकरञ्ज	वा. चि. ३-१३४; सु. सू. ४६-२७८	,, ,,
पूतिकीट	सु. उ. ५०-२४	भौंदुलिका तेलिनीति लोके (ડલ્હણ).
पूतीक	वा. सू. ३०-९	પૂતિકરંજ=કાંકચ.
पूषा	वा. सू. ६-७०	શાકવર્ગમાં.
पोटगल	च. चि. ८-१५७; वा. चि. १३-४२	નલ. Phragmites karka. નિ. છ. ६६९
पौष्कर	च. चि. १५-१७	પુષ્કરમૂલ.
,,	च. चि. २५-९	સ્થાવરમૂલવિષની ગણત્રીમાં.
पंकज	च. चि. २४-३५.	કમળ.
पंचकोल	च० सु० वा०	સુંઠ, મરી, પીપર, પીપરીમૂલ, ચિત્રો.
पंचाङ्गुल	च. सू. २७-१०४; सु. उ. १७-२९; वा. सू. १५-९.	एरण्डः (ડલ્હણ)= દીવેલો. Ricinus communis.

प्रकीर्या	च सू. १-८०; सु. सू. ३९-९; वा. सू. १५-१९.	કાંકચ. कण्टकीविटपकरंजः (કહેણ).	
प्रग्रह	च. क. ८-१; सु. क. ६-३; वा०.	ગરમાળો.	Cassia fistula.
प्रचीबलम्	सु. उ. ३४-३	કાકજંઘા. (ધ. નિ.)	
प्रतिविषा	च० सु० वा०	અતિવખની કળી.	Aconitum heterophyllum.
प्रत्यक्पुष्पी	,,	અઘેડો.	
प्रपुन्नाड	,,	કુંવાડીયો.	Cassia tora.
प्रपौण्डरीक	,,	સફેદ કમળ.	
प्रमोदक	सु. सू. ४६-८; च. नि. ४-४	કમોદના ચોખા ?	
प्रमोदका	च. सू. २७-८	ચોખાની જાત.	
प्रशातिका	च. सू. २१-२५; च. सू. २७-१६	उडिकेति प्रसिद्धा ॥ (च. द.) धान्यविशेषः ચોખાની જાત.	
प्रसारणी	च. चि. २८-१६१; वा. चि. २१-६४; सु. चि. १५-४४;	પ્રસારણ વેલ.	Pœdaria fœtida.
प्राचीनामलक	च. सू. २७-१३९; सु. सू. ४२-१८.	જલઆંમલાં	Flacourtia cataphracta. नि. पृ. १००
प्राणदा	वा. चि. ९-१०३	હરીતકી. (अ. द.)=હરડે.	
प्रियक	च. सू. २५-४१; सु. उ. ४७-६१	બીયો. (કહેણ)	
प्रियाल	वा. सू. ६-११९	ચારોલી	
प्रियंगु	च० सु० वा०	ઘઉંલા.	Aglaia Roxburghii. नि. पृ. २५२
प्रियंगव:	च. सू. २७-१६	ચોખાની જાત.	
पृथक्पर्णी	च० सु० वा०	પૃશ્નિપર્ણી. (કહેણ)	Uraria picta. नि. पृ. ३४९
पृथ्वीका	च. सू. २-३; सु. सू. ४५-१५; वा. सू. १५-४	કલોંજી.	Nigella sativa. नि. पृ. १
पृश्निपर्णी	च० सु० वा०	પીઠવણ.	Uraria picta.

प्लव	च. चि. २५-५२; सु. चि. ११-८; वा. सू. २१-१४.	गोपालदमनकः (ડલ્હણ) કેવડીમોથ. (ધ. નિ. અને ભા. પ્ર.)		
प्लक्ष	च० सु० वा०	પીપળી.	Ficus Tsilla.	નિ. ઉ. ૪૨૦
—फ—				
फञ्जी	च. सू. २७-९३; सु. सू. ३८-१८; वा. चि. ९-२४.	ફાંગ.	Riveai hypocrater formis.	
		કેટલાક પાઠભેદ અને બીજા ભાર્ગી એવો અર્થ પણ કરે છે.		
फणिज्जक	च. सू. ३-२; सु. सू. ३८-१८; वा. सू. १५-३०	ડમરો.	Ocimum Basilicum.	નિ. ઉ. ૨૬૨
फल्गु	च. सू. ४-५४; सु. सू. ४६-१७१; वा. सू. ६-११८.	નાનો ઉમરડો.	F. hispida.	નિ. ઉ. ૪૧૮
फलपूर	च. चि. ४-९३	બીજોરૂં.	Citrus Medica.	નિ. પૂ. ૨૦૬
फलम्	च० सु० वा०	મીંઢોળ.		
फलसारः	सु. सू. ४६-४३२	बिलेशयानां फलसारासवः ॥		
फलाम्लम्	च. चि ९-९८; सु. उ. ४७-३८; वा. चि. ४-७	કોકમ.	Garcinia Indica.	નિ. પૂ. ૧૦૪
फलिनी	च० सु० वा०	પ્રિયંગુ.		
फेणाश्म	सु क. २-५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
फेनिला	च. चि. १२-१५८; सु. उ ३९-२७९.	અરીઠી.	Sapindus trifolium.	
—ब—				
बकुल	च. सू. २५-४१; सु. सू. ४२-१८.	બોલસરી.	Mimusops elengii.	નિ. પૂ. ૬૯૫
बदरी	च० सु० वा०	બોરડી.	Zyziphus jujuba.	નિ. પૂ. ૨૬૨
बन्दाको	सु. चि. ६-१३	બંદાક-વાંદો હોય ?		
बला	च० सु० वा०	બલા.	Sida cordifolia.	નિ. પૂ. ૧૩૦
बलाद्वयम्	वा. सू. १५-५	બલા, અતિબલા.		

बलात्रयम्	वा. सू. १०–२३	બલા, અતિબલા, નાગબલા.		
बलाहकम्	च. चि. २५–८	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
बलयम्	च. चि. ११–७३	**कैवर्तमुस्तकम्** (ટીકા)=**કેવડીમોથ.**		
बस्तगंधा	वा. चि. १७–३६; सु. उ. ३४–६	**બોડીઅજમોદ.**	Apium graveolens.	નિ. પૂ. ૫૯૩
बस्तान्त्री	वा. सू. १५–४५	**वृषगन्धा (अ. द.) वृषमेथा (रा. नि.)** ?		
बहलपल्लव	वा. सू. १५–२१	**शोभांजन** (ટીકા)=સરગવો.		
बहलबहुरस	वा. सू. १५–४५	ઇક્ષુ =શેરડી.		
बहुपुत्रा	सु. क. १–६८	શતાવરી અથવા મયૂરશિખા. (ડલ્હણ)		
बहुफेनरसा	च. क. ११–१	સપ્તલા=ચીકાખાઇ.		
बहुला	च. चि. ८–१०१	સૂક્ષ્મૈલા=નાની એલચી.		
बर्हिशिखा	वा. चि. ११–३३	**મયૂરશિખા.**		
बर्हिष्ट	सु. उ. ११–६, ८	**वालकम्=વાળો.** (ડલ્હણ)		
बाकुची	सु. चि. २५–१८; वा. उ. १८–४५.	બાબચી.	Psoralia Corylifolia.	નિ. પૂ. ૬૩૮
बाण	वा. सू १५–१७, २४; सु. सू. ६–३७	કાંટાશેરીયો.		
बाला	च. चि. ३०–१०४	સૂક્ષ્મૈલા. (રા. નિ.)		
बालक	च० सु० वा०	વાળો.	Andropogan squarrosus.	નિ. ઉ. ६०२
बाह्लीक	च. चि. २५–१००; सु. क. ६–३; वा. उ. ३४–४६	હિંગ.	Ferula Alliacea.	નિ. પૂ. ૬૦૪
बालेक्षु	च. चि. २५–७१	નાની શેરડી.		
बालोडुम्बर	च. सि. ८–३७	નાનો ઉમરડો.		
बाष्पद्वय	सु. चि. ४–३२	**सिन्धुविषये केचिद्वर्षाभूद्वयमिति पठन्ति** (ડલ્હણ)=બન્ને સાટોડી.		
बाष्पिका	वा. सू. ७–२५	હિંગુપત્રિકા. **(अ. द.)=ડીકામારી.** પં. હરિપ્રપન્નજી એનો અર્થ **બાફળી** (મરાઠી) કરે છે.		
बिभीतक	च० सु० वा०	બેઢાં.	Terminalia bellerica.	નિ. પૂ. ૪૯૨

बिम्ब	च. चि. ९-२३०	ઘીસોડી—ટીંડોરાં.	
बिम्बफला	च. क. ३-२	,, ,,	
बिम्बितिका	सु. सू. ४६-२४९	,, ,,	
बिम्बी	च. सू. ४-४७; सु. क. १-४१.	**ओष्टोपमफला** (ચ. દ.)=ઘીસોડી. Cephalandra Indica.	નિ. પૂ. ૫૭૧
बिम्बोलोटा	सु. उ. १२-११	હિમાલયમાં થનારૂં ઝાડ.	નિ. ઉ. ૬૭૦
बिल्व	च० सु० वा०	બીલી. Ægle marmelos.	નિ. પૂ. ૨૧૬
बिल्वपर्णी	च. सू. २७-१०२	શાકવર્ગમાં છે.	
बिल्वपेशिका	सु. सू. ३८-४६	**बालबिल्वगिर:** (ડલ્હણ)=કુમળાં બીલાંનો ગર્ભ.	
बिस	च० सु० वा०	કમળના દાંડામાં જે તંતુ હોય છે તે.	
बीज	च. शा. ८-७२	બીયો.	
बीजक	च० सु० वा०	,, Pterocarpus marsupium.	નિ. પૂ. ૩૯૪
बीजपूरक	,,	બીજોરૂ. Citrus Medica.	નિ. પૂ. ૨૦૬
बूक	वा. सू. १५-२४	**ईश्वरमल्लिका** (अ. द.) **કડો.**	
बोधिवृक्ष	च. चि. २९-१५६	**પીપળો.**	
बोल	वा. चि. १९-२४	**जातिरस** (अ. द.) હીરાબોલ.	
बोट	वा. चि. ३-१३३	**अलंबुषा.** (अ. द.) **ગોરખમુંડી.**	
बंधुक	सु. सू. ६-३७	બપોરીયો. Hibiscus hirtus.	નિ. પૂ. ૧૪૨
बंधुजीव (क)	च. चि. २५-१७९; सु. सू. ३९-३	**मध्याह्नपुष्प:** (ડલ્હણ). **બપોરીયો.**	,, ,,
ब्रह्मचारिणी	वा. सू. २९-३१; सु. सू. १९-२९	**मुण्डितिका** (ડલ્હણ)=ગોરખમુંડી.	
ब्रह्मसुवर्चला	च. चि. १-१२२; सु. सू. ४६-२६२; वा. उ. ३९-५०	સુરજમુખી ?	નિ. પૂ. ૬૭૭
ब्रह्मसोमा	वा. उ. १-४५	બ્રાહ્મી. શ્વેતવૃદ્ધદારક (વૈ. શ. સિ.)=**બ્રાહ્મી**	
ब्राह्मी	च० सु० वा०	બ્રાહ્મી. સુશ્રુત (શા. ૧૦-૮)માં **द्विब्राह्मी**નો ઉલ્લેખ છે.	
बृहत्पत्र	च. क. ९-१	**લોધ્ર.** Hydrocotyle asiatica.	નિ. પૂ. ૫૮૨

बृहती	च० सु० वा०	ભોરીંગડી.	Solanum Xanthozylon.	નિ. ઉ. ૧૨૯
बृहतीद्वय	,,	નાની અને મોટી ભોરીંગણી.		
—भ—				
भण्डी	वा. सू. १५-१९	નસોતર. શિરીષ (અ. દ.)=કાળીયો સરસ.		
भद्रदारु	च० सु० वा०	દેવદાર.		
भद्रपर्णी	च वि. ८-१५७	શીવણ.	Gmelina arborea.	
भद्रमुस्ता	च० वा०	ભદ્રમોથ.	Cyperus tuberosus.	નિ. ઉ. ૫૭૯
भद्ररोहिणी	सु. उ. ४०-१०५	રોહણ.	Soymida febrifuga.	
भद्रश्रोय	च० सु० वा०	श्वेतचंदनम् (ચ. દ.)		
भद्रा	सु चि. ३८-५९	ઘણા અર્થો થાય છે. see वै. श. सिंधु. p. 743. ભાવમિશ્રે અશેળીયાના પર્યાય તરિકે વાપર્યો છે. અશેળીયો.	Lepidium sativum.	નિ. પૂ. ૭૧
भद्राश्रय	च चि. ३-२५३	શ્વેતચંદન		
भवैला	वा. उ. ६-२६	કાગદી એલચી.		
भद्रौदनी	च. सू. ४-२६	પીતબલા (ચ. દ.), બલા.	Sida Cordifolia.	નિ. પૂ. ૧૩૦
भरूटम्	च. सू. २७-१११	શાકવર્ગમાં.		
भल्लातक	च० सु० वा०	ભીલામાં.	Semicarpus anacardium.	નિ. પૂ. ૨૯૯
भल्लूक	सु. सू ३८-१०; वा. सू. १५-२४;	श्योनाकः (અ. દ.)=ટેંટુ	Ailantus excelsa.	નિ. પૂ. ૨૨૧
भव्य	च. सू. २७-१२५; सु. सू. ४२-१८; वा. सू. १०-२६.	ઓટફલ કરંબલ.	Dillenia indica.	નિ. પૂ. ૨૦
भाण्डी	च. सू. २७-१०२; सु चि. ३१-५.	भिण्डीति लोके समाहरन्ति (ડલ્હણ)=ભીંડી.		
भाण्डीर	च. चि ३-२६२	ભાંડીર (મરાઠી), ભાંટ (હિંદી).	Clerodendron infortunatum.	
भारद्वाजी	च. सू. ४-२६	वनकार्पासी જંગલી કપાસ.	Hibiscus vitifolius.	નિ. પૂ. ૧૪૬
भार्गी	च० सु० वा०	ભારંગમૂલ.	Clerodendron serratum.	નિ. ઉ. ૨૪૦

भिल्लोटक	सु. उ. १७-४०	हिमवदासन्नभूमिजः ककुभानुकारीफलो वृक्षविशेषः (ડલ્હણ)	Combretaceæ orderનું ઝાડ.	
भोरु	सु. उ. ३९-२२४	શતાવરી.		
भुजंगपुष्प	सु. उ. ४६-१७	નાગકેસર.		
भूकन्द	वा. सू. ६-११२	स्फोटाख्यः प्रावृडुद्भवः प्रसिद्धः एव (अ. द.)		
भूतकेशो	सु. उ. ६०-४७; वा. सू. १५-३०.	જટામાંસી. (ડલ્હણ).	Nardostachys Jatamansi.	નિ. પૂ. ૬૩૧
भूतोक	च० सु० वा०	सुगंधितृणम् (ડલ્હણ)=રોહીષઘાસ.		
भूनिम्ब	,,	કરીયાતું.		
भूमिकदम्ब	वा. उ. २२-२२; सु. चि. २-९०	ગોરખમુંડી.	Sphœranthus indicus.	નિ. પૂ. ૬૬૮
भूज	च० सु० वा०	ભૂર્જપત્ર.	Betula utilis.	નિ. ઉ. ૪૫૬
भूस्तृण	,,	રોહિષઘાસ.	Andropogan schœnanthus.	નિ. ઉ. ૬૬૦
भृङ्गराज	,,	ભાંગરો.	Eclipta alba.	નિ. પૂ. ૬૬૧
—म—				
मकुष्ठ (क)	सु. सू. ४६-३०; च. सू. २७-२६	મઠ.	Phaseolus aconitifolium.	
मकूलक	च. सू. २७-१५०	ફળવર્ગમાં છે. સાધારણ રીતે दन्ती અર્થ થાય છે.		
मगधा	सु० वा०	પીપર.		
मण्डूकपर्णी	च. सू. ४-७४; सु. सू. ४२-१८; वा. सू. ६-७५	બ્રાહ્મી.		નિ. પૂ. ૫૮૨
मण्डूकपिप्पली	च. शा. ८-७८, ९०.	,,		
मण्डूकी	सु. उ. ५७-११; वा. उ. १-४४	બ્રાહ્મી. (ડલ્હણ).		
मत्स्याक्षक	च. चि. १-१२२; सु. शा. १०-६८; वा. उ. ३९-५०	' धस्तूर ' इति पके (ડલ્હણ)=બ્રાહ્મી.		
मदन	च० सु० वा०	મીંઢળ.	Randia dumetorum.	નિ. પૂ. ૬૨૦
मदयन्तिका	च. चि. ३०-५५; सु. क. १-६४; वा. उ. ७-२२.	મેંદી.	Lawsonia alba.	નિ. પૂ. ૫૩૦

मद्या	वा. चि. ८-१४९; च. सि. ४-७;	ધાતકી.	Woodfordia floribunda.	નિ. ઉ. ૬૭૦
मधुक	च॰ सु॰ वा॰	જેઠીમધ.	Glycyrrhiza glabra.	નિ. પૂ. ૩૪૪
मधुपर्णी	च सू. ४-२९, ४५; सु. सू. १६-१८; वा. चि १९-९१.	ગળો અથવા ચીકળો. (ચ. દ.)-ગળો.		
मधुरवल्ली	सु सू. २१-३३	ગળો.		
मधुवल्ली	च त्रि. ८-१६०	,,		
मधुरस	वा चि. १९-४१	મૂર્વા.		
मधुरसा	च. चि. २०-५९; सु. सू. ३८-२२; वा. सू. १५-१७	મૂર્વા. (अ. द.) મોરવેલ.		
मधुशिग्रु	च. चि. १५-३०; सु. सू. ३८-८; वा. चि. १०-३४; सु. चि.५-७, चि. ६-९ टीका;	મીઠો સરઘવો.	Moringa Pterigosperma.	
मधुस्रवा	वा. सू. १५-१५	સુરંગી. (અ. દ.).		
मधूक	च॰ सु॰ वा॰	મહુડો.	Bassia latifolia.	નિ. પૂ. ૬૯૨
मधूकपुष्पी	च. वि. ८-१६०	મહુડાની જાત હોય એમ લાગે છે.		
मधूलिका	च. सू. २७-२१; सु. सू. ४२-१८; वा. उ. २-५१.	मर्कटतृणम् (ડલ્હણ), गुडूची (ડલ્હણ), मधुयष्टिः (अ. द.)= જેઠીમધ અથવા ગળો.		
मधूली	च. सू. २७-२१; वा. चि. ४-३३	ચોખાની જાત. અરૂણદત્ત કહે છે-जलजा मधुयष्टिः गोधूमविशेषो वा ॥		
मध्वालु	सु. सू. ४६-२९८	कंदविशेषः—		
मन्दारी	सु. चि. १९-६३	रक्तार्क (વૈ. શ. સિ.)=લાલ આકડો.		
मयूरक	च॰ सु॰ वा॰	અપામાર્ગ.		
मरिच	,,	મરીયાં.	Piper nigrum.	નિ. ઉ. ૩૨૪
मरुबक	च. क. १-३३	ડમરો.	Ocimum Basilicum.	નિ. ઉ. ૨૬૨
मर्कट	च. चि. २५-११	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં.		
मर्कटी	च. चि. १४-५५; सु. उ. ३३-७; वा. उ. ६-३४	કૌવચ.	see आत्मगुप्ता	

मलय	वा चि. २०–५	મલયાદ્રિ ચંદન.		
मलपू	च. चि. ७–१५९; सु. चि. ९–१५	નાનો ઉમરડો.	F. hispida.	
मलयू	वा. चि. २०	”		
मल्लिका	वा. चि. ७–८३; सु सू. ४६–२८६.	મોગરો.	J. sambac.	નિ. પૂ. ૫૩૧
मसूर	च० सु० वा०	મસૂરની દાળ.	Ervum lens.	
महाकरंभ	सु. क. २–५	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં		
महाजालिनी	च. क. ४–१	કડવાં તુરીયાં. see **धामार्गव**.		
महादूषक	सु. सू. ४६–४	ચોખાની જાત.		
महाद्रोणा	वा. उ. ३६–९२	મોટો કૂબો.	Leucas......	
महापिचुमंद	वा. चि. ८–१६१	બકાન લીંબડો.	Melia Azadirach.	નિ. પૂ. ૨૪૫
महानिम्ब	सु सू. ३८–२२	” ”	”	
महापत्रम्	च. चि. ९–१२४	ટેંટુ. પર્યાય પણ **મહાપત્ર** છે.	Oroxylon indicum માણુકંદનો.	
महापुरुषदन्ता	च. चि. १४–४६; वा. उ. ६–३६.	**શતાવરી.** (ચ. દ.)		
महामाष	सु. सू. २१–२३	મોટા અડદ.		
महामेदा	च० सु० वा०	અષ્ટવર્ગ પૈકીની એક અજ્ઞાત ઔષધિ.		
महाविष	सु. क. २–५	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં.		
महाव्रीहि	वा. सू. ६–७; च. नि. ४–४	મોટી ડાંગરની જાત.		
महावेगवती	सु. चि. ३०–५	**सोमसमवीर्या महौषधि**		
महावृक्ष	च. सू. ४–५; सु. सू. ३९–४; वा. सू ३०–९	**सेहुण्डः—થોર**		
महाशालि	च. सू. २७–७; सु. सू. ४६–४; वा. सू. ६–१	ચોખાની જાત.		
महाश्यामा	सु. सू. ३८–२९	**वृद्धदारकः** (કલ્હણ)- **વરધારો.**		
महाशूक	सु. सू. ४६–४	ચોખાની જાત.		

महाश्रावणी	च. चि. ८-१६०; सु. चि. ३०-५	મોટી ગોરખમુંડી.
महाश्वेता	च. सू. ४-५१; सु. सू. ३८-१६; वा. क. ३-४६.	સફેદ ગરણી. अपराजिताभेद: (ચ. ૬.).
महाषष्टिक	सु. सू. ४६-८	ચોખાની જાત.
महासहा	च. चि. ८-१६०; सु. सू. ३८-४; वा. ड. २-४१	માષપર્ણી (ડલ્હણ). જંગલી અડદ.
महासुगन्धा	सु. ड. २६-४१	ઉત્પલસારિવા (ડલ્હણ)=Hemidesmus indicus.
महिषशूक	सु. सू. ४६-४	ચોખાની જાત.
महोकदम्ब	सु. ड. ४१-४७	મોટીઓ કલ્હાર.
महैला	च. चि. ८-१५७	મોટી એલચી.
महौषध	च० सु० वा०	સુંઠ.
मागधिका	,,	લીંડીપીપર.
मागधी	,,	,,
माचीक	च. चि. ८-१६५; वा. ड. ३४-४७	દેવદારુ.
माणकन्द	सु. सू. ४६-३०६	માણકંદ. Alocasia macrorhiza.
मातुलुङ्ग	च० सु० वा०	બીજોરું. Citrus medica. नि. पृ. २०६
मातुलुंगी	सु. सू. ३९-६	सुरभिफला वनजा अरण्यबीजपूरक: (ડલ્હણ)=જંગલી બીજોરું.
माद्री	वा. ड. २०-१५	રેણુકા. (અ. ૬.)=રેણુક બીજ.
मानद्रुम	वा. सू. १५-३७	શાલ્મલી. (અ. ૬.)=શીમળો. Bombax Malabarica.
मानसी	वा. क. ३६-९२	कुर्णपुष्पकालु (वै. श. सि.) ?
मारिष	च. सू. २७-९५	અડબાઉ ડાભો. Amarantus gangeticus. व. शा. ६००
मार्कव	च० सु० वा०	ભાંગરો.
मार्ष	का. सू. ६-९१	गन्धारिका (અ. ૬.) ?

मालती	च. सू. १४-२८; सु. सू. ३८-१४; वा. सू. १७-८	ચંમેલી.	Jasminum grandiflorum.	નિ. ઉ. ૯
माष	च० सु० वा०	અડદ.	Phaseolus radiatus.	નિ. પૂ. ૩૮૦
माषपर्णी	,,	જંગલી અડદ.	,,	
मिशि	वा. सू. १५-३; सु. चि. ३८-१८.	વલીયારી.	Fœniculum vulgarœ. સુવા પણ થાય.	
मुकुन्द	च. सू. २७-१७	ચોખાની જાત.		
मुकुन्दक	च०; सु. सू. ४६-८	ધાન્ય છે. कुधान्यवर्गे—ચોખાની જાત છે.		
मुकूलक	च. क. ७-४१; वा. सू. ६-११८	દંતી—નેપાળો.		
मुचुकुन्द	सु. चि. १८-१०	મુચુકુંદ.	Pterospermum glabrescens.	નિ. પૂ. ૧૬૫
मुञ्ज	सु. शा. ५-४९	મુંજઘાસ.	Saccharum munja.	
मुञ्जात	सु. चि. १७-१५; वा. सू. ६-८२	,,	,,	
मुञ्जातक	च. सू. २७-११४	,, स्वनामख्यातः स्वल्पकन्दः उत्तरापथे (ડલ્હણ). तदभावे तालमज्जा ग्राह्या (વૈ. શ. સિ.). નાનું મુંજઘાસ. અભાવમાં તાલમજ્જા.		
मुद्ग	च० सु० वा०	મગ.	Phaseolus mungo.	નિ. પૂ. ૩૭૮
मुद्गपर्णी	,,	જંગલી મગ.	P. trilobus.	,,
मुरा	वा. उ. ६-३८	મુરામાંસી.		
मुरंगी	सु. उ. २१-१७	રાતો સરગવો.		
मुशाली	वा. उ. ३२-२१	મુશળી.		
मुष्कक	च० सु० वा०	મોખો.	Schrebera Swietenioides	નિ. ઉ. ૧૨.
मुस्तक	सु. उ. ४०-६९	મોથ.		
मुस्ता	च० सु० वा०	,,		
मूती	वा. उ. १६-१५	?		
मूर्वा	च० सु० वा०	मोरवेल.	Clematis triloba.	નિ. પૂ. ૧૦

मूलक	,,	મૂળા.	Raphanus sativus.	નિ. ૫ ૭૨
मूलकपोतिका	सु. सू. ४६–२४०; वा०	बालमूलकम् (ડલ્હણ)=કુમળા મૂળા.		
मूलकशिम्बी	सु. सू. ४६–४६	મોગરી.		
मूल(क)पर्णी	सु. सू. ४६–४६; च. चि. ३–२६२	શોભાંજનક (ડલ્હણ)=સરધવો.		
मूषिककर्णिका	च. चि. १७–६९	ઉંદરકણી.	Ipomœa reniformis.	
मूषिकपर्णी	च. चि. ७–१२६; सु. उ. ५४–२७	तिलपर्णी (ચ. દ.), द्रवन्ती (ડલ્હણ)=તલવણી કે રતનજોટ.		
मूषिका	सु. क. १–७८	અજરૂહાના જેવા ગુણવાળી લોમશા કૃષ્ણા. (ડલ્હણ).		
मूषिकाह्वया	च. क. १२–१	ઉંદરકણી.		
मृगभोजनी	सु. चि. १७–३७	ઇંદ્રવારૂણી. (ડલ્હણ).		
मृगलण्डिका	च. सू. २५–४१; वा. सू. ६–१३६.	बिभीतक (ચ. દ.)=બેહાં. मृगलिंडक (વાગ્ભટ)		
मृगादनी	सु. उ. २८–७	ઇંદ્રવારૂણી. (ડલ્હણ).		
मृगेर्वारु	सु उ. ३०–६	,, ,,		
मृणाल	च० सु० वा०	पद्ममूलस्थप्ररोहाङ्कुर: (ડલ્હણ); पद्मनालम् (ડલ્હણ).		
मृणाली	वा. उ. १३–२६	लामज्जके, वीरणमूले। (રા. નિ; વૈ. શ. સિં.). મૃણાલના અર્થમાં પણ ચાલે.		
मृदङ्गफलम्	च. क. ६–१	કૃતવેધનનો પર્યાય. કડવાં દોડકાં.		
मृद्विका	च० सु० वा०	દ્રાક્ષા.		
मेचकम्	च. चि. २५–१०	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
मेदा	च० सु० वा०	અષ્ટવર્ગની વનસ્પતિ.		
मेषपुष्पो	सु. उ. १७–४५	મરડાસીંગીનાં ફુલ.		
मेषशृङ्गी	च. क. ९–५; सु. सू. ३८–८; वा. सू. १५–१९	મરડાસીંગી.	Helicteris isora.	નિ. ૫. ૧૬૩
मोच	च. सू. २७–१३७; सु. उ. ४८–२९; वा. सू. १०–२२.	कदलीफलम् (ડલ્હણ).		

मोचकी	सु. चि. २-६४	शाल्मली. શીમળો.
मोचफल	सु. सू. ४६-१८१	કેળાં.
मोचरस	च. सू. ४-७०, ७१	મોચરસ. શીમળાનો ગુંદર.
मोचा	वा. सू. १५-२६	कदलीपुष्पम् (ડલ્હણ).
मोदयन्ती	सु. चि. २५-३३	मल्लिका इति लोके ख्याता (ડલ્હણ)=મોગરો J. Sambac.
मोरट	च. चि. ८-१६०; सु. सू. ४२-१८; वा. सू. १५-२१	શેરડીનાં મૂળ અથવા આંકોલનાં ફુલ. (ડલ્હણ). મૂર્વા. (ચ. દ.) નિ. ઉ. ૬૭૧
मोरटा	सु. सू. ३८-८-१०.	मूर्वा. મોરવેલ.
मोहनवल्लिका	सु. उ. ६०-४८; वा. उ. ५-३	वटपत्रिका (ડલ્હણ). वटपत्रा=मल्लिका (રા. નિ.); वटपत्री= पाषाणभेदविशेषः (રા. નિ.)=મોગરો.
मोहनिका	सु. चि. २८-२१	पुत्रञ्जीवी, अवाक्पुष्पीति अपरे (ડલ્હણ). ઉંધાફુલી અથવા પુત્રંજીવ.
मोक्षक	सु. क. ३-९	મરખો. Schrebera swietenioides.
मंगल्या	सु. सू. २०-५	पाण्डुवर्णाः मसूराः (ડલ્હણ)=મસૂર.
मंजिष्ठा	च० सु० वा०	મજીઠ. Rubia cordifolia. નિ. પૃ. ૬૨૬
मांसी	,,	જટામાંસી. Nardostachys Jatamansi. નિ. પૃ. ૬૩૧
—य—		
यमानी	च० सु० वा०	અજમો. Ptychotis Ajwan. નિ. પૃ. ૫૮૯
यव	,,	જવ. Hordeum vulgaræ. નિ. ઉ. ૬૧૦
यवक	च. सू. २५-३३; सु. सू. २१-२३	शूकधान्यविशेषः तस्य च यवाकारास्तण्डुलाः (ડલ્હણ. સૂ. २१-२३). गोधूमः (રા. નિ.)
यवकाः	च. सू. २७-११; वा. सू. ६-४	ચોખાની જાત.
यवगोधा	वा. उ. १८-३९	?
यवतिक्ता	च. क. ११-१; सु. सू. ४५-१२५	આંખફુટામણી. शंखिनीनो પર્યાય. Ctenolepis cerasiformis નિ. પૃ. ५७९

यवफला	सु. क. ६–१५	અમારદુધેલી. दुग्धिका (ડલ્હણ).		
यवशाक	च. चि. ८–१२३; वा. सू. ६–८२	क्षेत्रवास्तुकम् (ડલ્હણ), हस्वपत्रा चिल्ली (अ. द.)=ચોઢો.	Chenopodium Olidum.	
यवानक	वा. चि. १४–१७	यमानीभेदः (अ. द.)=અજમાનો પ્રકાર.		
यवानी	च० सु० वा० .	અજમો.		
यवास	”	જરવાસો.	Alhaji Maurorum.	નિ. પૂ. ૩૪૧
यवासशर्करा	सु. सू. ४५–१६७	તુરંજબીન.		
यष्टिमधु	च० सु० वा०	જેઠીમધ.	Glycyrrhiza glabra.	નિ. પૂ. ૩૪૪
यष्ट्याह्व	”	”	”	”
यातुक	च. सू. २७–८७	शुक्ला शालिपर्णी (च. द.).		
यास	सु. उ. ३९–२२३	જરવાસો.		
युक्ता	वा. सू. १५–२६	रास्ना. (અ. દ.)=રાસ્ના. गिरिकर्णिका इत्यन्ये (अ. द.)	Pluchea Indica.	
युवती	च. चि. १–५५	नवमालिका (ય. દ.) =મોગરો		
यूथिकम्	च. चि. ३०–५८	જૂઈ.		
यूथिका	वा. चि. ९–२४; सु. सू. ४६–२४८	वृक्षविशेषः सा द्विविधा, ईषत्कुसुमपुष्पा, अतिश्वेतपुष्पा च (ડલ્હણ). જૂઈ.	J. auriculatum.	નિ. ઉ. ૧૧
योजनवल्ली	सु. सू. ३८–४५; वा. सू. १५–३७.	મંજીષ્ટા (અ. દ.). મજીઠ.		
—र—				
रक्तचन्दन	च० सु० वा०	રતાંજલી.	Pterocarpus santalinus.	
रक्तमूली	च. सि १०–२९	समंगा. (च. द.)=મજીઠ.		
रक्तयष्टिका	वा. सू. २१–१७	મજીઠ.		
रक्तवृक्ष	सु. सू. ४६–२८४	रक्तचन्दन (ડલ્હણ)=રતાંજલી.		
रक्तशालि	च. सू. २७–७; वा. सू. ६–१	રાતા ચોખા.		

रक्तसार	सु. चि. ९-५०	ખેર.	Acacia Catechu.	નિ. પૃ. ૪૫૨
रक्ता	वा. उ. ३८-२५; सु. चि. ३८-७०	મજીઠ.		
रक्तालुक	सु. सू. ४६-२९८	कंदविशेषः-શકરીઆં ?		
रक्तैरण्ड	वा. सू. ५-५८	લાલ એરંડો.		
रक्तोत्पल	सु. सू. ३८-५२	લાલ કમળ.		
रजनक	वा. सू. १५-४५	કપીલો.		
रजनी	च० सु० वा०	હલદર.	Curcuma longa.	
रजनीद्वय	,,	હલદર, દારૂહલદર.		
रम्यक	सु. सू. ३८-२९	બકાનલીંબડો (ટીકા).	Melia Azadirach.	
रस	वा०	बोलः-બોલ.		
रसक्षीरा	च. चि ३०-२४९	ક્ષીરવિદારી અથવા શતાવરી.		
रसांजनम्	च० सु० वा०	રસવંતી.	Extract of Berberis asiatica.	
रसोन	सु. सू. ४६-२४४; वा. उ. ५-४६	લસણ.	Allium sativum.	
रक्षोघ्न	वा० च० सु०	સરસવ. ડલ્હણ રૂદ્રાક્ષ અર્થ કરે છે. (ળિ. ૬૦)		
रक्षोघ्नी	च. चि. २५-७७	વજ (રા. નિ.). ઘોડાવજ.		
राजकशेरु	च. चि. ८-१६०, १६५	મુસ્તા (રા. નિ.). મોથની જાત. see कशेरु.		
राजकोषातकी	वा. उ. ३७-७९; च. क. ४-१-१२	ધામાર્ગવનો પર્યાય.		
राजमाष	च. सू. २७-२३; सु. सू. ४६-३५; वा. सू. ६-१७	અડદ.	Phaseolus radiatus.	નિ. પૃ. ૩૮૦
राजवृक्ष	च क. ८-१; सु. सू. ३८-२९; वा. सू. १५-१३	ગરમાળો.	Cassia fistula.	
राजक्षवक	च. सू. ४-२६; सु. सू. ४६-२७६; वा. सू. ६-७०	दुग्धिका (च. द.)=નાગલાદુધેલી.		
राजादन	च. सू. २५-४१; सु. सू. ३८-४३; वा. सू. १०-२३	રાયણ.	Mimusops hexandra.	નિ. પૃ. ૬૯૮

राढ	वा. उ. २–१७; च. क. १–३७	મીંઢળ.	Randia dumetorum.	
रामठ	वा. उ. ३–५७; सु. उ. ५१–१६.	હિંગ.	Ferula Alliacea.	નિ. પૃ. ૬૦૪
रास्ना	च० सु० वा०	રાસ્ના.	Pluchea lanceolata.	નિ. પૃ. ૬૫૮
रुक्	सु. उ. ४२	કઠ–ઉપલેટ.		
रुजाकर	वा. सू. १५–४१	हिताल: (अ. द.) ? ભીલામાં અર્થ થાય ખરો ?		
रुधिरम्	च. सू. ४–७०	કેસર. (રા. નિ.)	Crocus sativus.	નિ. ઉ. ૪૯૧
रुहा	च. चि. २५–७८; वा. उ. २५–५२	वृक्षरुहा रोहाम्लिकारिका (च. द) વાંદો ?	Vanda Roxburghii.	
रूपिका	वा. उ. ३८–३६; सु. चि. १७–२५	श्वेतार्कः (ડલ્હણ)=સફેદ આકડો.		
रेणु	वा. चि. २–४५; सु. चि. ३७–४०	ખડસલીયો.	Justicia parviflora.	નિ. ઉ. ૨૧૭
रेणुक	सु. क. २–५; वा. सू. २०–३७.	„	„	„
रेणुका	वा. उ. २८–३५; सु. उ. १७–२६	રેણુકબીજ.	Vitex Agnus Castus. (ઔ. સં.)	નિ. ઉ. પરિશિષ્ટ
रोध्र	च० सु० वा०	લોધર.	Symplocos racemosa.	નિ. ઉ. १
रोध्रपुष्पक	सु. सू. ४६–४	ચોખાની જાત.		
रोध्रयुग्म	वा. सू. १५–४१	લોધર, પઠાણી લોધર.		
रोध्रशूक	वा. सू. ६–१	ચોખાની જાત.		
रोहिणी	च० सु० वा०	कट्फलम् (ડલ્હણ સૂ. ૩૮) ! રોહ્ણુ અર્થ લેવો.	Soymida febrifuga.	
रोहितक	च. चि. २५–२११; सु. चि. १०–४; वा. चि. ६–५१.	રગતરોહીડો.	Tecoma undulata.	
		બંગાલીઓનો.	Amoora Rohitaka.	
रोहिष	च० सु० वा०	રોહિષઘાસ.	Andropogan Schœnanthus.	નિ. ઉ. ૬૦૬
रोहीत	सु. उ. १७–४१	दाडिमपुष्पतुल्यपुष्पः (ડલ્હણ).		
रंभा	सु. चि. १–१०७	કેળ.		

—ल—

लकुच	सू० सु० वा०	નાનું ફણસ.	Artocarpus lacooch.	

लघुकदम्ब	सु. उ. ५१-३८	નાનો કદંબ.	Stephegyne parviflora. નિ. પૃ. ૬૧૭
लट्वाकः	वा. सू. ६-९२	गुग्गुलुकः (अ. द.). ગુગળનાં પાન અથવા ફળનું શાક હશે?	
लट्वाबीजं	वा. चि. ११-७	कुसुम्भबीजम् (अ. द.)=કસુંબાનાં બીજ.	
लता	च. सू. ४-३२; वा. उ. ५-२०	પ્રિયંગુ=ઘઉલા.	Aglaia Roxburghii.
लताकस्तुरिका	सु. सू. ४६	કસ્તુરી ભીંડા. see सुश्रुतनिरुक्त.	Hibiscus abelmoschus. નિ. પૃ. ૬૭૨
लम्बा	च. क. ३-२; सु. उ. ३४-७; वा. सू. १५-१	तिक्तालाबू (ડલ્હણ)-કડવી તુંબડી.	
लवङ्ग	च० सु० वा०	લવીંગ.	Caryophyllus aromaticus. નિ. પૃ. ૫૧૯
लवली	च. सू. २७-१३८; सु. सू. ४६-१८९	હરફારેવડી.	Phyllanthus distichus.
लशुन	च० सु० वा०	લસણ.	
लक्ष्मणम्	च. सू. २७-९६; वा.	मधुयष्टिकम् (अ. द.), मुचुकुन्द (શા. નિ.)	
लक्ष्मणा	वा. सू. ६-९३; सु. उ. ३०-६	હનુમાન વેલ.	Ipomœa sepiaria.
लक्ष्मी	वा. सू. २९-३१; सु. सू. १९-२९	શમડી.	Prosopis spicegera. નિ. પૃ. ૪૪૩
लाङ्गलक	च. चि. ७-१०६	દુધીઓ વછનાગ.	
लाङ्गलकी	च. सू. २७-१०३; सु. सू. ४२-१८; वा. उ. ११-४५	,,	Gloriosa superba.
लाङ्गुल	च. चि. २५-१०	સ્થાવર વિષની ગણત્રીમાં છે.	
लाङ्गूल	च. सू. २७-७	શેખાની જાત.	
लाङ्गुली	सु. सू. १९-२९.	कलिकच्छु (ડલ્હણ)-કુવચ.	
लाजा	च. सू ४-५२	ડાંગરની ધાણી.	
लामज्जक	च. सू. २५-३३; सु. सू. ३९-९	સુગંધી ઘાસ. "लामज्जकमुशीरवत् पीतच्छवितृणविशेषः" (भा. प्र)	Andropogan Nardus.
लामलतिका	च. चि. ८-१६१	?	

लावाश्क	सु. सू. ४६-१२	ચોખાની જાત.
लाक्षा	च० सु० वा०	લાખ.
लिकुच	च. सू. २५-३३	**क्षुद्रपनसः** – નાનું ફણસ.
लोट्टाक	च. सू. २७-९५	લુકાટનું ઝાડ. Japanese Medler. (અંગ્રેજી)
लोणिका	च० सु० वा०	લુણી. Portulaca quadrifida.
लोध्र	,,	લોધર. Symplocos racemosa.
लोमश	च. सू. ३-२	**જટામાંસી.**
लोमशा	वा. चि. २२-१६	,,
लोह	वा. उ. १६-४०	અગર.
लोहवालाः	च. सू. २७-८	ચોખાની જાત.
लोहितचन्दन	च. चि. ४-१००	**रक्तचंदन.**
लोहितकशालि	सु. सू. ४६-४	લાલ ચોખા.
लोहितिका	सु. चि. ११-९	**મંજિષ્ઠા** (ડલ્હણ).
लौहिस्याणु	च. सू. २७-१६	ડાંગરની જાત.
—व—		
वक्र	वा. उ. १६-१२; सु. क. ५-६३	**તગર.** (ડલ્હણ).
वचा	च० सु० वा०	વજ.
वज्रपोता	सु. उ. ६०-४८	**तिक्तालाबु** (ડલ્હણ)=કડવી તુંબડી.
वज्रप्रोक्ता	वा. उ. ५-३	**अस्थिशृंखला वज्रप्रोक्ता** (શ્રીકંઠ)=હાડસાંકળ.
वज्रवृक्ष	सु. सू. ३८-२०	**થોર.**
वट	च० सु० वा०	વડ. Ficus Bengalensis.
वत्सक	,,	ઇંદ્રજવનું ઝાડ, **કુડો.** Hollarrhena antidysenterica.
वत्सनाभ	च. चि. २५-८; सु. क. २-५	વછનાગ. Aconitum ferox. [ન. પૃ. ૧૬
वत्सादनी	च. सू. २७-१०१; सु. ३९-७	ગળો. Tinospora cordifolia.

वत्साहृय	सु. चि. ३८-४४	ઇન્દ્રજવ.		
वनकार्पासो	सु. उ. ४०-११३	જંગલી કપાસ.		
वनतिक्तक	च. सू. २७-९१; वा. सू. ६-७५	वत्सकः (अ. हृ.)= ડો. કરિયાતું અર્થ પણ થાય છે.		
वनत्रपुसो	च. चि. ८-१६०	જંગલી કાકડી.	Cucumis sativus.	નિ. પૃ. ૫૬૩
वन्यकुलत्थ	सु सू. ४६-३८	ચમેડ.	Cassia absus.	નિ. પૃ. ૪૧૩
वन्य	वा. सू. १५-६; च. सू. ३-६	કેવડીમોથ.		
वन्या	वा. उ. २४-२९	ઘણા અર્થો થાય છે. મુદ્રપર્ણી, ગોપાલકર્કટી, ગુંજા, મિસિ, વનહરિદ્રા ઇત્યાદિ અર્થમાં.		
वह्नि	च० सु० वा०	ચિત્રો.		
वमनी	वा. चि. १९-७६	?		
वयःस्था	च० सु० वा०	બ્રાહ્મી અથવા ગળો.		
वर्णक	सु. उ. १०-१०	કચીલો. (ડલ્હણ).		
वर्धमान	च. सि. १०-१७; सु. क. ६-३	એરંડો.		
वरक	च. सू. २७-१३; वा. सू. ६-८ सु. सू. ४६-२१.	सामबोजम् (च. द.)=સામો. Panicum colonum.		
वरकाः	च. सू. २७-१७	ચોખાની જાત.		
वरण	वा. सू. १५-२१; वा. सू. ६-९५	रुमालः, भालः (अ. हृ.)		
वरदारु	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષમાં.		
वरवास्तुक	सु. उ. १७-५०	ટંકવાસ્તુકમ્ (ડલ્હણ)=ટાંકાની ભાજી. Chenopodium olidum.		
वरा	च० सु० वा०	કાકમાચી, ગુડૂચી, પાઠા, બ્રાહ્મી, મેદા, વંધ્યાકર્કોટકી, વિડંગ, હલદર વિગેરે અર્થો રા. નિ. માં આપ્યા છે.		
वराङ्ग	,,	તજ.		
वराटक	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષમાં.		
वरी	च० वा० सु०	શતાવરી. (ડલ્હણ).		

वरुण	च० वा० सु०	વાયવરણો. Crativa religiosa.	નિ. પૂ. ૮૫
वल्लीजम	सु. क. २–५	સ્થાવરવિષમાં.	
वल्लीफलम	च. चि. २३-२०	કાકડી વગેરે.	
वल्लीशिम्बी	सु. सू. ४६–४६	**शुकशिम्बी**. કોઇ જાતનું કઠોર.	
वशीर	च. सू. ४-५८; वा. चि. ११-१८; सु. सू. ४६–१६०	રક્ત અપામાર્ગ. **वशीरं सामुद्रलवणम्**-આવો અર્થ અરૂણદત્તે કરેલો છે.	નિ. ઉ. ૬૭૩
वर्षाभू	च० सु० वा०	સાટોડી.	
वसुक	च. सू. ४–४४, ५८; सु. सू. ३९-७; वा. चि. ११-१८.	સંદિગ્ધ છે. **इश्वरमल्लिका** (अ. द.)=કડો.	નિ. ઉ. ૬૭૩
वाजिगन्धा	सु. उ. ६२–२७; वा. चि. ४–३८	આસન. Withania somnifera.	
वाट्यपुष्पी	च. सू. ४-७३	**पीतबला (च.द)**=કાંસકી. Abutilon indicum.	
वाट्यम्	वा. चि. १४–५१; च. चि. ५–९४	ફોતરાં સિવાયના શેકેલા જવ.	
वाट्याभिधान	वा. चि. १४–३६	ગુલ્મની ચિકિત્સામાં છે. મહાબલા ?	
वाट्यायनी	च. सू. ४–२६	**श्वेतबला (च. द.)** = સફેદ ફુલની બલા. 'મહાબલા' (રાજનિઘંટુ).	નિ. ઉ. ૬૭૪
वाद्याह्व	वा. चि. १४–५०	મહાબલા ?	
वातघ्न	वा. चि. १५–५७	**एरण्ड** ?	
वातपोथ	च. चि. ३–२५३	ખાખરો. **पलाश**	
वातार्क	सु. सू. १९-३३	?	
वानीर	च. क. १–८	**જલવેતસ**.	નિ. ઉ. ૬૭૪
वाप्यं	वा०; च. चि ७-१२७	કુષ્ટ. Saussurea Lappa.	નિ. પૂ. ૬૩૯
वायसी	च० सु० वा०	કાકજંઘા. Peristrophe bicaliculata. **काकमाचीति अन्ये** (ડલ્હણ).	નિ. ઉ. ૨૦૭

वार्ताक	च. सू. २७-९२; सु. सू. ४२-१८; वा. सू. ६-७५	રીંગણું.	Solanum melongena.
वार्ताकी	च. वि. ८-१७४; वा. उ. २-५९	„	„
वार्ताकु	च. चि. ८-१६४	वृन्ताको वर्तुलफलः 'बइगण' इति लोके (ડલ્હણ)=રીંગણું.	
वारुण	च. शा. ८-७७	વરુણ.	
वाराहीकन्द	सु. सू. ४६-३०९; वा०	વારાહીકંદ.	Dioscorea bulbosa.
वारिद	सु. चि. ३८-७०	મોથ.	
वालुक	च. क. १-३३; सु. सू. ३८-२४	पलादिगणમાં એલવાલુક. એલાદિગણ સિવાય જો વપરાયલું હોય તો શકરટેટી અર્થ પણ ચાલી શકે.	
वासा	च० वा० सु०	અરડુસી.	Adhatoda Vasika.
वास्तुक	„	ટાંકો.	Chenopodium.
व्याघ्र	च. चि. २६-१६७; वा. चि. २१-७५	એલાદિગણમાં છે. નખલા હશે.	
व्याघ्रनख	च० सु० वा०	નખલા.	
व्याघ्री	च० वा०	ભોરીંગણી.	Solanum Xanthoxylon.
व्याधिघात	सु. चि. ९-१४; वा. सू. १५-४१	ગરમાળો.	
विकंकत	च. सू. २७-१३९; सु. चि. १८-१३; वा. चि. ३-१३३	વીકળો.	Gymnosporea montana. નિ. પૃ. ૨૬૦
विकसा	च. चि. ८-१७१; वा. सू. १५-४१	મજીઠ.	
विगंधिका	च. चि. २५-२२०	અજગંધા અને હુપુષા (રા. નિ.)-વિશિષ્ટ ગંધવાળી વનસ્પતિ તો તલવણી (अजगन्धा) છે.	
विजया	च० वा० सु०	હરડે, શમી અથવા મંજીષ્ઠા લેવી. અનેક અર્થો થાય છે. ભાંગ પણ ચાલે.	
विडङ्ग	„	વાવડીંગ.	Embelia Ribes. નિ. પૃ. ૬૮૯

वितुन्नक	वा. चि. १२-४४; वा. चि. २९-९२	ધાણા.	Coriandrum sativum.	નિ. પૃ. ૬૦૭
विदारी	च० सु० वा०	ફગીયો.	Pueraria tuberosa.	નિ. પૃ. ૪૬૭
विदारीकन्द	च. सू. २७-११४; सु०	"	"	"
विदारीगन्धा	च. सू. २५-३३, ४१; सु. सू. ३८-६६; वा. चि ३-१५१	શાલિપર્ણી-સાલવણ.		
विदुल	च. सू. ४-४७; सु. सू. ३९-३; वा. सू. १५-१	वेतसः (डल्हण), हिज्जलः (च. द.) જલવેતસ અથવા સમુદ્રફળ.		
विषुच्छिका	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
विनिर्दहनी	सु उ. ४४-२८	ચિત્રો.		
विरला	वा. सू १५-४१	तिन्दुकी (अ. द.)=ટીંબરવો.		
विशल्या	सु. उ. ६२-३०; वा०	પાટલા; काष्टपाटला इन्द्रवारुणीति अन्ये (ડલ્હણ). દુધીઓ વછનાગ અથવા ઇંદ્રવારૂણી.		
विशाला	च० सु० वा०	ઇંદ્રવારૂણી.		
विष्वक्सेनकान्ता	च. सू. ४-७३	પ્રિયંગુ. ઘઉંલા.		
विश्वदेवा	च. चि. ८-१६०; सु सू. ३८-४	કાંસકી. (ડલ્હણ).	Abutilum Indicum.	
विश्वभेषज	च० सु० वा०	સુંઠ.		
विश्वा	च सू. २-२७; सु उ. ३९-२५१	સુંઠ, શતાવરી, અતિવિષા-આવા અનેક અર્થો થાય છે.		નિ. ઉ. ૬૭૪
विषघ्ना	वा. उ. ६-३९	अतिविषा (अ. द.)=અતિવખની કળી. હળદર અથવા નિર્વિષી અર્થ લેવો ઉચિત છે.		
विषघ्नी	सु उ. ६२-३०	हरिद्रा, अन्ये निर्विषामाहुः (ડલ્હણ). હલદર અથવા નિર્વિષી.		નિ. ઉ. ૬૭૫
विषपत्रिका	सु क. २-५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
विष	च. चि. १-१२२; सु. चि. ९-६०.	अतिविषा (ડલ્હણ. सु. चि. ३८).		

विषमुष्टिक	वा. सू. १५-३०; सु. सू. ३८-१८	બકાન લીંબડો અથવા ઝેરકચોલાં.		
विषा	सु. उ. ३९-२३७; वा. उ. ५-१९	અતિવિષા. અરૂણદત્ત કાકોલી અર્થ આપે છે.		
विषाख्या	वा. सू. १५-४०	शुक्लकन्दा (अ. ह.)		
विषाणिका	च. सू. १-७७; सु. चि. १८-४८; वा. सू. १५-२१.	મરડાસીંગી.		નિ. ઉ. ૬૭૫
वीरक	च. चि. १९-१५४	करवीरः (રા. નિ.)=કરેણ.		
वीरण	वा. सू. १७-७; च. सू. ४-४१	उशीरः=વાળો.	A. Muricatus.	નિ. ઉ. ૬૦૭
वीरतरु	सु. सू. ३९-७	વેહ્વન્તરો.	Dichrostachys cineria.	નિ. ઉ. ૬૭૫
वीरा	वा. सू. १०-२३; च. चि. ३०-४८.	વિદારીકંદ, શાલિપર્ણી અથવા શતાવરી.		
वेगनाम	सु. सू. ४६-२३८	શાક છે.		
वेणी	च. क. २-१	કુંકડવેલ. जीमूतकનો પર્યાય.		
वेणु	सु. सू. ४६-२१; च. सू. २७-१९	વાંસ.	Dendrocalamus strictus.	નિ. ઉ. ૫૮૯
वेणुपत्रिका	सु. क. १-५३	वंशपत्राणि (ડલ્હણ)=વાંસ જેવાં પાનવાળી વનસ્પતિ.		
वेणुयव	वा. सू. ६-१३	વાંસનાં બીજ.		
	च. सू. २७-१९	ડાંગરની જાત.		
वेतस	च० सु० वा०	નેતર.	Calamus Rotang.	નિ. ઉ. ૫૫૪
वेत्र	,,	નેતર.		
वेल्ल	वा. सू. १५-८	વાવડીંગ. (અ. દ.).		
वेल्लन्तरु	वा. सू. १५-२४	વીરતરૂ. વેલંતરો (પંચમહાલ).		
वैजयन्ती	वा. उ. ३-४४; सु. सू. ४२-१८	અરણી.		
वैदुलम्	सु. चि. १-९५	જુઓ विदुल.		
वैराटक	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
वैदेही	वा. उ. ११-४३	પીપર.		
वंजुल	च. सू. ४-७१; सु. सू. ३८-४८; वा. सू. १५-४१	નેતર, અશોક, તિનિશ એવા ત્રણ અર્થમાં વપરાય છે.		નિ. ઉ. ૬૭૬

वंश	च० सु० वा०	વાંસ.		
वंशलोचन	च. चि. २२-७१	વાંસકપૂર.		
वांशी	च० सु० वा०	”		
व्रीहि	च. सू. २७-१४; वा. सू. ६-८	ડાંગર.		
वृकधूमक	च. सू. २७-९७	भूमिशिरीषः (च. द). નાનો શિરીષ.		
वृद्धि	सु. सू. ३८-३५; वा०	ऋद्धि ? श्रावणी (અ. દ.)		
वृष	च० सु० वा०	અરડુસી.		
वृषक	च० सु०	” पाषाणभेदः અથવા वासकः (अ. द.)		
वृषकर्णिका	च. चि. ११-८३; वा. सू. १५-३०	ઉંદરકણી.		
वृषपर्णिका	वा. चि. १७-२६; च. सू. ४-३९	બ્રાહ્મણયષ્ટિકા (વૈ. શ. સિંધુ)=ભારંગમૂલ.		
वृश्चिक	च. क. ४-१३; सु. उ. ३९-२००	શ્વેત પુનર્નવા (ડલ્હણ)=સાટોડી.		
वृश्चिकाली	च. चि. ८-१६४; सु. सू. ४२-१८; वा. सू. १५-९	ખાજવણી.	Dalechampia indica.	નિ. ઉ. ૪૦૦
वृश्चीर	च. चि. ८-१५७, १६०	શ્વેતપુનર્નવા. (सु. ४-२२)		
वृश्चीव	सु. उ. ५९-२४; वा. सू. १५-९	” सूक्ष्मपुनर्नवा (अ. द.)		
वृक्षक	च० सु० वा०	ઇન્દ્રજવ. નંદીવૃક્ષ (અ. દ.)		
वृक्षबीज	सु. उ. ४२-५०	”		
वृक्षरुहा	च. सू. ४—५३, ५४	વાંદો. (वन्दाक).		
वृक्षादनी	च० सु० वा०	वन्दाको विदारोकन्दो वा (च. द.). વિદારી કે વાંદો. कामवृक्षकः (अ. द.) ?		
*वृक्षाम्लक	”	કોકમ.	Garcinia indica.	નિ. પૂ. ૧૦૪

* કૈયદેવ નિઘંટુના વિદ્વાન સંપાદક આયુર્વેદાચાર્ય પં. સુરેન્દ્ર મોહન બી. એ. લખે છે કે—“ ઘણાખરા કોકમને જ વૃક્ષામ્લ માને છે પણ કોકમના ફૂલને વૃક્ષામ્લ કહેવું ઠીક નથી. રજપુતાનામાં એક ક્ષુપને તિન્તિડીકામ્લ કહે છે. એનાં નાનાં નાનાં બીજ (રક્તવર્ણું, ગોળ) **समाकदाना** નામથી પ્રસિદ્ધ છે, જે સર્વત્ર વેચાય છે. રજપુતાનાના વૈદ્યો આ **समाकदाना** ને જ **वृक्षाम्ल** કહે છે. સંભવ છે કે આ જ વૃક્ષામ્લ હોય. આ બીજ ખાટાં અને રોચક છે.”

वृक्षरुहा	च. सू. ४-१८	શતાવરી.		
—श—				
शकुनाहृत	च. सू. २७—७-१०; वा. सू. ६-१	ચોખાની જાત.		
शकुलादनी	वा. सू ६-७६; च. सू. २७-९१	કડુ		
शक्रयव	च० सु० वा०	ઇંદ્રજવ.		
शठी-टी	,,	પટ્ટકચુરો	Curcuma Zedoaria.	નિ. ઉ. ४६५
शण	,,	શણ.	Crotalaria Juncea.	નિ. પૂ. ३१६
शणपुष्पी	च. सू. ४-४७; सु. सू. ३८-३; वा. क. १-८	ઘુઘરો.	C. linifolia.	
शतकुसुम	च. सि. १२—२७, ३८	કમળ.	Lotus.	
शतपत्र	च. सू. ४-५८	,,	,,	
शतपर्वक	सु. उ. ५८-४४	जलगण्डीरः (ડલ્હણ)=પાણીમાં થનારૂં જંગલી સુરણ.		નિ. ઉ. ६७६
शतपर्वा	च. चि. ३-२५३	श्वेतदूर्वा (च. द.)=સફેદ ધ્રો.		
शतपर्विक	वा. सू. ७-२५	વાંસ, દૂર્વા, શેરડીની એક જાત, વિગેરે અર્થો થાય છે.		
शतपुष्पा	च० सु० वा०	સુવા.	Peucedanum graveolens.	નિ. પૂ. ६०२
शतपुष्पी	च सू. १४-३२	,,	,,	
शतवीर्या	च. सू. ४-७३; सु. सू. १९-२९; वा. चि. ५-७८	દૂર્વા.	Cynodon dactylon शतावरी, नीलदूर्वा इत्यन्ये (ડલ્હણ).	
शतावरी	च० सु० वा०	શતાવરી.	Asparagus racemosus.	
शताह्व	च. चि. २८-११४	સુવા.		
शताह्वा	च० वा० सु०	,,		
शताह्व	च. सु. ३—१९, २३	સુવા અને વલીયારી.		
शबरकंदक	वा. उ. १८-५८	लशुनः (अ. द.)=લસણ.		
शबरदेशज	वा. उ. १६-४	शाबरलोध्र હોય ?		

शमी	च० सु० वा०	ખીજડી.	Prosopis spicigera.	નિ. પૂ. ૪૪૪
शम्पाक	च. चि. २५–५५; सु. सू. ४६–२०७	ગરમાળો.		
शम्याक	च. वि. ८–१६०; वा. सू. १५–२	कर्णिकारः, महानिम्बः (અ દ.)=ગરમાળો અથવા બકાન લીંબડો.		
शर	च. वि. ८–१६०; वा. सू. ६–१६९	દર્ભ.	Eragrostis Cynosuroides.	નિ. ઉ. ૫૯૯
शरपुङ्ख	सु. क. ७–५३; वा. उ. ४०–१२	શરપુંખ.	Tephrosia purpurea.	નિ. પૂ. ૩૨૯
शरेषिका	च. सू. १४–३९	”	”	
शल्लकी	च० सु० वा०	શાલેડી.	Boswellia serrata.	
शशाङ्कलेखा	वा. चि. १९–४६	બાબચી.		
शाक	च० सु० वा०	સાગ.	Tectona grandis.	
शाखा	वा. उ. २२–७६	लिखेच्छाखादिपत्रैश्च पिठिकाःकठिनाः स्थिराः ॥ ખરસટ પાંદડાંવાળાં વૃક્ષ ?		
शाखोटक	सु. चि. १८–२३	સરેરો.	Streblus asper.	નિ. ઉ. ૪૩૬
शार्ङ्गेष्टा	च. सू. २७–९२; सु. सू. ३८–५४; वा. सू. ६–७४	काकमाची=પીલુડી.		
शार्ङ्गेष्टा	वा. सू. ६–७४	अंगारवल्लिका (अ. द.) ?		
शातला	च चि. १८–१२४, १३०	ચીકાખાઇ.	Acacia Concinna.	
शाद्वलम्	च. चि. ११–७४; वा. चि. १६–३८	દૂર્વા–ધ્રો.		
शान्तनु	सु. सू. ४६–२१	कुधान्यविशेषे.		
शाबर	वा. सू. २२–१८	लोध्रः		
शारदम्	च. सू. १–८१	हस्तिपर्ण्यांश्च शारदम् । સપ્તપર્ણ ?		નિ. ઉ. ૬૭૭
शारद	च. सू. २७–१३; वा. सू. ६–८	ચોખાની જાત.		
शारदा	च. चि. १५–४३	સારિવા. (રા. નિ.)		
शारिवा	च० सु०	”		
शारिवाकथाः	च. सू. २७–८	ડાંગરની જાત.		

शाल	च० सु० वा०	રાળનું ઝાડ.	Shorea Robusta.	
शालकल्याणी	च. सू. २७-८७	शालिञ्चीभेदः (ચ. દ.)=શાલિંચશાક (બંગાલી)		
शालपर्णी	च० सु० वा०	શાલિપર્ણી લાગે છે.		
शालामुख	सु. सू. ४६-१२	ચોખાની જાત.		
शालमक	च. वि. ८-१५७	મોચરસ.		
शालमली	च० सु० वा०	શીમળો.	Bombax Malabarica.	નિ. પૃ. ૧૫૩
शालि	,,	ડાંગર.	Oryza Sativa.	નિ. ઉ. ૬૧૬
शालूक	च. सू. २७-१११; सु. शा. १०-५७; वा. सू. ६-६०	पद्ममूलम् (अ. द.), पद्मकन्दः (ડલ્હણ)=કમળનો કંદ.		
शालेय	च. चि. ४-७३	ડાંગરનો પ્રકાર. વલીયારીનો પણ પર્યાય છે.		નિ. પૃ. ૬૦૧
शालेयमृष्टक	च. सू. २७-१६४	શેકેલી ડાંગર. ફોફાં.		
शावरक	च. चि. १९-१५६; वा. सू. १५-२६	લોધ્ર.		
श्यामा	च० सु० वा०	નસોતર.		
श्यामाक	च. सू. २७-१४	સામો.		
शिखरी	वा. सू. १५-४१	અઘેડો.		
शिखि	वा. उ. ३९-१७०	અઘેડો અથવા ચિત્રક.		
शिग्रु	च० सु० वा०	સરગવો.	Moringa Pterygosperma.	નિ. પૃ. ૩૦૮
शिता	च. सू. ४-८	શ્વેતદૂર્વા. (ચ. દ.)		
शितिमारक	च. चि. २६-५४	तिन्दुक=ટીંબરવો.		
शितिवारक	वा. चि. ११-२७	करंज (અ. દ.)=કરંજ.		
शिबिर	च. सू. २७-१७	ચોખાની જાત.		
शिम्बी	सु. उ. ३३-७	कपिकच्छु=કૌચાં.		
शिरीष	च० सु० वा०	કાળીયો સરસ.	Albizzia Lebbek.	

शिलापुष्प	सु. क. ६–१७	પથ્થરફુલ, છડફુલ=Parmelia Perlata.	नि. ઉ. ६२८.
शिवा	सु०, वा०, च. सू. ४–७३	હિમજી હરડે.	
शिवाटी	सु. उ. २३–४; वा. चि. ३–५८	श्वेतपुनर्नवा, शेफालिका इत्यन्ये (ડલ્હણ). ધોળી સાટોડી, અથવા નગોડ.	
शिशिरद्वयम्	वा. सू. १५–११	ચંદન અને રતાંજલિ.	
शिंशपा	च० सु० वा०	સીસમ. Dalbergia Sissoo.	नि. પૂ. ૩૯૨.
शीतम्	सु. सू. ४२–१८	रसांजनम्, कर्पूरमन्ये (ડલ્હણ)=રસવંતી અથવા કપૂર.	
शीतक	च. वि. ८–१६१	अम्बुलोटकः (च.द.), अज्ञानपर्णीवृक्षे (वै. श. सि.)	
शीतकुम्भिका	च. चि. ३–२५३	काष्ठपाटला (च. द.)=કાષ્ટપાટલા. [पुष्पहीनापाटला (શ્રીકંઠ)]	
शीतपाकी	वा. सू. १५–६	शिखंडीका काकणन्तिकाभेदः (अ. द.)=ગુંજાનો પ્રકાર.	
शीतपाक्यं	च. वि. ८–१६०; सु. सू. ४६–१६०	बलाफलम् (ડલ્હણ), शीतला. (च द.)=બલબીજ.	नि. ઉ. ६७७
शीतभीरुक	सु. सू. ४६–४	ચોખાની જાત.	
शीतवल्ली	च. चि. ३–२६२	नीलदूर्वा.	
शीतपर्णी	सु. उ. २१–४८	अर्कपुष्पिकायाम् (वै. श. सि.) ખરણેર?	नि. ઉ. ६७८
शीतशिव	सु. सू. ४२–१८	કપૂર.	
शीर्णवृन्त	सु. सू ४६; वा. सू. ६–८९	સકરટેટી. त्रपुसभेदः (ડલ્હણ)	
शुकतरु	वा. उ. ४०–४८	શિરીષ. (अ. द.) કાળીયો સરસ. Albizzia Lebbek.	
शुकनासा	सु. सू. ४२–१८; वा. उ. ३४–२८	શ્યોનાક.	
शुकबर्हम्	च. सू. ५–१६	ग्रन्थिपर्णम् (ટીકા)=ચોરક.	
शुकाह्वया	सु. उ. ५१–४४; वा. उ. ३८–२१	चर्मकारवटः, शुकशिंबामपरे (ડલ્હણ)=કૌચાં?	
शुक्रमरिच	सु. उ. ११	સરગવાનાં બીજ.	
शुक्ला	च. वि. ८–१६०	કાકોલી અથવા ક્ષીરવિદારી.	
शुभा	च. चि. ८–१४१	વાંસકપુર અથવા શમડી. (રા નિ.)	
शुषा	च. सू. २७–८५	कासमर्द—કાસુન્દ્રો.	

शकर	वा. सू. ६–७	ચોખાની જાત.		
शूकरी	च. चि. १४–५६; वा. उ. ६–३५	વારાહીકંદ.		
शूर्पपर्ण्यौ	च. चि. १–४०; वा. सू. ६–१६७	મુદ્ગપર્ણી, માષપર્ણી. (ટીકા).		
शेफालिका	वा. उ. ५–५; सु सू. ८–१५	**रक्तवृन्ता शारदकुसुमा** (ડલ્હણ)=હારશણગાર.	Nyctanthus arbortristis.	
शेलु	च० सु० वा०	ગુંદો.	Cordia mixa.	
शैखरिक	च. चि. ७–२४	વિડંગ (ચ. દ.). સાધારણ રીતે અઘેડો અર્થ થાય છે.		
शला	च. चि. ७–१०८	?		
शैलेयक	सु. चि. १५–३१; च. सू. ५–१६	દગડફુલ	Parmelia perlata.	નિ. ઉ. ૬૨૮
शैवलम्	सु. उ. १०–४; वा चि ६–४६	શેવાળ.		
शैवाल	च. सू. ३–२३; सु सू. ३९–८; वा. उ. १८–५६.	”		
शोभांजनक	च० सु० वा०	સરગવો.		
शंखपुष्पी	”	શંખાવલી.	Convolvulus Microphyllus.	
शंखिनी	”	આંખફુટામણી. પંડિત હરિપ્રપન્નજી શંખિનીનો અર્થ **शंखपुष्पी** (જુઓ રસયોગસાગર. પા. ૧૭૭) અને બીજી જગોએ **कालावाला** (૩૩૨) કરે છે !	Ctenolepis Cerasiformis.	નિ. પૃ. ૫૭૯
शंखालुक	सु. सू. ४६–२९८	**कंदविशेष:**		
श्वेतनामा	च. चि. १–७६	**श्वतापराजिता.** (ચ. દ.). ધોળાં ફુલની ગરણી.		
श्यामाक	च. सू. २७–१४	સામો.		
श्योनाक	च० सु० वा०	ટેંટુ.	Oroxylum indicum.	
श्रवण:	सु. चि. ३१–५	શ્રાવણી હોય ?		

श्रवणाह्वया	सु. सू. ३७-२८	मुण्डितिका-ગોરખમુંડી. Sphœranthus indicus.	નિ. પૃ. ૬૬૮
श्रावणी	च. वि. ८-१६०; सु. चि. ३०-५	ગોરખમુંડી ”	
श्रीः	सु. उ. २४-२७	नवनीतधूपः-લોબાન અથવા લવીંગ. (ડલ્હણ)	
श्रीनिकेत	सु. चि. ९-१२	सरलनिर्यासः-ગંધબીરોજા.	
श्रीनिवास	च. चि. २८-१४८	” ”	
श्रीवेष्टक	सु. सू. ३८-२४; च. सू. ४-५६	सर्जरस=રાળ.	
श्रीपर्णी	च. चि. ८-१२६; सु. उ. ४३-१५; वा. उ. २०-१२.	શીવણ. Gmelina arborea.	
शृगालविन्ना	सु. चि. ५	પૃશ્નિપર્ણી. (ડલ્હણ) Uraria picta.	
शृंगवेर	च० सु० वा०	આદુ.	
शृङ्गवेरिका	च. सू. २७-१६५	गोजिह्वा (રા. નિ.), (ચ. દ.). ગળજીભી.	
शृङ्गाटक	च० सु० वा०	સીંઘોડાં. Trapa bispinosa.	નિ. પૃ. ૫૩૫
शृङ्गाटकी	च चि. २-७१	” ”	
शृङ्गाटिका	च. वि. ८—१५७, १६०	”	
शृङ्गाटी	च. चि. ८-९८; सु. उ. ४२-७०	जीवन्ती. (રા. નિ.) ડોડી.	
शृङ्गी	च० सु० वा०	अतिविषा (अ. द.). સાધારણ રીતે કાકડાસીંગી એવો અર્થ થાય છે.	
शृङ्गीविष	च. चि. २५-११	સ્થાવરવિષમાં.	
श्रेयसी	च. सू. २७-१०२; सु. उ. ६१-३४	પાઠા, પ્રિયંગુ, હરડે તેમજ ગજપીપર (અ. દ.) વિગેરે અર્થો થાય છે.	
श्लेष्मातक	च सू. ४-४०; सु. क. ८-१२०; वा. सू. ६-११८	ગુંદો.	
श्वदंष्ट्रा	च० सु० वा०	ગોખરૂ. Tribulus terrestris.	
श्वेतकटभी	च. चि. २५-७७; वा. उ. ५-४६	श्वेतगुंजा (અ. દ.). સફેદ ચણોઠી.	

श्वेतचन्दन	सु. चि. २५–३९	સફેદચંદન.		
श्वेतभण्डा-ण्डी	च. चि. २५–२०७	સફેદ નસોતર.		
श्वेतवचा	च. सि. ३–६१	સફેદ વજ.		
श्वेतवाह	वा. सू. १५-१९	अर्जुनः (अ. द.)=સાજડ.		
श्वेतसर्षप	सु. क. ६–३	સફેદ સરસવ.		
श्वेतसुरसा	सु. सू. ३८–१८	ધોળી તુલસી.		
श्वेता	सु. सू. ३९–३; च. सू. ५–२०	श्वेतस्यन्दः (ડલ્હણ). ઘણા અર્થો થાય છે. સફેદ ગરણી અર્થ લેવો ઠીક છે.		
श्वेतायुग्म	वा. सू. १५–२८	पक्वा किणिहीसंज्ञा अन्या महाश्वेता पालिन्दीसंज्ञा (अ. द.). સફેદ ગરણી અને ભુરાં ફુલની ગરણી.		
श्याह्व	च. सू. ३–१	રાળ.		
—ष—				
षड्ग्रन्था	च० सु० वा०	વજ.		
षष्टिक	च. सू. २७–१२; सु. सू. ४६–८; वा. सू. ६–६	સાઠીચોખા.		
—स—				
सकुलादनी	च. सू. ४–२८	કડુ.		
सटी, सठी	सु. सू. ४६–२७६; सु. चि. ५–२८	ષટ્કચુરો	Curcuma Zedoaria.	નિ. ઉ. ૪૬૫
सतीन	सु. सू. ४६–३३; वा. सू. ६–७०	મઠ.		
सतुदम्	वा. सू. ६–१३६	तूदનો અર્થ શેતૂર થાય છે. स+तूद હોય ? શેતૂર.		
सदापुष्पी	च. सू. ४–४७; सु. सू. ४३–१; वा. क. १–८	रक्तार्कः (च. द.)=રાતા ફુલનો આકડો.		
सदाभद्रा	सु. उ. २४–३१.	काश्मरी-શીવણ.		
सदाफल	वा. सू. १५–४१	उदुम्बर (अ. द.).		

सप्तपर्ण	च० सु० वा०	સાતવીન.	Alstonia Scholaris.	
सप्तला	च. सू. ४-५; सु. सू. ३८-२९; वा. सू. ६-७४.	ચીકાખાઇ.	Acacia Concinna.	નિ. પૂ. ४६०
सप्तलिका	सु. चि. १८-३४	”	”	
सप्ताह्वा	वा. चि. ६-३२; सु. सू. ६-३७	સપ્તપર્ણ.		
सभार्गक	च. सू. २७-१३९	ફલવર્ગમાં છે.		
सम्पाक	च. चि. १५-१७; सु. उ. ६१-३४	ગરમાળો.		
समंगा	च० सु० वा०	મજીઠ અને **રીસામણી.** બીજા પણ ઘણા અર્થો થાય છે.		
सर	सु. चि. ७-९	**सरकर्णिक 'बरु' इति लोके** (ડલ્હણ)=બરૂ.		
सरल	च० सु० वा०	ચીડો.	Pinus longifolia.	
सरला	”	નસોતર.	Ipomœa turpethum.	
सरसी	वा. सू. १५-३०	**तुवरपत्रिका (अ. द.)**=તુવર જેવાં પાન તો નગોડનાં કહી શકાય ?		
सर्ज	च. सू. ३-३	રાળ.	Gum resin of Shorea robusta.	
सर्जक	च. चि. १६-८२	”	”	
सर्जरस	च० वा० सु०	”	”	
सर्पगंधा	सु. उ. ६०-४८; वा. उ. ५-३	**वर्षासु छत्राकारा** (ડલ્હણ)=બીલાડીના ટોપની જાત છે. નાકુલી અર્થ પણ થાય છે.		
सर्पघाती	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષમાં.		
सर्पच्छत्रा	च. सू. २७-११७	”		
सर्पलोचना	वा. उ. ३७-८३	”		
सर्पसुगंधा	वा. चि. १४-१०३	નાકુલી. (અ. દ.). નાકુલી એટલે **નોળવેલ.**		
सर्पा	च. चि. १-११८	**सर्पा नामौषधिः सर्पाकारा (चरक)**		
सर्पाक्षी	सु. क. ८-११७	**लोहितपुष्पा शंखपुष्पोभेदः** (ડલ્હણ). પં. હરિપ્રપન્નજી રસયોગસાગર (પા. ૧૩૫)માં સર્પાક્ષીનો અર્થ ઉંધાફુલી કરે છે ! શા આધારે ? વિષ્ણુકાન્તાનો પર્યાય પણ છે.		નિ. ઉ. ६७९

सर्वानुभूति	च. क. ७-२	નસોતર.		
सर्षप	च० सु० वा०	સરસવ.		
सलोमश	च. सू. ३-१३	જટામાંસી.		
सहकार	सु. सू. ४६-१२७	આંબો.		
सहचर	च. शा. ८-३२; सु. चि. ३७-२०.	કાંટાસેરીયો.		
सहदेवा	च वि. ८-१६०; सु. सू. ३८-४	पीतपुष्पा बला=કાંસકી.		
सहस्रवीर्या	च. सू. ४-७३; सु. उ. ५८-५८	સફેદ દૂર્વા.		
सहा	च० सु० वा०	મુદ્‌ગપર્ણી.		
सहाद्वय	च०, सु०, वा. सू. १०-२४	મુદ્‌ગપર્ણી, માષપર્ણી.		
सहाचर	वा० सु०	કાંટાસેરીયો.		
सातला	च. क. १०-११; वा. क. २-२५.	ચીકાખાઈ.		
सारपाक	सु. क. २-५	સ્થાવર વિષમાં.		
सारामुखः	वा. सू. ६-१	ચોખાની જાત.		
सारिवाद्वयम्	च० सु० वा०	સારિવા, કૃષ્ણસારિવા.		
सावर	सु. क. २-५१	લોધ્ર.		
सावरक	च; सु. उ. ४०-३९	,,		
सावरलोध्र	सु. सू. ३८-१४, ४६.	પઠાણી લોધર.		
साल	च. क. १-७; सु. सू. ३८-१२, १४.	રાળનું ઝાડ.	Shorea Robusta.	
सिञ्चितिका	च. सू. २७-१३५; सु. सू. ४६-१४७.	સફરજન.	Prunus malus.	નિ. પૃ. ૪૭૭
सितकर्णिक	सु. उ. ४५-२०	સફેદફુલનો ગરમાળો.		
सितसारिवा	सु. उ. ४७-४१	સફેદ ફુલની કપુરી મધુરી.		
सितसिन्धुवार	सु. क. ५-७७	,, નગોડ.		
सिता	च० सु० वा०	સાકર અથવા સફેદ ધ્રો.		

सितिमारक	च. चि. २६-५८	शालिञ्चः (च. द.)		
सितोत्पल	च. शा. ८-५१	સફેદ કમળ.		
सिद्धक	सु. क. ३-७	सिन्दुवारः (રા. નિ.)=નગોડ.		
सिद्धार्थक	च० सु० वा०	સરસવ.	Brassica Campestris.	નિ. પૃ. ૭૭
सिन्दुक	सु. उ. ३१-७	નિર્ગુંડી. (ડલ્હણ)		
सिन्दुवार	वा. सू. ७-२५; सु. सू. ४६-२८६	„		
सिन्धुवारिका	च. सू. ४-४०	નગોડ.	Vitex Negundo.	
सिवाटिका	वा. चि. १७-३९	?		
सिह	सु. चि. ९-२७	રાતો સરગવો. (ડલ્હણ)		
सिंही	सु. उ. ३९-२१५; वा. सू. २२-१९.	અરડુસી.	Adhatoda Vasika.	
सुगंध	सु. क. २-५.	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.		
सुगंधक	सु. सू. ४६-४; वा. सू. ६-१	वृहत्सुगन्धतृणम् (ડલ્હણ)=રોહિષધાસ. અથવા द्रोणपुष्प કુબો ? ચોખાની જાત પણ છે.		
सुगंधा	वा. उ. ३६-६१; सु. सू. १६-९	सर्पसुगंधा नाकुलीति (ડલ્હણ)=નાકુલી.		
सुगंधिक	सु चि. ५-६९.	રોહિષધાસ.		
सुगन्धिका	च. सू. २७-८; सु. क. ६-१५.	ચોખાની જાત.		
सुगंधिका	सु. चि. १७-२८	ઉત્પલસારિવા (ડલ્હણ)=ઉપલસરી.		
सुधा	च० सु० वा०	થોર.		
सुनिषण्णक	च. सू. २७-८४; सु. सू. ४२-१८; वा. सू. ६-७०, ७१.	જલકપાસીયા.	Marsillea quadrifida.	
सुमनः	च. सू. ३-१२; सु. सू. ४२-१८; वा. चि. १९-६२.	ચંબેલી.		
सुमना	वा. सू. १९-७२; सु. चि. ९-४०.	ચંબેલી અથવા જૂઇ-(जाति-ડલ્હણ). J. grandiflorum.		
सुमुख	सु. सू. ३८-१८; च. सू. २७-१६७; वा. सू. ६-१०४.	આવચીઆવચી.	Anisochilus cornosus.	

सुरदारु	च० सु० वा०	દેવદાર.		
सुरभी	च. सू. ५–५९; सु. क. ६–२१; वा. उ. ३–५४.	રાસ્ના.		
सुरस	च. सू. २७–१६३; सु. सू. ४६–२३४.	તુલસી.	Ocimum sanctum કૃષ્ણતુલસી (અ. દ.).	
सुरसा	च. सू. ३–६; सु. सू. ३८–१८; वा. सू. १५–३०.	,,		
सुरवारुणी	वा. चि. १९–८१	ઇંદ્રવારૂણી.		
सुरसाञ्जन	च. चि. २५–७७	રસવંતી.		
सुरसी	सु. सू. ३८–१८	कपित्थसदृशपत्रा 'बिल्वनाशी'ति लोके प्रसिद्धा । श्वेतनिर्गुण्डीत्यन्ये (ડલ્હણ). સફેદ નગોડ.		
सुरस्याः पुष्पम्	सु. क. ५–७०	તુલસીનાં ફુલ (ટીકા).		
सुराला	वा. सू. १५–४	श्रेष्ठसर्जरसः (अ. द.)=ઉત્તમ જાતની રાળ.		
सुराह्व	वा. चि. ३–४०	દેવદાર.		
सुरेन्द्रकन्द	सु. सू. ४५–३०५	वज्रकन्दः (ડલ્હણ)=કડવું સુરણ. (વૈ. શ. સિં.)		
सुर्पपर्णी	च. चि. २–५४	મુદ્ગપર્ણી.		નિ. ઉ. ६८०
सुवर्चला	च० सु० वा०	સુરજમુખી.	Helianthus annus.	નિ. પૃ. ६७४
सुवर्चिका	च. चि. २६–१८; सु. सू. ४२–१८; वा. उ. ३५–३९.	,,	,,	
सुवर्णत्वक्	वा. सू. २१–१७	નાગકેસરની છાલ !		
सुवर्णक्षीरी	च. चि. ७–२७; सु. सू. ३९–४; वा. चि. १९–८१.	હિમાલયમાં થનારૂં, સારિવાના જેવાં પાનવાળું ઝાડ.		
सुवहा	च. सू. ४–२८, ४०; सु. उ. ५१–२३.	નસોતર.		
सुषवी	च. क. १–३२; सु. सू. ३८–६; वा. सू. १५–१७.	કાલીજીરી.	Vernonia Anthelmintica. નિ. પૃ. ६३७	

सूक्ष्मैला	च० सु० वा०	नानी એલચી.	
सूरण	वा. सू. ६-१११; सु. सू. ४६-३०६,७.	સુરણ. Amorphophallus Campanulatus.	नि. पृ. ५६४
सूर्यवल्ली	वा. उ. ३५-२१; सु. सू. ४६-१२०.	करवीराकारपुष्पा (अ. द.); पटोलसदृशपत्रा यस्याः स्वरसाञ्जनेन आर्क मांसं स्विन्नमिव भवति. (ડલ્હણ) ?	नि. ઉ. ६८१
सूर्प्य	च. चि. १०-५४	परण्ड ?	
सेलु	वा. उ. ३६-६०; सु. सू. ४६-४३०.	શ્લેષ્માતક-ગુંદા.	
सेव्य	च. चि. ४-११४; वा. सू. २०-३७.	વાળો. सेव्यः पिप्पली. (રા. નિ.)	
सेव्या	च. चि. ७-१२९	वासन्ती-અરણી.	
सैहगज	च. सू. ३-१	કુંવાડીયો.	
सैरेयक	सु. सू. ३८-७३	કાંટાશેરીયો. Barlaria prionitis.	
सोम	च. चि. १-११८; सु. सू. ३७-२४, २५.	વેદોક્ત સોમ.	नि. ઉ. ६३५
सोमराजी	च. सू. २-२२; सु. क. ५-८३; वा. उ. ३९-१०७.	બાકુચી. Psoralia Corylifolia.	नि. पृ. ६३८
सोमवल्क	च. सू. ४-५७; सु. क. १-६८; वा. सू. १५-४१.	કાયફલ અથવા વિટ્ખદિર.	
सोमवल्का	सु. सू. ३७-२५	કાયફલ.	
सोमवल्ली	च. चि. ८-१६०; सु. क. १-५४.	સોમ. ગળો અર્થ પણ થાય છે.	
सोमवृक्ष	सु. चि. ११-७	શ્વેતખદિર અથવા કાયફલ.	नि. ઉ. ६८१
सोमा	सु. क. १-३७; सु. सू. ३७-२४.	ગળો અથવા સોમ. (ડલ્હણ).	
सौगन्धिक	च. सू. ४-५९; सु. सू. ३८-५२; वा. उ. ३९-१०४.	कुमुदभेदः (ડલ્હણ)	
सौमनस्यायिनी	च. चि. ८-१५७	जातिकलिका=જુઈની કળીયો.	
सौरभबीजम्	सु. ऊ. २३-४	ધાણા. (રા. નિ.)	
सौरीयक	सु. क. २-५	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં	

सौवर्चल	च. चि. २६–४६; सु. उ. ४०–३७.	સુરજમુખી.
सौवर्चला	च. चि. ६–६४; सु. उ. ४०–४७; वा. सू. १४–२५.	,,
सौवर्णी	च. चि. ७–७५	પ્રિયંગુ.
सौवीरबदरम्	वा. सू. ६–११८	कर्णिकबदरम् (अ. द.)?
संकोचम्	च. कि. २५–११	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.
संवर्तक	च. चि. ३–२५३	बिभीतक (ચ. દ.)=બેહેડાં.
संहर्षा	च. चि. ८–१६०	वन्दाक (च. द.)=વાંદો. क्षेत्रपर्पटी. (वै. श. सि.)
स्थविरम्	वा. चि. ३–१३३	शैलीयम् (अ. द.).
स्थिरा	च० सु० वा०	શાલિપર્ણી. (ડલ્હણ).
स्थिरे	,,	શાલિપર્ણી, પૃશ્નિપર્ણી.
स्थूलकन्द	सु. सू. ४६–३०६	સુરણનો કંદ.
स्थौणेयक	च. क. १–३३; सु. सू. ३८–२४; वा. सू. १५–४३.	થુણેર. ભટીઉર. Clerodendron infortunatum. तैलपीतकम् (अ. द.)
स्नुक्	सु. सू. ३६–४	થોર. Euphorbia neriifolia.
स्नुषा	वा. चि. ६–२	થોર. ,, ,,
स्नुही	च० सु० वा०	થોર. ,, ,,
स्पृक्का	च. चि. २५–७५; सु. सू. ३८–२४; वा. सू. १५–४३.	સુગંધી દ્રવ્ય છે. देवी. (अ. द.).
स्फोता	च. चि. २५–२३६	હું ધારૂં છું કે આ છાપવાની ભૂલ છે. आस्फोता પાઠ જોઈએ
स्फूर्जक	च. चि. ८–१६५; सु. चि. ५–१८.	श्योनाकनाम्ना प्रसिद्धः लकुचाकारपत्रकाण्डः (ડલ્હણ). तिन्दुक (રા. નિ.). ટીંબરવો.
स्फोटहेतु	वा. चि. २०–११	ભીલામો. (અ. દ.)
स्मर्यु	च. सू. २७–९६	શાકવર્ગમાં છે.

स्यन्दन	च. सू. २५-४१; सु. उ. ३२-५.	તણુછ.	Ougeinia dalbergioides. નિ. પૃ. ૪૭૨
स्वगुप्ता	च. चि. १६-४२; वा. उ. १८-५६.	કૌવચ.	
स्वयंगुप्ता	सु. उ. ५८-५३	"	
स्वर्णयूथिका	च. सि. १०-२९	यूथिका. (રા. નિ.)=જૂઇ.	
स्वर्णक्षीरी	च. सू. ४-२८; वा. क. २-२७.	સ્વર્ણુક્ષીરી.	
स्वसन फलम्	च. कं. १-३७	घंटारवः	Crotalaria linifolia.
स्वस्तिक	वा. चि. ९-२०	सुनिषण्णक (वै. श. सि.).	Marsillea quadrifida.
स्वादुकण्टक	सु. सू. ४२-१८	विकंकतवृक्षः कण्टकारिकेति प्रसिद्धा (ડલ્હણ)=વીકળો.	
स्रुववृक्ष	वा. सू. १५-१७	विकंकतः (अ. द.) વીકળો.	

—ह—

हठ	वा. उ. २२-७०; सु. चि. ११-८.	जलकुम्भिका (ડલ્હણ)=જલશંખલાં. हठो मिमिणः (अ. द.)।	
हपुषा	च. सू. २३-१८; सु. उ. ४२-२५; वा. सू. १४-२६.		Juniperus Communis.
हयगंधा	च. चि. २८-१६७	જુઓ अश्वगंधा.	
हयमारक	च. सू. ३-१२; सु. सू. ३७-१०	કરેણ.	
हरिगन्धा	सु. उ. ३५-४	અશ્વગંધા.	
हरिचन्दन	वा. सू. ३-४०	यच्छेदे लोहितमतिसुगंधं सुष्ठु शीतवीर्यं च तद् हरिचंदनमुच्यते ॥	
हरिद्रा	च० सु० वा०	હલદર.	Curcuma longa.
हरिद्राच्छदन	सु. उ. ५१-४९	પટૂકચુરો.	Curcuma zedoaria.
हरिद्राद्वय	च० सु० वा०	હલદર, દારૂહલદર.	
हरिमन्थ	सु. सू. ४६-२७७	चणक (ડલ્હણ)=ચણા.	
हरिवृक्ष	सु. चि. ११-९	ઇંદરખ (પંચમહાલ)	Anogeissus acuminata.
हरीतकी	च० सु० वा०	હરડે.	Terminalia chebula. નિ. પૃ. ૪૯૫
हरेणु	च. सू. ३-३; सु. सू. ३८-२४; वा. क. ४-६३.	वर्तुलकलायः (ડલ્હણ) = લાંગ.	

हस्तिकर्ण	सु. सू. ३९-८	રાતો એરડો અથવા ભોંયપર પથરાતો ખાખરો. (ડલ્હણ)	નિ. ઉ. ૬૮૨
हस्तिदन्ती	सु. उ. ४०-५१; अ. सू. १-७६.	નેપાળો.	
हस्तिपर्णी	च. सू. १-८१	मोरटः, अस्याश्च शरत्कालभवमेव फलं ग्राह्यं अत उक्तं 'हस्तिपर्ण्याश्च शारदम्'। च. द. રાજનિઘંટુકારે એનો અર્થ कर्कटी કર્યો છે. ત્યારે શું શીયાળાનાં ચીભડાં એવો અર્થ લેવો ? પં. હરિપ્રપન્નજીએ મોરટનો અર્થ લતાકરંજ એવો કર્યો છે. (ર. યો. સા. પા. ૮૬).	
हस्तिपिप्पली	च० सु० वा०	ગજપીપર.	
हस्तिश्यामाक	च. सू. २७-१६	ચોખાની જાત.	
हस्त्यालुक	सु.सू ४६-२५८	कंदविशेषः	
हायनक	च. नि. ४-४; सु. सू. ४६-४.	शालिधान्यविशेषः (ટીકા).	
हायनाः	च. सू. २७-१; वा. सू. ६-४.	ચોખાની જાત.	
हालाहल	च. चि. २५-११; सु. क. २-५.	સ્થાવરવિષની ગણત્રીમાં.	
हिन्ताला	च. क. १-८	તાડની એકાદ જાત છે.	નિ. ઉ. ૬૮૩
हिम	वा. सू. २०-३७	ચંદન કે વાળો.	
हिमकेसर	वा. चि. ८-११५	હિમ + કેસર = ચંદન + નાગકેસર (ટીકામાં).	
हिरण्यपुष्पी	सु. शा. १०-११; वा. शा. १-८३.	कलिकारिका (ટીકા)=કુંધીઓ વછનાગ.	
हिंगु	च० सु० वा०	હિંગ. Ferula alliacea.	નિ. પૂ. ૬૦૪
हिंगुपर्णी	च. चि. १४-६७	ડીકામારી. Gardinia lucida.	
हिंगुपत्रिका	च. चि. १४-७६	〃	
हिंगुशराटिका	च. चि. १९-१०६	〃	
हिंगुशिवाटिका	च. चि. १५-३४	〃	
हिंस्रा	च. चि. ३-२६२; वा. चि. ३-१३३.	કંથાર અથવા ભોટીંગડી.	
हुतभुक्	सु. उ. ५२-२९	ચિત્રો.	

हुताशन	वा० सु०	ચિત્રો.	
हेमकाला	च. चि. २५-११४	**मंजिष्ठा (च. द.)**=મજીઠ.	
हेमक्षीरी	च० सु० वा०	સ્વર્ણક્ષીરી.	
हेमाङ्गत्वक्	सु. चि. २५-३९	**हेमाङ्गा स्वर्णक्षीरी.**	
हेमवती	च० सु० वा०	સફેદ વજ.	
हंसपदी	च. सू. ४-३३; सु. सू. ३८-४; वा. चि. २२-४२.	હંસરાજ.	Adiantum. lunulatum.
ह्रीबेर	च० सु० वा०	વાળો.	
—क्ष—			
क्षवक	च. सू. ४-५१; सु. सू. ८-१८; वा. सू. १५-३०.	નાકછીંકણી.	Centipeda orbicularis. નિ. પૃ. ૬૫૦
क्षीरकपीतन	सु. उ. ४८-२६	**आर्द्रशिरीषः** (ડલ્હણ)=શીલો કાળીયો સરસ.	
क्षीरकाकोली	च. चि. ८-१६०; सु. चि. ५-७.	ક્ષીરકાકોલી ?	
क्षीरपलाण्डु	सु. सू. ४६-२४७	સફેદ ડુંગળી. રાતી ડુંગળીને **लोहितपलाण्डुः** ગણાવે છે.	
क्षीरपुष्पी	च. चि. १-	**शंखपुष्पिका** (રા. નિ.) હું ધારું છું કે આકડાના વર્ગની કોઇ વનસ્પતિને ક્ષીરપુષ્પી ગણવી જોઇએ. જેનાં પુલમાંથી છીર નીકળતું હોય તે.	
क्षीरमोरटा	वा. चि. ६-११३	**मधुस्रवा (अ. द.)**	
क्षीरवल्ली	च. चि. ८-१६०	**क्षीरविदारी** (રા. નિ.).	Ipomœa digitata.
क्षीरशुक्ला	च० सु० वा०	**क्षीरविदारी** (ડલ્હણ). **त्रिवृत्**-(ચ. દ.)	
क्षीरिका	च. चि. २-८७	**प्लक्षः** (રા. નિ.)=પીપળી.	
क्षीरिकम्	च. सू. २७	ડાંગરનો પ્રકાર.	
क्षीरिणी	च० सु० वा०	**अर्कपुष्पम्** (ડલ્હણ); **दुग्धिका** (ચ. દ.)=ચમારદુધેલી અથવા આકડો અથવા-સ્વર્ણક્ષીરી **(अ. द.)**.	
क्षीरिण्यौ	वा. सू. १०-२४	(૧) સ્વર્ણક્ષીરી અને (૨) ?	

क्षीरी	वा. चि. ५–३३; च. चि. १८–१३०.	अर्क=આકડો.
क्षीरीवृक्षाः	च. चि. २–५	વડ, પીપળો, ઇત્યાદિ.
क्षुद्रबृहती	सु. चि. १२–९	નાની ભોરીંગણી.
क्षुद्रसहा	च० सु० वा०	कुमारी (च. द.); मुद्गपर्णी (ડલ્હણ)=નાની મુદ્ગપર્ણી.
क्षुद्रा	च. क. ७–; वा. उ. २२–९७.	कोकिलाक्ष (च. द.)=એખરો. બીજા પણ ઘણા અર્થો થાય છે. ભોરીંગડીના અર્થમાં પણ વપરાય છે.
क्षुद्रैला	सु. क. ६–७	નાની એલચી.
क्षुमा	वा. चि. २२–३४	અળસી.
क्षुरक	वा. चि. १५–९५	कोकिलाक्षक्षुपे (વૈ. શ. સિં.)=એખરો.
क्षेमिका	च. चि. ३–२६२	चोरकः (च. द.)=ચોરક.
क्षौम	च. चि. २६–१६५; सु. सू. २५–२१	અળસી.
क्ष्वेडम्	च. क. ६–१	विषम्.

સમાપ્ત.